ताजिकनीलकण्ठी की

भूमिका

गणाधिपं नमस्कृत्य श्रीगुरुं गिरिजापतिम् ।
नीलकण्ठीकृतग्रन्थस्य भूमिकेयं विरच्यते ॥ १ ॥

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ १ ॥

इस पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द परमात्मा को अनेक धन्यवाद हैं जिसने अपनी अनुपम कृपा से वेदादि सत्यशास्त्रों का उपदेश किया है, कि जिनको पढ़कर मनुष्य सम्पूर्ण पदार्थों को यथावत् जान सकता है, वेद के अङ्ग ६ हैं जैसे कि—

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गति ।
छन्दसां लक्षणं चैव षडंगो वेद उच्यतेः ॥ २ ॥

१ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६ छन्द इन छै अङ्गों में ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष है जिसमें सूर्य चन्द्रमा साक्षी हैं अन्य शास्त्र अप्रत्यक्ष हैं केवल विवाद मात्र हैं, कारण यह कि—

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ कथ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥ ३ ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ॥

वेदरूपी पुरुष के छन्द पांव हैं, कल्प दोनों हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र प्रधान हैं तथा निरुक्त दोनों कान हैं, शिक्षा नासिका है, व्याकरण मुख कहा है—जैसे शरीर की समस्त इन्द्रियों में नेत्र प्रधान हैं ।

सर्वेन्द्रियाणां नयनं प्रधानम् ॥

वैसे ही वेदरूपी पुरुष का नेत्र होने से ज्योतिःशास्त्र प्रधान है ।

तथाच—यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयोयथा ।
तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम् ॥ ४ ॥

जैसे मोरों में शिखा प्रधान है और जैसे सर्पों में मणि तद्वत् वेदाङ्गशास्त्रों में ज्योतिष शास्त्र शिरोमणि है, इसी के द्वारा पण्डित जन भूत, भविष्य, वर्तमान कहने में समर्थ होते हैं विशेष विचार करने से ज्ञात होता है कि ज्योतिष शास्त्र ही विद्वान की प्रतिष्ठा आदि का कारण है, इसी को पढ़कर पूर्व विद्वान् त्रिकालज्ञ कहलाते थे, उस ज्योतिष शास्त्र में भी अनेक विषय हैं, जैसे गणित, मुहूर्त, प्रश्न, स्वर, शकुन, जातक ताजिक इत्यादि यहां ताजिक विषय में ताजिकालंकार, ताजिकदर्पण, ताजिकसिन्धु, ताजिक केशवी, ताजिक भूषण, ताजिकसुधार्णव, ताजिकरत्न, ताजिकतत्व, ताजिकप्रकाश, समाप्रकाशिनी, हायनरत्न, हायनसुन्दर, ताजिकनीलकण्ठी ताजिक ग्रन्थों में इक्कबाल, इत्थशाल, ईसराफ आदि पारसी शब्द बहुतसे आये हैं इसका कारण यह है कि—

ब्रह्मणा गदितं भानोर्भानुना यवनाय तत् ।
यवनेन च यत्प्रोक्तं ताजिकं तत्प्रचक्षते ॥ ५ ॥

ब्रह्माजी ने जो सूर्यनारायण से कहा, वह सूर्य ने यवनाचार्य को उपदेश किया और यवनाचार्य ने जो वर्णन किया उसी को ताजिक कहना चाहिये, ताजिकके टोडरानन्द, रोमक, हिल्लाज, दुर्मुख, धिषणा आदि आचार्य हैं, ये आचार्य ब्राह्मण थे इस कारण यहां पारसी शब्दों के कथन में दोष नहीं ।

फले प्राप्ते मूले किं प्रयोजनम् ॥

फल प्राप्त होने में मूल से क्या प्रयोजन इत्यादि ।

सम्पूर्ण ताजिक ग्रन्थों में, ताजिकनीलकण्ठी अत्यन्त प्रसिद्ध और माननीय ग्रन्थ है, जिसमें नीलकण्ठ दैवज्ञ ने वर्षतन्त्र द्वारा प्रत्येक वर्षका फल दर्पणवत् दरसाया है।

ग्रन्थकर्ता ने इस ग्रन्थ को तीन तन्त्रों में विभक्त किया है, प्रथम संज्ञातन्त्र, जिसमें राशिस्वरूप वर्षप्रवेशक्रम ग्रहस्पष्टीकरण भावसाधन पंचवर्गी बलप्रकार हर्षबली बल ग्रहदृष्टि, ग्रहस्वरूप भावफल, षोडशयोग, सहम, दशाप्रकार, दशा के अन्तर्दशा साधन, मास प्रवेश, दिन प्रवेश आदि गणित द्वारा दर्शाकर द्वितीय वर्षतन्त्र में सम्पूर्ण फल कथन किया है, अन्त के तीसरे प्रश्नतन्त्र में अनेक आचार्यों की सम्मति प्रदान करके प्रश्नकर्ता के सम्पूर्ण प्रश्नों के उत्तर [illegible] प्रकार वर्णन किया है, [illegible] यह ग्रन्थ ज्योतिर्विद जनों [illegible]

परन्तु यह [illegible] नामक ग्रन्थ संस्कृत में होने के कारण सामान्य लोगों के बुद्धिवालों की समझ में आना दुर्लभ जानकर हमने इसकी भाषाटीका सरल रीति से की है. बम्बई में यद्यपि इस ग्रन्थ का भाषान्तर अन्यत्र भी छपकर हो चुका है. तथापि यह टीका अब सर्वोपरि होगई है, कारण यह कि, हमने इस भाषान्तर में उदाहरण पूर्वक ग्रन्थ का सम्पूर्ण आशय बहुत परिश्रम से सबके समझने योग्य किया है. हम स्वयं अपने भाषान्तर की प्रशंसा नहीं करते जैसे कि—

न गुणं न च शोभाढ्यं स्वयं स्वगुणवर्णने ।
यथैव च सुरंध्रीणां स्वहस्तकुचमर्दने ॥ ६ ॥

अपना गुण अपने आप वर्णन करने में न गुण प्रगट होता, न अच्छा लगता है जैसे कि स्त्रियों को अपने हाथ कुच मर्दन करने में कुछ आनन्द नहीं आता ।

ऐसे ही हम अपने भाषाटीका की प्रशंसा न करके केवल इतना तो कहना चाहते हैं कि इस भाषान्तर में हमने जहां पर अन्य ग्रन्थों के श्लोकों की आवश्यकता देखी वहीं से श्लोक लिखकर भाषा कर दिया है, जिससे यह ग्रंथ अब सर्वोपयोगी हो गया है ।

वाणवाणनिधिन्द्वब्द आषाढस्यासिते दले ।
त्रयोदश्यांगुरोर्वारे भाषारम्भ कृतो मया ॥

समस्त पण्डितों के परमहितैषी—

पण्डित नारायणप्रसाद सीतारामजी,

पुस्तक मिलने का ठिकाना—

पं० श्रीधर शिवलाल,
ज्ञानसागर छापाखाना,
माटुंगा—बम्बई ।

किशनलाल द्वारकाप्रसाद,
बम्बई भूषण छापाखाना,
मथुरा ।

॥ श्रीः ॥

भाषा व टिप्पणीसहित ताजिकनीलकण्ठी ग्रन्थकी

अनुक्रमणिका ।

द्वितीय प्रकरण.

विषय	पृष्ठाङ्क

द्वितीय तंत्र वर्ष संज्ञक।

प्रथमाध्याय

द्वितीयाध्याय।

तृतीयाध्याय (अरिष्टाध्याय)

[illegible] विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

इति

बृहद् इलाजुलग़ुर्बा भाषा।

इसका नाम जैसा गुणकी बात इसी में है, अमीर आदमी तो बड़े बड़े डाक्टर हकीम और वैद्यों को झट बुला सकता है, पर गरीब जिसे पेट भरने का ठिकाना नहीं है क्या करे भगवान की उसी प्यारी सृष्टि के लिये यह ग्रन्थ है, इसमें कौड़ियों की कीमत के नुसखे हैं जो तीर की तरह काम देते हैं, बहुत मोटे कागज तथा मोटे अक्षरों में छपी हुई है। मूल्य १॥) रु०

जर्राही प्रकाश।

सम्पूर्ण।

यह ग्रन्थ अपने ढंग का पहिलाही [illegible] भाषा में तयार है। इसमें शरीर की [illegible] पुरानी चोट आदि [illegible] का इलाज, मरहम, पट्टी और फाह आदि का वर्णन है, हड्डियां टूटने, अथवा [illegible] से जिस प्रकार पट्टी [illegible] [illegible] हैं उनके भी चित्र दिये हैं, जिस जिस [illegible] पर फोड़े होते हैं उनके चित्र [illegible] [illegible] में काम [illegible] शस्त्रों के [illegible] और डाक्टरी मतानुसार [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], हाथ, [illegible] [illegible] और पट्टी [illegible] के [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] [illegible] मूल्य १॥)

॥ डाक्टरी चिकित्सासार ॥

[illegible] डाक्टरी [illegible] के निदान लक्षण और इलाज बहुतसी डाक्टरी पुस्तकों से संग्रह करके लिखे गये हैं, पुस्तकके अंतमें औषधियों के अंग्रेजी हिन्दी नाम उनके गुणागुण और मात्राकी एक छोटी सी तालिका दीगई है सुवाच्य अक्षरों में करीब २०० पृष्ठ के छपकर तयार है मूल्य भी ॥=) है।

नपुंसक संजीवन दूसरा भाग

इसमें हिकमत के सफूफ, तिला, जवारिश और हलुआ वगैरह अनेक आजमाये नुसखे हैं, कीमत ।=) आना डाक महसूल =) आना।

❁ ताजीरात हिन्द ❁

जिस राजा के राज्य में रहते हैं, उस की बनाई हुई कानूनों को जानना बहुत जरूरी है, क्योंकि कानून न जानने का [illegible] किसी अदालत में कोई हाकिम नहीं सुनता। इसको पास रखने से फौजदारी के सम्बन्ध की सब बातों में जानकारी हो सकती है किस किस अपराध में क्या क्या दण्ड होता है इस बात को जान लेने से मनुष्य अपराधों के करने से भी बच सकता है। यह पुस्तक [illegible] के साथ इलाहाबाद कलकत्ता बम्बई मदरास, हाईकोर्ट आदि की नजीर और उदाहरण समेत छापी गई है। जिस जिस दफा का उद्देश्य साधारण पढ़े लिखों की समझ में नहीं आसकती थी वहां वहां टिप्पणी भी अच्छी भांति दीगई हैं। हमने इस [illegible] को सुवाच्य अक्षरों में मोटे चिकने कागज पर छापी है, यह पुस्तक प्राय १०० पृष्ठ में छपी है मूल्य डाक महसूल समेत १।) रु०

॥ ॐ ॥

अथ ताजिकनीलकंठी प्रारभ्यते

नारायणीभाषाटीकासमन्विता टिप्पणीसहिता च।

भाषाकारकृत मंगलाचरणम्।

ब्रह्मेन्द्रशंकररवीन्दुकुजज्ञजीवशुक्रार्कजानुगणनाथगुरून्प्रणम्य ॥ श्रीनीलकण्ठमुखनिर्गततार्जिकस्य नारायणोऽहमधुनाविवृणोमि कृत्स्नम् ॥ १ ॥

भा०—ब्रह्मा, इन्द्र, शिव, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि गणेश और गुरुदेव को प्रणाम करके श्री नीलकण्ठ आचार्य के मुख से निकला हुआ यह कठिन ताजिक ग्रन्थ (नीलकण्ठी) को पं० नारायण प्रसाद नाम मैं इस सरल भाषा में वर्णन करता हूँ।

ग्रन्थकारकृतं मंगलाचरणम् ॥

प्रणम्य हेरम्बमथो दिवाकरं गुरोरनन्तस्य तथा पदाम्बुजम् ॥ श्रीनीलकण्ठोविविनक्ति सूक्तिभिस्तत्ताजिकं सूरिमनः प्रसादकृत १

अन्वयः—श्री नीलकण्ठः तत् (पूर्वाचार्योक्तं) ताजिकं सूक्तिभिः (सुन्दरवचनैः) नाना छन्दोभिर्वा विविनक्ति (प्रकटी करोति)। किंकृत्वा। हेरम्बं (गणेशं) अथो दिवाकरं (सूर्यं) तथा (तेन प्रकारेण) अनन्त-दैवज्ञाख्यगुरोः पदाम्बुजं (चरण कमलं) प्रणम्य (नमस्कृत्य)। कथंभूतं ताजिकं ? सूरिमनः प्रसादकृत् (सूरयो विद्वांसः तेषां मन अन्तः करणं तस्य प्रसादः तं करोतीति सूरिमनः प्रसादकृत्) एतद्ग्रन्थावलोकनेन विद्वन्मनः प्रसन्नतां यातीति भावः ॥१॥

भा०—ग्रन्थकर्ता श्री नील कण्ठ दैवज्ञ उन प्राचीन आचार्यों के कहे हुए ताजिक शास्त्र को सुन्दर वचनों अथवा उपजाति, इन्द्रवज्रा, वसन्ततिलक,

शालिनी, स्रग्धरा आदि अनेक उत्तम छन्दों करके प्रगट करे हैं, क्या करिके (कि) गणेश, और सूर्य, तथा अनन्त दैवज्ञनाम (अपने) गुरु के चरण कमलों को प्रणाम करके, कैसा है यह (नीलकण्ठी) ताजिक ग्रन्थ ? कि ज्योतिर्विद्पण्डितों के मन (अन्तः करण) को प्रसन्न करता है, भावार्थ यह कि—इस ग्रन्थ के देखने से विद्वानजनों का मन प्रसन्न हो जाता है ॥ १ ॥

अथ द्वादशराशिस्वरूपमाह । तत्रादौ मेषराशिस्वरूपमाह ।

पुमांश्चरोऽग्निः सुदृढश्चतुष्पाद्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोद्रिरुग्रः ॥
पीतो दिनंप्राग्विषमोदयोऽल्पसङ्गप्रजोरूक्षनृपःसमोऽजः ॥ २ ॥

अब ग्रन्थारम्भ में बारह राशियों के स्वरूप वर्णन करते हैं—तहां प्रथम मेष राशिका स्वरूप कहते हैं, नर राशि चर संज्ञा अग्नितत्व, बलिष्ठ शरीर, चारपद, रक्तवर्ण, गर्म स्वभाव, पित्त प्रकृति, महाशब्दकारी, पर्वतचारी, क्रूर, पीतवर्ण, दिनबली, पूर्वदिशा का स्वामी विषम उदय, थोड़ी स्त्री व प्रजा संग, रूक्ष कांति (तेजहीन) क्षत्रिय वर्ण, सम (बराबर) अंग ऐसा अज कहिये मेषराशि का स्वरूप जानना, समरसिंह आदि पूर्वाचार्यों ने मेष, सिंह, और धन, इन राशियों के दो वर्ण कहे हैं, इसीसे मेषराशि के रक्त, पीत, दो वर्ण यहां ग्रन्थकर्ता ने कहे हैं ॥२॥

अथ वृषराशिस्वरूपमाह ।

वृषः स्थिरःस्त्रीक्षितिशीतरूक्षोयाम्येट्समृद्धोवायुनिशाचतुष्पात् ॥
श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासंगशुभोऽपि वैश्यः॥३॥

भा०—अब वृषराशि का स्वरूप कहते हैं, वृषराशि स्थिरसंज्ञक, स्त्री राशि पृथ्वी तत्व, शीतल स्वभाव, कांति रहित, दक्षिण दिशाका स्वामी, सुन्दर, [illegible], वातप्रकृति, रात्रिबली, चार चरण, श्वेतवर्ण, महाशब्दकारी, विषम उदय मध्यम स्त्री व सन्तान संग, सौम्यराशि, और वैश्यवर्ण है ॥ ३ ॥

अथ मिथुनराशिस्वरूपमाह ।

[illegible] शुकभो द्विपान्नाढ्यं द्विमूर्तिर्विषमोदयोष्णः ॥
[illegible] दीर्घस्वनः स्निग्धदिनेट् तथोग्रः ॥४॥

भा०—अब मिथुन राशिका स्वरूप कहते हैं—पश्चिम दिशाका स्वामी पवनतत्त्व, सम उदय, शुकपक्षी के समान हरा रंग, स्त्री पुरुष, पुरुष राशि, द्विपद, [illegible] अर्थात् पूर्व रात्रि में बली, [illegible], [illegible], ग्राम्य स्वभाव, मध्यम शरीर व [illegible], [illegible], शूद्रवर्ण, [illegible] [illegible], चिकना अङ्ग, [illegible], गदा धनुष ([illegible]) धरे हाथों में पुरुष ये लक्षण मिथुन राशि के जानना ॥ ४ ॥

अथ कर्कराशिस्वरूपमाह ।

बहुप्रजाः संगपदः कुलीरोऽङ्गना पाटलहीनशब्दः ॥
शुभः कफी स्निग्धजलाम्बुचारी समोदयी विप्रनिशोत्तरेशः ॥५॥

भा०—अब कर्क राशि का स्वरूप वर्णन करते हैं—बहुत सन्तान व स्त्री व चरण जिसके, चर संज्ञक, स्त्री राशि, पाटल (श्वेतरक्त) वर्ण, शब्द हीन सौम्यस्वभाव, कफप्रकृति, चिकना अङ्ग, जलचर, जलचारी समउदय, ब्राह्मणवर्ण, रात्रिबली, उत्तर दिशाका स्वामी, और चिकना अङ्ग, ये लक्षण कुलीर कहिये कर्क राशि के हैं ॥ ५ ॥

अथ सिंहराशिस्वरूपमाह ।

पुमान् स्थिरोऽग्निर्दिनपतिरूक्षः पित्तोष्णपूर्वेशदृढश्चतुष्पात् ॥
समोदयो दीर्घरवोऽल्पसंगप्रजो हरिः शैलनृपोग्रधूम्रः ॥ ६ ॥

भा०—अब सिंहराशिका स्वरूप वर्णन करते हैं—पुरुष राशि, स्थिरसंज्ञा, अग्नितत्त्व, दिन में बली, पीतवर्ण, कान्तिरहित, पित्तप्रकृति, गरम स्वभाव पूर्व दिशाका स्वामी, पुष्ट, अङ्ग, चार चरण (चतुष्पदराशि) सम उदय भारी शब्द थोड़ी प्रजा वा स्त्री सङ्ग, पर्वतचारी, क्षत्रियवर्ण, क्रूरस्वभाव, धूम्रवर्ण, धुआंकासा रङ्ग, हरि कहिये सिंहराशि के ये लक्षण हैं एवं आचार्यों का मत-विचार यहां भी ग्रन्थकर्त्ताने दो रङ्ग दर्शाये हैं ॥ ६ ॥

अथ कन्याराशिस्वरूपमाह ।

पागद्विपात्स्त्री द्वितनुर्यमाशा निशा मरुच्छीतसमोदयाक्ष्मा ॥
कन्याऽर्धशब्दा शुभभूमिवैश्या रूक्षाऽल्पसंगप्रसवा शुभा च ॥७॥

---

१ यहां पाटल वर्ण कहा और प्रथम श्वेत रक्त वर्ण कहा सो दोनों को मिलाकर पाटल वर्ण जानना ।

२ स्त्री और पुरुष के जोड़ा को द्वन्द्व और मिथुन कहते हैं, इस कारण यहां मिथुन राशिका ग्रहण है ।

भा०—अब कन्या राशिका स्वरूप वर्णन करते हैं-पिंडारकासा रङ्ग, द्विपद (दोचरण) स्त्री राशि, द्विस्वभाव (पूर्व भाग स्थिर, उत्तर भाग चर,) दक्षिण दिशाकी स्वामिनी, रात्रिमें बली, वात प्रकृति, शीतल स्वभाव, समोदयी भूमितत्व, खण्डित शब्द, सौम्यराशि, भूमिचारी, वैश्यवर्ण रूखी (कान्तिरहित) थोडे प्रजा व स्त्री संग, सौम्यराशि, और ढीले अंग, ये कन्या राशि के लक्षण हैं ॥ ७ ॥

अथ तुलाराशिस्वरूपमाह ।

पुमांश्चरश्चित्रसमोदयोष्णः प्रत्यक् मरुत्स्निग्धरवोनवन्यः ॥
स्वल्पप्रजासंगमशूद्र उग्रस्तुलो द्युवीर्यो द्विपदः समानः ॥ ८ ॥

भा०—अब तुलाराशिका स्वरूप लिखते हैं,-पुरुषराशि, चरसंज्ञक, सम उदय, गरमस्वभाव, पश्चिम दिशाका स्वामी, वायुतत्त्व, तथा वातप्रकृति चिकना, अङ्ग, शब्द रहित, वनचारी, थोडे संतान व स्त्री सङ्ग, शूद्रवर्ण, क्रूरस्वभाव, दिनमें बली, द्विपद (दो चरण,) और समान अङ्ग, ये तुलाराशि के लक्षण हैं ॥ ८ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्वरूपमाह ।

स्थिरः सितः स्त्री जलमुत्तरेश निशा रवोनो बहुपात्कफा च ॥
समोदयो वारिचरोऽतिसंग प्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः॥९॥

भा०—अब वृश्चिक राशिका स्वरूप कथन करते हैं-स्थिरसंज्ञा, सफेद रङ्ग, स्त्री राशि, जलतत्त्व, उत्तर दिशाका स्वामी, रात्रिमें बली, शब्दहीन, बहुस्त्राव, कफ प्रकृति, सम उदय, जलचारी, बहुतसन्तान व स्त्री सङ्ग, शुभ राशि [illegible] अङ्ग, और ब्राह्मण वर्ण ये लक्षण अलि कहिये वृश्चिकराशिके हैं ॥९॥

अथ धनुराशिस्वरूपमाह ॥

ना स्वर्णभाः पित्तसमोदयोऽग्निरशब्दो दिनं प्राक्[illegible]पीतः ॥
[illegible] धनुरुन्नत मूर्तिःसंगो द्विमूर्तिर्द्विपदोऽग्निरुग्रः॥१०॥

भा०—अब धनुराशिका स्वरूप वर्णन करते हैं,-पुरुष राशि, सुवर्ण [illegible] रङ्ग, [illegible] राशि, समउदय, [illegible], दिनमें बली, पूर्व दिशाका [illegible], [illegible] अग्नितत्त्व, गरम स्वभाव, पित्त-

पुष्टि, दोनों संतान व स्त्री संग, द्विस्वभाव, (पूर्वार्ध स्थिर उत्तरार्ध चर) तो पश्चात् रात्रि बली, और शूद्रस्वभाव, ये धनु राशिके लक्षण हैं ॥ १० ॥

अथ मकरराशिस्वरूपमाह ॥

मृगआस्यमाऽग्रेंऽस्तो वनाशा स्त्री पिंगरूक्षः शुभभूमिशीतः ॥
स्वल्पप्रजासंगमयोरात्रिरात्रौ चतुष्पाद्विषमोदयो विट् ॥ ११ ॥

भा०—अब मकर राशि का स्वरूप कहते हैं-चर संज्ञक, पृष्ठोदय, स्त्रीराशि, दक्षिण दिशा का स्वामी, वनचारी, पिंगल वर्ण रूखा शरीर, शुभ भूमिचारी, शीतलस्वभाव, थोड़े सन्तान व स्त्री संग जिसके पशुप्रकृति, रात्रिमें बली पूर्वार्ध में चार चरण और उत्तरार्धमें जलचर, विषम-उदय, वैश्यवर्ण ये मकरराशिके लक्षण जानना ॥ ११ ॥

अथ कुम्भराशिस्वरूपमाह ॥

कुम्भोऽपदो ना दिनमध्यसंगप्रसूः स्थिरः कर्बुरवन्यवायुः ॥
स्निग्धोऽप्युष्णखण्डस्वरतुल्यधातुः शूद्रः प्रतीची विषमोदयोग्रः ॥१२॥

भा०—अब कुम्भराशिका स्वरूप वर्णन करते हैं-अपद (चरणरहित) पुरुषराशि, दिनमें बली, मध्यम प्रजा व स्त्री संग, स्थिरसंज्ञक, चित्रितवर्ण, वनचारी पवनतत्त्व, चिकना शरीर, उष्ण (गरम) स्वभाव, पश्चिमस्वामी, वात पित्त व कफ ये तीनों समान जिसमें ऐसी प्रकृति, शूद्रवर्ण, विषमउदय, उग्र (क्रूर) स्वभाव, ये कुम्भराशि के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

अथ मीनराशिस्वरूपमाह ।

मीनोऽपदः स्त्री कफवारिरात्रिर्निः शब्द बभ्रुर्द्वितनुर्जलस्थः ॥
स्निग्धोऽतिसंगप्रसवोऽपि विप्रः शुभोत्तराशेट् विषमोदयश्च ॥१३॥

भा०—अब मीनराशिका स्वरूप वर्णन करते हैं, पैरों से हीन, स्त्रीराशि कफप्रकृति, जलतत्त्व, रात्रिमें बली, शब्दरहित न्योलाके समान रंग द्विस्वभाव (पूर्वदल स्थिर परदल चर) जलचर, चिकनाशरीर, बहुत प्रजा व स्त्री संग, ब्राह्मणवर्ण, सौम्य स्वभाव उत्तरदिशाका स्वामी, विषमउदय और शिथिल-अंग, ये मीनराशि के लक्षण हैं ॥ १३ ॥

अथ वर्षसारिणीयम् ।

गताब्द ध्रुवांकेषु जन्मवारादि संभोजनात् वर्ष प्रवेशे वारादिर्भवति

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	३	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	५७	१२	२८	४४	५९	१४	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

[illegible] को [illegible] में मिलाना सुगम समझा जिससे [illegible] सम्प्रदायानुसार [illegible] है।

[illegible] ३६ [illegible] ३० पल ५३ दिनमान

[illegible]

[illegible] ॥

अथ तिथिमानमाह ॥

शिवघ्नोऽब्दः स्वखाद्रीन्दुलवाढ्यः खाग्निशेषितः ॥ जन्मतिथ्यन्वितस्तत्रतिथावब्द प्रवेशनम् ॥१७॥

भाषार्थ -- अब वर्ष प्रवेश समय का तिथि साधन करते हैं गतवर्ष संख्या को ११ से गुणाकर दो जगह रक्खें पहले में १७० का भाग देकर लब्धांक को दूसरे स्थान में जोड़ दो, तदन्तर जन्मकालकी तिथि शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा से लेके जन्मतिथि तक जो संख्या हो उसको युक्त करके तीस ३० का भाग देवें जो शेष रहे उसी संख्या की तिथि में वर्ष का प्रवेश होता है परन्तु कभी कभी पूर्व तिथि में और कभी कभी आगे वाली तिथि में भी वर्ष प्रवेश होता है पूर्वोक्त प्रकार से लागे हुये वार में वर्ष प्रवेश होता है,

तिथि से वार प्रधान है और जन्ममास से कभी पूर्व मास में कभी पीछेवाले मास में वर्ष प्रवेश होता है उसका प्रमाण यह है कि, "तत्कालेऽर्को जन्मकाल रविणा स्यायतः समः । स एव मासो विज्ञेयो वर्षप्रवेशो बुधैर्ध्रुवम् । १" जन्मकालीन सूर्य के तुल्य सूर्य जिस महिना में हो वही महीना वर्ष प्रवेश का जानना, ऐसा पंडितों करके निश्चय किया गया है, नीचे ग्रन्थान्तर में कहे हुये रीति से नक्षत्र और योग निकालने की रीति भी टिप्पणी लिखते हैं सो, 'व्योमेन्दुभिः' इत्यादि पद्य से देखना ॥ १७ ॥

अथ तिथ्यानयनस्योदाहरणम् ।

अथ वर्षप्रवेशसमयो लिख्यते ।

अब वर्ष प्रवेश समय लिखा जाता है,—सम्वत् १६८५ शके १५५० माघ कृष्ण सप्तमी मङ्गलवार घटी २७ पल ३८ हस्त नक्षत्र घटी १७ पल २८ सुकर्मा योग घटी २३ पल ५८ इस शुभ दिन में सूर्य के उदय से गत घटी १२ पल १८ विपल ३० में महादेवजी का वर्ष प्रवेश तथा गतवर्ष गत ३७ यह भाषा में उदाहरण लिखा तथा संस्कृत में वर्ष प्रवेश समय इस प्रकार लिखते हैं कि—साधारण श्रेणी के पण्डितों को संस्कृत में लिखने का ज्ञान सुगमता से आन पड़े ।

श्रीः आदित्यादिग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ॥ दीर्घमायुः प्रयच्छन्ति यस्यैषा वर्ष पत्रिका ॥ १ ॥ श्री शुभविक्रमार्क संवत् १६८५ तत्र श्रीमन्नृपशालिवाहनकृतशाके १५५० अत्र सौम्यायने भास्करे शिशिरर्तौ माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ सप्तम्यां मङ्गलवासरे घटी २७ पलेषु ३८ हस्तनक्षत्रे घटी १७ पलेषु २७ सुकर्मायोगे घट्यादि २७ । २८ बवनामकरणे एवं पञ्चाङ्गविशुद्धौ तत्र दिनमानं घट्यादि २५ । २८ दिनार्धं घट्यादि १२। ४४ सकलार्कांशाः ७।२०।६ तद्दिने श्री सूर्योदयादिष्टं घट्यादि १२। १८ । ३० तदा मेषलग्नोदये [illegible] ३८ गताब्दाः ॥ ३७ ॥

अथ वर्षप्रवेशसमये स्पष्टा ग्रहाः साध्याः तत्रादौ चालन माह: ग्रंथान्तरे ।

प्रस्तारस्तु यदाग्रे स्यादिष्टं संशोधयेद्गणम् ॥ इष्टकालं यदाग्रे स्यात्प्रस्तारं शोधयेद्धनम् ॥ १ ॥ अथवा । स्वेष्टादग्रे भवेत्पंक्तिःपंक्तेस्स्वेष्टं विशोधयेत् ॥ स्वेष्टात्पृष्ठे भवेत्पंक्तिस्स्वेष्टे पंक्तिं विशोधयेत् ॥ ऋणं धनं तथा ज्ञेयं चालने विधिरेव हि ॥ २ ॥

भा०—अब वर्ष प्रवेश समय सूर्य आदि ग्रहोंका स्पष्ट करना लिखते हैं तहां प्रथम चालन प्रकार कहतेहैं, पंचांग (तिथिपत्र) में जो आठ २ दिन में सूर्यादि ग्रह स्पष्ट किये होते हैं उसको प्रस्तार वा पंक्ति कहते हैं, यह प्रस्तार जो इष्टकाल (जन्म दिन वा वर्ष प्रवेश दिन] में आगे होवे तो प्रस्तार के वार घटी पलमें इष्ट समय का वार घटी पल घटा देवे, जो शेष

रहैं वही वारादि ऋण चालन होता है, तथा जो इष्टकाल आगे होवै और प्रस्तार पीछे होवे तो इष्टकाल के वार घटी पलमें प्रस्तार का वार घटी पल घटा देवै तो शेष अङ्क वारादि धन चालन होता है, इस प्रकार ऋण धन चालन का प्रकार जानना इसका प्रयोजन आगे है ॥ २ ॥

अथ ग्रहस्पष्टीकरणमाह ।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषट्हृता ॥ लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥ १८ ॥

भा०—गत और ऐष्य दिवसों करके अर्थात् ऋण चालन और धन चालन से ग्रहों की गतिको गुणा कर फिर गोमुत्रिका क्रम से साठ ६० का भाग देने से जो अंश कला विकलात्मक लब्ध होवै उसको पंचांग स्थितग्रहों में घटावै वा युक्त करै अर्थात् ऋण चालन होवै तो घटावै और धन चालन होवै तो जोड़ देवै, जोड़ने से व घटाने से वह तात्कालिक स्पष्टग्रह होवेगा यहां वक्रगति वाला ग्रह और राहु केतु इन सबों का चालन मार्गी ग्रहों की अपेक्षा से विपरीत जानना अर्थात् धनचालन में ऋण चालन और ऋण चालन में धन चालन ऐसा क्रम जानना चाहिये ।

अथ ग्रहसाधनोदाहरणम् ।

अथ इष्टकालात्प्राङ्नक्षत्रसमाप्तौ भयात भभोग साधनम् ।

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ताः ॥ भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडीसहिता भभोगः । चेदिष्टकालात्प्रागेव ऋक्षं यदि समाप्यते । तदिष्टकालतो ऋक्षनाडीःशोध्या गतर्क्षकम् भभोगः पूर्ववत्कार्यस्ततः साध्यस्तु चन्द्रमा ॥ २ ॥

भा०- अब इष्टकाल से पहिले नक्षत्र के समाप्त होने का प्रकार वर्णन करते हैं जहाँ प्रथम भयात भभोग साधन करते हैं कि गत नक्षत्र की घड़ियों को ६० साठ में घटा देवें जो घड़ी पल शेष रहें उनको सूर्योदय से इष्ट घड़ियों में जोड़ देवे, जोड़ने से उसकी भयात संज्ञा होती है। और अपने नक्षत्र की घड़ियों को साठ में घटाई हुई नाड़ियों में जोड़ देने से भभोग होता है ॥ १ ॥ जो इष्टकाल से पहिले ही नक्षत्र समाप्त होजावें तो इष्टकाल घड़ियों में नक्षत्र घड़ी पल घटा देने से भयात होता है और गतनक्षत्र नाड़ियों को साठ में शोध (घटा) कर उसी में एक दिन वाले नक्षत्र की नाड़ियों के जोड़ देने से भभोग हो जाता है, इस प्रकार भयात व भभोग बनाकर तत्काल चन्द्रमा का साधन करना ॥ २ ॥

अथ चन्द्रसाधनमाह ।

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत् खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ॥ नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा ४८००० भभोगेन भक्ताः । १६ ॥

भा०—अब चन्द्रमा के स्पष्ट करने का प्रकार वर्णन करते हैं— भयात अर्थात् वर्ष प्रवेश समय जो नक्षत्र हो उसकी भुक्त घड़ियों को साठ ६० से गुणा देवें फिर उसी में भभोग अर्थात् इष्ट नक्षत्र की सम्पूर्ण घड़ियों से भाग लेवें, भाग लेने से जो लब्ध मिले, उसको ६० साठ से गुणा किये हुये अश्विनी आदि गत नक्षत्रों में जोड़ देवे फिर जोड़े हुये में नवसे भाग लेवें भाग लेने पर जो लब्धांक मिले सो अंश जानना, शेष बचे हुये को ६० से गुणा करें, उसमें भी नवका भाग देवें, लब्धांक को कला जानें, एवं शेष अङ्कको ६० से गुणाकर नवका भाग देने पर लब्धांक को विकला जानें, अंशों में ३० का भाग देकर राशि निकाल लेवें, अब गति लावने का प्रकार

कहते हैं कि—अडतालीस हजार को ६० से गुणा करके भभोग से भाग लेवै, भाग लेने से जो लब्धांक मिलै उनको चन्द्रमा की गति समझे शेष बचे हुये को साठ से गुणा करके भभाग से भाग लेवे, भाग लेने पर जो लब्ध अङ्क मिलें वह विगति जानना. इस प्रकार चन्द्रमा के स्पष्ट करने का प्रकार कहा, आगे उदाहरण कहते हैं—॥ १६ ॥

अथ चन्द्रमासाधनोदाहरणम् ।

अब चन्द्रमा के स्पष्ट करने का उदाहरण वर्णन करते हैं–वर्ष प्रवेश के समय में हस्त नक्षत्र के पूर्व दिनमें भुक्त घटी पल ४१।२४ है इनको इष्ट घटी पल १२।१८ में जोड दिया जोडने से इष्ट घटीपर्यन्त हस्त नक्षत्र की भयात संज्ञक भुक्त घडिया ५३।४२ हुई, इनको ६० से गुणा दिया तो ३२२२ हुये, और भभोग ५८।५२ है, इन दोनों भाज्य भाजक को ६० से गुणा दिया तो भाज्य १८३३२० हुआ, और भाज्य भाजक ३५।३१ भया, इसी से भाग लिया, भाग लेने पर लब्धांक ५४।४४।१ यह घट्यादि स्पष्ट भयात भया, इसमें गत नक्षत्र संख्या १२ को ६० से गुणा कर ७२० भया इसको जोड दिया, जोडने से ७७४।४४।१ भया, इसको २ से गुणा किया तो १५४८ । २८ । २ हुये, इसमें ९ का भाग दिया, भाग देकर लब्धांक १७२ । ९ । ४७ अंशादि भये, अंशों में ३० का भाग दिया, भाग लेने से ५ । २२ । ९ । ४७ यह तात्कालिक राश्यादि चन्द्रमा भया, अब गति [illegible] का प्रकार कहते हैं कि—अडतालीस हजार को साठ से गुणा किया तो २८८०००० [illegible] और पूर्वोक्त भाजक ३५।३१ से भाग, लिया, भाग लेने पर ८१५।२४ यह [illegible] चन्द्रमा की स्पष्ट गति विगति जानना इस प्रकार, तात्कालिक ग्रहों को [illegible] करे,

अथ सूर्यादयो ग्रहाः स्पष्टाः सगत्याः									
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्र.
[illegible]	८	८	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	रा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अं
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	क.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३६	[illegible]	३६	वि.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३	ग
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि

अथ [illegible] नतसाधनमाह ।

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटी विहीनम् ॥
दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखण्डं त्वपरं नतं स्यात्॥२०॥

[illegible] ॥ २० ॥

अथ नतोदाहरणम् ।

उदाहरण—[illegible] २५।२० [illegible] १२।१४ [illegible] १२।१८।३० [illegible] ०।२५।३० [illegible] ॥ १ ॥

अथ लग्नादि भाव साधन माह ।

तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसंगुणात् ॥ स्वोदयात्खाग्नि३० लब्धं यद्भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ॥२१॥ इष्टनाडीपलेभ्यश्च गतगम्यान्निजोदयान् ॥ शेषं खत्र्याहतं भक्तमशुद्धेन लवादिकम् ॥२२॥ अशुद्धशुद्धभे हीनं युक् तनुर्व्ययनांशकं ॥ एवं लंकोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥२३॥ पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वद्दशमं

१ [illegible] है ।

भवेत ॥ सषडभे लग्नखे जाया तुर्यौलग्नोन तुर्य्यतः ॥२४॥ षष्ठांशयुक्तनुसंधिरग्रे षष्ठांशयोजनात् ॥ त्रयस्ससन्धयो भावाःषष्ठांशोनैक्ययुक् सुखात् ॥ २५ ॥ अग्रे त्रयः षडेवंते भार्धयुक्तापरेऽपि षट् ॥ खेटभावसमे पूर्ण फलं सन्धिमे तुखं ॥ २६ ॥

भावार्थः—अब लग्नादि भावों का साधन वर्णन करते हैं-तात्कालिक कहिये इष्टकाल के समय सायनार्क के अर्थात् स्पष्ट सूर्य में अयनांशों को संयुक्त कर देने से सायनार्क संज्ञा होती है,उस सायनर्क के भुक्त अथवा भोग्यांशों को निजदेशोदयी राशिसे गुण देवे अर्थात् जब ऋण लग्नसाधन करना हो तो भुक्तांशों का ग्रहण करना और धन लग्नसाधन करना हो तो भोग्य अंशों को लेना योग्य है, उनको अपने देशीय उदयराशि प्रमाण से गुणा करे, फिर उसमें तीसका भाग देवे, भाग देने से जो लब्ध अंक मिलें वे सूर्य के भुक्त अथवा भोग्य अंक पलादि होते हैं, उसी भुक्त व भोग्य को इष्टघटी पलों में घटाय देवे ॥ २१ ॥ घटा देने से जो शेष रहे उसमें अपने उदय से भुक्त व भोग्य राशि प्रमाण को घटावे अर्थात् जब भुक्त काल साधा गया हो तब गुणित उदय में पिछाड़ी के उदय राशियों को घटावे और जब भोग्यकाल साधा गया हो तो गुणित उदय में अगाड़ी के उदय राशियों को घटाना चाहिये घटाने से जो शेष मिले उसको तीससे गुणा करे फिर उसीमें अशुद्धोदय से भाग देवे भाग देने से जो लब्ध अंशादि मिलें ॥ २२ ॥ उनको अशुद्ध में घटा देवे और शुद्ध में जोड़ देवे अर्थात् ऋणलग्न के साधन करने में [illegible] जितनी संख्या वाला अशुद्धोदय होवे उतनी राशि [illegible] अंशादि का भी घटाय देवे और धन लग्न के साधन करने में [illegible] जितनी संख्या वाला शुद्धोदय होवे उसीमें जोड़ देवे, तदनन्तर [illegible] को उसमें घटा देवे, घटाने से जो शेष रहता है वह राश्यादि [illegible] होते हैं, इसी प्रकार पूर्वोक्त रीति से सायनार्क के भुक्त काल व [illegible] द्वारा इन अंशादिकों को क्रमपूर्वक स्पष्ट करने के अर्थ [illegible] से गुणा करे और ३० से भाग लगाकर पलादि का ग्रहण [illegible] भुक्त व भोग्य [illegible] अंकोंको पूर्व ना या पश्चिमन्त में

शोधन करै और शेष सब क्रिया पूर्व कहे अनुसार करै तो दशम भाव स्पष्ट हो जाता है, अर्थात् जब पूर्वनत होय तब पूर्वनत को इष्टकाल कल्पना करके उसीके लंकोदयी राशियों से सूर्य के भुक्त कालको घटाकर शोधन करै और बाकी शेष क्रिया लग्न साधन के समान करै, और जब पश्चिमनत होवै तो पश्चिमनत को ही इष्टकाल कल्पना करके उसी में लंकोदयी राशियों से सूर्य के भोग्य कालको घटाकर शोधन करै अन्य सब क्रिया लग्न के समान करनी चाहिये तो यह दशम भाव सिद्ध होता है अब अन्य भावों का साधन कहते हैं कि, लग्न में छः राशि जोड देने से सप्तम ७ भाव होता है, और दशम भावमें छः राशि जोड देने से चतुर्थ ४ भाव होता है, इस प्रकार ये चार भाव हुये. अब आगे के भावोंका साधन प्रकार कहते हैं, कि–चौथे भावमें लग्न घटा देवे ॥ २५ ॥ उसका षष्ठांश (छठा हिस्सा) ग्रहण करके लग्न में जोड देवे तो लग्न की सन्धि होती है. फिर उसमें षष्ठांश जोड दिया तो द्वितीय भाव होता है, इसमें षष्ठांश युक्त किया तो दूसरे भावकी संधि होती है. इसी प्रकार षष्ठांश जोडने से तीन भाव सहित संधियें होते हैं, फिर षष्ठांश को एक राशि में घटाकर उसको चौथे भाव में जोडना प्रारम्भ करै २५ तो चौथे भावकी संधि से छठे भावकी सन्धि से तीन भाव स्पष्ट होजाते हैं, इस प्रकार लग्न से छठे भावतक सिद्ध करके शेष छः भावों को सिद्ध करके अर्थ छः में छः राशि संयुक्त कर देवै तो बाकी भाव सिद्ध होजाते हैं, जैसे–तनुभाव में ६ राशि मिलने से सप्तम भाव दूसरे भावमें ६ युक्त करनेसे आठवां भाव, तीसरे भाव में ६ राशि जोडने से नवां भाव चौथे भाव में ६ राशि जोडने से दशम भाव, पंचम में ६ जोडने से लाभ भाव, छठे भाव में ६ जोडने से बारहें भावकी सिद्धि होती है, सन्धियों में छः छः राशि जोडने से उस उस भावकी सन्धि होती है, इस प्रकार ये १२ भाव भी सिद्ध होते हैं, जो खेट (ग्रह) भाव के समान होवै तो पूर्ण फल करै है और जो ग्रह सन्धि के समान होवे तो शून्य फल करै है ॥ २६ ॥

भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालश्च शुद्धये त्रिंशन्निघ्नात्स्वोदयाप्तं लवाद्यम् ।
हीनंयुक्तंभास्करतेत्तनुःस्याद्रातो लग्नं भार्धयुक्ताद्रवेस्तु ॥ २७ ॥

भा०–अब यह आशंका है कि, उक्त रीति से लाया हुवा सूर्य का

भुक्तकाल अथवा भोग्यकाल यदि वह इष्टकी घटी पलों से नहीं घटे तो किस प्रकार लग्न साधन करना चाहिये। तहां समाधान कहते हैं, कि—जब सूर्यका भुक्त अथवा भोग्य इष्टकी घटी पलों से शुद्ध नहीं होवै, तो इष्ट घटी पलको तीस से गुणा करे अनन्तर सायन सूर्य के राश्युदय से भाग लेवै भाग लेने में जो अंशादिक लब्ध मिलें उनको सूर्य में घटा देवे वा जोड देवै, अर्थात् जब सूर्य का भुक्त आया हो तो लब्ध हुये अंशादिकों को सूर्य में घटा देवै और जब सूर्य का भोग्य आया हो तब लब्ध हुये अंशादिकों को सूर्य के मध्य में जोड देना चाहिये घटाने व जोड देने से ही लग्न होती है और यदि रात्रि में लग्न का साधन करना होवै तो छै राशियों को सूर्य में जोड देवें जोडकर भुक्त व भोग्य काल से लग्नका साधन करै और ऐसे ही रात्रि के विषे दशम लग्न के साधन में भी छै राशियों को सूर्य में जोड कर भुक्त काल व भोग्यकालका साधन करै. अन्य सम्पूर्ण क्रिया पूर्वोक्त प्रकार करने से दशम लग्न सिद्ध होती है ॥ २७ ॥

अथ अयनांशसाधनम् (ग्रन्थान्तरे)

वेदाब्ध्यब्ध्यूनःखरसहृतः शकोयनांशाः ॥ तथाच ॥
भूनेत्रवेदोनशक त्रिनिघ्नोव्योमाभ्रनेत्रैर्विहृतोऽयनांशाः ।
त्रिघ्नोऽर्क राशिःस्वदलेन युक्ता तावन्मिता स्याद्धिकलभिराढ्या ?

भा०—अब लग्न और दशम साधन के अर्थ अयनांश साधन प्रकार [illegible] है—शालिवाहन शाके में ४४४ घटाय देवें और साठका भाग देवें, भाग देने से [illegible] को अंश, और शेष को कला जानना, उदाहरण—इष्ट शाके १५५० में ४४४ घटाया तो ११०६ शेष रहे, इनमें ६० का भाग लगाया, [illegible] लब्ध १८ अंश, शेष २६ कला अर्थात् १८।२६ ये अयनांश ग्रह [illegible], [illegible] यहां अयनांश ग्रहण करते हैं परन्तु [illegible] [illegible] लिखे प्रकार अयनांश सर्वत्र [illegible] कि इष्ट शाके में ४२१ चारसौ इक्कीस घटाय, देवें, घटाने [illegible] ७०० से भाग लेवें, भाग [illegible] ६० से गुणाकर ७०० में भाग

देने पर अयांश की कला आवेगा, शेष को ६० से गुणाकर २०० से भाग देने से कलादि की विकला आवेगा, ये अयनांश हुए, जिस महीना की तात्कालिक अयनांश बनाना होय तो उस महीना की सूर्य राशि को तिगुना करके उसका आधा जोड़कर लिखना चाहिये और अयनांश के विकलात्मक में संयुक्त कर देवे तो तात्कालिक अयनांश होते हैं उदाहरण—शक शाके १५५० में ४२१ घटाये तो ११२९ रहे, इनको तीन से गुणा किया तो ३३८७ हुये, इनमें २०० दो सौ का भाग दिया. भाग देने से लब्ध १६ अंश हुये, शेष १८७ को ६० से गुणा किया तो ११ । २२० हुये, २०० का भाग दिया तो लब्ध ५६ कला हुए शेष २० को ६० से गुणा किया तो १२०० हुये २०० का भाग दिया, देने से लब्ध ६ विकला हुये तो १६ । ५६ । ६ अंशादि अयनांश भये यहां माघ मास में मकर राशि के सूर्य हैं तात्कालिक अयनांश बनाना है तो मकर राशि की संख्या १० को तिगुना किया तो ३० हुये इनका आधा १५ जोड़ दिये ४५ हुये यह विकलात्मक ४५ अङ्क को अयनांश के विकलात्मक ६ में जोड़ दिये. जोड़ देने से ५१ हुये तो तात्कालिक अंशादि १६ । ५६ । ५१ ये अयनांश भये इस प्रकार अयनांश साधन करके लग्न साधन का उदाहरण लिखते हैं ॥ १ ॥

अथ लग्नसाधनोदाहरणम् ।

अब लग्न बनाने का उदाहरण लिखते हैं, स्पष्ट सूर्य राश्यादि ९ । ७ । ३० । ९ इनमें अयनांश १८ । २६ हुये तो स्पष्ट सूर्य में युक्त किया तो तात्कालिक सायनार्क १० । २५ । ५६ । ६ हुआ यह युक्त राश्यादि सूर्य में राशि को छोड़ भुक्तांशादि २५ । ५६ । ६ हुये इनको ३० अंशों में घटाया तो ४ । ३ । ५४ ये भोग्यांश हुये, यहां पर यह विचार लेना योग्य है, कि—भुक्तांश थोड़े हों और भोग्यांश अधिक हों तो भोग्यांशों पर से लग्न बनावें यहां इस उदाहरण में भोग्यांश थोड़े हैं, इसकारण यहां भोग्यांशों पर से लग्न का बनवाना निश्चय किया, क्योंकि थोड़े अंशों से क्रिया करने में लघुता होती है, भोग्यांश ४ । ३ । ५४ को मकर राशि के उदय २९८ से गुणा किया तो १२ । ११ । २२ । १२ हुये इसमें ३० का भाग लिया भाग लेने से

जन्मभूमावुदयचक्रम् ।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
२००	२३९	२९८	३४८	३४६	३४३
मीन	कुम्भ	मकर	धन	वृश्चिक	तुला

२०।२२।४४ यह सूर्य का भोग्य पलादि भया, इसको इष्ट नाड़ी पल १२।१८ को पलात्मक किया तो ७३८ हुये, इनमें सूर्य का भोग्य पलादि घटाया घटाने से शेष ६६७।३७।१६ हुये इसमें मकर के आगे कुम्भ के उदय २३९ को घटाया, घटाने से ४५८।३७।१६ शेष रहे, फिर कुम्भ के आगे मीन के उदय २३ को घटाया, घटाने से २५५।३७।१६ शेष रहे अनन्तर मीन के आगे मेष के उदय २०३ को घटाया तो ५२।३७।१६ शेष रहा, इसमें मेष के आगे वृष का उदय २३९ यह घट नहीं सकता, इस कारण वृष की अशुद्ध संज्ञा हुई, इससे शेष ५२।३७।१६ को तीस से गुणा दिया, गुणा देने से १५।७८।३८ हुये इसमें अशुद्धोदय वृष २३९ से भाग दिया भाग देने से ६।३६।१८ यह अंशादि लब्ध हुये इनमें अशुद्धोदय पूर्व मेष राशि की संख्या १ को जोड़ दिया, तो १।६।३६।१८ यह राशि सहित अंशादि हुये, इनमें अयनांश १८।२६ को घटा दिया तो ०।१८।१०।१६ यह राश्यादि स्पष्ट लग्न भया यह स्पष्ट लग्न का उदाहरण कहा।

अथ दशमलग्नसाधनोदाहरणम्।

अथ दशम लग्न के साधन का उदाहरण कहते हैं—दिवा पूर्वनत ०।२५।३० इसी को यहां उन्नतकाल कल्पना किया, सायनार्क ९।२५।५६।६ इसका भुक्तांशादि २५।५६।६ लंकोदय मकर का प्रमाण २२३ से गुणा किया फिर ३० से भाग लगाया, भाग लेने से २७? ।१४।० यह सूर्य का भुक्त-काल पलादि भया, और उन्नतकाल ०।२५।३० में शुद्ध नहीं [illegible], इस कारण यहां "भुक्त भोग्य [illegible] स्पष्टकालात्" [illegible] इस श्लोक के कथनानुसार रीति से दशम लग्न [illegible] इसी से उन्नत ०।२५।३० का तीस से गुणा [illegible] करने से ७६५ हुये इनमें लङ्कोदय ३२३ का [illegible] भाग लेने से २।१३।६ यह अंशादि लब्ध

लंकोदयचक्रम्		
मे	२७८	मी
वृ	२९९	कुं
मि	३२३	म
क	३२३	धं
सिं	२९९	वृ
क	२७८	तु

[illegible]

हुये इसको सप्तमादि भाव ७।७।१२।१६ में घटाया, घटाने से ८।५।८।० यह सप्तमादि दशम भाव सिद्ध भया।

अथ धनादिभावसाधनोदाहरणम्।

अब धनादि भावों के साधन का उदाहरण लिखते हैं लग्न ०।१८।१०। १६ इसमें ६ राशि जोड़ने से ६।१८।१०।१६ यह सातवां भाव हुआ। दशमभाव ९।५।८।० इसमें ६ राशि जोड़ने से ३।५।८।० यह चौथा भाव हुआ, चौथे भाव में लग्न को घटाया, घटाने से २।१६।५७।४४ यह शेष रहा इसमें ६ से भाग लिया, भाग लेने से ०।१२।४८।१७ यह षष्ठ्यादि हुआ अर्थात् षष्ठांश भया, इस ०।१२।४८।१७ षष्ठांश को लग्न ०।१८।१०।१६ में जोड़ दिया तो १।०।५९।३३ यह लग्न की विरामसन्धि हुई इसमें षष्ठांश जोड़ दिया तो १।१३।४७।५० यह धन (दूसरा) भाव सिद्ध भया। धनभाव में षष्ठांश जोड़ दिया तो १।२६।३६।७ यह दूसरे भाव की सन्धि हुई, इसमें षष्ठांश जोड़ दिया तो २।९।२४।२४ यह तीसरा भाव भया। इसमें षष्ठांश जोड़ दिया तो तीसरे भाव की सन्धि २।२२।१२।४१ हुई, अब षष्ठांश ०।१२।४८।१७ को १ राशि में घटाया तो ०।१७।११।४३ यह शेष रहा इसको चौथे भाव में जोड़ दिया। जोड़ने से ३।२२।१९।४३ यह चौथे भाव की सन्धि हुई, इसमें एक से बढ़ाये हुये षष्ठांश को जोड़ दिया तो ४।९।२८।६ यह पांचवां भाव भया फिर एकोन षष्ठांश ०।७।११।४३ को जोड़ दिया जोड़ने से ४।२६।३९।९ यह पञ्चम भाव की सन्धि हुई, इस ४।२६।३९।९

लग्नकुण्डली

१२ भावकुण्डली

अथ तन्वादिद्वादशभावः ससन्धयः स्युः

भा	त	सँ	ध	सँ	सँ	सँ	सु	सँ	सु	सँ	रि	सँ
रा	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	६
अं	१८	०	१३	२६	९	२२	५	२२	९	२६	१३	०
क	१०	५९	४९	३९	२८	१८	८	१८	२८	३८	४९	५९
वि	१६	५३	३०	७	४४	२१	०	२३	४६	९	३२	५५

भा	जा	सँ	मृ	सँ	ध	सँ	क	सँ	ला	सँ	व्य	सँ
रा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	००
अं	१८	०	१३	२६	९	२२	५	२२	९	२६	१३	०
क	१०	५८	४९	३९	२८	१८	८	१८	२८	३९	४९	५९
वि	१६	५३	३०	७	४४	२१	०	२३	४६	९	३२	५५

में एकोन षष्ठांशको जोड दिया तो ५।१३।४६।३२ यह छठा भाव हुआ फिर एकोन षष्ठांश को जोडा तो ६।०।५१।५५ यह छठे भाव की सन्धि हुई, इस इस प्रकार ये छः भाव स्पष्ट हुए, अब इन्हीं सन्धियों सहित छः भावों में प्रत्येक छः के जोड़ने से अन्यभाव संधि सहित क्रमशः सिद्ध होजाते हैं इन सबों को सरलता से जानने के अर्थ भावचक्र को देखो जिससे शीघ्र समझ में आजायेगा ॥

अथ भावस्थग्रहफलम् ।

खेटे सन्धिद्वयान्तस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ।
हीनेऽधिके द्विसन्धिभ्यां भावे पूर्वापरे फलम् ॥२८॥

भा०—अब भावमें स्थित ग्रह का फल कथन करते हैं कि—दोनों संधियोंके बीच जो भाव हो उसी भाव में स्थितग्रह उसी भावका फल करने वाला होता है, अर्थात् आरम्भ सन्धि से अधिक विराम सन्धि से न्यून ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उसी भाव का फल देता है, और आरम्भ विराम इन दोनों सन्धियों से हीन अथवा अधिक ग्रह के होते हुए पूर्व व पर भाव में फल होता है, अर्थात् जो आरम्भसन्धि से न्यून जो ग्रह होवे तो वह पूर्व भाव का फल देता है तथा जो विरामसन्धि से अधिक हो तो पर (आगे) भाव का फल देता है, यहां आरम्भ सन्धि और विराम सन्धि का प्रयोजन यह है कि पहिले जो लग्न की सन्धि सो लग्न की विराम सन्धि कहाती है, और दूसरे भाव की आरम्भसन्धि कहाती है ॥ २८ ॥

अथ [illegible]माह ।

[illegible] कार्यं विंशत्या गुणितं भजेत् ।
[illegible] विंशोपकाः स्मृताः ॥२९॥

भा०—अब त्रिंशांश फल कहते हैं ग्रह और राशि का अंतर कर फिर उसे ३० से गुणा कर अंशादि करके उनमें भाग और राशि के अंतर से भाग देवे तो जो अंशादि फल होवे उसी का त्रिंशांशों में विनियोग करना है उनसे उनके विरुद्ध फल कहना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ त्रिंशांशफलोदाहरणम् ।

जब त्रिंशांश के उदाहरण को कहते हैं—सूर्य राश्यादि ४।७।३६।०।६ इसकी राशि ६।२२।२।८।२८ इन दोनों का अंतर किया तो शेष १४।२४ ३७ रहे, इनको ६० से गुणा किया, गुणा देने से २६।१४।४० पर भाग हुआ और भाग रहा ३।१८।१० इनको राशि ५।२२।१८।२२ इससे अंतर किया तो शेष २।२।१४।२७ रहे, यह भाजक जानो, भाग लेने के वास्ते भाज्य अंतर को ६० से गुणा किया, भाज्य २६।१४।४० को । ६० से गुणा किया तो १५७४८० हुए, और भाजक १७।१६।२३। को ६० से गुणा किया तो ६१८३३ हुए उनमें भाग देने पर लब्ध १७।१४ यह सूर्य का त्रिंशांशफल हुआ अर्थात् त्रिंशभाग में सूर्य का १७।१४ विश्वा फल आया इसी प्रकार चन्द्र आदि ग्रहों का विश्वाफल निकालना २६

अथ राशिस्वामिदृष्काणानाह ॥

भौमोशनःसौम्यशशीनचौतसितारेज्या अर्किमन्दांगिरसो गृहेश्वराः ।
आद्याः कुजाचार्यसितो पि मध्यमास्सितात्तृतीया क्रियतो दृकाणपाः ॥

भावार्थ—अब द्रेष्काण बलाबल विचारने के अर्थ प्रथम राशियोंके स्वामी और द्रेष्काणाधीश जानने को कहते हैं—मेषराशिको स्वामी भौम [मङ्गल] वृष का स्वामी उशना कहिये शुक्र, मिथुन का स्वामी सौम्य कहिये [बुध] कर्क का शशि [चन्द्रमा] सिंह का इन [सूर्य] कन्या का वित् (बुध) तुलाका सित (शुक्र) वृश्चिक का आर (मङ्गल) धनुका ईज्य (बृहस्पति) मकर का आर्कि (शनैश्चर) कुम्भ का मंद (शनि) और मीनका आंगिरस (गुरु) ये राशियों के स्वामी हैं, अब द्रेष्काण को कहते हैं कि राशि के ३० अंशोंमें तीसरे भाग अर्थात् १० अंशोंको द्रेष्काण कहतेहैं एकराशिमें तीन

द्रेष्काण होते हैं, तहां पहला द्रेष्काण मेषादि राशियों में मङ्गल से गण[illegible] करें, दूसरा द्रेष्काण सूर्यसे तीसरा द्रेष्काण शुक्रसे गणना करें पहला द्रेष्काण १ से

अथ द्रेष्काणचक्रम्

राशिषु	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म.	कु
आद्यः १०	म	बु	वृ	शु	श	र.	च	म	बु	वृ	शु
मध्यमा २०	र	च	म	वृ	वृ	शु	श	र.	च	म	बु
तृतीया ३०	शु.	श	र	च	म	बु	वृ	शु	श	र	च

१० अंश तक, दूसरा २० तक और तीसरा ३० तक जानना सो द्रेष्[illegible] चक्र में सरलता से लिखा है, देखलेना ॥ ३० ॥

अथ ग्रहाणामुच्चनीचराशीन्भागाश्चाह ।

१ ३ १० ६ ४ १२ ७
सूर्यादितुंगान्यजोक्षनक्रकन्याकुलीरांत्यतुलालवैःस्युः ।
१० २८ १५ ५ २७ २०
दिग्भिर्गुणैरष्टयमैः शरैकैर्भूतैर्भसंख्यैर्नखसम्मितैश्च ॥३१॥

भावार्थ—अब ग्रहोंकी उच्च नीच राशियों और भागोंको कहते हैं, सूर्य आदि ग्रहोंके मेषादि राशियों दश आदि अंशों में परमोच्च होती है, सूर्य मेष राशिका उच्च कहाता है, १० अंश हो तो परम उच्च का कहत[illegible] चन्द्रमा वृष राशिका २ अंशतक परम उच्चका कहाता है मङ्गल मकर का [illegible] अंशतक परम उच्चका कहाताहै, बुध कन्या राशिका १५अंशमें परम उ[illegible] कहाता है, बृहस्पति कर्क राशिका ५ अंश पर परम उच्चका कहाता [illegible] शुक्र मीनराशि का २७ अंश तक परम उच्च का कहाता है, और शनैश्चर तुलाराशि २० अंशतक परम उच्चका कहाताहै, यह ग्रहोंका उच्च और परम उच[illegible]

अथ ग्रहाणां नीच स्थान मूल त्रिकोणानयनं नवांश स्वामिनश्चाह ।

तत्सप्तमं नीचमनेन हीनो ग्रहोऽधिकश्चेद्भमभाद्विशोध्यः ।
चक्राल्लवाद्यास्त्रिगुणो [illegible] नवांशः ।[illegible]

[illegible]

अथ ग्रहाणामुच्चनीच[illegible]

[illegible]

राशि का ३ अंश २० कला नवांश होता है, ऐसे ही मङ्गल आदि ग्रहों की भी राशि जानना सो चक्र में स्पष्ट देखलो। अब उच्च बल लाने का प्रकार वर्णन करते हैं कि जिस ग्रह को उच्च बल बनाना होवे तो उसके नीच से उस ग्रह को हीन करे, हीन करने से जो ६ राशि से अधिक हो तो चक्रशुद्धि बारह राशि में घटा देवे, शेष के अंश करे और ९ से भाग लेवे, भाग लेने से जो लब्ध कलादिक आता है सोई उच्चबल जानना, अब नवांश कहते हैं कि मेष, मकर, तुला और कर्क यह चार चरराशियों में मेषादि राशियों के नवांश ९ होते हैं जैसे वृष, सिंह व धन इन राशियों का नवांश मेष से जानना, कन्या, मकर, वृष का मकर से, मिथुन तुला कुम्भ इनका तुला से, कर्क वृश्चिक मीन इनका कर्क से है अर्थात कर्क से गणना करना सो चक्र में स्पष्ट जानना जिस राशि का नवांश गणना करने पर आवे उस राशि का स्वामी नवांशेश जानना, एक राशि के ३० अंश का नवमांश ३ अंश का, २० कला इसी प्रकार ३ अंश २० कला जोड़ने से सब नवांश जानना सो सुगमता से जानने के अर्थ नवांश चक्र लिखते हैं ॥ ३२ ॥

अथ उच्चबलोदाहरणम् ।

अब उच्च बल निकालने का उदाहरण लिखते हैं—सूर्य का नीच ६।१० यह स्पष्ट सूर्य ९।७।३०।१६ में हीन किया अर्थात् घटाया तो २।२७।३०।१६ रहे इसके अंश ८७।३०।१६ हुए इनमें ९ का भाग लगाया तो लब्ध कलादि ९।४३ यह सूर्य का उच्च बल हुआ ।

अथ नवांशचक्रम् ।

अंश	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
३।२०	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क
६।४०	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं
१०।०	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क
१३।२०	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु
१६।४०	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ
२०।०	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध
२३।२०	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म
२६।४०	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं
३०।०	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी

अथ मेषादि द्वादशराशिषु हद्देशानाह ।

मेषेऽङ्गतर्काष्टशरेषुभागा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।
वृषेऽष्टषण्णागशरानलांशाः शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः ॥ ३३ ॥

युग्मे षडंगेषुनगांगभागासौम्याफुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः ।

कर्केऽद्रितर्काङ्कनगाब्धिभागाःकुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥३४॥

सिंहेऽगभूताद्रिरसाङ्कभागासुरेज्यशुक्राऽर्किबुधारहद्दाः ।

स्त्रियोनगाशांब्धिनगाग्निभागाःसौम्योशनोजीवकुजार्किनाथाः ३५

तुले रसाष्टाद्रि नगाग्नि भागाकोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः ।

कीटे नगाब्ध्यष्टशरांगभागामोमस्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥३६॥

चापे रवीष्वम्बुधिपंजवेदा जीवा स्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।

मृगे नगाद्र्यष्ट युगश्च तीनां सौम्येज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ॥३७॥

कुंभे नगांगाद्रिशरेषुभागाः शुक्रज्ञजीवारशनैश्चराणाम् ।

मीनेऽर्कवेदाऽनलनंदपच्चाः सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणाम् ॥३८॥

भाषार्थः–अब मेष आदि बारहों राशियों में हद्देशों को वर्णन करते हैं- मेष राशियों में प्रथम ६ अंशों का हद्देश गुरु, फिर आगे ६ अंशों का हद्देश [illegible] है, फिर ८ का बुध, ५ का मङ्गल और ५ का शनैश्चर हद्देश जानना, इसी प्रकार वृष आदि के ३० अंशों में क्रम से हद्देश जानना, सो हद्देश चक्र में स्पष्ट हैं यहां देख लो ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

अथ हद्देशचक्रम् ।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिं	[illegible]	तु	[illegible]	ध	म	कु	मी
[illegible]	[illegible] ८	[illegible] ६	म [illegible]	[illegible] ६	[illegible] ७	श ६	म ७	बृ १२	बु ७	गु ७	गु १२
[illegible]	[illegible] ६	[illegible] ६	बु ६	शु ५	श ६	गु ८	शु ४	शु ५	बु ७	बु ६	बु ४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ६	श ७	[illegible] ४	गु ७	बु ८	बु ४	गु ८	बु ७	बु ३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ७	श ६	म [illegible]	शु ७	बृ [illegible]	म ५	श ४	श ५	मं ६
[illegible]	[illegible]	[illegible] ६	[illegible] ४	म ६	श [illegible]	[illegible]	श ६	श ४	म ४	श [illegible]	श [illegible]

अथ [illegible] ।

[illegible] त्रिंशनिराम्मनु गेहहद्देत्नचन्द्रा दशकं दृक्काणे ।

[illegible] पंच[illegible] प्रदिष्टा विंशोपका वेदलवे ऽप्रकल्प्याः ॥३९॥

[illegible] [illegible] को कहते हैं कि जो ग्रह अपनी राशि का [illegible] [illegible] आवे उस का हो तब २० का बल

करता है, तथा अपने हद्दा में १५ का बल और अपने द्रेष्काण में १० का बल अपने मुसल्लह (नवांश) में ५ का बल करता है ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है, इस बलके जानने का विशेष वृत्तान्त पीछे कहना होगा ।३९।

पूर्वोक्त इन पांचों अधिकारों में जो ग्रह न हो तो कितना बल ग्रहण करना चाहिये इस आकांक्षा में कहते हैं—

स्वस्वाधिकारोत्थबलं सुहृद्भे पादोनमर्द्धं समभेऽरिभे त्रिः ॥
एवं समानीय बलं तदैक्यं वेदोद्धृते हीनबलः शरोनः ॥ ४० ॥

भाषा—अपने अपने अधिकार में जो बल कहा गया है उसको विभाग करते हैं, जो ग्रह अपने मित्र के घर में हो वह पौनाई हीन अर्थात् २२।३० बलको प्राप्त करता है, समघर में हो वह आधा १५ का बल ग्रहण करता है, शत्रु घर में हो वह एक चरण अर्थात् चौथाई ७।३० का बल करता है, एवं जो ग्रह अपने हद्दा में हो वह १५ का, मित्र हद्दा में हो वह पौनाई ११।१५ का, समहद्दा में हो तो आधा ७।३० का बल, शत्रु हद्दा में वह चौथाई ३।४५ का तथा जो ग्रह अपने द्रेष्काण में हो वह १० का, अपने मित्र द्रेष्काण में हो तो पौनाई ७।३० का, समद्रेष्काण में हो तो आधा ५ का बल और दुश्मन द्रेष्काण में हो तो २।३० का ग्रहण करता है, एवं जो ग्रह अपने नवांश में हो तो ५ का, एवं मित्रनवांश में हो तो ३।४५ का, समनवांश में हो तो २।३० का और दुश्मन नवांश में हो तो १।१५ का बल ग्रहण करता है, इस प्रकार इन सबके बल को एकत्र करके ४ का भाग देकर विंशोपाबल जानना पांच विश्वा से जो ग्रह कमती होवे वह हीन बली होता है ॥४०॥

गृह	३०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्दा	१५	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्का	१०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नवां	५	३ ४५	२ ३०	१ १५

यद्यपि इस ताजिक ग्रन्थ में, "दृष्टिः स्यान्नवपंचमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा" इत्यादि श्लोकद्वारा आगे दृष्टि के विचार में एकसी वर्णन है तथा यहां ताजिकशास्त्र विद्यार्थियों को सहज में बोध होने को लिखते हैं

१ पंचाशा हीनबलिनस्तदर्धमध्यं [illegible] । [illegible] पंचतुल्यो बलोदितः ॥ १ ॥ अर्थ—पांच विश्वा से कमती वाला ग्रह हीनबली, तिससे अधिक १० विश्वातक मध्यम १० से अधिक २० विश्वातक पूर्ण बली ग्रह जानना, यह पंचवर्गी बल है ।

जातक, तथा अन्य मुहूर्तादि में ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री काम में आती है परन्तु यहां ताजिक में यही मैत्री विचार में लाना योग्य है ।

मित्रं तृतीयपंचमनवमैकादशगतोऽपि यो यस्य ।
धनमृतिरिपुरिष्फेषु च समो ग्रहः स्यादि ज्ञेयम् ॥ १ ॥
शत्रुस्तथैक तुर्ये जायास्थाने दशमे ।
ताजिकहिल्लाजमते नैतादृक्कथितमस्माभिः ॥ २ ॥

अर्थ—रामकजी कहते हैं कि—जो ग्रह जिस ग्रह से तीसरे, पांचवें, नवें, और ग्यारहवें भाव में स्थित हो वह उसका मित्र होता है, दूसरे, आठवें, छठे, और बारहवें, हो वह उसका सम, तथा पहले, चौथे सातवें और दशवें हो वह दुश्मन जानना, इस प्रकार यह ग्रहों की मित्रता समता, और शत्रुता को ताजिक आचार्य हिल्लाज के मत से हम सबों ने कहा है ॥१।२ ॥

अथ ग्रह मैत्री चक्रम्

ग्रह	सू	चन्द्र	म	बुध	बृ	शु	श
मित्र	च शु	सू शु	श	श	श	च शु	मं बु बृ
सम	मं बु बृ	श	स शु	सू शु	सू शु	मबुबृश	शु चं
शत्रु	श	म बृ बु	च बु च म बृ	च म बृ	च म बृ	०	सू

अथ पंचवर्गी बलोदाहरणम् ।

अब पंचवर्गी बल का उदाहरण [illegible] हैं—जैसे सूर्य ९।७।३०।६ है यहां सूर्य मकर राशि का शनैश्चर के घर में है, और शनि सूर्य का [illegible] है इससे शत्रु घर में [illegible] का बल पाया, उच्च बल [illegible] का प्रकार ऊपर कह आये हैं, [illegible] उच्चबल ९।४३ तथा [illegible] ७ अंश में अधिक [illegible] में दूसरा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अथ ग्रहाणां पंचवर्गी बलचक्रम्

ग्रह	सू	च	म	बु	बृ	शु	श
गृ	७ ३०	७ ३०	७ ३०	७ ३०	३० ०	१५ ०	१५ ०
उ.	९ ४३	४ ३०	१५ १०	१० १८	० ३६	६ ३३	१८ ३०
ह.	० ३०	२ ४५	७ ३०	७ ३०	१५ ०	७ ३०	१५ ०
द्रे.	५ ०	० ३०	० ३०	२ ३०	७ ३०	१० ०	५ ०
न.	० ३०	५ ०	० ३०	१ १५	५ ०	० ३०	३ ४५
[illegible]	३३ १३	३० १२	३५ १०	२८ ३	५८ ६	४१ ३३	५७ १३
[illegible]	८ [illegible]	४ [illegible]	८ [illegible]	७ [illegible]	१४ [illegible]	१० [illegible]	१४ [illegible]

में फल पाया गया यदि मकर के तीसरे नवांश में है इस कारण मकर में मकर से गणना करने से तीसरा [illegible] है, [illegible] स्वामी [illegible] है [illegible] [illegible] का [illegible] है, [illegible] में ९ । १० का [illegible] होता है, इन [illegible] [illegible] किया अर्थात् [illegible] को १२ । १३ हुआ, इनमें [illegible] का भाग लेने से [illegible] ८ । ३ यह गुरु का [illegible] फल हुआ, इसी प्रकार चन्द्र आदि ग्रहों का [illegible] फल जानना, यह [illegible] फल [illegible], सो [illegible] भी [illegible] है ।

अथ द्वादशवर्गविचारमाह ।

क्षेत्रं होरा त्र्यब्धिपंचांगनगसप्तवस्वंकाशेशार्कभागाः सुधीभिः ।
विज्ञातव्या लग्नसंस्थाः शुभानां वर्गाः श्रेष्ठाः पापवर्गास्त्वनिष्टाः ॥४१॥

भा०—अब द्वादशवर्गोंका विचार कहते हैं क्षेत्र (गृह) होरा तृतीयांश, चतुर्थांश पंचमांश, षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश एकादशांश और द्वादशांश ये बारह भाग लग्न समयमें विद्यमान ग्रहों के पंडितों के जानने योग्य हैं, अब इन वर्गोंका फल कहते हैं कि—शुभग्रहों के वर्ग श्रेष्ठ हैं अर्थात् अच्छे फलके देने वाले होते हैं, और यदि पापग्रहों के वर्ग हों तो अनिष्ट फलके देने वाले होते हैं ॥ ४१ ॥

अथ होराद्रेष्काणतुर्यांशानामधीशानाह ॥

ओजे रवीन्द्वोः सम इन्दुरव्योर्होरे गृहार्धप्रमिते विचिन्त्ये ।
द्रेष्काणपाः स्वेषु नवर्क्षनाथास्तुर्यांशकाः स्वर्क्षजकेन्द्रनाथाः ॥४२॥

भा०—अब होरा द्रेष्काण व चतुर्थांशके अधिपतियों को वर्णन करते हैं, तहां प्रथम होराको कहते हैं ओज (विषम) राशि में, सिं, तु, ध, कुं, इनमें प्रथम १५ अंशतक सूर्यका होरा, फिर शेष १५ अंश अर्थात् १६ से ३० अंशतक चंद्रमाका होरा कहिये, और समराशि वृ क कं. वृश्चिक म मी. इनमें पहले १५ अंशतक चंद्रमाका होरा, शेष १५ अंशतक सूर्यका होरा होता है अब,

अथ होरेश चक्रम्

अं	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१५	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं
३०	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू

द्रेष्काणपति को कहते हैं. कि-एक राशिके ३० अन्शों में तीन द्रेष्काण होतेहैं उनमें पहला १० अन्शतक, दूसरा २० अन्शतक, और तीसरा ३० अन्शतकहोताहै

अथ तृतीयांशेश (द्रेष्काण) चक्रम्

अं	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१०	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
२०	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च
३०	वृ	श	श	वृ	मं	शु	मं	च	सू	बु	शु	मं

जिस ग्रहका द्रेष्काण विचार करना हो तो यदि वह पहले द्रेष्काण में हो तो वह ग्रह जिस राशि में वर्तमान हो उसीका स्वामी द्रेष्काण पति होता है. जो दूसरे द्रेष्काणमें होतो वर्तमान राशिसे पांचवीं राशिका स्वामी द्रेष्काणपति होताहै, तथा जो तीसरे द्रेष्काणमें होतो नवीं राशिका स्वामी द्रेष्काण पति होता

अथ चतुर्थांशेश (केन्द्रपति) चक्रम्

अंशा	मे	वृ	मि	कं	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
७।३०	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
१५।००	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ	मं	वृ	मं
२२।३०	शु	मं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु
३०।००	श	श	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ

है अब चतुर्थांश स्वामियों को कहते हैं, राशिके ३० अन्शोंका चतुर्थांश ७। ३० अन्श हुये वहां पहला चतुर्थांश ७। ३० अन्शतक, दूसरा १५ अन्शतक, तीसरा २२। ३० अन्शतक, चौथा ३० अन्शतक. चतुर्थांश जानना, जो ग्रह पहले चतुर्थांश में हो तो प्रथम केन्द्र अर्थात् उसी राशिका स्वामी चतुर्थांश पति होता है. दूसरे चतुर्थांश में हो तो दूसरा केन्द्र अर्थात् वर्तमान राशि से चौथे घरका स्वामी चतुर्थांश पति होता है तीसरे चतुर्थांश में हो तो तीसरे केन्द्र अर्थात् वर्तमान राशिसे सातवें घरका स्वामी चतुर्थांश पति जानना चौथे चतुर्थांश में हो तो चौथा केन्द्र अर्थात् वर्तमान राशि से दशवें घरका स्वामी चतुर्थांश पति जानना होगा. द्रेष्काण व चतुर्थांश को सरलता से जानने के लिये द्रेष्काण और चतुर्थांशपति चक्र भी लिख दिये हैं ॥ ४२ ॥

अथ पञ्चमांशेशद्वादशांशेशानाह ॥

ओजर्क्षे पंचमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञभार्गवः ।
समर्क्षे व्यस्तमेतेषां द्वादशांशाः स्वभात्स्मृताः ॥४३॥

भा०—अब पञ्चमांश और द्वादशांश पतियों को कहते हैं—राशि के [illegible] के [illegible] पञ्चमांश के अन्शोंका होता है, वहां विषम राशि में पहले

दूसरे का स्वामी मङ्गल दूसरे का शनि, तीसरे का बृहस्पति, चौथे का बुध, पांचवें का शुक्र, और समराशि में इससे विपरीत क्रम से जानना, जैसे वृषराशि में पहिले पांच अंश का स्वामी शुक्र, दूसरे का बुध, तीसरे का बृहस्पति, चौथे का शनि, पांचवें का मङ्गल जानना, इस प्रकार त्रिंशांशपतियों का चक्र नीचे लिखा है अब द्वादशांशपतियों को कहते हैं कि— १ राशि के ३० अंशों का द्वादशांश [illegible] १ द्वादशांश २ अंश ३० कला हुए ऐसे ही एक राशि के विभाग से १२ द्वादशांश होते हैं, जिनका चक्र नीचे लिखा है देख लेना, जिस राशि में जो ग्रह स्थित होवे तो पहिले द्वादशांश में उसी राशि का स्वामी द्वादशांशपति होता है दूसरे द्वादशांश में उससे दूसरी राशि का स्वामी द्वादशांशपति जानना इत्यादि क्रम से सब द्वादशांशाधिपतियों को जानना ४३

अथ त्रिंशांश चक्रम् ।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ द्वादशांश चक्रम् ।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ षड्वर्गाद्यानयनमाह ।

लवीकृतो व्योमचरोङ्गशैलवस्वङ्कदिग्रुद्रगुणाः खरामैः ॥
भक्तागतास्तर्कनगाष्टनन्ददिग्रुद्रभागाः कुयुता क्रियात्स्युः ॥४४॥

भा० अब षड्वर्ग, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशांश, इनके अधिपतियों को कहते हैं, ग्रह की राश्यादि अंशकरें अर्थात् राशि को ३० से गुणा देवें फिर उसमें राशि के आगे स्थित हुए अंशोंको जोड़ देवें तदनन्तर उसको कलाविकला सहित छै स्थान में बराबर स्थापन करके क्रम से ६।७।८। ९ । १० । ११ इन अंकों से गुणा करे फिर ३० से भाग लेवें भाग लेने से जो लब्ध हो वह गत ६।७।८।९।१०।११, भाग होते हैं इन सबों में एक को जोड़कर मेष से गणनाकरके गिनतीमें जहां विश्राम हो उसी राशि का स्वामी उस वर्ग का स्वामी होता है. यदि जोड़ने पर बारह से अधिक अंक हो तो बारह से भाग लेना इस प्रकार द्वादशवर्गी बनाना ॥ ४४ ॥

अत्रोदाहरणम् ।

अब द्वादश वर्गों का उदाहरण लिखते हैं, यथा स्पष्ट सूर्य राश्यादि ९।७।३०।६ यह मकर राशि का स्वामी शनि है तो रवि का गृहेश शनि हुआ, अब होरा को कहते हैं कि सूर्य मकर राशि के प्रथम होरा अर्थात् १५ अंश के अन्तर्गत है, इस कारण मकरराशि सम है सम राशि में पहला होरा चन्द्रमा का होता है, इससे यहां सूर्य चन्द्रमा के होरा में है, अब द्रेष्काण का उदाहरण कहते हैं कि रवि मकर राशि के प्रथम द्रेष्काण में है इससे द्रेष्काण का स्वामी शनि है, अब चतुर्थांश का उदाहरण कहते हैं, सूर्य मकर के दूसरे चतुर्थांश में है इस कारण मकर से चौथी राशि मेष है उसका स्वामी मङ्गल चतुर्थांश पति हुआ

अथ द्वादशवर्ग

ग्र	सू	च	मं	बु	गु	शु	श
गृ	श	शु	शु	गु	गु	म	श
हो	च	सू	सू	सू	च	सू	सू
द्रे	श	शु	शु	म	शु	च	शु
चतु	म	शु	शु	शु	बु	शु	शु
पञ्च	शु	श	गु	गु	शु	मं	शु
षष्ठ	मं	श	बु	शु	बु	श	शु
सप्तम	म	शु	शु	श	शु	शु	म
अष्टम	शु	श	शु	मं	शु	बु	शु
नवम	गु	च	सू	च	गु	श	गु
दशम	गु	श	शु	म	गु	श	गु
एकाद	गु	च	श	गु	च	शु	गु
द्वाद	म	शु	श	मं	म	सू	गु

अब पंचमांश का उदाहरण कहते हैं रवि सम राशिके दूसरे पंचमांशमें वर्तमान है इस कारण समराशि का दूसरा पँचमांश पति शुक्र है तो यहां पँचमांश पति हुआ, अब षष्ठांश उदाहरण कहते हैं स्पष्ट सूर्य ९।७।३०।६ यहां राशि को ३० से गुणा किया और ७ अंश जोड़ दिये तो २७७।३०।६ इसको ६ से गुणा किया तो १६६५।०।३६ यह ध्रुवाङ्क हुआ इसमें ३० तीस का भाग दिया तो लब्ध ५५ हुए इसमें १ मिला दिया तो ५६ हुए इसमें १२ का भाग दिया शेष ८ लिये मेष से आठवीं राशि मेष है मेष का स्वामी मङ्गल है तो मङ्गल षष्ठमांश पति हुआ इसी प्रकार सप्तमांश पति का उदाहरण भी जानो ।

अथ द्वादशवर्गफलमाह ।

एवं द्वादशवर्गीस्याद् ग्रहाणां बलसिद्धये ।
स्वोच्चमित्रशुभाच्छ्रेष्ठा नीचारिक्रूरगोऽशुभा ॥ ४५ ॥

भाषार्थः—अब द्वादशवर्ग फल को कहते हैं, इस प्रकार ग्रहोंके बलकी सिद्धि के लिये द्वादशवर्ग होते हैं यह ग्रह अपने उच्च मित्र शुभोंके वर्गमें श्रेष्ठ फलको देने वाला

होती है और सौम्य ग्रह पापवर्ग की अशुभ फलकी देनेवाली होती है अर्थात् जिस ग्रह की द्वादशवर्गी करनी हो वह अपने गृहादिक व स्ववर्ग अथवा शुभ ग्रह के वर्ग में विराजमान हो तब वह ग्रह शुभ फल का देने वाला जानना, और यदि वही ग्रह सौम्य वर्ग व क्रूर वर्ग अथवा पाप ग्रहों के वर्ग में विराजमान हो तब वह अशुभ फल का देने वाला जानना ॥ ४५ ॥

द्वादशवर्गी शुभ व पापग्रहों के फलों का निरूपण।

एवं ग्रहाणां शुभपापवर्गपंक्तिद्वयं वीक्ष्य शुभादिकत्वे।
दशाफलं भावफलञ्च वाच्यंशुभं त्वनिष्टं त्वशुभाधिकत्वे ॥४६॥

भावार्थ—पूर्वोक्त प्रकार से ग्रहों के शुभ व पापवर्गों की दोनों पंक्तियों को देखे शुभग्रह अधिक हों तो दशाओं और भावों का फल शुभ कहना चाहिये और जो पापग्रह अधिक हों तो दशाओं और भावों का फल अशुभ कहना चाहिये अर्थात् पूर्वोक्त प्रकार से ग्रहों की द्वादशवर्गी करे और शुभ ग्रहों की संख्या अलग लिखे पापग्रहों की संख्या अलग लिखे फिर दोनों पंक्तियों का अन्तर करे यदि अन्तर करने से शुभ ग्रह अधिक होवें तो उस ग्रहकी दशाका फल और भावों का फल शुभ जानना और जो पाप ग्रह अधिक हों तो दशा का फल, भाव का फल अशुभ फल जानना ॥ ४६ ॥

ग्रह भेद से और सौम्य पाप ग्रहों के भेद से फल का तारतम्य।

क्रूरोऽपि सौम्योऽधिक वर्गशाली शुभोऽतिसौम्यःशुभखेचरश्चेत्।
सौम्योपि पापाधिकवर्गयोगान्नेष्टोऽतिनिंद्यःखल पापखेटः ॥४७॥

भावार्थः—जिस ग्रह की द्वादशवर्गी करनी हो जो वह पाप ग्रह भी होवे परन्तु द्वादशवर्गी में अच्छे ग्रहोंके अधिक वर्गों से युक्त होवे तो अच्छे फल का देने वाला होता है और जो शुभ ग्रह द्वादशवर्गी में शुभ ग्रहों के अधिक वर्गों से युक्त होवे तो वह अत्यन्त अच्छे फल का देने वाला होता है तथा यदि शुभ ग्रह भी द्वादशवर्गी में पापग्रहों के अधिक वर्गों से युक्त होवे तो वह अशुभ फल का देने वाला होता है और यदि पापग्रह द्वादशवर्गी में पापग्रहों के अधिक वर्गों से युक्त होवे तो वह अत्यन्त दुष्ट फल का देने वाला होता है ॥ ४७ ॥

द्वादश भावों में शुभाशुभ फल का वर्णन ।

राशीश मित्रोच्चरिपुक्रमेण चिंत्यं तनोरप्यनयेव रीत्या ।
भावेषुसर्वेष्वपि वर्गचक्रं विलोक्य तत्तफलमूहनीयम् ॥ ४८ ॥

भाषार्थः—अब १२ भावों के शुभ और अशुभ फल का वर्णन करते हैं, लग्न का भी इस रीति से शुभ ग्रह व पापग्रह अधिक वर्गों से शुभ या अशुभ फल का विचार करना चाहिये, यथा लग्न शुभ ग्रहों के अधिक वर्गों से होवे तो शुभ फल जानना, अथवा लग्न स्वामी शुभ ग्रह होकर मित्र के घर में व अपने घर में व अपने उच्च के स्थान में विद्यमान होवे तो वह शुभ फल को देता है यदि लग्न का स्वामी सम घर में हो तो शुभ व अशुभ फल सामान्य होते हैं और यदि लग्न पापग्रह के अधिक वर्गों से युक्त हो अथवा लग्न का स्वामी पापग्रह होकर शत्रु घर में व नीच स्थान में स्थित होवे तो वह अशुभ फल को देता है, ऐसे ही सब भावों में द्वादशवर्गी करे फिर उसको देखकर उन भावों के शुभ व अशुभ फल इसी रीति करके विचार करना, और कथन करना चाहिये ॥ ४८ ॥

लग्न से विचारने का विषय ।

शरीर वर्णचिन्हायुर्वयोमानं सुखासुखम् ।
जातिःशीलं च मतिमांल्लग्नात्सर्वं विचिन्तयेत् ॥ ४९ ॥

भा०—प्रश्न लग्न व जन्म लग्न से शरीर सम्बन्धी सब विचार करे, जैसे शरीर की दुर्बलता व पुष्टता व रक्त श्वेत आदि वर्ण व मशकादि चिन्ह जीवन, बालक, यौवन, वृद्धपन, सुख, दुःख, ब्राह्मणादि जाति, आचरण इन सभों को बुद्धिमान पण्डित लग्न से विचार करे ॥ ४९ ॥

धन भाव और तृतीय भाव से विचारणीय विषय ।

सुवर्णरूप्यरत्नानि धातुद्रव्यं सखा धने ।
विक्रमे भ्रातृभृत्यादिपित्र्यस्वल्पनमाहमम् ॥ ५० ॥

भा०—सोना, चांदी, रत्न, पित्तलादि धातु, कांस्य आदि द्रव्य मैत्री [illegible] का धन भाव में चिन्तवन करे, [illegible] वा, [illegible] पराक्रम [illegible]

कार्य, कार्योंका निर्णय, मालम कर लेना विचार करके कर डालना) इन सबों का विचार करै ॥ ५० ॥

चतुर्थ और पंचम भाव मे विचारणीय विषय ।

पितृवित्तनिधिक्षेत्रं गृहं भूमिश्चतुर्गतः ।
पुत्रे मंत्रधनोपायगर्भविद्यात्मजेक्षणम् ॥ ५१ ॥

भा०—पिता का द्रव्य, गड़ी हुई द्रव्य (खजानादि) खेत आदि, पृथिवी लाभ, इन सबोंका विचार चौथे भाव से करना. पांचवें घर से मन्त्र (गुप्त संभाषण) धन लाभका उपाय, गर्भ, विद्या आदि, पुत्र लाभ, इन सबों का अवलोकन करै ॥ ५१ ॥

छठे और सातवें भाव मे विचारणीय विषय ।

रिपौ मातुलमान्द्यारिचतुष्पाद्भयभीक्षणान् ।
द्यूने कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा ॥
हृताध्वकलिमार्गादि चिन्त्यं द्यूने ग्रहोऽशुभः ॥५२॥

भा०—अब छठे या सातवें भाव में क्या विचारना चाहिये सो लिखते हैं मामा, रोग, दुश्मन, गाय, आदि चौपाये, पराधीनता, नाचरण से भय, पाप, इन सबोंका विचार छठे भाव से करना । सातवें घरसे, स्त्री, व्यापार, नष्टवस्तु विस्मरण होना, हरी हुई द्रव्य के मार्ग का विचार, कलह, यात्रा आदि, इन सबोंका विचार करना, सातवें, घरमें शुभ व पाप कोई ग्रह विद्यमान होवे तो अशुभ फलका देने वाला होता है ॥ ५२ ॥

आठवें भाव से विचारणीय विषय ।

मृत्यौ चिरंतनं द्रव्यं मृतवित्तं रणं रिपुः ।
दुर्गस्थानं मृतिर्नष्टं परीवारो मनोव्यथा ॥ ५३ ॥

भा०—आठवें घर में बहुत कालका द्रव्य, मरे हुये का धन, संग्राम, दुश्मन, कोटस्थान (किला आदि) मरना, वस्तुका नष्ट होना कुटुम्ब मनकी व्यथा (पीड़ा) इन सबोंका विचार करै ॥ ५३ ॥

नवें और दसवें भाव से विचारणीय विषय ।

धर्मेरतिस्था पंथा धर्मोपायं विचिन्तयेत् ।
व्योम्निमुद्रां परं पुण्यं राज्यं वृद्धिं च पैतृकम् ॥ ५४ ॥

भा०—नवम भाव में, रमण करना, तथा यात्रा का विचार, धर्म साधन, इन सर्वोंका चिन्तवन, करे, दशमें भवन में मुद्रा (राज मुद्रा) परम पुण्य, राज्य, भाग्य वृद्धी, पितृ सम्बन्धी विचार इन सर्वोंका चिंतवन करै ॥ ५४ ॥

ग्यारहवें और बारहवें भाग का विचारणीय विषय ।

आये सर्वार्थधान्यार्धं कन्यामित्रचतुष्पदः ।
राज्ञोवित्तं परीवारो लाभोपायांश्च भूरिश ॥ ५५ ॥
व्यये वैरिनिरोधार्ति व्ययादि परिचिन्तयेत् ॥ ५६ ॥

भा०—ग्यारहवें घरमे सब द्रव्योंका प्रयोजन, धान्यका मोल्य, कन्या, मित्र, चौपाये, राज द्रव्य कुटुम्ब विचार बहुत प्रकार के लाभ होने के उपाय इन सर्वोंका चिन्तवन करे ॥ ५५ ॥

बारहवें घर में दुश्मनों द्वारा किया हुआ अपराध, धनी पीडा खर्च आदि इन सर्वोंका विचार करना चाहिये ॥ ५६ ॥

बलिष्ठ ग्रह के लक्षण ।

लग्नाम्बुद्यूनकर्माणि केन्द्रमुक्तं च कंटकम् ।
चतुष्टयं चात्रखेटो बली लग्ने विशेषतः ॥ ५७ ॥

भा०—पहला, चौथा, सातवां दशवां इन स्थानों को केन्द्र, कंटक और [illegible] कहते हैं, इन केन्द्र मे स्थित ग्रह बलवान जानना तहां चौथे सातवें दशवें स्थान की अपेक्षा लग्न मे स्थित ग्रह अधिक बलवान होता है ऐसा [illegible] ॥ ५७ ॥

ग्रह के शुभ स्थानों तथा बलिष्ठ योगका वर्णन ।

लग्नकर्मास्तचतुर्थाय सुतांकस्थो बली ग्रहः ।
यथोदितं विशेषेण मुथिशिलेषु चन्द्रमाः ॥ ५८ ॥

भा०—लग्न, दशवां सातवां चौथा ग्यारहवां पांचवां और नवांइन-[illegible] बलवान होता है —तहा भी आदिम स्थानों को उल्लंघन [illegible] की अपेक्षा पूर्व मे स्थित ग्रह अतिशय करके बल[illegible] ग्रह बलवान है उसकी अपेक्षा [illegible] है, [illegible] ग्रह की अपेक्षा ग्यारहवें

उससे अधिक पांचवें, तिससे अधिक सातवें घर में उससे अधिक दसवें, और उससे अधिक लग्न में स्थित ग्रह बलवान जानना, यह सम्पूर्ण ग्रहों का सामान्य प्रकार से बल कहा गया, अब चन्द्रमा का विशेष बल कहते हैं, दूसरे स्थान में चन्द्रमा बलवान होता है, उससे तीसरे, तीसरे से नौवें, नौवें से पांचवें पांचवें से ग्यारहवें इत्यादि क्रम से चन्द्रमा का बल जानना, ॥ ५८ ॥

मंगल के बल का वर्णन ।

कुजाः सन्धिषु पृच्छायां सूतौ चाब्दे वितन्वेत् ।
भावानन्तरं शस्तास्युरिष्फाष्टरिपवोऽशुभा ॥
दीप्तांशानतिक्रमेणास्ता इमेपीति विचिन्तयेत् ॥ ५९ ॥

भा०—सन्धि पर स्थित पूर्वोक्त भावों में यथाक्रम से मंगल बलवान होता है, एवं प्रश्न समय, जन्म समय, तथा वर्ष प्रवेशादिकों में इन स्थानों में स्थित ग्रह को विचारण करें, इस प्रकार तत् भाव श्रेष्ठ फल के देने वाले होते हैं और ग्रहों से युक्त बारहवां, आठवां, छठा भाव अशुभ फल देने वाले जानने यदि यही भाव स्थित ग्रहों के दीप्तांशों को उल्लंघन कर विद्यमान हों तो शुभ फल को देते हैं यदि भी यदि दीप्तांशों के मध्य में विराजें, तो आगमत फल के देने वाले नहीं होंगे यह सिद्धान्त जानना ॥ ५९ ॥

मेषादि बारह राशियों में त्रिराशिपों का वर्णन ।

त्रिराशिपाः सूर्यसिताकिंशुक्रा दिने निशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ ६० ॥

भा०—दिन में वर्ष प्रवेश होवे तो मेषादि चार राशियों के सूर्य शुक्र शनि और शुक्र यह त्रिराशिप होते हैं, और रात्रि में मेषादि चार राशियों के बृहस्पति चन्द्रमा, बुध मंगल त्रिराशिप होते हैं और सिंह आदि चार राशियों में इससे विपरीत त्रिराशिप जानना यथा दिन में वर्ष प्रवेश होने में सिंह आदि चार राशियों के स्वामी गुरु चन्द्र बुध मंगल जानना और रात्रि सिंह आदि ४ राशियों के सूर्य शुक्र शनि शुक्र त्रिराशिप होते हैं, और सदा अर्थात्

अथ त्रिराशिपचक्रम्

रा.	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
दिने	सू	शु	श	शु	बु	मं	गु	मं	श	मं	सू	चं
रात्रौ	बु	चं	गु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	[illegible]	चं

चाहे दिन हो चाहे रात्रि धन आदि चार राशियों के शनि, मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा यह त्रिराशिप होते हैं इसको स्पष्ट जानने के अर्थ त्रिराशिप चक्र भी लिख दिया है।

पूर्वोक्त त्रिराशि पतियों का प्रयोजन ।

वर्षेशार्थं दिननिशा विभागोक्तास्त्रिराशिपाः ।
पञ्चवर्गी बलाद्यर्थं द्रेष्काणेशान् विचिन्तयेत् ॥ ६१ ॥

भा०—दिन व रात्रि के विभाग से वर्षेश जानने के अर्थ त्रिराशि पतियों को कहा है, और पंचवर्गी बलादिकों अर्थ पूर्वोक्त द्रेष्काण स्वामियों का चिन्तवन करे ॥ ६१ ॥

वर्षेश निर्णय के लिये पंचाधिकारी ।

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुन्थहाधिप इति त्रिराशिपः ।
सूर्यराशिपतिरह्निचन्द्रमाधीश्वरोनिशि विमृश्यपञ्चकम् ६२

भा०—(१) जन्म लग्न का स्वामी (२) वर्ष लग्न का स्वामी (३) मुन्था का स्वामी (४) त्रिराशिप (५) दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य राशि का स्वामी और रात्रि मे वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा की राशि का स्वामी ये ही पांचों वर्ष पति होने के अधिकारी हैं, ॥ ६२ ॥

वर्षेश निर्णय ।

वर्गाय एषां तनुमीक्षमाणां सवर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ।
नैवाब्दपोदृष्ट्यतिरेकतः स्याद्बलस्य साम्ये विदुरेव माद्याः ॥ ६३ ॥

भा०—इन पंचाधिकारियों का दृष्टि बल व पंचवर्गी बल को देखकर वर्षेश का निर्णय करते हैं, पूर्वोक्त इन पांच अधिकारियों के मध्य में जो ग्रह पञ्चवर्गी के द्वारा बलवान होकर लग्न को देखता हो उसको वर्ष का स्वामी [illegible] और लग्न को नहीं देखे तो वर्ष पति नहीं होता है और जो पञ्चाधिकारी [illegible] बल बराबर हो तो लग्न पर जिसकी दृष्टि अधिक हो उसको [illegible] है ॥ ६३ ॥

[illegible] लग्न में कौन वर्षेश होगा इसकी आशंका ।

[illegible] निर्बलत्वे वर्षाधिपःस्यान्मुथहेश्वरस्तु ॥
[illegible] तनुमीक्षमाणां वीर्याधिको [illegible] विमुर्विचिन्त्यः ६४

भा०—पूर्वोक्त पांचों पदाधिकारियों की दृष्टि लग्न पर अगर हो और न उन में एक भी बलवान हो, अथवा पांचों निर्बली होवें तो चन्द्रराशि स्वामी वर्षेश होता है यदि जो पांच अधिकारियों में कोई भी लग्न को नहीं देखता हो, तो उनमें जो अधिक बलवान् हो वही स्वामी निश्चय करना चाहिये ॥ ६४ ॥

अन्य आचार्यों के मत में दृष्टि बलकी समता का वर्णन ।

बलादिसाम्ये रविराशिपोऽह्नि निशीन्दुराशीऽडिति केचिदाहुः ।
येत्थशालोऽब्दविधुःशशी न वर्षाधिपश्चन्द्रमपोऽन्यथात्वे ॥६५॥

भा०—पांचों अधिकारियों का बलादिकों में बल समान है, तथा दृष्टि लग्न पर समान दृष्टि हो तो ऐसी अवस्था में दिन में वर्ष प्रवेश होने से सूर्य स्थित राशिका स्वामी वर्षेश जानना रात्रि में वर्ष प्रवेश हो चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो उस राशिका स्वामी वर्षेश्वर जानना चाहिये, ऐसा कोई आचार्य कहते हैं जो वर्ष का स्वामी किसी प्रकार से चन्द्रमा हो तो चन्द्रमा जिस ग्रह के साथ इत्थशाल करता हो वह वर्षेश जानना अन्यथा (इत्थशाल के अभाव होने से) अर्थात् चन्द्रमा किसी ग्रह के साथ इत्थशाल न करता हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो उस राशिका स्वामी वर्षेश जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

मुन्था के जानने के प्रकार का वर्णन ।

स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान्मुथहाभ्रमेण ।
स्वजन्मलग्नं रविनिघ्नयातशरद्युतं साभमुखेन्थिहास्यात्॥६६॥

भा०—अपनी जन्म लग्न से प्रत्येक वर्ष एक एक राशि भोग करता हुआ मुन्थहा परिभ्रमण करता है, जैसे जन्म समय कन्या लग्न है, तो प्रथम वर्ष में मुन्था कन्या राशि पर जानना दूसरे वर्ष में तुला राशि पर तीसरे वर्ष वृश्चिक पर इत्यादि बहुत वर्ष संख्या होने से मुन्था के लाने का प्रकार सरलता से कहते हैं, कि जन्म समय जो लग्न हो उसकी संख्या में गत वर्ष संख्या को जोड़ देवे अनन्तर उसमें बारहका भाग देने से जो शेष अङ्क रहे उसी संख्या वाली राशि पर मुन्थहा की स्थिति जानना, (गताब्दसमाजन्मलग्ने योज यित्वा ततःपरम् । द्वादशैर्विभजेच्छेषं मुन्था वदेद्बुधः) अर्थात् गत वर्षों को,

जन्म लग्न को जोड़कर १२ का भाग लेने से शेष राशि पर मुन्थहा की स्थिति पंडितों ने कही है ॥ ६५ ॥

मुंथहा जानने का उदाहरण ।

जन्मलग्नराश्यादि ५।१०।५३।५० इसमें गतवर्ष संख्या ३७ को जोड़ दिया तो ४२।१०।५३।५० हुये बारह का भाग लेने से शेष राश्यादि ६।१०।५३।५०। अंक हुये तो यहां कन्यागत तुला राशि पर मुंथहा १० अंश ५३ कला ५० विकला में जानो।

राहु के मुख पीठ व पृंछ के लक्षण ।

भोग्याराहोर्लवास्तस्य मुखं पृष्ठं गता लवाः ।
ततः सप्तमभं पुच्छं विमृश्येति फलं वदेत् ॥ ६७॥

भावार्थ-राहु जिस राशि में स्थित होवे उसके भोग्य अंश मुख संज्ञक कहे जाते हैं तथा उस राहु से सातवीं राशि पृच्छ संज्ञक है, यह विचार कर मुंथहा के फल को कहै ॥ ६७ ॥

अथ वर्षेश निर्णय का उदाहरण ।

अब वर्षेश निर्णय का उदाहरण करते हैं तहां इस वर्ष में जन्म लग्न का स्वामी मंगल, मुंथा [illegible] स्वामी [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

पंचाधिकारिणः

र	च	मु	त्रि	मु
ल	ल	म	रा	रा
प	प	प	प	प
र	म	गु	म	श
७	४	१०	८	१५
[illegible]	४	७	३	१८

वर्षेश निर्णय । एषां पंचाधिका रीणां मध्ये लग्नं क्षमाणः त्याहत्ला [illegible] वर्षेशो शनिः वर्ष [illegible] ।१४।

[illegible] स्वामी [illegible] इन पांचों अधिकारियों में सबसे अधिक पंच [illegible] १५।१८ है और लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता है, इस [illegible] पंचाधिकारियों में लग्नको देखने और अधिक बली होने से वर्ष [illegible] है।

[illegible] का [illegible] ।

[illegible] पंचाधिकारिणां ग्रहाणां बलसंयुतम् ।
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ ॥

भा०-यह वर्ष जिसने लिखा है सो कहते हैं—पूर्वोक्त इन पंचाधिकारियों के विंशा फल को जोड़ देने से उसका भाग देवे भाग लेने से जो लब्ध अङ्क हो वह वर्ष विंशा फल पंडितों ने कहा है ॥ १ ॥ जैसे पूर्वोक्त पंचाधिकारियों के पंचवर्गी विंशाबल को जोड़ देने से अंक संख्या ४८।४५ में ५, का भाग देने से लब्ध ९।४५ यह विंशा हुए, अर्थात् इतने ९।४५ विंशा वर्ष जानना ॥ १ ॥

श्रीगर्गान्वयभूषणो गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतोऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतिध्वस्त्यै जनुःपद्धतिम् । तत्सूनुः खलु नीलकंठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया सतुष्ट्यै व्यदधद् ग्रहप्रकरणं संज्ञाविवेकेऽमलम् ॥६८॥

अन्वयः—श्रीगर्गान्वयभूषणः (श्रीगर्गाचार्यवंशे श्रेष्ठः) गणितवित् (गणितं वेत्तीति गणितवित् ज्योतिःशास्त्रवित्) चिन्तामणिरिति नाम्ना कश्चिद्दैवज्ञ तत्सुतः) अनन्तमतिः (अनन्तगुणसम्पन्नमतिः) अनन्तनामा खलमतिध्वस्त्यै (दुष्टमतनिराकाराय) जनुःपद्धतिं (उत्पन्नबालकस्य जन्मकालमधिकृत्य शुभाशुभनिरूपकं शास्त्रम्) व्यधात् (कृतवान्) खलु (निश्चयेन) तत्सूनुः (तस्य पुत्रः) नीलकण्ठविबुधः विद्वच्छिवानुज्ञया सन्तुष्ट्यै (सतां सन्तोषाय) संज्ञाविवेके संज्ञातन्त्रे अमलं (निर्मलं) ग्रहप्रकरणं व्यदधत् रचितवानित्यर्थः ॥६८॥

इति श्रीदैवज्ञानंतसुतनीलकंठदैवज्ञविरचितायां नीलकण्ठ्यां
संज्ञातन्त्रे ग्रहप्रकरणं प्रथमम् ॥ १ ॥

भा०—श्रीगर्गाचार्य के वंशमें श्रेष्ठ, गणित शास्त्र के जानने वाला चिन्तामणि नाम कोई पंडित हुआ उन्हीं के पुत्र अनन्तगुणों से सम्पन्न मति वाले अनन्तनामक ने दुष्टों के मत को दूर करने के अर्थ जातक शास्त्र को रचा तिस अनन्त दैवज्ञकेपुत्र विशेष विद्यावाले नीलकंठ नामक विद्वान ने शिवजीकी आज्ञा से सज्जनों के संतोष के अर्थ संज्ञातन्त्र में सुन्दर ग्रहप्रकरण को रचा ॥६८॥

इति श्रीवंशबरेल्या ज्योतिर्वित्पंडित नारायणप्रसाद कृतायां ।
नीलकंठताजिकग्रंथे नारायणीभाषाटीकायां संज्ञातन्त्रे ग्रहप्रकरणं प्रथमम् ॥१॥

अथ द्वितीयप्रकरण प्रारभ्यते ॥ २ ॥

सूर्य के स्वरूप का वर्णन।

सूर्यो नृपो नाचतुरस्रमध्यं दिनेद्रदिक् स्वर्णचतुष्पाग्रः।
सत्वं स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिस्तु पित्तं जरत् पाटलमूलवन्यः १

भा०—सूर्य क्षत्रियवर्ण पुरुषराशि, चौकोनस्वरूप, मध्यान्ह समय में बलवान, पूर्व दिशा का स्वामी, सुवर्ण का ईश, तथा चौपाये हाथी घोड़ा आदि का प्रभु क्रूर, सतोगुण, स्थिर स्वभाव, तीखा रस प्रिय जिसको, पशुभूमिचारी, पित्तप्रकृति, वृद्धावस्था, पाटल (लाल सफेद मिला) वर्ण, मूल से उत्पन्न धान्यादिकों का अधिष्ठाता, वनचारी जानना, यह सूर्य का स्वरूप कहा।

चन्द्रमा के स्वरूप का वर्णन।

वैश्यः शशी स्त्री जलभूस्तपस्वी गौरोपराह्णमुदधातुसत्त्वम् ।
वाय्वादिक्श्लेष्मभुजंगरूप्यस्थूलो युवा क्षारशुभः सिताभः ॥२॥

भावार्थ—वैश्यजाति, स्त्रीसंज्ञक, अथवा स्त्रियों का प्रिय, गीली भूमि में गमन करने वाला, तपस्वी, गौरवर्ण, पराह्णकाल में बलवान, जलचारी कांस्य [illegible] आदि धातुओं का स्वामी, सतोगुणी, वायुदिशा का स्वामी, कफप्रकृति [illegible] का ईश, [illegible] आदि धातुओं का स्वामी, पुष्टशरीर, युवा अवस्था, लवण रस का स्वामी शुभग्रह, [illegible] वर्ण, तथ उज्वलकान्ति ऐसा चन्द्रमा का स्वरूप [illegible] ॥ २ ॥

मंगल का स्वरूप।

भौमो नरः [illegible] मध्यान्हधातुर्यमदिक्चतुष्पात ।
[illegible] स्वर्ण [illegible] दग्धावर्नाव्य [illegible] चरक्तः ॥ ३॥

[illegible] पित्तप्रकृति, युवा अवस्था [illegible] बलवान, धातुओं का स्वामी, दक्षिण दिशा का [illegible] संज्ञक, क्षत्रिय वर्ण, चौकोन, [illegible] करने वाला, दृढ अंगवाला, [illegible] ऐसा मंगल का स्वरूप जानना। ३।

बुधका स्वरूप ।

ग्राम्यःशुभो नीलसुवर्णवृत्तः शिश्वष्टिकोन्नः समधातुजीवः ।
श्मशानयोरुत्तरदिग्प्रभातंशूद्रः खगः सर्वरसो रजोज्ञः ॥ ४ ॥

भा०—ग्राम में रहने वाला, शुभ नीलवर्ण, सुवर्ण आदि द्रव्यों का स्वामी गोल आकार, बाल अवस्था, दूर्वा हरी भूमि में विचरने वाला वात पित्त कफात्मक, मनुष्यादि जीवोंका प्रभु श्मशान भूमिचारी शीर्षोदय, उत्तरदिशा का स्वामी, प्रातःकालमें बलिष्ठ, शूद्रवर्ण, पक्षियोंका प्रभु, मधु आदि सम्पूर्ण रसोंका स्वामी, रजोगुण, ऐसा बुधका स्वरूप जानना चाहिये ॥ ४ ॥

बृहस्पति का स्वरूप ।

गुरुः प्रभाते कृशुभेशदिग्द्विजः पीनो द्विपाद् ग्राम्यसुवृत्तजीवः ।
वाणिज्यमाधुर्यं सुरालयेशो वृद्धः सुरत्नं समधातुसत्त्वम ॥५॥

भा०—बृहस्पति प्रातःकाल में बलवान्, पुरुष ग्रहक, शुभग्रह, ईशानदिशा का स्वामी, ब्राह्मणवर्ण, पीतवर्ण, द्विपद जीवोंका स्वामी, ग्रामचारी, गोल आकार, मनुष्यादि जीवोंका अधिपति, वणिज कर्मका कर्ता, मधुरप्रिय, देवालय स्वामी, वृद्धावस्था, सुन्दर रत्नों का स्वामी, वात पित्त कफात्मक, सतोगुणी जानना ॥ ५ ॥

शुक्र का स्वरूप ।

शुक्रः शुभः स्त्रीजलगोपराह्णः श्वेतः कफीरूप्यरजोऽम्लमूलम् ।
विप्रोऽग्निदिङ्मध्यवयोरतीशो जलावनिस्निग्धरुचिर्द्विपाच्च ॥६॥

भा०—शुभ संज्ञक, स्त्री, ग्रह, जलचारी, पराह्ण कालमें बलवान् सफेद वर्ण, कफ प्रकृति, रूप्य आदि द्रव्योंका स्वामी, रजोगुणी, खट्टे रसों का अधिपति, मूलसे उत्पन्न धान्य आदिकोंका स्वामी, ब्राह्मण जाति, आग्नेय दिशाका स्वामी; युवा अवस्था, सुरत क्रीडाका ईश, जलवाली पृथिवी का स्वामी, चिकनी कांति वाला, द्विपद (मनुष्यादि) का प्रभु ऐसा जानना ॥ ६ ॥

शनि का स्वरूप ।

शनिर्विहङ्गोऽनिलवन्य सन्ध्याशूद्रांगनाधातुसमः स्थिरश्च ।
क्रूरः प्रतीचीतुवरोऽतिवृद्धोत्करच्चितोट् दीर्घसुनीललोहम् ॥७॥

भा०—पक्षियों का स्वामी, वायुचारी, वनवासी, सन्ध्या समय बलवान्, शूद्रजाति, स्त्री संज्ञक, धातुसमान (वात पित्त कफात्मक) स्थिर स्वभाव, क्रूर, पश्चिम दिशाका स्वामी, अतिवृद्ध (बहुत बूढा) ऊसर भूमि का स्वामी, लम्ब आकार वाला, बहुत कालारङ्ग, लोह धातुका प्रभु, यह शनिश्चरका स्वरूप है ॥ ७ ॥

राहु केतु का स्वरूप ।

राहुस्वरूपं शनिवन्निपादजातिभुजंगोऽस्थिपनैर्ऋतीशः ।
केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात्फलमूह्यमित्थम् ॥८॥

भा०—राहुका स्वरूप शनैश्चर के स्वरूप के समान है, परन्तु विशेषता इतनी है कि राहु चांडाल जाति, सर्पोंका स्वामी, हाडोंका प्रभु, नैर्ऋत्य दिशा का स्वामी है । और केतु बडी पूंछवाला, अथवा चोटीदार, नाना स्वरूप को धारण करने वाला है, इस प्रकार ग्रहोंका स्वरूप वर्णन किया, ग्रहों के स्वरूप से फलको कहना चाहिये ॥ ८ ॥

ग्रहों की दृष्टि ।

दृष्टिः स्यान्नव पंचमेबलवतीप्रत्यक्षतः स्नेहदा ।
पादोनाखिलकार्यसाधनकारी मेलापकाख्योऽयते ॥
गुप्तस्नेहकरी तृतीयभवने कार्यस्य संसिद्धिदा ।
त्र्यंशोना कथिता तृतीयभवने षड्भागदृष्टिर्भवेत् ॥ ६ ॥

भा०—इस ताजिक शास्त्रमें ४ चार प्रकार की दृष्टि होती है १ प्रत्यक्ष स्नेह, २ गुप्तस्नेह, ३ गुप्त वैर ४ प्रत्यक्ष वैर, प्रथम प्रत्यक्ष स्नेह यह है कि [illegible] ग्रह जिस स्थान में स्थित होवे उस स्थान से नवमें और पांचवें स्थान में [illegible] ग्रहको देखता है वह दृष्टि बलयुक्त प्रत्यक्ष प्रीति की देने वाली [illegible] अर्थात् [illegible] करानेवाली सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि [illegible] प्रत्यक्ष प्रीति की करने वाली दृष्टि [illegible] दृष्टि कहते हैं, कि जिस स्थान में [illegible] स्थित ग्रहको देखता है वह दृष्टि गुप्त [illegible] की करने वाली और कार्यों की [illegible] सिद्धि देने

होती कही है, यह दृष्टि तीसरे ग्यारहवें स्थान में प्रत्यक्ष अर्थात् चालीस कलावाली दृष्टि जानना, यहाँ दृष्टि ग्यारहवें घरमें एक कलाकी वाली पड़ती है ॥ ९ ॥

दृष्टिः पादमिता चतुर्थदशमे गुप्तारिभावास्मृताऽन्योन्यं ।
समसमे नवमैकभवने प्रत्यक्षवैराऽखिला ॥
दृष्टं हन्त्यखिलं शुभाढ्यमिदं कार्यस्य विध्वंसदं ।
संग्रामादिकलिप्रदं द्रष्टा दृगाः स्युर्द्वादशांशान्तरे ॥ १० ॥

भा०—जिस स्थान में ग्रह स्थित है उस स्थान से चौथे और दशवें स्थान में स्थित ग्रह को देखता है, सो गुप्त रिपु दृष्टि चौथाई अर्थात् पन्द्रह कला वाली कही है, और सातवें व पहले घरमें स्थित ग्रह जिसको देखता है यह दृष्टि प्रत्यक्ष वैरकी जानने वाली साठकलाओं वाली होती है, यह दृष्टियों का कुशील कर सम्पूर्ण शुभ कामों का नाश करने वाली कार्य का विध्वंसक, संग्राम आदि कलह कारक कलेशों की देने वाली हैं, यदि द्रष्टा और दृश्यका अन्तर बारह भागों से ज्यादह न हो तो ये दृष्टियाँ जैसा फल कहा है उसको देने वाली होती हैं, अन्यथा द्रष्टा और दृश्यका अन्तर यदि बारह भागों से अधिक होगा तो ये दृष्टियाँ यथोक्त फलको देने वाली नहीं होंगी ॥ १० ॥

गणितागत दृष्टि साधन ।

अपास्य पश्यन्निजदृश्यखेटादेकादिशेषे ध्रुवलिप्तिकाः स्यु ।
पूर्णं.खवेदा४०स्तिथयो१५ऽत्रवेदा४२खं.षष्टि६०रभ्रं.शरवेद४५सं.
तिथ्यः१५खचन्द्रा१०वियद्.अनकाः६०शेषांकयातैष्यविशेषघातात्
लब्धंखरामै ३० रधिकोनकैष्येस्वर्णंभुवेताऽस्फुटदृष्टिलिप्ताः॥१२॥

भा०—जो ग्रह देखता है वह द्रष्टा और जिसको देखता है वह दृश्य, कहाता है, यह देखकर द्रष्टा ग्रहको दृश्य ग्रहमें घटा देना, घटाने से जो राश्यादि शेष रहता है, उस एक आदि शेष में पूर्ण इत्यादिक ध्रुव अर्थात् स्थिर दृष्टि कला होता है, अर्थात् द्रष्टा से रहित दृश्य ग्रहके राशि स्थान में एक शेष रहै तो शून्य दृष्टि कला होती है, और दो शेष रहें तो चालीस, तीन शेष रहें तो पंद्रह, और चार शेष रहें तो पैंतालीस, पांच शेष रहे तो शून्य, छै शेष रहें तो साठ, सात शेष रहें तो शून्य, आठ शेष रहें तो पचालीस ॥ ११ ॥ नव

शेष रहे तो पन्द्रह, दश शेष तो दश, ग्यारह शेष रहें तो शून्य, बारह शेष रहें तो साठ यह दृष्टि कला है, शेष रहे अङ्क को यात और ऐष्य के अन्तर से गुणा करे अर्थात् द्रष्टा से रहित दृश्य ग्रहके राशि स्थान में जो अङ्क प्राप्त हो वह यात संज्ञक कहाता है और उसके आगे के अङ्क का ऐष्य संज्ञा कहा है, इन दोनों का अन्तर करे उसी अन्तर से शेष (बचे हुए) अंशों का गुणा करे फिर तीस का भाग लेने से जो लब्ध कलादिक हों उनको राशि स्थान के विषे प्राप्त हुए अङ्क में धन व ऋण करे, इस आशङ्का में कहते हैं कि जब आगे का ध्रुवा पहले ध्रुवा से अधिक होवे तब धन करे अर्थात जोड़ देवै, और कमती होवे तो ऋण करे अर्थात् घटा देवै, ऐसा करने से स्पष्ट दृष्टि लिप्ता (कला) होती है ॥ १२ ॥

अथ ग्रह दृष्टि साधन का उदाहरण ।

जैसे द्रष्टा चन्द्र राश्यादि ५।२२।९।४७ यह है और दृश्यसूर्य ९।७।३०।६ यह है, इसमे द्रष्टा को घटाया तो ३।१५।२०।१९ यह द्रष्टा से रहित दृश्य हुआ. इस राशि के स्थान में ३ अङ्क हैं, तीन के नीचे ध्रुवाङ्क १५ है और इसके आगे का ध्रुवाङ्क ४५ इसमें १५ को घटाया तो तीस हुए, इसी फरके शेष अंशों १५।२०।१९को गुणा किया तो ४६० ।३९।३० यह गुणनफल हुआ इसमें ३० को भाग लेने से १५।२०।१९ यह लब्ध हुआ इसको अग्रिम ध्रुव [illegible] के अधिक होने से १५ के मध्य में जोड़ [illegible] चन्द्रमा की यह ३०।२० [illegible] इसी प्रकार सम्पूर्ण ग्रहों [illegible] ॥१३॥

[illegible]

[illegible] सूर्यादि [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] सूर्यादिदृष्टिसंज्ञकाः ।

अथ दृष्टिध्रुवांकाः सान्तरांकाश्चात्र लिख्यते ।

राशय	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ध्रु.क.ला.	०	४०	१५	४५	०	६०	०	४५	१५	१०	०	६०
अन्तरांक	४०	२५	३०	४५	६०	६०	४५	३०	५	१०	६०	६०
ऋणधन	ध	ऋ	ध	ऋ	ध	ऋ	ध	ऋ	ध	ऋ	ध	ऋ

अथ ग्रहदृष्टियन्त्रम् ।

	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
सू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
चं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चक्रे वामदृगुच्यते बलवती याम्याश्रया नेष्टफलाऽस्येक्षतेपि दृगुच्य-
तेऽर्धं जननान्यैके विदुः सूरयः ॥ १३ ॥

भाषार्थः—जो ग्रह जिस ग्रह को मित्र दृष्टि से यानी पांचवीं नौवीं ग्यारहवीं दृष्टि से देखता है वह ग्रह उसका मित्र जानना चाहिये और जो ग्रह शत्रु दृष्टि से जिस ग्रह को देखता है वह उसका दुश्मन जानना चाहिये अन्यथा अर्थात् मित्र और दुश्मन दृष्टि के अभाव में परिशेष से दूसरे, छठे, आठवें, बारहवें इन स्थानों में समता होती है यहां रोमक नाम आचार्य ने विद्वान् के मत से इसी वचन को प्रमाण माना है सो श्लोक पूर्व लिख चुके हैं, 'मित्रं दृशोऽरं समतामे बाहुल्य' इत्यादि । यद्यपि संपूर्ण स्थानों में गणितागत दृष्टि आती है तो भी यहां नहीं ग्रहण करना, कारण कि दृष्टि के अभाव में समता कही है, गणितागत दृष्टि के होने पर समता का अभाव ही होजायगा यह हेतु कितने ही आचार्य कहते हैं, वास्तव में यहां एक पांच सात और ग्यारह इन्हीं के अन्त तुल्य अंश इत्यादि अवयवों वाले ग्रहों की गणितागत दृष्टि का अभाव है तो समता हो नहीं सकती, जैसे ग्रह १।३।२०।५० यह चन्द्रमा है और ८।३।२०।५० यह दूसरा ग्रह है इन दोनों का अन्तर किया तो केवल ७ राशि ही शेष रहा मानके नीचे ध्रुवाङ्क ० है । यह सम्भव नहीं कि अंश कला विकलाओं करके तुल्य दृश्य और ग्रह मिलें इस कारण से सम दृष्टि अभाव स्वतः सिद्ध है और दूसरे ग्रन्थ में समता कहीं भी नहीं है, अब सूर्यादि ग्रहों के दीप्तांश वर्णन करते हैं सूर्य के दीप्तांश १५ चन्द्रमा के १२ मङ्गल के ८ बुध के ७ गुरु के ९ शुक्र के ७ शनैश्चर के ९ दीप्तांश हैं । अब दृष्टि में कुछ विशेषता को वर्णन करते हैं, लग्नादि १२ राशियों के चक्र में दक्षिण दृष्टि की अपेक्षा से वाम दृष्टि बलवती होती है, अर्थात् वाम स्थान में स्थित ग्रह की दृष्टि वामदृष्टि कही जाती है यहां मध्यमपदलोपी समास जानना चाहिये, वाम भागस्थ ग्रह की दक्षिण भागस्थ ग्रह के ऊपर जो दृष्टि वह बलवती कही है, लग्न को आदि के छठे स्थान पर्यंत दक्षिण भाग कहा है और सातवें घर से बारहवें घर पर्यन्त वाम भाग कहा है यही बृहज्जातक में कहा गया है । अब (चक्रे वामदृगुच्यते०) यहां कुछ उदाहरण कहते हैं, जैसे दसवें स्थानसे चौथे स्थान में जो दृष्टि है वह बलवती कही है अर्थात् दसवें घर में स्थित ग्रह की चौथे घर में स्थित ग्रह के ऊपर जो दृष्टि है वह बलवती

होती है और चौथे घर में स्थित ग्रह के ऊपर जो दृष्टि है वह निर्बल होती है यह अर्थ ही से सूचित होता है, तात्पर्य यह कि सातवें आदि बारहवें स्थान पर्यन्त आदि घरों में स्थित ग्रहों की लग्न आदि छठे पर्यन्त घरों में स्थित ग्रहों के ऊपर जो दृष्टि है वह बलवाली है, यह निर्दिष्ट अर्थ समझना चाहिये और ऐसा ही अर्थ समरसिंह ने भी किया है कि (वामदृष्टि) इस पदमें सप्तमी तत्पुरुष समास है, वाम में दृष्टि वामदृष्टि, दक्षिण में दृष्टि दक्षिण दृष्टि कहाती है अर्थात् दक्षिण भाग में स्थित ग्रहों की जो वाम भाग में स्थित ग्रहों के ऊपर दृष्टि है उसकी अपेक्षा के वाम भाग में स्थित ग्रहों के ऊपर जो दृष्टि है वह बलवती होती है, उदाहरण- जैसे (भुवेन्द्रोपरि दृष्टिमध्यात्सबलेति सर्वतोप्युत्तम्) दशम घर से चौथे घर पर जो दृष्टि है उसको बलवती कहते हैं, एवं सप्तम आदि द्वादश घर पर्यन्त घरों में स्थित ग्रहों की लग्न आदि षष्ठ पर्यन्त स्थित ग्रहों पर जो दृष्टि है वह बलवाली कही है, यह विद्वज्जनों करके विचारणीय है, ऐसा ही केशवदैवज्ञ ने भी कहा है कि (परार्द्धखगदृक प्राग्जार्द्धदृक्तो-ऽधिका) लग्न आदि षष्ठ पर्यन्त पूर्वार्द्ध, सप्तम आदि द्वादश पर्यन्त परार्द्ध है पूर्वार्द्ध दृष्टि से परार्द्ध दृष्टि बलवाली कही है यह सिद्धांत जानना, अब एक राशि में स्थित हुआ। इत्य इन दोनों की जो परस्पर दृष्टि वह आचार्यों की जानने वाली अर्थात् अत्यन्त लाभ पूर्वक शुभ फल को देने वाली जानना, ऐसा निश्चय ही ताजिक शास्त्र के जानने वाले पण्डितों ने कहा है ॥ १३ ॥

पूर्व कहे हुए दीप्तांशों का प्रयोजन।

पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं ग्रहः।
दद्यादतिक्रमे तेषां मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥ १४ ॥

भावार्थः—नवम आदि स्थानों में दृष्टि के होते हुए देखने वाला ग्रह अपने दीप्तांशों द्वारा आगे व पीछे स्थित हो तो वह उत्कृष्ट नवम आदि स्थानों के स्थित दृष्टि फल को देता है और यदि दीप्तांशों का उल्लंघन करजाय तो [illegible] फल को देता है यह ताजिक शास्त्र के जानने वालों करके [illegible] ॥ १४ ॥

षोडश योगों की संज्ञा और उनके नाम।

[illegible] इन्दुवारमित्थशालो पर ईसराफः।
[illegible] ततः स्याद्यमयामणऊकम्बूलमगैरि कम्बूलमुक्तम् ॥ १५ ॥

खल्लासरं रद्दमथो दुफालिकुत्थं च दुत्थोत्थदिवीरनामा ।
तम्बीरकुत्थौ दुरफश्च योगाः स्युः षोडशैषां कथयामि लक्ष्म॥१६॥

भा०—पहला योग १ इक्कबाल, फिर २ इन्दुवार, ३ इत्थशाल, ४ ईसराफ, ५ नक्त, ६ यमया, ७ मणऊ, ८ कम्बूल, ९ और कम्बूल ॥ १५ ॥ १० खल्लासर, ११ रद्द, १२ दुफालिकुत्थ, दुत्थोत्थदिवीर, १४ तम्बीर, १५ कुत्थ, १६ दुरफ यह षोडश १६ योग हैं अब इन स योगों के लक्षण वर्णन करता हूँ ॥ १६ ॥

इक्कबाल और इन्दुवार योगके लक्षण ।

चेत्कंटके पणफरे च खगाः समस्ताः ।
स्यादिक्कबाल इति राज्यसुखाप्तिहेतुः ॥
आपोक्लिमे यदि खगाःसकलेन्दुवारो ।
न स्याच्छुभः कथनताजिकशास्त्रगीतः ॥ १७ ॥

भा०—जो कण्टक (प्रथम चतुर्थ सप्तम व दशम) स्थान में और पणफर (द्वितीय पंचम अष्टम एकादश) स्थान में सम्पूर्ण ग्रह स्थित होवें तो इक्कबाल योग होता है, यह इक्कबाल योग राज्य और सुख प्राप्त का हेतु है, अर्थात् अत्यन्त शुभ फलका देने वाला होता है, तथा जो आपोक्लिम अर्थात् तृतीय षष्ठ, नवम और द्वादश स्थान में सम्पूर्ण ग्रह होवें तो इन्दुवार योग कहिये जिसको यवन भाषा में इदबार कहते हैं यह ताजिक शास्त्र में गाया हुआ इदबार निश्चय करके कहीं भी (वर्ष प्रवेश व मास प्रवेशादिकों में) शुभ दायी नहीं होता है ॥ १७ ॥

इत्थशाल योगका लक्षण ।

शीघ्रोल्पभागैर्धनभागमंदेग्रस्थे निजं तेज उपाददीत ।
स्यादित्थशालोथमथो विलिप्तालिप्तार्धहीनो यदि पूर्णमेतत् ॥१८॥

भा०—जिन दो ग्रहोंका मुथशिल योग विचार करना हो, उन ग्रहों के मध्य में जिस ग्रहकी गति अधिक हो वह शीघ्र गतिवाला ग्रह होता है, और जिसकी गति न्यून हो अर्थात् चाल कमती हो वह मन्द गतिवाला ग्रह कहा जाता है शीघ्र गति वाले ग्रहके अल्प भाग हों और मंदगति वाले

ग्रह के बहुत भागहों और शीघ्रगतिवाले ग्रहसे मंदगतिवाला ग्रह अगाडी स्थित होवे तो शीघ्र गतिवाला ग्रह मंदगतिवाले ग्रहको अपना तेज देता है, यह इत्थशाल योग होता है, इसीका दूसरा नाम मुथशिल है शीघ्र गतिवाले ग्रहसे वा शीघ्र गतिवाले ग्रहके दीप्तांशों करके मन्द गतिवाले ग्रहको अधिक रहते हुवे मुथशिल योग होता है. यह सिद्धान्त अर्थ जानना चाहिये. अब पूर्ण मुथशिल योगका वर्णन करते हैं, यदि शीघ्र गतिवाला ग्रह मन्द गतिवाले ग्रहसे एक विकलामात्र न्यून हो अथवा आधी विकला से हीन हो तब यह पूर्ण योग विकलाओं वाला मुथशिल योग होता है और जब दोनों ग्रहों की विकला पर्यन्त अवयवों से समानता हो तब पूर्ण मुथशिल होता है, यह अर्थ से ही सिद्ध होता है ॥ १८ ॥

अदृष्टि में मुथशिल का लक्षण ।

शीघ्रो यदा भांत्यलवःस्थितःसन् मन्देऽन्यभस्थे निदधाति तेजः ।
स्यादित्थशालोऽदमथैष शीघ्रो दीप्तांशकांशैरिह मन्दपृष्ठे ॥१९॥
तदा भविष्यद्गणनीयमित्थशालं त्रिधैवं मुथशीलमाहु ।
लग्नेशकार्याधिपयोर्यथैष योगस्तथा कार्यमुशन्ति सन्तः ॥ २० ॥

भावार्थ—जब शीघ्र गतिवाला ग्रह राशिके अन्तिम अंश अर्थात् तीसवें अंशमें स्थित होकर अग्रिम राशिमें स्थित मन्द गतिवाले ग्रहके लिये अपने तेजको देता है, भावार्थ यह कि-शीघ्री ग्रह राशि के अन्त में स्थित हो और मन्द ग्रह शीघ्री ग्रहके दीप्तांशादि अंशों में होकर आगे की राशि में स्थित होवे, तब शीघ्र गतिवाला ग्रह मन्दगति वाले ग्रहमें अपने तेजको [illegible] है, तभी यह इत्थशालनामक योग होता है, अब भविष्य [illegible] करते हैं—यदि शीघ्र गतिवाला ग्रह अपने दीप्तांशों से अधिक [illegible] ग्रहसे पीछे स्थित होकर जब मन्द गतिवाले ग्रह [illegible] देने की कामना करता है तब आगे होने वाला इत्थ- [illegible] यह गणनीय है अर्थात् जानना चाहिये, ऐसा [illegible] (मुथशिल) योग पूर्वाचार्योंने दर्शाया है, अब [illegible] करते हैं—लग्नका स्वामी और कार्य का स्वामी [illegible] और उसका स्वामी इन दोनों का ऐसा

मुथशिल योग है ऐसा ताजिक ग्रन्थों में कहा है, जैसे कोई प्रश्नकर्त्ता आकर पूछे कि मुझको स्त्री, पुत्र, धन, राज्य, सुखादि प्राप्त होगा कि नहीं ? ऐसा प्रश्न सुनकर उस समय के लग्न का स्वामी और जिस जिस भाव का प्रश्न करे उस उस भाव का स्वामी इन दोनों के इत्थशाल का विचार करके शुभ व अशुभ फल को कहना चाहिये वर्ष प्रवेश में भी लग्न आदि इन्हीं से संपूर्ण कार्यों का विचार करे, जो स्त्री के विषय में प्रश्न हो तो सातवें भाव से विचार करे, पुत्र लाभ प्रश्न हो तो पांचवें भाव से विचारे राज्य प्राप्ति की चिन्ता हो तो दशवें घर से विचार करना चाहिये, धन की चिन्ता हो तो दूसरे भाव से विचारे लाभ प्रश्न होवे तो ग्यारहवें भाव से विचारना ऐसे ही सर्वत्र जानना जहां लग्न का स्वामी और राज्यादि अर्थात् कार्यों का स्वामी इन दोनों का होगा मुथशिल योग होवे होगी उस भाव की प्राप्ति कहनी चाहिये, यदि लग्नेश और कार्येश इन दोनों का वर्तमान मुथशिल योग हो तो शीघ्र ही उस भाव की प्राप्ति कहनी चाहिये, यदि लग्नेश और कार्येश इन दोनों का वर्तमान मुथशिल योग हो तो उस भाव सम्बन्धी सुख इसी समय वर्तमान है, यह कहना चाहिये और यदि लग्नेश व कार्येश इन्हों का पूर्ण मुथशिल योग हो तो उस भाव सम्बन्धी पूर्ण सुख कहना चाहिये और जो भविष्यत् मुथशिल योग होवे तो आगाड़ी उसी भाव सम्बन्धी सुख होवैगा ऐसा कहना ॥ १९ ॥ २० ॥

दृष्टि बल से मुथशिल का विचार।

लग्नेशकार्याधिपतत्सहाया यत्र स्युरस्मिन्पतिसौम्यदृष्टे ॥
तदा बलाढ्यं कथयन्ति योगं विशेषतःस्नेहदृशाऽपि सन्तः २१

भावार्थः—लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी इन दोनों के सहायक अर्थात् मित्र ये चारों अर्थात् १ लग्न स्वामी,२कार्य स्वामी, ३ लग्नस्वामी का मित्र,और ४ कार्य स्वामी का मित्र ये जिसराशि में होवें और वह राशि अपने स्वामी और शुभ ग्रह दोनों से देखा जाता हो तो पूर्व उत्पन्न इत्थशाल(मुथशिल)योग को महात्माजन उत्कृष्ट फलका देने वाला कहते हैं,तहां भी लग्नेश, कार्येश,मित्र,ये चारों जिस राशि में होवें और वह राशि अपने स्वामी और शुभग्रह इन दोनों से स्नेह दृष्टि (मित्र दृष्टि) करके देखा जाता हो तो यह मुथशिल विशेष करके बल सहित अत्यन्त उत्कृष्ट फल का देनेवाला होता है, ऐसा ताजिक शास्त्र के जानने वाले महात्माजनों ने वर्णन किया है ॥ २१ ॥

अन्य भी फल विचार का वर्णन ।

स्वर्क्षादिसत्स्थानगतः शुभैश्चेद्युतेक्षितोऽभूद्भविताऽथवाऽऽस्ते ।
तदा शुभं प्रागभवत्सुपूर्णमग्रे भविष्यत्यथ वर्तते च ॥ २२ ॥

भावार्थ—लग्न स्वामी और कार्य स्वामी ये दोनों अपनी राशि, अपने उच्च, अपने हद्दा, अपने त्रैराशिप व अपने नवांश में हो चुके हों अथवा शुभ ग्रहों के स्थान में प्राप्त व शुभ ग्रहों से युक्त व शुभ ग्रहों से देखे गये हों तो पहिले पूर्ण शुभ फल होता गया ऐसा कहना चाहिये और जब लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी ये दोनों अपने घर, अपने उच्च, अपने हद्दा, अपने त्रैराशिप, व अपने नवांश में आने वाले हों, अथवा शुभ ग्रहों के स्थानों में आने वाले हों, व शुभ ग्रहों से युक्त होवेंगे अथवा शुभ ग्रहों करके देखे जांयगे ऐसा होने पर शुभ फल आगे होवेगा यह कहना चाहिये और जब लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी ये दोनों अपनी राशि में हों व अपने उच्च व अपने हद्दा में हों, अथवा अपने त्रैराशिप व अपने नवांश में हों। व शुभ ग्रहों के स्थानों में प्राप्त हो तथा शुभ ग्रहों से युक्त व देखे जाते हों शुभ फल इस समय होरहा है, यह कहना चाहिये ॥ २२ ॥

अशुभ फल का वर्णन ।

स्वस्थानमस्माद्विपरीतभावेऽथेष्टदृक्तोऽनिष्टगृहं प्रपन्नः ।
अभूदशुभं प्रागशुभं त्विदानीं संयातुकामेन च भावि वाच्यम् २३

भावार्थ—जो शुभ फल पूर्व कह आये हैं उससे विपरीत भाव होने से अनिष्ट फल कहना चाहिये और लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी ये दोनों अपने शत्रु के घर में जा चुके हों, व अपने नीच के घर में, अथवा अपने शत्रु के हद्दा में व अपने शत्रु के नवांश में, व पाप ग्रहों के स्थानमें प्राप्त होकर पाप ग्रहों से युक्त व पाप ग्रहों से देखे गये हों तो प्रथम अशुभ फल होता गया और जब लग्न का स्वामी व कार्य का स्वामी ये दोनों दुष्ट स्थानों में [illegible] पाप ग्रहों से युक्त व देखे जाते हों तो इसी समय अशुभ फल होरहा है यह कहना चाहिये. अब आगे मुथशिल योग में [illegible] कहते हैं—जब लग्न [illegible] का स्वामी ये दोनों मित्र की राशि में [illegible] होरहा है और इस समय

अशुभ फल वर्तमान है, ऐसा कहना, लग्नेश और कार्येश दोनों मित्र के घर में गतभाग हैं और कुछ दिन उपरान्त शत्रु के घर में आवेंगे तो अशुभ फल भावि कहना क्योंकि आगे प्रतिकूल होवेगा ऐसा कहना ॥ २३ ॥

ईसराफ योग का लक्षण ।

शीघ्रो यदा मन्दगतेरथैकमप्यंशमभ्येति तदेसराफः ॥
कार्यन्त्वयो मूसरिफश्चलोके सौम्येनहिल्लाजमतेन चिन्त्यम् ॥२४॥

भा० — जब शीघ्र गतिवाला ग्रह मन्दगति वाले ग्रहके एक भी अंश को उल्लंघन करके पृष्ठगत करे अर्थात् आगे जाय तब ईसराफ योग होता है इसी का दूसरा नाम मूसरिफ है, यहां शीघ्र ग्रह और मन्द ग्रह ये दोनों ग्रह पाप ग्रह हों तो कार्य का विनाश होवे तथा यदि शुभ ग्रह होवें तो वांछित (मनमें विचारे हुये) कार्यों की सिद्धि होवे, यह हिल्लाज आचार्य के मत से निश्चय करना ॥ २४ ॥

नक्त योग का लक्षण ।

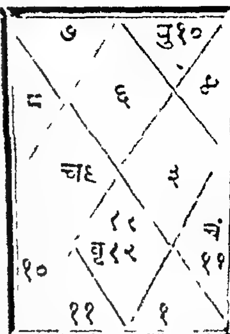
लग्नेशकार्याधिपयोर्नदृष्टिर्मिथोऽथ तन्मध्यगतोऽपि शीघ्रः ।
आदाय तेजो यदि पृष्ठसंस्थान्न्यसेद्यान्यत्र हि नक्तमेतत् ॥२५॥

भा०—लग्नेश और कार्येश इन दोनों की परस्पर दृष्टि न होवे और यदि इन्हीं दोनों (लग्नेश व कार्येश) के मध्य कोई अन्य शीघ्रगति वाला ग्रह स्थित होवे और वह मध्य में स्थित ग्रह पिछाड़ी रहे हुये शीघ्र गति वाले ग्रहके तेज को लेकर अगाड़ी स्थित मन्द गतिवाले ग्रहको समर्पण करता है तब यह नक्तनाम योग होता है इसका उदाहरण आगे दिखाते हैं ॥ २५ ॥

नक्त योग उदाहरण ।

स्त्रीलाभपृच्छ्वातनुरस्तिकन्यास्वामीबुधःसिंहगतोदशांशैः ।
सूर्यांशकैर्देवगुरुःकलत्रे दृष्टिस्तयोर्नास्ति मिथोऽथ चन्द्रः॥ २६ ॥
चापे वृषे चोभयदृश्यमूर्तिःशीघ्रोऽष्टभागैरथवा भवांशैः ।
आदाय तेजो बुधतो ददौयज्जीवाय लाभःपरतःस्त्रियःस्यात्॥२७॥

भा०—जैसे किसी ने आकर स्त्री लाभ होने का प्रश्न किया तो उस



समय कन्या लग्न है उसका स्वामी बुध दश अंशों करके सिंह राशि में बारहवें घर बैठा है.कार्यका स्वामी बृहस्पति बारह अंशों से उपलक्षित होकर सातवें घर में विराजमान है यहां लग्न स्वामी बुद्ध और कार्य स्वामी बृहस्पति इन दोनों की आपस में छठे आठवें घर में बृहस्पति और बृहस्पति से छठे स्थान में बुध ये दोनों आपस में नहीं देखते हैं, और शीघ्रगति वाला चन्द्रमा, दोनों (बुद्ध या बृहस्पति) के बीच में प्राप्त होकर धन राशि में अथवा वृष राशि में स्थित है, और यह चन्द्रमा लग्न स्वामी बुद्ध कार्यस्वामी बृहस्पति इन्हीं से देखा जाता है, पुनः आठ अंशों से ग्यारह अंशों से उपलक्षित ऐसा चन्द्रमा पीठ पर बैठे हुये बुध से तेज लेकर बृहस्पति के अर्थ देता है उस लग्न स्वामी बुध के तेज हरने से अपनी गत से स्त्री की प्राप्ति नहीं होगी, यह कहना चाहिये क्योंकि बीच में बैठने वाला तीसरा शीघ्र गति वाला ग्रह चन्द्रमा ने लग्न के स्वामी का तेज हरकर मन्द गति वाले ग्रह (गुरु) के अर्थ दे दिया इस कारण किसी अन्य (बीच वाले) मनुष्य के द्वारा स्त्री का लाभ होवेगा, ऐसा कहना ॥ २६ ॥ २७ ॥

यमया योग का लक्षण ।

अन्तः स्थितो मन्दगतिस्तु पश्येद्दीप्तांशकेन्द्रावथ शीघ्रतस्तु ।
नीत्वा महो यच्छति मन्दगाय कार्यस्य सिद्ध्यै यमया प्रदिष्टः २८

भावार्थः—लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी इन दोनों की दृष्टि परस्पर नहीं होवे अर्थात् लग्नेश की दृष्टि कार्येश पर नहीं और कार्येश की दृष्टि लग्नेश पर न हो. और लग्नेश के बीच बैठा हुआ मन्द गति वाला ग्रह अपने [illegible] करके लग्नेश और कार्येश को स्थान दृष्टि (दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे- [illegible]) से देखता होवे और वह मन्द गति वाला ग्रह (लग्नेश व कार्येश) [illegible] शीघ्र गति वाला ग्रह होवे उससे तेज को लेकर मन्द गतिवाले ग्रह को [illegible] देता है अर्थात् लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी इन्हीं से जो [illegible] होवे [illegible] लिये तेज को देता है इसी से पूर्वाचार्यों ने मन [illegible] कार्य की सिद्धि के [illegible] इसे यमयानामक योग कहा है यह यमया

केन्द्र स्थित शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो देता है इसका उदाहरण आगे कहते हैं ॥ २८ ॥

राज्याप्तिपृच्छा तनुलग्ननाथो मेषे मिलत्स्वष्टनवेऽर्कपस्थः
चन्द्रो रसांशैर्यदि राज्यनाथो दृष्टिस्तयोर्नास्ति गुरुस्तु मन्दः ॥२९॥
दिगंशकः कर्कगतस्तु पश्यस्तुलौ गतो दीप्तिलवैः सचान्द्रम् ।
दत्ते मिलित्वेति पदस्य लाभोऽनेनास्य भावो निखिलस्य वाच्यम् ॥३०॥

नक्त योग का उदाहरण ।

प्रश्न—राज्य प्राप्त होगी कि नहीं किसी ने आकर प्रश्न किया तो प्रश्न लग्न मेष हुआ है, उसका स्वामी भौम मेषराशि का आठ अंशों से उपलक्षित होकर आठवें स्थान में स्थित है तथा राज्य (दशम) स्थानका स्वामी चन्द्रमा छः अंशों का उपलक्षित होकर वृषराशि का ग्यारहवें स्थानमें स्थित है, और दोनों के परस्पर दृष्टि नहीं है, यहां मन्द गतिवाला बृहस्पति दश अंशों से उपलक्षित होकर दशवें स्थान में कर्कराशि पर स्थितमान है और लग्नेश भौम व राज्येश चन्द्र इन दोनों को स्थानदृष्टि से देखता है, यहां चन्द्रमा व भौम से अधिक अपने दीप्तांशों करके चन्द्रमाके तेज ([illegible]) को ग्रहण करके मन्दगति वाले गुरु [illegible] ऐसा देता है इस कारण राज्य लाभ [illegible] के द्वारा होनेवाला है ऐसा कहना चाहिये॥२९।३०



मणऊ योग का लक्षण ।

वक्रः शनिर्वा यदि शीघ्रखेटात्पश्चात्पुरस्तिष्ठति तुर्यदृष्ट्या ।
एकर्क्षगत्वाऽथ युता दृशा वापश्यन्नथांशैरधिको न कैश्चेत् ॥३१॥
तेजो हरेत्कार्यपदेत्थशाली स्थितोऽपि वाऽसौ मणऊशुभो न ।
अथास्योदाहरणमाह । स्त्रीलाभपृच्छा तनुरस्ति कन्याऽत्र ज्ञो
दिगंशैस्तिथिभिः सुरेज्यः ॥ ३२ ॥ कलत्रगः खेऽवनिजो भवांशैः
पूर्वं बुधो भौमहृतस्वतेजाः । जीवेन पश्चान्मिलतीति लाभो
नार्यास्तु नो पृष्ठगतेऽथवास्मिन् ॥ ३३ ॥

भावार्थ—इस मणऊयोग में लग्नेश वा कार्येश की परस्पर स्थान दृष्टि की आवश्यकता है, अर्थात् लगन स्वामी और कार्य स्वामी इन दोनों की परस्पर स्थानदृष्टि को पूर्वाचार्यों ने माना है, यदि शीघ्र गति वाले गृह से मंगल व शनैश्चर ये दोनों पीछे या आगे स्थित हों अर्थात् लग्न स्वामी और कार्य स्वामी इनमें जो शीघ्र गति वाला गृह हो उसके जो अंशादि उनमें पूर्व वा पर अंशों से ही मंगल व शनैश्चर स्थित हों और मंगल व शनैश्चर चौथे स्थान दृष्टि से अथवा एक स्थान दृष्टि से तथा सातवें स्थान दृष्टि से अंशों करके या कम अंशों करके शीघ्र गति वाले गृह को देखता हुआ शीघ्रगति वाले ग्रह के तेज को हरैं अर्थात् मंगल व शनैश्चर इनमें से कोई ग्रह पहली चौथी और सातवीं दृष्टि से शीघ्रगति वाले ग्रह को देखे और शीघ्रगति वाले ग्रह के जितने अंश होवें उनसे मंगल व शनैश्चर के अधिक वा न्यून हों (शीघ्री गृह के जितने दीप्तांश होवें उनके मध्य में मंगल व शनैश्चर के अंश हों यह किसी आचार्य का मत है और मंगल शनैश्चर इनमें से कोई गृह शीघ्रगति वाले गृह के बल को हरण कर लेवें यदि बल रहित शीघ्रगति वाला गृह वांछितकार्याधीश के साथ इत्थशाल (मुथशिल) योग को भी करता हुआ विद्यमान होवें तो मणऊ योग होता है, यह मणऊयोग शुभ नहीं जानना अर्थात् शुभकार्यों का करने वाला नहीं होता है ॥ ३१ ॥ अब इस मणऊयोग का वर्णन करते हैं—किसी प्रश्नकर्ता ने आकर पूछा कि स्त्री का लाभ होगा कि नहीं ? तो यहां प्रश्न समय में कन्या लग्न है, उसका स्वामी बुध दस अंशों से उपलक्षित होकर यहीं लग्न में विराजमान है और बृहस्पति पन्द्रह अंशों करके ॥ ३२ ॥ सप्तम घर में मीनराशि का विराजमान है, और इसके स्थान से मंगल ग्यारह अंश करके दशवें [illegible] और चौथे स्थान दृष्टि से शीघ्र गत बुध को देखता है [illegible]

अथमणऊयोगोदाहरणम्।

पुनर्मणऊयोगोदाहरणम्

[illegible] निर्दर्शन किया गया नीचे

क्योंकि इत्थशाल के साथ और चन्द्रमा से मानफल मिला, इस कारण इसको लाभ नहीं होगा ऐसा कहना चाहिये. यह एक योग हुआ अब दूसरा योग कहते हैं कि जैसा पूर्व योग कहा गया उसे उसी रूप में स्थित हुए ग्रह के अंशों की अपेक्षा कम अंशों में युक्त होकर मंगल भी हो इस प्रकार कोई अंशों में मंगल युक्त होते हुये यह मणऊ नाम योग वांछित कार्यों का नाश करने वाला होता है ॥ ३३ ॥

मणऊ योग का भेद ।

यदीत्थशालोऽस्त्युभयोः स्वदीप्तहीनाधिकांशैःशनिभूसुतौचेत ।
युक्तौविलग्नपकार्येशयोऽस्तते जोहरौ कार्यहरौ निरुक्तौ ॥ ३४ ॥

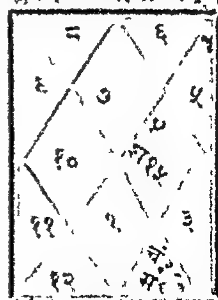
भावार्थ—यदि लग्नाधीश और कार्याधीश इन दोनों का इत्थशाल (मुथशिल) योग होवे और इन दोनों के बीच में वा इनमें से किसी एक के साथ शनैश्चर व मंगल ये दोनों एक राशि में स्थित होवें और लग्नेश व कार्येश इनके जो दीप्तांश उनसे अथवा शनैश्चर व मंगल के अंश कमती वा अधिक होवें और शनैश्चर व मंगल के अंश दीप्तांशों के बीच ही में होवें इन्हीं करके शनैश्चर मंगल ये दोनों लग्नेश व कार्येश इन्हों के तेज को हरते हुए वांछित कार्य के नाश करने वाले मुनियों ने कहे हैं ॥ ३४ ॥

मणऊ योग का उदाहरण ।

राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथः कर्के सितोंऽशैस्तिथिमिर्दिगंशैः ॥
वृषे शशी भूपलवैः कुजश्चहरन् द्वयोर्भा हरते च राज्यम् ॥ ३५ ॥

भावार्थ—राज्य लाभ होने के प्रश्न को किसी ने पूछा तो प्रश्न समय तुला लग्न है, उसका स्वामी शुक्र १५ अंशों से उपलक्षित होकर कर्क राशि का राज्य (दशम) स्थान में स्थित है और दश अंशों से वृषराशि पर अष्टम घर में चन्द्रमा स्थित है, तथा वहीं सोलह अंशों करके मंगल विद्यमान है, यहां मंगल लग्नेश (शुक्र) और कार्येश (चन्द्रमा) इन दोनों के तेज को हरण करके राज्य को हरता है इस उदाहरण में लग्नाधिप व कार्याधिप, इन दोनों का इत्थशाल योग है, और

प्रश्नमणऊयोगोऽयम्



कार्येश के साथ मंगल अधिक अंशों से वृष राशि में स्थित है, इस कारण लग्नेश और कार्येश के पराक्रम को ग्रहण करके राज्य को हर लिया ॥३५॥

कंबूल योग के लक्षण ।

लग्नकार्येशयोरित्थशालेऽत्रेन्द्वित्थशालतः ।
कम्बूलं श्रेष्ठमध्यादिभेदैर्नानाविधं स्मृतम् ॥ ३६ ॥

भा०—लग्नेश और कार्येश इन दोनों का परस्पर इत्थशाल योग होवै और इनमें से किसी एक के साथ चन्द्रमा भी इत्थशाल योग करै तो उत्तम मध्यम आदि भेदों से अनेक प्रकार का कंबूल योग कहा है, तथा-

भांश वा कार्या-धीश तथा चं-द्रमा इनके चार प्रकार के अधिकार भेद से सोलह प्रकार का कंबूल योग होता है जैसे १ उत्तमोत्तम २ उत्तम मध्यम

अथ षोडशप्रकारककम्बूलयोगचक्रम् ।

चन्द्र	लग्नेशकार्येशौ	लग्नेशकार्येशौ	लग्नेशकार्येशौ	लग्नेशकार्येशौ
उत्तमाधि-कारश्चन्द्र	उत्तमाधिकारस्थौ १	मध्यमाधिकारस्थौ २	समाधिकारस्थौ ३	अधमाधिकारस्थौ ४
मध्यमाधि-कारश्चन्द्र	उत्तमाधिकारस्थौ ५	मध्यमाधिकारस्थौ ६	समाधिकारस्थौ ७	अधमाधिकारस्थौ ८
समाधिकार-श्चन्द्र	उत्तमाधिकारस्थौ ९	मध्यमाधिकारस्थौ १०	समाधिकारस्थौ ११	अधमाधिकारस्थौ १२
अधमाधि-कारश्चन्द्र	उत्तमाधिकारस्थौ १३	मध्यमाधिकारस्थौ १४	समाधिकारस्थौ १५	अधमाधिकारस्थौ १६

३ उत्तम ४ उत्तमाधम, ५ मध्यमोत्तम ६ म.म.

{ कम्बूलभेदाद्दिल्लग्नेथशाले चन्द्रोऽपि नाऽकथितं विधत्ते ।
निजांशभेदोत्तमतो प्रयातं मध्यं त्रिकाणे त्वधमं परत्र १ }

७ [illegible], ७ मध्यम, ८ मध्यमाधम, ९ उत्तम, १० मध्यम ११ मध्यम मध्यम १२ अधम, १३ अधमोत्तम, १४ अधममध्यम, १५ अधम और १६ अधमाधम, ये सोलह भेद हैं इनमें सम शब्द को ३ । ७ । [illegible] । १० । ११।१२।१५ । [illegible] को छोड़कर सोलह स्थौं को प्रकाशित किया है, यावनी भाषा में इसको कम्बूल भी कहते हैं, और ग्रह अपने घर व अपने उच्चराशि में उत्तम होता है, और मित्रराशि, अपने हद्दा द्रेष्काण व नवांश में मध्यम है, और शत्रु घर, व अपने नीच घर में अधम होता है, इसका उदाहरण आगे लिखा है । ३६ ।

उत्तमोत्तम कम्बूल योग का लक्षण ।

यदीन्दुःस्वगृहोच्चस्थस्तादृशौ लग्नकार्यपौ ।
तदेत्थशालौ कम्बूलमुत्तमोत्तममुच्यते ॥ ३७ ॥

भाषार्थः—यदि चन्द्रमा अपने राशि व अपने उच्च में स्थित हो और लग्न स्वामी व कार्य स्वामी ये भी दोनों अपने घर व अपने उच्च में स्थित होकर परस्पर इत्थशाल भी करें और यदि चन्द्रमा इन्हीं में से किसी एक के साथ इत्थशाल भी करे तो यह कम्बूल नामक उत्तमोत्तम कहा जाता है, क्योंकि तीनों को उत्तम अधिकार प्राप्त है इससे पण्डितों ने उत्तमोत्तम कहा है, यह प्रथम भेद है इसका उदाहरण आगे कहा है ॥ ३७ ॥

उत्तम मध्यम भेदन कम्बूल योग का लक्षण ।

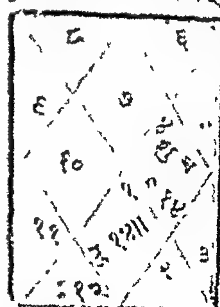
स्वीयहद्दाद्रेष्काणांशभागस्थैरित्थशालतः ।
मध्यमोत्तमकम्बूलं हीनाधिकृतिनोत्तमम् ॥ ३८ ॥

भावार्थ—अपने हद्दा, द्रेष्काण व नवांश में लग्नेश और कार्येश होवें और परस्पर इत्थशाल भी करते होवें तथा यदि चन्द्रमा अपने घर व अपने उच्च में विराजमान होकर लग्नेश कार्येश में से किसी एक के साथ इत्थशाल योग को करे तो उत्तम मध्यम नामक कम्बूल योग होता है, क्योंकि चन्द्रमा का उत्तम अधिकार प्राप्त है और लग्नेश व कार्येश का मध्यम अधिकार है इससे (उत्तम मध्यम) कहा है, यहां ग्रन्थकर्ता ने छन्दोभंग न होने के कारण मध्यमोत्तम कहा है ॥ ३८ ॥

उत्तम मध्यम कम्बूल योग का उदाहरण ।

भाषार्थ—जैसे प्रश्नकर्ता ने पूछा कि हमारे भाग्य की वृद्धि होवेगी ? और कब होगी ? यहां प्रश्न समय तुला लग्न है उसका स्वामी शुक्र १० अंशों से दशम स्थान में अपने हद्दा में स्थित है और भाग्य (नवम) भाव का स्वामी बुध १४॥ अंशों से उपलक्षित होकर सातवें घर में अपने हद्दा में विराजमान है, इन दोनों का परस्पर इत्थशाल योग भी है, यहां चन्द्रमा १४ अंशों करके अपने घर कर्क राशि में विराजमान हो-

उत्तममध्यमकम्बूलम्



कर कार्याधीश के साथ इत्थशाल योग करता है, इस कारण उत्तम मध्यम नामक कम्बूल योग हुआ, इसी से प्रथम भाग्य की वृद्धि अधिक फिर मध्यम कहनी चाहिये, यह दूसरा भेद कहा (हीनाधिकृतिनोत्तमम्) हीन हैं उत्तम मध्यम व अधम अधिकार जिसके ऐसे लग्नाधीश और कार्याधीश करके परस्पर मुथशिल योग के होते हुए यदि चन्द्रमा अपने घर व उच्च में बैठकर इत्थशाल योग को करे तो उत्तम कम्बूल योग होता है, क्योंकि चन्द्रमा का उत्तम अधिकार प्राप्त है और इतर लग्नाधीश व कार्याधीश का सम अधिकार है इस कारण यह उत्तम नामक कम्बूल योग कहा जाता है।

उत्तम कम्बूल योग का उदाहरण।

जैसे किसी पृच्छक ने प्रश्न किया कि हमको राज्य प्राप्त होगा कि नहीं ? उस समय लग्न मिथुन है, उसका स्वामी बुध सम घर में स्थित है और राज्य भवन का स्वामी गुरु सम घर कन्या राशि में स्थित है और चन्द्रमा अपने उच्च वृष राशि में विद्यमान है इस प्रकार तीनों ग्रहों के मुथशिल योग के होते हुए उत्तम नामक कम्बूल योग हुआ, राज्य की प्राप्ति उत्तम कहनी चाहिये यह तीसरा भेद है।

उत्तमकम्बूलचक्रम्

बु १०	६ गु चं
५	१
४	३
	२
१२	१०
७	११
	९
८	१०

उत्तमाधम, मध्यमोत्तम मध्यम मध्यम कम्बूल योग के लक्षण।

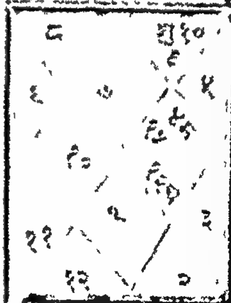
उत्तमाधमता नीचारिपुगेहस्थितेन चेत्।
[illegible]श्चन्द्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत् ॥ ३९ ॥
मध्यमोत्तमसंज्ञं च पूर्वस्मान्न विशिष्यते।
[illegible]स्थेन कम्बूलं मध्यमध्यमम् ॥ ४० ॥

[illegible] लग्नेश या कार्येश ये दोनों अपने नीच राशि में व शत्रु के [illegible] परस्पर इत्थशाल करें और चन्द्रमा अपने घर व अपने [illegible] लग्नेश और कार्येश इनमें से किसी एक [illegible] हो तो उत्तमाधम नामक कम्बूल योग होता है, [illegible] का उत्तम अधिकार प्राप्त है और लग्नेश व कार्येश का

काम अधिकार प्राप्त है, इससे यह उत्तमाधम कहा है, और (मध्यमोत्तम नामक कम्बूल नाम का उदाहरण) चंद्रमा अपने हद्दा में ही ऐसा कहा है, परन्तु हद्दा मात्र में चंद्रमा का अधिकार नहीं है किन्तु तीन चारि पांच ग्रहों का अधिकार है इस कारण चाहि जब से चंद्रमा अपने द्रेष्काण अपने नवांश में स्थित होकर अपने घर के अपने हद्द भाग में प्राप्त परस्पर मुथशिलकारी लग्नेश व कार्येश के साथ मुथशिल योग करें ॥ ३९ ॥ तो यह मध्यमोत्तम नामक कम्बूल योग होता है क्योंकि चन्द्रमा का मध्यम अधिकार प्राप्त है, और लग्नेश कार्येश का उत्तम अधिकार है इस कारण यह मध्यमोत्तम नामक कंबूलयोग हुआ इन्दुवार उत्तम मध्यम कम्बूल से विशेष फल का देने वाला नहीं है, (अधम मध्यम नामक कम्बूलयोगका लक्षण) अपने हद्दा व द्रेष्काण व नवांश में बैठे हुए परस्पर मुथशिल योग को करने वाले लग्नेश कार्येश के साथ अपने नवांश में स्थित चन्द्रमा जो इत्थशाल करे तो अधम मध्यम नाम का कम्बूल योग कहना, कारण कि लग्नेश कार्येश व चन्द्रमा इन ग्रहों का अधिकार मध्यम है, इससे अधम मध्यम कम्बूल योग हुआ अब इन ग्रहों का उदाहरण और बताते हैं ॥ ४० ॥

उत्तमाधम कम्बूल योग का उदाहरण ।

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने स्त्री लाभ के अर्थ प्रश्न किया तो उस समय तुला लग्न है उसका स्वामी शुक्र १० अंशों से अपने नीच कन्या राशि में स्थित है और स्त्री के घर का स्वामी मंगल १५ पंद्रह अंशों से युक्त होकर अपने नीच कर्क राशि में स्थित है और चन्द्रमा बारह अंशों से युक्त होकर अपनी राशि (कर्क) में विराजमान १२ है, इन्हों का परस्पर इत्थशाल योग होने से उत्तमाधम नाम कम्बूल योग हुआ, इस कारण थोड़े परिश्रम से स्त्री की प्राप्ति होवेगी, यह चौथा भेद है,



उत्तमाधमकंबूलयोगः

मध्यमोत्तम कंबूल का उदाहरण ।

जैसे किसी प्रश्न कर्ता ने स्त्री लाभ निमित्त पूछा उस समय लग्न तुला,

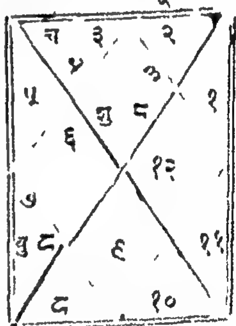


मध्यमोत्तमकंबूलच.

उसका स्वामीशुक्र २४ अंशों करके अपने घर धनलग्नमें तुला का है, स्त्री भाव (सप्तम) का स्वामी मङ्गल २८ अंशों से युक्त होकर अपने घर मेषराशि में विद्यमानहै और चन्द्रमा २२ अंशों से मकरराशि का अपने नवांश में स्थित चतुर्थभावमें विराजमान है इन सबोंका आपसमें इत्थशाल योग होता हुआ मध्यमोत्तम नामक कम्बूल योग होता है यहां इस योग के होने से स्त्री की प्राप्ति उत्तमता से होवेगी ऐसा कहना यह पांचवां भेद है।

मध्यम २ कम्बूलयोग का उदाहरण।

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने सन्तान प्राप्त होने के अर्थ प्रश्न किया तो उस समय मिथुन लग्न है उसका स्वामी बुध पांचवे तुला लग्न में आठ अंशोंसे स्थित है और सन्तान (पंचम) भावका स्वामी शुक्र आठ अंशोंसे उपयुक्त होकर मिथुन राशिका अपने हद्दामें विद्यमान है और चन्द्रमा तीन अंशोंकरके अपनी राशि (कर्क) का अपने द्रेष्काण व नवांश में स्थित है यहां लग्नाधिप बुधकार्याधिप शुक्र और चन्द्रमा इन तीनोंका परस्पर इत्थशाल योग होने से मध्यम २ नामक कम्बूल योग होता है इससे सन्तान बहुत यत्न करने से प्राप्त होवे ऐसा कहना, यह छठा भेद है।



मध्यम २ कंबूल चक्र

मध्यम मध्यमाधम कम्बूल योग का लक्षण।

स्यान्मध्यमंमकम्बूलं हीनाधिकृतिखेटजम् ।
मध्यमाधमकम्बूलं नीचारिभगखेटजम् ॥ ४१ ॥

भा० टी०-हीन और अधिकार वाले ग्रहों से उत्पन्न मध्यम नामक कम्बूल योग होता है अर्थात् चन्द्रमा स्वगृह उच्च व मध्यम अधिकारों से रहित सम अधिकार वाले ... लग्नेश कार्येश के साथ अपने मध्यम ... इत्थशाल योग करे तो मध्यम नामक कम्बूलयोग होता है, ... कम्बूल का पर्यायवाची है और मध्यमाधम

कम्बूलयोग का लक्षण कहा है कि – लग्नेश योग व अपने घर में [illegible] उच्चस्थ होकर [illegible] चन्द्रमा [illegible] इत्थशाल व अपने स्थान में स्थित होकर और इत्थशाल करै तो मध्यमाधम नाम कम्बूल योग होता है।

मध्यम कम्बूल योग का उदाहरण

जैसे किसी मनुष्य ने संतान प्राप्ति निमित्त प्रश्न किया तो उस समय वृष लग्न है और उसका स्वामी शुक्र चार अंशों से युक्त होकर कुम्भ राशि का मित्रगृह में स्थित है, और संतान (पंचम) भाव का स्वामी बुध [illegible] अंशों करके तुला राशि का मित्रगृह में विद्यमान है और चन्द्रमा तीन अंशों से युक्त होकर कर्क राशि अपने स्थान में विराजमान है लग्नेश व कार्येश चन्द्रमा इन सबका परस्पर मुथशिल योग है इससे यह [illegible] नामक कम्बूल योग हुआ इस कारण संतान की प्राप्ति [illegible] से होवेगी यह सातवां भेद है

मध्यमकम्बूलयोग ॥

मध्यमाधम कम्बूल योग का उदाहरण।

जैसे किसी मनुष्य ने भाग्य वृद्धि निमित्त प्रश्न किया तो उस समय प्रश्न लग्न मेष है उसका स्वामी मंगल अपने नीच (कर्क) राशि में ४ अंशों करके विद्यमान है और भाग्य भाव का स्वामी बृहस्पति भी ५ अंशों से युक्त होकर मकरराशि (नीच) स्थित है और चंद्रमा कर्कराशि अपने स्थान में तीन ३ अंशों से विराजमान है और लग्नेश कार्येश व चंद्रमा इन तीनों का इत्थशाल योग है, इस कारण यह मध्यमाधम नामक कम्बूलयोग हुआ, यहां भाग्य की वृद्धि बहुत परिश्रम से प्राप्त होवै, ऐसा कहना यह आठवां भेद है।

मध्यमाधमकंबूलयोग

दूसरे उत्तम कंबूल योग का लक्षण।

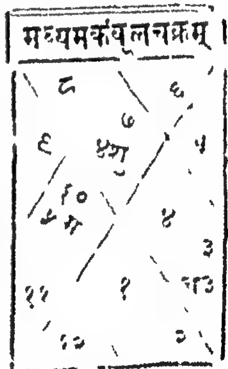
इन्दुःपदोनः स्वच्चोच्चस्थितेनाप्युत्तमं तु तत्।
स्वहद्दादिगतेनापि पूर्ववन्मध्यमुच्यते ॥ ४२ ॥

भा०—जो चंद्रमा अपने अधिकार से रहित हो अर्थात् अपने उच्च, अपनी राशि, द्रेष्काण नवांश, तथा अपने नीच व अपने शत्रु राशि में न होवे किन्तु समग्रह आदि को प्राप्त होकर अपने राशि व अपने उच्च राशि में प्राप्त परस्पर इत्थशाल योग करते हुये जो लग्नेश व कार्येश के साथ इत्थशाल योगको करै तो उत्तम नामक कम्बूलयोग होता है, क्योंकि चंद्रमा अपने अधिकारों से शून्य है और लग्नाधीश व कार्याधीश ये दोनों उत्तमाधिकारको प्राप्त हैं इससे यह उत्तमनाम कम्बूलयोग कहा है, और दूसरे मध्यम कम्बूलयोग के लक्षण यह है कि-अपने २ हद्दा द्रेष्काण, व नवांशमें स्थित परस्पर इत्थशालयोग को करते हुये जो लग्नाधीश व कार्याधीश हैं तिन दोनों के साथ चंद्रमा सम अधिकार में स्थित होकर इत्थशालयोग करै तो मध्यमनाम कम्बूलयोग होता है, क्योंकि यहां चन्द्रमा अधिकारों से शून्य है, और लग्नाधीश और कार्याधीश ये दोनों मध्यम अधिकार में प्राप्त हैं. पूर्वोक्त मध्यम कम्बूल के समान यह भी मध्यम नामक कम्बूलयोग जानना ॥ ४२ ॥

उत्तम कंबूल योगका उदाहरण।

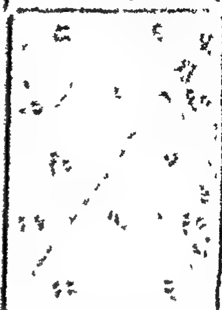
जैसे किसी प्रश्न कर्त्ताने धन लाभ के अर्थ प्रश्न किया तो उस समय तुला लग्न है उसका स्वामी शुक्र ४ अंशोंसे युक्त होकर लग्न ही में स्थित है और धन भवन का स्वामी मंगल अपने उच्च राशि (मकर) में ५ अंशों करके विद्यमान है और चंद्रमा सम द्रेष्काण मिथुनराशि में ३ अंशोंमें उपयुक्त होकर विराजमान है और लग्नेश कार्येश व चंद्रमा इन सबों का परस्पर मुथशिल योग है इससे उत्तम नामक कंबूल योग होता है इसी [illegible]) कंबूल योग भी कहा है इससे धनका लाभ [illegible] ।

मध्यमकंबूलचक्रम्।



मध्यम कम्बूल योग का उदाहरण।

जैसे किसी ने धन लाभार्थ प्रश्न किया तो उस समय तुला लग्न है



इसका स्वामी शुक्र १० अंशों करके सिंह राशि में अपने द्रेष्काण में विद्यमान है और धनभाव का स्वामी मङ्गल २२ अंशों से धन राशि का अपने हद्दा में विद्यमान है और चन्द्रमा दस अंशों से युक्त होकर मिथुन राशि का अपने मध्यम द्रेष्काण में स्थित है यहां लग्नाधीश (शुक्र) कार्याधीश (मंगल) और चन्द्रमा इन ग्रहों का परस्पर इत्थशाल योग है, इससे मध्यम नामक कम्बूल योग होता है, धन लाभ मध्यम होवेगा, ऐसा कहना यह इसका भेद है ।

दूसरे प्रकार से मध्यम कम्बूल योग का लक्षण ।

पदोनेनापि मध्यं स्यादिति युक्तं प्रतीयते ।
नीचारिस्थैरित्थशाले धनकम्बूलमुच्यते ॥ ४३ ॥

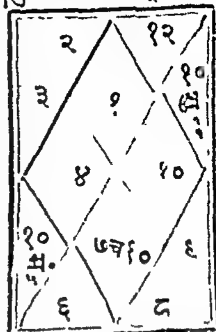
भाषार्थः—पद से हीन अर्थात् उत्तम व मध्यम अधिकार से रहित परस्पर इत्थशाल को करते हुए लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ सम अधिकार में स्थित चन्द्रमा यदि इत्थशाल को करे तो मध्यम नामक कम्बूल योग होता है, प्रमाण सहित इस योग को हमने वर्णन किया है, क्योंकि लग्नेश और कार्येश चन्द्रमा इन ग्रहों का सम अधिकार प्राप्त है इस कारण यह मध्यम (समसम) नाम कम्बूल योग सिद्ध हुआ, अब अधम कम्बूलयोग का लक्षण यह है कि अपने नीच व अपने शत्रु राशि में प्राप्त परस्पर इत्थशाल योग करते हुए लग्नाधीश और कार्याधीश के साथ सम अधिकार में विद्यमान चन्द्रमा यदि इत्थशाल (मिलाप) करता हो तो अधम नामक कम्बूल योग होता है, कारण कि चन्द्रमा सम अधिकार प्राप्त है और लग्नाधीश व कार्याधीश इन दोनों का अधिकार अधम है, इससे अधम नाम कम्बूल योग निष्पन्न हुआ ॥ ४३ ॥

मध्यम कम्बूल का लक्षण ।

जैसे किसी पृच्छक ने धन प्राप्ति निमित्त प्रश्न किया तो प्रश्न समय मेष

है उसका स्वामी मंगल १० अंशों करके कुम्भ राशि में बैठा है और धन भाव का स्वामी शुक्र १० अंशों से युक्त होकर कुम्भराशि में विद्यमान है और चन्द्रमा १० अंशों से तुला राशिमें विराजमान हैं, इन सबों का परस्पर इत्थशाल (मिलाप) है, इससे यह मध्यमनाम कम्बूल योग हुआ धन की प्राप्ति मध्यम होगी ऐसा कहना, यह ग्यारहवां भेद है।

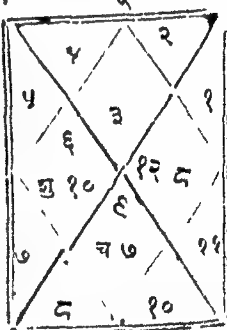
पुनःमध्यमकंबूलयोग



अधम कम्बूल का उदाहरण ।

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने पुत्र प्राप्ति विषे प्रश्न किया तो प्रश्न लग्न मिथुन जिसका स्वामी बुध अपनी नीचराशि (मीन) का ८ अंशों करके स्थित है, और पुत्र भाव का स्वामी शुक्र अपने नीचराशि (कन्या) मे १० अंशोंसे युक्त होकर विराजमान है और चन्द्रमा अपने सम धन राशि अथवा मीन राशि में वर्त्तमान है और लग्नेश व कार्येश व चन्द्रमा से परस्पर इत्थशाल योग है इस कारण यह अधम नाम कम्बूल योग हुआ यहां पुत्र की प्राप्ति अधम रीति से साध्य कहना, यह बारहवां भेद है।

अधमकंबूलयोगोयम्



अधमोत्तम कम्बूल योग का लक्षण ।

नीचशत्रुभगश्चन्द्रः स्वभोच्चस्थैरित्थशालकृत् ।
अधमोत्तमकम्बूलंपूर्वतुल्य फलप्रदम् ॥ ४४ ॥

भावार्थ—जो चन्द्रमा अपने नीच घर व शत्रु के घर में प्राप्त होकर अपने घर व अपने उच्च घर में स्थित परस्पर इत्थशाल योग को करता हुआ लग्नेश व कार्येश के साथ इत्थशाल योग को करे तो अधमोत्तम नाम कम्बूल योग होता है, क्योंकि चन्द्रमा का अधिकार अधम है और लग्नेश व कार्येश ये दोनों उत्तम अधिकार में प्राप्त हैं, इस कारण पूर्वाचार्यों ने इसको अधमोत्तम कम्बूल कहा है, यह पूर्व के तुल्य फल को देता है ॥ ४४ ॥

अधमोत्तम कंबूल योग का लक्षण ।

जैसे प्रश्न कर्ताने सुख प्राप्ति के निमित्त प्रश्न किया है तो प्रश्नलग्न ... ह उगाथ। स्वामी सूर्य अपने उच्च राशि (मेष) में ... अंशों करके स्थित है, और सुख (चतुर्थ भाव का) स्वामी मंगल अपने उच्चराशि (मकर) में ... अंशों में ... होकर स्थित है और चंद्रमा तीन अंशों में युक्त होकर अपने नीच राशि में वृश्चिक में विराजमान ... इन तीनों का परस्पर मुथशिल योग होनेसे अधमोत्तम कंबूल योग हुआ. यहां सुख की प्राप्ति परिश्रम से होगी, यह तेरहवां भेद है ।

अधमोत्तमकंबूलयोग



अधममध्यम कंबूल योग का लक्षण ।

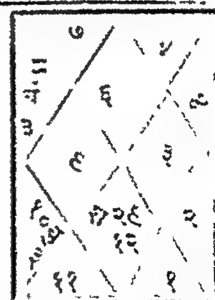
चन्द्रो नीचरिपुगेहस्थः स्वहद्दादिगते न चेत् ।
तदेत्थ शालीकम्बूलमुच्यतेऽधममध्यमम् । ४५ ।

भावार्थ —यदि चंद्रमा अपने नीच घर में प्राप्त होकर अपने शत्रु के घर ... अपने हद्दा व अपने द्रेष्काण व अपने नवांश में स्थित होकर परस्पर इत्थशाल योग करता हुआ लग्नेश व कार्येश के साथ इत्थशाल करै तो अधम मध्यम नाम कंबूल योग होता है, यहां चन्द्रमा का अधिकार अधम है और लग्नेश व कार्येश का मध्यम अधिकार है, इससे यह अधममध्यम कंबूलयोग है ।

अधममध्यम कंबूल योग का उदाहरण !

जैसे किसीने पुत्र प्राप्ति निमित्त प्रश्न किया तो उस समय कन्यालग्न उसका स्वामी बुध नीच अंशों करके अपने हद्दा में प्राप्त मकर राशिमें स्थित है, और पुत्र (पंचम) भाव का स्वामी शनैश्चर २६ अंशोंसे युक्त होकर मीन राशिका अपने हद्दामें विद्यमान है तथा चन्द्रमा तीन अंशों से उपयुक्त होकर अपने नीच राशि (वृश्चिक) में विराजमान है और इन तीनों का परस्पर इत्थशाल योग है इससे अधममध्यम नामक कंबूलयोग हुआ पुत्र

अधममध्यमकंबूलयोग



नाम अत्यन्त प्रयास से होवेगा ऐसा कहना, यह चौदहवां भेद है।

अन्य अधम कम्बूल योग का लक्षण।

इन्दुर्नीचारिगेहस्थः पदोनेनेत्थशालकृत।
कम्बूलमध्यमं ज्ञेयं पूर्वतुल्यफलप्रदम् ॥ ४६ ॥

भाषार्थः—यदि चन्द्रमा अपने नीच राशि व अपने शत्रु के घर में स्थित होकर उत्तम मध्यम व अधम अधिकारों से रहित परस्पर मुथशिल योग को करते हुए लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ इत्थशाल योग करे तो अधम नाम कम्बूल योग होता है, यहां चन्द्रमा का अधम अधिकार है और लग्नाधीश कार्याधीश का सम अधिकार है, इस कारण अधम नामक कम्बूल योग कहा है, यह पूर्वोक्त कम्बूल योग के समान फल को देता है ॥ ४६ ॥

अधम कम्बूल योग का उदाहरण।

जैसे किसी ने राज्य लाभ निमित्त प्रश्न किया तो उस समय वृष लग्न उसका स्वामी शुक्र छः अंशों का सिंह राशि का चतुर्थ भवन में स्थित है और राज्य (दशम) भाव का स्वामी शनैश्चर दस अंशों से युक्त होकर वृष राशि पर मूर्ति में विराजमान है और चन्द्रमा तीन अंशों से अपने नीच राशि (वृश्चिक) पर सप्तम भाव में विद्यमान है और लग्नाधीश (शुक्र) कार्याधीश (शनि) और चन्द्रमा इन तीनों का परस्पर इत्थशाल योग होनेसे अधम नाम कम्बूल योग हुआ, यहां राज्यकी प्राप्ति अति यत्न से होगी ऐसा कहना यह पन्द्रहवां भेद हुआ।

अधमकम्बूलयोगचक्रम्

अथ अधमाधम कम्बूल के लक्षण।

नीचारिभस्थखेटेन नीचारिभगतः शशी।
नीचस्थगानां कम्बूलमधमाधममुच्यते ॥ ४७ ॥

भाषार्थः—यदि चन्द्रमा अपने नीच राशि में, शत्रु की राशि में स्थित होकर अपने शत्रु के घर व अपने नीच राशि में प्राप्त परस्पर इत्थशालयोग

[illegible] के साथ [illegible] योग करे तो उत्तम [illegible] कम्बूल योग होता है, यहां [illegible] लग्नेश कार्येश और चंद्रमा इन तीनों का [illegible] इस प्रकार उत्तमाधम कम्बूल योग कहते हैं।

उत्तमाधम कम्बूल का उदाहरण।

जैसे किसी ने पूछा [illegible] उसका स्वामी बृहस्पति अपने [illegible] राशि में [illegible] विराजमान है, और [illegible] का स्वामी [illegible] मीन राशि में स्थित है, और चन्द्रमा अपने नीचराशि के [illegible] होकर विराजमान है और इन दोनों का परस्पर मुथशिल योग होने से उत्तमाधम कम्बूल योग हुआ, क्योंकि यहां [illegible] बलवान [illegible] नहीं होगा ऐसा कहना यह कम्बूल भेद हुआ।

उत्तमाधमकम्बूलयोग

उत्तमोत्तम कम्बूल योग का उदाहरण।

मेषे रविः कुजो वाऽपि वृषे कर्केऽथवा शशी।
न चेत्स्वशाली कम्बूलमुत्तमोत्तमकार्यकृत्॥ ४८॥

भावार्थ—यहां पुत्र लाभ प्रश्न में मेष लग्न है लग्नाधीश व कार्याधीश सूर्य ये दोनों मेष राशि में विराजमान हैं, दोनों का मुथशिल योग है और चंद्रमा वृषराशि वा कर्कराशि का [illegible] होकर इत्थशाल योग करे तो यह उत्तमोत्तम नामक कम्बूल योग हुआ, यह उत्तम (मनवांछित) कार्यों के फल के देने वाला जानना॥ ४८॥

उत्तमोत्तमकम्बूलयोगः

अब दूसरा उदाहरण स्पष्ट दिखाते हैं—जैसे पुत्र लाभ प्रश्न में मेष लग्न उसका स्वामी मंगल लग्न में अपने घर विद्यमान है, और कार्येश (पंचमभाव का स्वामी) सूर्य अपने उच्च मेष राशि में स्थित है, और चन्द्रमा अपने घर कर्क राशि में विराजमान है, यहां तीनों लग्नेश (मंगल) कार्येश (सूर्य)

के ही मुथशिल आदि योग विचारने चाहिये, यह जो कितने ही आचार्यों का मत है वह अयुक्त है कोई विशेष प्रमाण नहीं पाया जाता है, क्यों कि लग्नाधीश व कार्याधीश इन्होंने अपने नीच घरमें स्थित किसी एक ग्रहके दूसरे ग्रहका यदि इत्थशाल योग होवे तो वह कार्यों (वांछित मनोरथों) का नाश करने वाला होता है ऐसा कहा गया, एवं लग्नेश कार्येश परस्पर एक राशि में स्थित होके इत्थशालयोग करें तो वह इत्थशाल कार्यों का नाश करने वाला होता है, यह कहा गया कि जिसको यहां समरसिंह के बनाये हुये 'ताजिक संज्ञातंत्र' में प्रगट रूप कहा है और उन्हीं का आशय यह है कि जैसे नीच नीच के साथ मुथशिल (इत्थशाल) को करें तथा शत्रु शत्रु के साथ मिलाप करें तो वह कम्बूल मनो. कामनाओं सिद्ध करने वाला नहीं होता है, और इस योग में चन्द्रमा भी विनाशकारी होता है, यहां एक राशिमें स्थित ग्रहों के दूसरे योगका अर्थात् "रिपुणारिणोः" इस योग का संभव हो सकता है परन्तु 'नीचगस्य नीचेन' इस योगका सम्भव किसी प्रकार से नहीं दीख पड़ता है, और जो ग्रन्थकर्ता नीलकण्ठने लिखा है सो तो प्रतिष्ठित आचार्यों के बनाये हुए ग्रन्थोंके लेखको अवलोकन कर लिख दिया है, यह विद्वज्जनों करके विचारणीय है ॥५२॥

फलोत्पत्ति ज्ञानार्थ कम्बूलयोग के दूसरे भेद ।

लग्नकार्यपयोरित्थशाले चेकोऽस्ति नीचगः ।
स्वर्क्षादिपदहीनोऽन्योऽत्रेन्दुः कम्बूलयोगकृत् ॥५३॥

भा०—पूर्व अभिन्न अधिकार में स्थित अर्थात् एक अधिकार में स्थित लग्नेश व कार्येश के चन्द्रमा करके इत्थशाल योग के रहते कंबूल योग [illegible] उन्हीं लग्नेश और कार्येश के अधिकार भेदको कहते हैं, जहां लग्नेश व कार्येश का इत्थशाल विचारना होवे वहां उन्हीं लग्नेश व कार्येश में से एक अपने नीच राशि में बैठा हो, और दूसरा [illegible] हो) अपनी राशि, और अपने २ उच्च [illegible] नीच व शत्रु के घर में न हो किन्तु सम अधिकार में

स्थित हो और इसी सब अधिकार में स्थित होकर चन्द्रमा यदि इत्थशाल योग को करे तो कम्बूल योग होता है ॥ ५३ ॥

स्थान सहित कम्बूल योग का फल ।

तत्र कार्याऽल्पलाभोवा यथाजात्यन्यमर्थयन् ।
अन्यजातिः पुमानर्थंतथैतत्कवयोविदुः ॥ ५४ ॥

भावार्थः—इस कम्बूल योग में थोड़े कार्यों की सफलता जाननी चाहिये, अर्थात् यह कम्बूल योग थोड़े फलों का देने वाला होता है, जैसे अन्य जाति वाला पुरुष विजातीय से जब याचना करता है तब थोड़े अर्थ (धन) को पाता है, वैसे ही यह कम्बूल योग थोड़े फलों का देने वाला होता है, ऐसा पण्डित लोग मानते हैं ॥ ५४ ॥

गैर कम्बूल योग के लक्षण ।

यस्याधिकारः स्वर्क्षादिः शुभो नाप्यशुभोऽपि च ।
केनाप्यदृश्यमूर्त्तिश्च सशून्याध्वग इष्यते ॥ ५५ ॥

भा०—जिस ग्रह का स्वर्क्षादि अधिकार नहीं होवे अर्थात् जिस ग्रह का अपना घर अपना उच्च, हद्दा द्रेष्काण व नौवांश वाला शुभ फलों का देने वाला अधिकार नहीं दीख पड़े और अशुभ भी अधिकार नहीं होवे अर्थात् अपना नीच घर व अपना शत्रु वाला अशुभ फलों का देने वाला भी अधिकार नहीं होवे और किसी शुभ ग्रह से वा पाप ग्रह से देखा न जावे तो यह शून्याध्वग (शून्य मार्गगामी) कहा जाता है, इस अर्थ में प्रमाण वाक्य कोई नहीं दीख पड़ता है, क्योंकि समरसिंह आदि आचार्यों ने नहीं कहा है इस कारण से इसे प्रमाण रहित समझना चाहिये ॥ ५५ ॥

गैर कम्बूल योग का लक्षण ।

लग्नकार्येशयोरित्थशाले शून्याध्वगः शशी ।
उच्चादिपदशून्यत्वान्नेत्थशालोऽस्य केनचित् ॥ ५६ ॥
यद्यन्यर्क्षं प्रविश्यैष स्वर्क्षोच्चस्थैरित्थशालवान् ।
गैरिकम्बूलमेतत्तु पदोनेनाशुभं स्मृतम् ॥ ५७ ॥

भा०-लग्नेश व कार्येश का परस्पर इत्थशाल योग होवे और वहां जो चन्द्रमा शून्य मार्गगामी हो और चन्द्रमा के साथ हो, लग्नेश व कार्येश इन्हों में से किसी एक करके मुथशिल योग नहीं होवे ॥ ५६ ॥ और ऐसा चन्द्रमा यदि राशि के अन्त में वर्तमान होकर अगाड़ी राशि में प्रवेश करे और जिस राशि में प्रवेश किया हो वह राशि जिस ग्रह का अपना घर व अपना उच्च हो वह ग्रह इसी राशि में यदि स्थित होवे और उसी ग्रह के साथ चन्द्रमा यदि मुथशिल योग करे तो वह गैर कम्बूल योग होता है, यह गैर कम्बूल पूर्व कहे कम्बूल भेदों के समान फलों का देने वाला होता है यह विशेष जानना चाहिये और जो अन्य राशि में स्थित चन्द्रमा उसी राशि में स्थित स्वगृह आदि अधिकारों से रहित ग्रह के साथ इत्थशाल योग करे तो यह गैरिकम्बूल अशुभ फल का देने वाला कहा है ॥ ५७ ॥

गैर कम्बूल का उदाहरण ।

लभ्यते सुखमिति प्रश्ने सिंहलग्ने रवि क्रिये ।
अष्टांशैः सुखपः कुम्भे भौमोऽशैस्त्रिभिस्तयोः ॥ ५८ ॥
इत्थशालोऽस्ति तत्रेन्दुः कन्यायां चरमेंऽशके ।
स्वर्क्षादिपदहीनस्य नेत्थशालोऽस्ति केनचित् ॥ ५९ ॥
स्वोच्चगेन शनिनाऽन्यर्क्षस्थे नेत्थशालकृत् ।
गैरिकम्बूलमन्येनमाहात्म्यालाभदायकम् ॥ ६० ॥

भा०-जैसे किसी ने पूछा कि हमको सुख प्राप्त होगा? इस प्रश्न में [illegible] सिंह है [illegible] कार्य मेष और अङ्कों से युक्त होकर मेष राशि [illegible] है, और सुख भाव (चौथे घर) का स्वामी मङ्गल बारह अंशों [illegible] है और इन दोनों लग्नेश (सूर्य) और कार्येश [illegible] का परस्पर इत्थशाल योग है, तहां इस योग के रहते [illegible] राशि के [illegible] (तीसवें अंश) के विषे वर्तमान और [illegible], [illegible] लग्नेश वा कार्येश इन्हों में से किसी के साथ [illegible] है [illegible] दूसरी राशि के जाने वाला है,

यह तुलाराशि शनैश्चर का उच्च है, इसी में बैठे हुये शनैश्चर के साथ मीनराशिस्थ में तुलाराशि में प्राप्त होकर चन्द्रमा इत्थशाल योग करता है इससे यह गैरिकम्बूल योग सिद्ध हुआ, इसका फल यह है कि किसी श्रीमान् की सहायता से सुखलाभ होवे, अब इसी कहे हुये योग में तुलाराशि के विषे बुध आदि ग्रह स्थित हो कि जिसका शुभ या अशुभ कोई भी अधिकार नहीं है, वहाँ बैठा हुआ चन्द्रमा जो बुध के साथ इत्थशाल योग करे तो यह गैरिकम्बूलयोग अशुभ फलका देने वाला होता है ऐसा जानना ॥ ६० ॥

गैरिकम्बूलयोगचक्र

खल्लासर योग के लक्षण ।

शून्येध्वनीन्दुरुभयोर्नेत्थशालो नवायुतिः।
खल्लासरो न शुभदः कम्बूलफलनाशनः ॥६१॥

भा०—जो चन्द्रमा शून्य मार्गगामी होकर लग्नेश व कार्येश इन्हों में से किसी एक के साथ भी इत्थशाल योग को नहीं करे अथवा चन्द्रमा लग्नाधीश व कार्याधीश इन्हों में किसी के साथ नहीं होवे, तो यह खल्लासर योग शुभ नहीं जानना, तथा यह योग कम्बूल योग के फलको नाश करने वाला शुभ फलों (वांछित कार्यों) का देने वाला नहीं होता है ऐसा जानना ॥ ६१ ॥

दुर्बल का लक्षण ।

अस्तनीचरिपुवक्रहीनभा दुर्बलोमुथशिलं करोति चेत् ।
नेतुमेष न विभुर्यतो महान्ते मुखेऽपि न स कार्यसाधकः॥६२॥

भा०—जो ग्रह अस्त होगया हो, नीच घरमें स्थित हो, शत्रु के घरमें हो, वक्री हो, और तेज रहित होवे ऐसा ग्रह दुर्बल जानना चाहिये यदि दुर्बल ग्रह किसी भावके स्वामी के साथ इत्थशाल योग को करे तो वह ग्रह अन्त और आदि में उस भावके स्वामी के कार्यों का साधक नहीं होता है, कि जिस कारण वह ग्रह तेज लेने को समर्थ नहीं होता है ॥ ६२ ॥

ग्रहयोग का समय विशेष से फल पाक ।

केन्द्रस्थ आपोक्लिमगं युनक्ति भूत्वादितो नश्यति कार्यमन्ते ।
अपोक्लिमस्थो यदि केन्द्रयातं विनश्य पूर्वं भवतीत पश्चात्॥६३॥

भा०—यदि कार्येश निर्बल होवे और केन्द्र । १ । ४ । ७ । १० स्थान में स्थित होकर आपोक्लिम ३ । ५ । ६ । १२ स्थान में स्थित हुए लग्नाधीश के साथ इत्थशाल योग करे तो आदि में विशेष कार्य होकर अन्त में नाश हो जाता है और जो बलरहित कार्येश आपोक्लिम में स्थित होकर केन्द्र में वर्तमान लग्नाधीश के साथ इत्थशाल को करे तो पहिले विशेष कार्य नाश को प्राप्त होकर पश्चात् कार्य सिद्धि करे ऐसा कहना ॥ ६३ ॥

दुफालिकुत्थ योग ।

मन्दःस्वभोच्चादिपदे स्थित श्चेत्पदोनशीघ्रेण कृतेत्थशालः ।
तत्रापि कार्यं भवतीति वाच्यं वक्रादिनिर्वीर्यपदे न चेत्स्यात्॥६४॥

भा०—मन्द गतिवाला ग्रह अपने २ घर, उच्च द्रेष्काण, हद्दा, और नवांश में स्थित होकर शुभ अधिकार से रहित शीघ्री ग्रह के साथ यदि इत्थशाल योग करे तो भी अभीष्ट कार्य सिद्ध होता है, ऐसा कहना और यदि [illegible] ग्रह अस्त हो, अपने नीच घर शत्रु राशिमें स्थित हो वा वक्री हो तो अभीष्ट (मनवांछित) कार्य की सिद्धि नहीं होती है, ऐसा कहना चाहिये ॥ ६४ ॥

दुत्थोत्थ दिवीर योग ।

[illegible] लग्ननाथौ स्वत्र्चादिगे नान्यतरोयुनक्ति ।
[illegible] द्वौ बलिनौ [illegible] कार्यमुशन्ति सन्तः ६५

[illegible] दोनों वीर्य (बल) हीन होय अर्थात [illegible] हो वा वक्री होके तेजोरहित होवें उन दोनों [illegible] ग्रह अपने घर, अपने उच्च, अपने [illegible] हुए तीसरे के साथ इत्थशाल [illegible] में [illegible] का लाभ होवेगा, [illegible] ग्रह अपने घर, व अपने

ग्रह, व अपने हद्दा में और नवांशों में प्राप्त होकर बलवान होवें और लग्नाधीश या कार्याधीश इन्हीं में से किसी ग्रह के साथ इत्थशाल योग करें तो भी किसी प्रकार की सहायता से कार्य सिद्ध होवे ता ऐसा महात्मा जनों ने वर्णन किया है ॥ ६५ ॥

तम्बीर योग का लक्षण ।

बलीराश्यन्तगोऽन्यर्क्षगामी दीप्तांशकैर्यदि ।
इत्थेन्यस्मैं कार्यं करस्तम्बीरो लग्नकार्ययोः ॥ ६६ ॥

भा०—जब लग्नाधीश वा कार्याधीश इन दोनों का परस्पर इत्थशाल योग नहीं होवे, तब लग्नेश व कार्येश इनमें से कोई बलवान ग्रह राशि के अन्तिम अंश में वर्तमान होकर आगे राशि में जाने वाला होवे तो वह ग्रह आगे की राशि में स्थित ग्रह के निवास में त देता है इसको यह तम्बीर योग होता है, जिसे यावनी भाषा में तम्बीर कहते हैं और यदि आगे की राशि में गमन करने वाला ग्रह अपने २ घर, उच्च, हद्दा, व द्रेष्काण आदि बलों से युक्त होवे तो यह योग अवश्य कार्यों की सिद्धि करने वाला होता है ॥६६॥

कुत्थयोग का लक्षण ।

लग्नेऽथकेन्द्रे निकटेऽपिवास्य विलग्नदर्शी स्वगृहोच्चहद्दके ।
मुसल्लहे स्वे त्रिजहद्दगो वा बली ग्रहो मध्यगतिस्त्वशीघ्रः॥६७॥

भा०—कुत्थ शब्द को यावनी भाषा में बली ग्रह कहा जाता है, वह बल अनेक प्रकार का है, उनमें कितनेक भेदों को कहते हैं—सबों की अपेक्षा लग्न में स्थित रव्यादि ग्रह बली होता है, उसके अभाव में केंद्र १ । ४ । ७ १० स्थान में स्थित ग्रह बली जानना, परंतु लग्नस्थ ग्रह की अपेक्षा से केन्द्रस्थ ग्रह न्यून बली जानना उसके अभाव में केंद्र के निकट पणफर २ । ५ । ८ । ११ स्थान में स्थित ग्रह बली होता है, परंतु केंद्रस्थ ग्रह की अपेक्षा इसको न्यून बली जानना, उसके अभाव में जो ग्रह लग्न को देखता है वह बली कहा जाता है, तथा जो ग्रह अपने घर,अपने उच्च, अपने द्रेष्काण अपने नवांश व हद्दा में वर्तमान है वह भी बली होता है, तथा मध्य गति

[illegible] अर्थात् ५९ कला ५ विकला वाला ग्रह और अल्प गति वाला ग्रह बलवान होता है ॥ ६७ ॥

कुन्य के अन्य भेदों का वर्णन ।

क्रूनोयदयो मार्गगतिः शुभेन युतेक्षितःक्रूरखगस्य दृष्ट्या ।
चुनाख्ययानाधिगतो न युक्तः क्रूरेण सायं च सितेन्द्रभौमाः॥६८॥
यदोदयं ते पररात्रिभागेजीवाऽर्कजा वन्हिनराः सवीर्याः ।
अन्ये निशीनस्य नवैकभागे स्थिताः स्थिरर्क्षे च बलेन युक्ताः॥६९॥

भावार्थः-जिस ग्रह का उदय हुआ हो वह भी बलवान होता है और जो ग्रह मार्गी होकर शुभ ग्रहों से युक्त व देखा जावे उसको बली कहते हैं, तथा जो पाप ग्रहों की (क्षुताख्या) चौथी, दसवीं, सातवीं वा पहली दृष्टि से नहीं देखा जाय वह ग्रह बली होता है और जो क्रूर ग्रहों से युक्त नहीं होवे वह भी बली कहा जाता है, इस प्रकार सामान्यता से ग्रहों का बल [illegible] कहते हैं, शुक्र चन्द्रमा व मङ्गल ये ३ ग्रह [illegible] में उदय होवें तो बलवान होते हैं ॥ ६८ ॥ बृहस्पति व शनैश्चर [illegible] रात्रि के उत्तर भाग में बली कहे जाते हैं, तथा पुरुष संज्ञक ग्रह [illegible], मङ्गल [illegible] बृहस्पति ये दिन में बली जानना, इनसे अन्य ग्रह चन्द्र, बुध और शुक्र [illegible] ये चारों रात्रि में बली होते हैं और सूर्य जिस [illegible] में [illegible] उसी राशि में यदि ग्रह स्थित हों तो बलवान होते हैं, [illegible] " अन्ये निशीनस्य नवैकभागे स्थिताः " ऐसा पाठ है और " अन्ये [illegible] " ऐसा भी पाठ कितनेक पण्डित कहते हैं, [illegible] और [illegible] अंशों पर विराजमान होकर मिथुन के नवांश [illegible] मिथुन में ग्रह विराजमान होवें तो बलवान जानने चाहियें, [illegible] और [illegible] स्थिर राशियों में बैठे हुए ग्रह [illegible] ॥ ६९ ॥

[illegible] प्रकार का वर्णन ।

[illegible] ओजभगाः पुमांसः ।
[illegible] निगद्यम् ॥७०॥

भावार्थ—जो मंगल ग्रह चौथे से लेकर नवम पर्यन्त बलवान होते हैं और प्रश्न लग्न पर दशों में लेकर ग्यारहवें स्थान पर्यन्त बली कहे जाते हैं, तथा विषम लग्न में बैठे हुए शुक्र मंगल ग्रह अधिक बलवान होते हैं, और अपर भी मंगल ग्रह सप्तम स्थान में विद्यमान होवें तो बली होते हैं इन पूर्वोक्त अनेक प्रकारों से विशेष शुभ अधिकार का विचार कर शुभ फल कहना चाहिये ॥ ७० ॥

दुर्बल योग का लक्षण ।

लग्नात्षष्ठाष्टमस्थेऽनुजुररिगृहगो नीचगो वक्रगामी क्रूरेः शुक्रोऽस्तगो वा यदि न शुभशिली क्रूरनीचारिभस्थैः । क्षुद्ध्या क्रूरदृष्टो व्ययरिपुमृतिगैरित्थशालं विधित्सुः कुर्वन्वा निर्बलो यः स्वगृहनगभगो राहुपुच्छास्यवर्ती ॥ ७१ ॥

भा०—यहां दुर्बल शब्द को पारसी भाषा में कमजोर कहते हैं, यह निर्बलता अनेक प्रकार है सो कहते हैं,—वर्षलग्न, मासलग्न, दिनलग्न व प्रश्न लग्न से जो ग्रह ६।८।१२ स्थानों में से किसी भी स्थान में विद्यमान हो तो वह बलहीन होता है, ऐसे ही वक्री ग्रह, शत्रुराशि में स्थित ग्रह, नीचराशि स्थित ग्रह निर्बल जानना, तथा अस्ताभिलाषी ग्रह व पापग्रहों से युक्त ग्रह निर्बली होता है, और यदि पापग्रह शत्रुराशि में स्थितग्रह व नीचराशि में स्थित ग्रहों के साथ जो ग्रह इत्थशाल करे, वह निर्बल जानना, और जो ग्रह पापग्रहों से क्रुद्धदृष्टि अर्थात् पहले चौथे सातवें दशवें स्थानगत दृष्टि से देखा जावे तो वह हीन होता है, तथा जो ग्रह बारहवें, छठे, सातवें स्थान में बैठे हुए ग्रहों के साथ इत्थशाल योग करे अथवा इच्छा करता हो, तो भी उसे निर्बल कहते हैं, और जो ग्रह अपने घर से सातवें स्थान में बैठा होय तो वह निर्बल होता है, जैसे मंगल का मेषस्थान है उससे सातवीं तुलाराशि हुई यदि इसमें कोई ग्रह स्थित होवे तो उसे निर्बल कहते हैं अर्थात् जिस राशि में बैठा हुआ ग्रह स्थित होवे वह राशि ग्रह के अपने घर से यदि सातवीं दीख पड़े तो निर्बल समझना चाहिये, और राहु के मुख अंश पुच्छ और सौम्य अंश मुख जानना, वहां जो ग्रह स्थित होवें तो उसे बलहीन जानना चाहिये ॥ ७१ ॥

अन्य अशुभ प्रकारों का वर्णन ।

अनीक्षमाणस्तनुमस्तभाग स्थितः स्वभोच्चादिपदैश्चशून्यः ।
क्रूरे मराफी न स वीर्ययुक्तः कार्यं विधातुं नविभुर्यतोऽसौ॥७२॥

भावार्थ—जो ग्रह लग्न को नहीं देखता है वह बलहीन जानना, और जो अस्त भाग में स्थित हो तो वह भी निर्बली होता है अथवा सूर्य जिस राशि नवांश में हो उससे सातवां जो नवांश उसमें बैठा हुआ ग्रह निर्बली जानना तथा जो ग्रह अपने घर व उच्च व अपने द्रेष्काण वा नवांशादि अधिकारों से शून्य हो तो वह निर्बली होता है और जो ग्रह पापग्रहों के साथ ईसराफ योग करै तो वह बलवान् नहीं होता है, जिससे कि यह ग्रह वांछित कार्य को करने के अर्थ समर्थ नहीं होता है इस कारण आचार्य ने उस ग्रह को बलहीन वर्णन किया है ॥ ७२ ॥

चन्द्रमा के अत्यन्त निर्बलत्व का वर्णन ।

चन्द्रस्सूर्याद्द्वादशे वृश्चिकाद्ये खंडेऽनिष्टोऽन्त्ये तुलायां विशेषात्।
राशीशेनादृष्टमूर्तिर्न सर्वैर्दृष्टोऽज्ञेयः शून्यमार्गी पदोनः ॥ ७६ ॥

भावार्थ - सूर्य जिस राशि में स्थित हो उस राशि से बारहवें जो चन्द्रमा स्थित होवे तथा वृश्चिक राशि के पूर्वार्द्ध (प्रथम खंड) में चन्द्रमा स्थित हो तो निर्बल होता है और तुलाराशि के उत्तरखंड (पिछले भाग) में स्थित चन्द्रमा विशेष करके शुभ फलों का देने वाला नहीं होता है, तैसे ही जिस राशि में चन्द्रमा विराजमान हो उस राशि के स्वामी करके यदि देखा न जावे तथा सम्पूर्ण ग्रहों से देखा न जावे तो भी निर्बल जानना, तथा जो चन्द्रमा शून्यमार्ग में स्थित हो तो और अधिकारों से रहित हो तो चन्द्रमा को बलहीन जानना चाहिये ॥ ७३ ॥

चन्द्रमा के अन्य दुष्टयोगों का वर्णन ।

[illegible] जन्मकाले पृच्छायां वा चन्द्र एवं विचिन्त्यः
[illegible] वीचनेनाऽशुभोऽसौ ७४

भा०—क्षीण चन्द्रमा, जो कृष्ण पक्षकी अष्टमी से शुक्ल पक्षकी अष्टमी तक रहताहै तथा राशिके अन्तिम अर्थात् अन्त्यमें नवांशमें चन्द्रमा स्थित हो तो निर्बल होता है, सब जन्म लग्न व प्रश्न लग्न में चन्द्रमा निर्बल कर चिन्तवन करना चाहिये, और शुक्ल पक्षमें मंगल कृष्ण पक्षमें शनैश्चर जैसे शुभ नहीं होते हैं, यदि ये दोनों स्थान दृष्टि से (क्रूरदृष्टि) देखते हों तो वह चंद्रमा शुभ फलों को नहीं देता है ऐसा सिद्धांत जानना ॥ ७४ ॥

चन्द्रमा के दोषाल्पत्व का वर्णन ।

शुक्ले दिवा नृगृहगोऽर्कसुतः शशांकं कृष्णेकुजे निशि समर्क्षगतः प्रपश्यन् । दोषाल्पतां वितनुतेऽन्यथा बहुत्वं प्रश्नेऽथवा जनुषि बुद्धिमतोहनीयम् ॥ ७५ ॥

भा०—शुक्ल पक्षमें दिनके विषे पुरुष राशि (मे० मि० सिं० तु० ध० कुं०) में स्थित शनैश्चर यदि चंद्रमाको देखता होवै तो दुष्टयोग की अल्पता को देता है, अन्यथा अर्थात् यदि शनैश्चर नहीं देखता होवे तो दुष्टयोग की बहुलता को देता है, तथा कृष्ण पक्षमें रात्रि समय यदि मंगल समराशि (वृ० क० क० वृ० म० मी०) में स्थित होकर यदि चंद्रमाको देखे तो दुष्टयोग को न्यून करताहै, यदि मंगल नहीं देखता होवै तो बहुत दोषों को प्रगट करता है, यह सम्पूर्ण विचार प्रश्न लग्न अथवा जन्म लग्न में बुद्धिमान पंडितों करके विचार करना योग्य है और वर्ष लग्न आदिमें भी चिन्तवन करना, यह षोडश योगोंका विषय समाप्त हुआ ॥ ७५ ॥

सम्पूर्ण ग्रहों के चार हर्ष स्थानों का वर्णन ।

नन्दत्रिषड्लग्नभवर्क्षपुत्रव्यया इनाद्धर्षपदं स्वभोच्चम् ।
त्रिभं त्रिभं लग्नमतःक्रमेण स्त्रीणां नृणां रात्रिदिने च तेषु॥७६॥

भा०—तहां पहले हर्ष स्थान को दिखाते हैं, कि सूर्य को आदि ले, सम्पूर्ण ग्रहों के नवमादि स्थानों में स्थित प्रथम होने से हर्ष फल कहे हैं जैसे नवम घरमें सूर्य, तीसरे स्थान में चन्द्रमा, छटे घरमें मंगल, लग्नमें बुध, एकादश स्थानमें गुरु, पंचम स्थान में शुक्र, बारहवें भावमें शनैश्चर स्थित हो तो हर्षद जानना, अब दूसरे हर्ष स्थान को दर्शाते हैं, जब ग्रह अपनी

राशि व अपने उच्च राशिमें स्थित हो तब हर्षित जानना चाहिये, अब तीसरे हर्ष स्थान को वर्णन करते हैं, लग्न से तीन २ राशियों के क्रम करके स्त्री संज्ञक ग्रहों वा पुरुष संज्ञक ग्रहोंका हर्षित होता है, अर्थात् लग्न से १। २। ३ स्थान में बैठे स्त्री संज्ञक ग्रह हर्षित जानना, तथा ४।५।६ में पुरुष ग्रह हर्षित जानना, और ७।८।९ इन स्थानों में स्त्री ग्रह, व १०।११।१२। इन भावों मे पुरुष ग्रह हर्षित जानना, अब चौथा हर्ष स्थान कहते हैं कि स्त्री संज्ञकग्रह और पुरुष संज्ञकग्रह ये दोनों क्रमसे रात्रि व दिनमें हर्षद होते हैं, अर्थात् जब रात्रिमें वर्ष प्रवेश होय तो स्त्री संज्ञक ग्रह हर्षद होते हैं, और दिनमें वर्ष प्रवेश होय तो पुरुष संज्ञक ग्रह हर्षद होते हैं [illegible] चारों प्रकार के हर्ष बलमें पांच पांच विश्वाका बल होता है, जिस [illegible] चारों प्रकार से हर्ष बल पाया जावै तो पूर्ण २० विश्वाका बल जानना, [illegible] चन्द्रमा, शनैश्चर, शुक्र, बुध, इन चार ग्रहों को स्त्री [illegible] करते हैं, और सूर्य, मंगल, बृहस्पति इन तीन ग्रहों को पुरुष संज्ञक [illegible] हैं, यहां नपुंसक ग्रह नहीं है ॥ ७६ ॥

अथ हर्षस्थानबलचक्रम्

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
स्थान	०	०	०	०	०	०	०
उच्च	०	०	०	०	५	०	५
स्त्री	५	०	०	५	०	५	५
रा दि	५	०	५	०	५	०	०
विशो	१०	०	५	५	१०	५	१०

[illegible] नीलकण्ठीताजिकग्रन्थे [illegible] योगादिवर्णनं नाम द्वितीय प्रकरणम् ॥ २ ॥

अथ [illegible] तृतीयप्रकरणं प्रारभ्यते ॥ ३ ॥

[illegible]

[illegible] मयानाय ।
[illegible] विनमस्तु कर्म ॥ १ ॥
[illegible]
[illegible] कार्यसिद्धिः

उद्वाहसूतिसन्तापाः श्रद्धाप्रीतिर्बलंतनु ।
जाड्यव्यापारसहमे पानीयपतनंरिपुः ॥ ३ ॥
शौर्योपायदरिद्रत्वंगुरुताम्बुपथाभिधम् ।
बन्धनं दुहिताऽश्वश्चपञ्चाशत्सहमानिह ॥ ४ ॥

भाषार्थः—यहां पुण्य आदि पचास सहमों के नाम लिखकर सहमों के लाने का प्रकार लिखते हैं—१ पुण्य, २ गुरु, ३ ज्ञान (विद्या), ४ यश, ५ मित्र, ६ माहात्म्य, ७ आशा, ८ सामर्थ्य, ९ भ्राता, १० गौरव, ११ राज, १२ तात, १३ माता, १४ सुत, १५ जीव, १६ अम्बु, १७ कर्म ॥ १ ॥ १८ रोग, १९ मदन, २० कलि, २१ क्षमा, २२ शास्त्र, २३ बन्धु, २४ बन्धक, २५ मृत्यु, २६ परदेश, २७ धन, २८ अन्यदारा, २९ अन्य कर्म, ३० वणिक्, ३१ कार्यसिद्धि ॥ २ ॥ ३२ विवाह, ३३ प्रसूति, ३४ सन्ताप, ३५ श्रद्धा, ३६ प्रीति, ३७ बल, ३८ देह, ३९ जाड्य, ४० व्यापार, ४१ पानीयपतन, ४२ शत्रु ॥ ३ ॥ ४३ शौर्य, ४४ उपाय, ४५ दरिद्रत्व, ४६ गुरुता, ४७ अम्बुपथ, ४८ बन्धन, ४९ दुहिता, ५० अश्व, ये पचास सहम हैं ॥ ४ ॥

पुण्य सहम का साधन ।

सूर्योनचन्द्रान्वितमह्निलग्नंवीन्द्वर्कयुक्तंनिशिपुण्यसंज्ञम् ।
शोध्यर्क्षशुद्धाश्रयभान्तरालेलग्नंनचेत्सैकभमेतदुक्तम् ॥ ५ ॥

भा०—जो दिन में वर्ष प्रवेश होवे तो चन्द्रमा में सूर्य को घटा देवे, यदि रात्रि में वर्ष प्रवेश होवे तो सूर्य के विषे चन्द्रमा का शोधन करना अनन्तर शेष में लग्न को जोड़ देना और आगे कहे अनुसार एक और जोड़ना तो पुण्य सहम होता है, अब सम्पूर्ण सहमों के साधनों में विशेष संस्कार कहते हैं कि शोध्य राशि और शुद्धाश्रय राशि इन दोनों के बीच में यदि लग्न नहीं होवे तो सहम में एक राशि को जोड़ देना चाहिये अर्थात् जो ग्रह कम किया जाय (घटाया जावे उसे) शोध्य कहते हैं, और जिससे ग्रह शोधा जाय वह शुद्धाश्रय (शोधक) कहाता है, इन दोनों ग्रहों के राशियों के बीच में यदि लग्न नहीं होवे तो कहे हुए राश्यादि पुण्य सहम में ए-

राशि और जोड़ देना चाहिये, यदि शोध्य शोधक इन्हों के बीच में लग्न होवे तो नहीं जोड़ना चाहिये यह अर्थ ही से सिद्ध हुआ, (शोध्यक्ष शुद्धा-श्रयम्) यह उपलक्षण मात्र है भाव सहम साधन में भी इसी प्रकार जानना ॥ ५ ॥

पुण्य सहम साधन का उदाहरण ।

जैसे दिन को वर्ष प्रवेश हुआ सो राश्यादि ५ । २२ । ९ । ४७ यह शोधक चन्द्रमा है इसमें राश्यादि ९ । ७ । ३० । ६ यह शोध्य सूर्य घटाया तो ८ । १४ । ३९ । ४१ यह शेष रहा, इसमें स्पष्ट लग्न राश्यादि [illegible] । १८ । १० । १६ युक्तकर दिया और [illegible] एक राशि को जोड़ दिया तो राश्यादि [illegible] । २ । ४९ ॥ ५७ यह पुण्य सहम सिद्ध हुआ, यहां चन्द्रमा शोधक है और शोध्य सूर्य है इस कारण चन्द्रमा की राशि कन्या तक सूर्य की राशि मकर से गिनी तो शोध्य शोधक के बीच में लग्न (मेष राशि) [illegible] है इस कारण यहां एक युक्त नहीं किया यह सिद्धान्त है ।

अथ सहमानयनार्थं सलग्नसूर्यादयो ग्रहाः							
ल	सू	च.	मं.	बु	गु	शु	श
०	९	५	८	८	८	७	६
१८	७	२२	२२	१२	१९	१५	२२
१०	३०	९	३६	१६	३४	३१	२४
१६	६	४७	१	९	१३	४८	३२

गुरु सहम, विद्या सहम, यशः सहम का साधन ।

[illegible]संस्मात्तुगुरुविद्ययोस्तु संसाधनंपुण्यवियुक्सुरेज्यः ।
दिवा[illegible]निशिपूर्वतत् यशोमिधं तत्सहमंवदन्ति ॥ ६ ॥

[illegible] जिस रीति से पुण्य सहम साधन किया जाता है उससे विपरीत [illegible] गुरु सहम और विद्या सहम का साधन करना. जैसे दिन में जो [illegible] सूर्य में चन्द्रमा को घटाया शेष में लग्न जोड़ना और रात्रि [illegible] चन्द्रमा में सूर्य का घटाना शेष में लग्न जोड़ [illegible] [illegible] दोनों सहम सिद्ध होते हैं. यशः [illegible] है कि दिन के वर्ष प्रवेश होय तो पुण्य सहम [illegible] [illegible] वर्ष प्रवेश होय तो पुण्य सहम में बृहस्पति को [illegible] [illegible] [illegible]

गुरु विद्या सहम का उदाहरण ।

प्रथम पुण्य सहम विपरीत क्रमानुसार गुरुविद्या सहम साधते हैं, शोधक सूर्य [illegible] । ३ [illegible] । इसमें शोध्य चन्द्रमा ५ । २ । ४१ । ७७ को घटाया तो ३ । [illegible] । [illegible] यह शेष रहा इसमें लग्न [illegible] । १८ । [illegible] । [illegible] और [illegible] को जोड़ दिया तो ५ । [illegible] । [illegible] । [illegible] यह गुरु सहम और विद्यासहम सिद्ध हुआ यहां शोध्य और शोधक के बीच में लग्न नहीं स्थित है इस कारण यहां एक राशि और युक्त करी गई । अब यशः सहम का उदाहरण यह है, कि शोधक बृहस्पति ८ । [illegible] । ३४ । [illegible] इसमें शोध्य पुण्य सहम ६ । २ । ४६ । ५७ को घटाया तो [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] यह शेष रहा इसमें लग्न [illegible] । १८ । [illegible] । १६ जोड़ दिया तो [illegible] । ७ । [illegible] । २२ यह धनांक हुआ क्योंकि पहला संस्कार रीति से एक राशि नहीं युक्त करने से [illegible] । ५ । [illegible] । ३[illegible] यह यशः सहम सिद्ध हुआ ।

मित्र सहम का साधन ।

पुण्यसद्मगुरुसद्मतस्त्यजेद्व्यत्ययोनिशिसितान्वितंचतत् ।
मैकतातनुवदुक्तरीतितो मित्रनामसहमं विदुर्बुधाः ॥७॥

भाषार्थ—दिन में वर्ष प्रवेश होवे तो गुरु सहम में पुण्य सहम को घटावें और रात्रि में वर्ष प्रवेश होय तो इससे विपरीत अर्थात् पुण्य सहम में गुरु सहम को घटावें और शुक्र को संयुक्त कर देवे, (यहां लग्न के युक्त करने की जगह शुक्र को संयुक्त किया है) अनन्तर शोध्य राशि और शोधक राशि के मध्य में यदि शुक्र न होवे तो एक अन्य राशि को जोड़ देवे, तो उसे मित्र सहम कहते हैं ॥ ७ ॥

मित्र सहम का उदाहरण ।

जैसे शोधक गुरुसहम ५ । ३ । ३० । २५ इसमें शोध्य पुन्य सहम ९ । २ । ४६ । ५७ का घटाया तो ८ । ० । ४० । ३८ इसमें शुक्र ८ । १५ । ३१ । ४८ संयुक्त किया तो ४ । १६ । १२ । २६ यह मित्र सहम हुआ यहां शोध्य शोधक के अन्तर्गत लग्न उपस्थित है इसकारण एक राशि जोडनेकी आवश्यकता नहीं ।

महात्म्य सहम और आशा सहम का साधन ।

पुण्याद्भौमं शोधयेद्व्युक्तवत्स्यान्माहात्म्यं तत्क्रमस्माद्विलोमम् ।

शुक्रं मन्दाद्दह्नि तं विलोममाशाख्यं स्यादुक्तवच्छेषमूह्यम् ॥८॥

भावार्थ—दिन में वर्ष प्रवेश हो तो पुण्य सहम में मंगल को घटा देवै, और रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो विपरीत अर्थात् मंगल में पुण्य सहम को घटावै अनन्तर लग्न मिलाय उक्तवत् संकता करै तो महात्म्य सहम सिद्ध होता है, और आशा सहम इस प्रकार साधन करना कि यदि दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो शनैश्चर में शुक्र को शोधै और रात्रि में इससे विपरीत अर्थात् शुक्र में शनैश्चर को घटा देवै अनन्तर लग्न जोड़ उक्तवत् संकता करै तो आशा सहम (इच्छा सहम संसिद्ध) होता है ॥ ८ ॥

महात्म सहम और आशा सहम का उदाहरण।

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो पुण्य सहम ९ । २ ।४९।५७ में मंगल ८।२२ ।५ । १ को घटाया घटाने से ०।१०।१३।५६ शेष रहा इसमें लग्न जोड उक्तवत् [illegible] और जोडने से राश्यादि १ । २८ । २४ । १२ यह माहात्म्य सहम संसिद्ध हुआ, आशा सहम इस प्रकार कि शनि ६ । २२ । २४ । ३६ में शुक्र को ७।१५।१।४८ घटाया तो शेष ११ । ६ । ५२ । ४८ इसमें लग्न जोड़ा तो राश्यादि ०।२५ ।३।४ यह आशा (इच्छा) सहम संसिद्ध हुआ।

सामर्थ्य सहम और भ्रातृ सहम को साधन।

सामर्थ्यमारात्तनुपं विशोध्य नक्तं विलोमं तनुपे कुजेतु।
[illegible]सततंपुरावद्भ्रातार्किहीनाद्गुरुतः सदोक्तः ॥९॥

भावार्थ—यदि दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो मंगल में लग्न स्वामी को घटावै और रात्रि समय वर्ष प्रवेश हो तो लग्न स्वामी में मंगल को घटावै, अनंतर [illegible] उक्तवत् संकता करने से सामर्थ्य सहम होता है यहां यह [illegible] लग्न स्वामी मंगल होवे तो क्या करना इसका साधन यह है [illegible] (सर्वदा) लग्न स्वामी मंगल को बृहस्पति से घटाय देवै [illegible] संकता करै तो सामर्थ्य सहम होता है और भ्रातृ सहम [illegible] दिनरात्रि अर्थात् सर्वदा वर्ष प्रवेश होने में बृह- [illegible] को घटावै और लग्न जोड़ उक्तवत् संकता करै तो [illegible] सहम [illegible] है। ९ ॥

सामर्थ्य और भ्रातृ सहम का उदाहरण ।

यहां सामर्थ्य सहम साधन में लग्न स्वामी मङ्गल है इससे बृहस्पति ८।१९।३४।१२ में मङ्गल ८।२०।३६।४ को घटाया तो ११।२८।५८।८ शेष इसमें लग्न ०।६।१०।२० को जोड़ दिया तो ०। ५। ८। २८ यह सामर्थ्य सहम हुआ. यहां शोध्य शोधक के बीच लग्न है इससे सैकता नहीं किया, अब भ्रातृ सहम का उदाहरण इस प्रकार है कि बृहस्पति ८।१९।३४।१२ में शनैश्चर ६।२२।३४।३६ को घटाया शेष १।२६।५९।३६ में लग्न और सैकता संस्कार से एक राशि और जोड़ दिया तो ३।३।९।५६ यह राश्यादि भ्रातृ सहम संसिद्ध हुआ ॥

गौरव, राज और तात सहमों का साधन ॥

दिने गुरोश्चन्द्रमपास्य नक्तं रविं क्रमादर्कविधू च देयौ ।
रात्यक्रिया गौरवमर्कपार्केरपास्य वामं निशि राजतातौ ॥१०॥

भाषार्थः—दिन में वर्ष प्रवेश होय तो बृहस्पति में चन्द्रमा को घटावे और शेष में रवि को जोड़े रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो बृहस्पति में रवि को घटाकर चन्द्रमा जोड़ देवे तो गौरव सहम होता है; और सैकता करने में शोध्य शोधक के बीच में दिन को सूर्य रात्रि को चन्द्रमा न होवें तो सैकता करना अर्थात् एक राशि जोड़ना; अब राज सहम और तात सहम का साधन प्रकार यह है कि दिन में वर्ष प्रवेश हो तो शनैश्चर में सूर्य को घटावें, रात्रि में विपरीत अर्थात् रवि में शनैश्चर को घटाय लग्न जोड़ उक्तवत् सैकता करने से राज सहम व तात सहम ये दोनों संसिद्ध होते हैं ॥ १० ॥

गौरव, राज और तात सहमों का उदाहरण ।

यहां दिन में वर्ष प्रवेश है तो बृहस्पति ८ । १९ । ३४ । १२ में चन्द्रमा ५।२१।९।४७ को घटाया शेष २।२७।२४।२६ इसमें सूर्य ९ । ७ । ३० । ६ जोड़ दिया तो ० । ४ । ५४ । ३२ इसमें संस्कार रीति से एक राशि जोड़नेसे राश्यादि १।४।५४।३२ यह गौरव सहम हुआ, अब राज तात सहम साधन का प्रकार ये है कि शनैश्चर ६ । २२ । ३४ । ३६ में सूर्य ९।७।३०।६ को घटाया शेष ९।१४।५४।३० में लग्न जोड़ दिया तो राश्यादि १०।३।४।४६ यह राज सहम और तात सहम संसिद्ध हुआ ॥

माता पुत्र जीवित और अम्बु सहमों का साधन ॥

मतिन्दुतोपास्यसितं विलोमं नक्तं सुतोऽहर्निशमिंदुमीज्यात् ।
स्याज्जीविताख्यं गुरुमार्कितोऽन्हि वामं निशीदं सममम्बयाम्बु ॥ ११

भावार्थ—यदि दिन में वर्ष प्रवेश होवे तो चन्द्रमा में शुक्र को घटावे और रात्रि में विपरीत अर्थात् शुक्र में चन्द्रमा को घटावे; अनन्तर लग्न को मिलाय उक्तवत् संस्कार करे तो मातृ सहम होता है, और दिन व रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो बृहस्पति में चन्द्रमा को घटाय लग्न जोड़ संस्कार करने से पुत्र सहम होता है, और दिन में वर्ष प्रवेश हो तो बृहस्पति को शनैश्चर में घटावे रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो बृहस्पति में शनैश्चर को घटावे अनन्तर लग्न जोड़ संस्कार करने से जीवित नाम सहम होता है, और अम्बु सहम साधन में माता सहम के समान क्रिया होती है ॥ ११ ॥

माता पुत्र जीवित अम्बु सहमों का उदाहरण ॥

यहां दिन में वर्ष प्रवेश है तो चन्द्रमा ५ । २२ । ६ । ४७ में शुक्र ७ । १५ । ३१ । ४८ को घटाया तो शेष १०।६।३७।५९ लग्न जोड़ा तो १० । २९ । ४८ । १५ यह राश्यादि माता सहम सिद्ध हुआ अब पुत्र सहम की रीति यह है कि बृहस्पति ८ । १६ । ३४ । १३ में चन्द्रमा ५ । २२ । ९ । ४७ को घटाया तो शेष २ । २४ । २४ । २६ इसमें लग्न जोड़ा और पूर्वोक्त संस्कार [illegible] और एक राशि जोड़ने से ४ । १५ । ३४ । ५२ ये राश्यादि पुत्र सहम सिद्ध हुआ जीवित सहम की रीति यह है कि शनैश्चर ६ । २२ । २४ । ३६ में बृहस्पति ८ । १६ । ३४ । १३ को घटाया तो शेष में १० । २ । ५० । २३ में लग्न जोड़ दिया तो राश्यादि १० । ०१ । ०० । ३८ यह जीवित सहम हुआ इसी प्रकार अम्बु सहम की क्रिया माता सहम के समान जाननी, इस कारण [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] यह अम्बु सहम हुआ ॥

कर्म रोग मन्मथ सहमों का साधन ॥

[illegible] रोगाख्यमिन्दुं तनुतः सदैव ।
[illegible] तनुतर्मिन्दुतोऽन्हि वामं निशीन्दुं तनुपंमदाकांत १२

भावार्थ—[illegible] और रात्रि

गुरु को घटावे लग्न जोड़ने की जगह में यहां शेष में बुध को जोड़ देवै । पूर्ववत् शोध्य शोधक के मध्य में बुध न होवे तो एक और जोड़ देवै तो शा सहम सिद्ध होता है ॥ १३ ॥

कलि, क्षमा, शास्त्र सहमों का उदाहरण ।

यहां दिन में वर्षप्रवेश है तो गुरु ८।११।३४।१३ में मंगल ८।२२।३६।१ को घटाया तो शेष ११।२६।५८।१२ में लग्न जोड़ दिया तो ०।१५।८।२८ यह राश्यादि कलिसहम क्षमा सहम सिद्ध हुआ, शास्त्र सहम का उदाहरण यह है कि बृहस्पति ८।११।३४।१३ में शनि ६।१७।२४।३६ को घटाया तो शेष १।२७।९।३७ इसमें लग्न जोड़ने की जगह में बुध ८।१२।१६।९ जोड़ देने से राश्यादि १०।९।२५।४६ यह शास्त्र सहम सिद्ध हुआ, यहां शोध्य शोधक के अन्तर्गत बुध है इस कारण संकता नहीं की गई ॥

बन्धु, बन्दक और मृत्यु सहमों का साधन ॥

दिवानिशं ज्ञाच्छशिनं विशोध्य बन्ध्वाख्यमेतन्निशिवन्दकंस्यात् ।
चामं दिःवैतन्मृतिरष्टमर्क्षादिन्दुं विशोध्योक्तवदार्कियोगात् ॥१४

भावार्थ—दिन में व रात्रि में वर्षप्रवेश हो बुध में चन्द्रमा को घटाय लग्न मिलाय उपरान्त संकता करने से बन्धु सहम होता है. और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो बुध में चन्द्रमा को घटावैं, दिन में वर्षप्रवेश हो तो विपर्यय अर्थात् चन्द्रमा में बुध को घटाय लग्न जोड़ पूर्ववत् संकता करे तो बन्दक सहम सिद्ध होता है, तथा दिन व रात्रि में वर्षप्रवेश होने से अष्टम भाव में चन्द्रमा को घटाय लग्न जोड़ने की जगह में शनैश्चर को जोड़ उपरान्त संकता करने से मृत्यु सहम का साधन होता है ॥ १४ ॥

बन्धु, बन्दक और मृत्यु सहमों का उदाहरण ॥

बुध ८।१२।१६।९ में चन्द्रमा [illegible]।४७ को घटाया तो [illegible] में लग्न और उपरान्त संस्कार करने से एक और [illegible] राश्यादि [illegible] यह बन्धु सहम हुआ, बन्दक सहम [illegible] में बुध ८।१२।१६।९ को घटाने से शेष [illegible] [illegible] राश्यादि [illegible] यह बन्दक सहम [illegible] बुध [illegible] ३० में चन्द्रमा

१।२२।१।४७ को घटाने से शेष १।२१।३८।४३ इसमें लग्नके स्थान में शनैश्चर ८।२३।२४।२६ को जोड़ा तो ४।१३।५४।१९ यह मृत्यु सहम हुआ यहां शोध्य शोधक राशि के मध्य लग्न वर्तमान है, इस कारण एक राशि अन्य जोड़ने की आवश्यकता नहीं हुई ॥

देशान्तर और अर्थ सहमों का साधन ।

देशान्तराख्यं नवमाद्विशोध्य धर्मेश्वरं सन्ततमुक्तवत्स्यात् ।
अहर्निशं वित्तपमर्थभावाद्विशोध्य पूर्वोक्तवदर्थसद्म ॥ १५ ॥

भा०- दिनमें व रात्रिमें वर्ष प्रवेश होने से नवम भावमें नवम भाव स्वामी को घटावें अनन्तर लग्न जोड़ पूर्ववत् संस्कार करें तो देशान्तर सहम होता है, और दिन व रात्रिमें वर्ष प्रवेश होते हुए दूसरे भावमें दूसरे भावके स्वामी को घटाय देवें उसमें लग्न जोड़ उक्त रीति से संस्कार करने से देशान्तर सहम होता है ॥ १५ ॥

देशान्तर और अर्थ सहम का उदाहरण ।

नवम भाव ८।६।२८।४४ में नवम भावका स्वामी (बृहस्पति) ८।१६।३४।१३ को घटाया घटाने से शेष ११।१९।५४।३१ इसमें लग्न मिलाने से राश्यादि०।८।४४।४७ यह देशान्तर सहम हुआ अर्थ सहम साधनार्थ धन भाव २।१३।४९।३० में धन भाव स्वामी (शुक्र) ७।१५।२३।४१ को घटाने से शेष ५।२८।२६।४६ इसमें लग्न मिलाने से राश्यादि ६।१६।२८।५ यह अर्थ सहम हुआ ।

परदारा, अन्य कर्म, और वणिक सहमों का साधन ।

सितादपास्यार्कमथान्यदाराह्वयं सदा प्राग्वदथान्यकर्म ।
चन्द्राच्छनिं वाममथो निशायांशश्वद्वणिज्यं दिनवंदकोऽब्च्या ॥१६॥

भा०-दिन में वा रात्रि में वर्ष प्रवेश हो शुक्र से सूर्य को घटाय लग्न जोड पूर्ववत् संस्कार करने से परदारा (अन्यस्त्री) सहम होता है, और दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा में शनैश्चर को घटावे, रात्रि में शनैश्चर से चन्द्रमा का साधन करके लग्न मिलाय उक्तवत् संस्कार करे तो अन्य कर्म (परकार्यकारी) सहम होता है और दिनमें व रात्रि में वर्ष प्रवेश हो वणिक् सहम के साधन

में चन्द्रक सहम के समान क्रिया करैं अर्थात् सदा चन्द्रमा में बुधको शोधन करके लग्न जोड़ सैकता करैं तो वणिक्सहम होता है ॥ १३ ॥

परदारा, अन्य कर्म, वणिक सहमों को उदाहरण ।

शुक्र ७।१५।३१।४८ में सूर्य ९ । ७ । ३० । ६ को घटाया तो शेष १०। ८।१।४२ इसमें लग्न जोड़ा तो राश्यादि १० । २६ । ११ । ५८ यह अन्य द्वारा सहम हुआ अन्य कर्म सहम साधनार्थ चन्द्रमा ५ । २२ । ९ । ४७ में शनैश्चर ६।२२।२४।२६ को घटाया तो शेष १०।२९।४५।११ इसमें लग्न जोड़ने से राश्यादि ११ । १७ । ५५ । २७ यह अन्य कर्म सहम हुआ वणिक सहम साधनार्थ चन्द्रमा ५।२२।९।४७ में बुध ८।१३।१६।९ को घटाया तो शेष ९। ९।५३।३८ इसमें लग्न जोड़ने से यह ९ । २८ । ३ । ५४ राश्यादि वणिक्सहम हुआ ॥

कार्य सिद्धि और विवाह सहमों का साधन ॥

शनैर्दिवार्कंनिशिचन्द्रमार्कंविशोध्यसूर्येन्दुमनाथयोगात् ।
स्यात्कार्यसिद्धिःसततंविशोध्यमन्दंसितास्यात्तुविवाहसद्म ॥ १७ ॥

भा०—जो दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो शनैश्चर में सूर्य को घटाकर जिस राशि में स्थित हो उस राशि स्वामी को जोड़ देवें, और रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो शनैश्चर में चन्द्रमा को घटाय चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि स्वामी को जोड़ देवें अनन्तर उक्त संस्कारवत् सैकता करैं तो कार्य सिद्ध सहम सिद्ध होता है और दिवा रात्रि में अर्थात् सदा वर्ष प्रवेश होने में विवाह सहम साधनार्थ शुक्रमें शनैश्चर को घटावें और लग्न मिलाय पूर्ववत् [illegible] विवाह सहम होता है ॥ १७ ॥

कार्य सिद्धि और विवाह सहमका उदाहरण ॥

[illegible] कार्य सिद्धि सहम साधनार्थ शनैश्चर ६ । २२ । २४ । २६ [illegible] सूर्य [illegible] । ५४ । ५४ । ३० [illegible] राशि [illegible] यह [illegible] सिद्ध हुआ विवाह सहम सा[illegible] ६ । २२ । २४ । २६ को घटाया

तो शेष ० । २३ । ७ । १२ इसमें लग्न मिलाय संकला करने से राश्यादि २ । ११ । १७ । ५८ यह विवाह सहम सिद्ध हुआ ॥

प्रसव और सन्ताप सहमों का साधन ।

गुरोर्बुधं प्रोज्झ्य भवेत्प्रसूतिर्यामे निशीन्दुं शनितो विशोध्य ।
षष्ठं क्षिपेदुक्तदिशा सदैव सन्तापसद्मारमपास्य शुक्रात् ॥१८॥

भावार्थ - दिन में वर्ष प्रवेश हो तो बृहस्पति में बुध को घटावें रात्रि में विलोम अर्थात् बुध में बृहस्पति को घटावें और लग्न जोड़ संकला करें तो प्रसव सहम होता है, सन्ताप सहम साधनार्थ सदा (दिन रात्रि) वर्ष प्रवेश होने में शनैश्चर में चन्द्रमा घटाय छठे भाव को जोड़ देवें, पूर्ववत् संकला करें तो सन्ताप सहम होता है, इस श्लोक के चतुर्थ पद में (आरमपास्य शुक्रात्) इसका सम्बन्ध आगे के श्लोक से है, अर्थात् शुक्र से मंगल को घटावे, यह सिद्धान्त है ।

प्रसव और संताप सहमों का उदाहरण ।

बृहस्पति ८ । १६ । ३४ । १३ में बुध ८ । १२ । १६ । ९ को घटाने से शेष ० । ७ । १८ । ४ इसमें लग्न जोड़ उक्त संकलावत् संकला करने से राश्यादि १ । २५ । २८ । २० यह प्रसव सहम हुआ, और सन्ताप सहम साधनार्थ शनैश्चर ६ । २२ । १७ । ३६ में चन्द्रमा ५ । २२ । १ । ४७ को घटाया तो शेष १ । ० । १४ । ४९ इसमें षष्ठ भाव ५ । १३ । ४२ । ३५ जोड़ दिया तो ६ । १४ । ४ । २१ यहां शोध्य शोधक के बीच में छठा भाव नहीं आया इससे एक राशि अन्य मिलाने से राश्यादि ७ । १४ । ४१ । २ यह संताप सहम हुआ ।

श्रद्धा, प्रीति बल और देह सहमों का साधन ।

श्रद्धा सदा प्रोक्तादिशाथ पुण्यं विद्याख्यातः प्रोह्य सदा पुरोक्त्या ।
प्रीत्याख्यमुक्तं बलदेहसंज्ञे यशःसमे जाड्यमपास्य भौमात् ॥१९॥

भावार्थ—दिनमें प्रवेश हो अथवा रात्रि में वर्ष प्रवेश हो शुक्र में मंगलको घटा लग्नजोड़पूर्वोक्त संकलाकरने से श्रद्धा (आस्तिक्यबुद्धि) सहम होता है, और सदैव दिन व रात्रिमें प्रवेश होतो विद्यासहम को घटा लग्न जोड उक्तवत् संकला करने से प्रीति सहम होता है, और बल देह इन दोनों सहमों को छठे श्लोक

में कहे हुये यशः सहम की रीति अनुसार साधन करै और "जाड्यमपास्य भौमात्" यह पाठ आगे श्लोक से सम्बन्ध रखता है इस कारण इसका अर्थ आगे के श्लोक में कहेंगे ॥ १९ ॥

श्रद्धा प्रीति बल सहमों का उदाहरण।

प्रथम श्रद्धा सहम साधनार्थ शुक्र ७ । १५ । ३० । ४८ मंगल ८।२२। २६ ।१ को घटाय शेष १० । २२ । ३५ । ४७इसमें लग्न जोड़ने से राश्यादि ११ । ११ । ६।३ यह श्रद्धा सहम हुआ,प्रीति सहम साधनार्थ विद्यासहम ५। ३ । ३० । ३५ में पुण्य सहम६।२ । ४६ । ५७को घटाने सेशेष८।०।४०।३८ इसमें लग्न मिलाय देने से राश्यादि ८।२८।५०। ५४ यह प्रीति सहम हुआ और बल देह इन सहमों का साधन यशः सहम के अनुसार करना, सो इसी सहम प्रकरण के छठे श्लोक में साधन कर चुके हैं इस कारण राश्यादि ० । ४ । ५४ । ३२ यह यशः सहम है यही बल देह सहम भी जानना ॥

जाड्य व्यापार पानीय पतन सहमों का साधन ॥

शनिर्विलोमं निशि चन्द्रयोगाद्व्यापार आराज्ज्ञमपास्य शश्वत्
पानीयपातःशशिनं विशोध्य सौरेर्विलोमं निशि पूर्ववत्स्यात् २०

भावार्थ—पूर्व श्लोक में कह आये हैं "जाड्यमपास्य भौमात्" दिन में वर्ष प्रवेश हो तो मंगल में शनैश्चर को घटावे, रात्रिमें विलोम अर्थात् शनैश्चर में मंगल को घटा लग्न जोड़ने के स्थान में बुध को मिला उक्तवत् संस्कार करें तो जाड्यसहम होता है, और अश्वत् (निरंतर) दिन व रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो मंगल में बुध को घटावे अनंतर लग्न पूर्ववत् संस्कार करें तो व्यापार सहम होता है, और यदि दिन में वर्ष प्रवेश हो तो शनैश्चर में चंद्रमा को घटावे रात्रि में प्रवेश हो तो चंद्रमा में शनैश्चर को घटा लग्न संयुक्त कर उक्तवत् संस्कार करने से पानीयपतन (जल में बह जाना) सहम सिद्ध होता है। २०।

जाड्य व्यापार पानीयपतन सहमों का उदाहरण।

प्रथम जाड्य सहम साधनार्थ मंगल ८।२२।३६।१ में शनैश्चर ६।२०।२४। [illegible] को घटाय शेष [illegible] इसमें बुध ८।२२।२६।८ को जोड़ने से [illegible] यह जाड्यसहम हुआ यहां लग्न

अंश के बीच ९.५ विद्यमान हैं इससे संस्कार करने की आवश्यकता नहीं और व्यापार सहम साधनार्थ मंगल ८।२२।३६।१ में बुध ८।१२।१६।६ को घटाने से शेष ०।१०।१६।५२ इसमें लग्न जोड़ पूर्ववत् संस्कार करने से राश्यादि १।२८।३०।८ यह व्यापार सहम हुआ पानीपतन सहम साधनार्थ शनैश्चर ६।२२।२४।३६ में चन्द्रमा ५।२२।६।४७ को घटाने से शेष १।०।१८।४९ इसमें लग्न जोड़ संस्कार करने से राश्यादि २।१८।२४।५ यह पानीपतन सहम हुआ।

अथ शत्रु शौर्य सहमों का साधन।

मन्दं कुजाच्छोध्य रिपुर्विलोमं रात्रौ भवेद्भौमविहीनपुण्यात्।
शौर्यं विलोमं निशि पूर्ववत्स्यादुत्ताय ईज्यं शनितोविशोध्य ।२१।

भावार्थ—दिन में वर्ष प्रवेश रहते मंगल में शनैश्चर को घटाय रात्रि में विलोम अर्थात् शनैश्चर में मंगल को घटा लग्न जोड़ उक्तवत् संस्कार करे तो शत्रु (वैरी) सहम होता है और दिन में वर्ष प्रवेश हो तो पुण्य सहम में मंगल को घटावे रात्रि में विलोम अर्थात् मंगल में पुण्य सहम को घटावे और लग्न जोड़ उक्तवत् संस्कार करे तो शौर्य (वीरत्व) सहम होता है "उत्ताय ईज्यं शनि तो विशोध्य" इस मूल पाठ का सम्बन्ध आगे के श्लोक से है, इसका अर्थ आगे कहेंगे ॥ २१ ॥

अथ शत्रु शौर्य सहमों का उदाहरण ॥

शत्रु सहम साधनार्थ मंगल ८।२२।३६।१ में शनैश्चर ६।२२।२४।३६ को घटाने से शेष २।०।११।२५ इसमें लग्न जोड़ संस्कार करने से राश्यादि ३।१८।११।४१ यह शत्रु सहम हुआ और शौर्य सहम साधनार्थ पुण्य सहम ९।२।४९।५७ में मंगल ८।२२।३६।१ को घटाया तो शेष ०।१०।१३।५६ इसमें लग्न मिलाय संस्कार करने से राश्यादि १।२८।२४।१२ यह शौर्य (वीरत्व) सहम हुआ ॥

दरिद्र और गुरुता सहमों का साधन।

वामं निशिज्ञं तु विशोध्य पुण्याज्ज्ञयुग्विलोमं निशि तद्दरिद्रम्।
सूर्योच्चतः सूर्यमपास्य नक्तं चन्द्रस्तदुच्चाद्गुरुताः पुरोक्तया॥२२॥

भा०—पूर्व श्लोक में लिख आये हैं (उपाय ईर्य्यं शनि तो विशोध्य) कि दिन में वर्ष प्रवेश हो तो शनैश्चर में बृहस्पति को घटावे रात्रि में प्रवेश हो तो बृहस्पति में शनैश्चर को घटाय लग्न मिला उक्तवत् संकता करे तो उपाय सहम होता है और दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो पुण्य सहम में बुधको शोधे रात्रिके विषे बुध में पुण्य सहमको घटा बुध और एक और राशिको जोड देने से तथा दिनमें वर्ष प्रवेश होतो सूर्य के परमोच्च ०।१० में सूर्यको घटावे रात्रि के विषे चन्द्रमा के परमोच्च १।३ में चन्द्रमा घटा शेषमें लग्न मिलाय उक्तवत् संकता करने से गुरुता नामक सहम पूर्वाचार्य करके कहा गया है ॥ २२ ॥

अथ उपाय दरिद्र गुरुता सहम का उदाहरण ।

उपाय सहम साधनार्थ शनैश्चर ६।२२।२१।३६ में बृहस्पति ८।११।३४।१३ को घटाने से शेष ८।२।१०।२३ इसमें लग्न जोड दिया तो ८।२१।०।३६ यह राशिआदि उपाय सहम हुआ दरिद्र सहम साधनार्थ पुण्यसहम ६।७।४१।५७ में बुध ८।१२।१३।१६ को घटाने से शेष ००।२०।३३।४१ इस में गुरु ८।१२।१६।१६ को मिला संकता करने से यह १०।२।४९।५८ राश्यादि दरिद्र सहम हुआ गुरुता सहम साधनार्थ सूर्य का परमोच्च ००।१० में सूर्य ९।७।३०।१६ को घटाने से शेष ३।२।२९।५४ इसमें लग्न जोड संकता करने से राश्यादि ४।२०।४३।१० यह गुरुता सहम हुआ ॥

अथ जल बन्धन सहमों का साधन ।

कर्कादितः प्रोह्य शनिं स्याज्जलाख्यान्यथानिशि ।
पुन्यान्मन्दं विशोध्याह्नि वामं निशि तु बन्धनम् ॥२३॥

भा०—दिन में वर्ष प्रवेश हो तो कर्क के आदिक अर्थात् साढ़े तीन राशि ३।१५ में शनैश्चर को घटा देवै रात्रि में विपरीत अर्थात् साढ़े तीन राशियों को शनैश्चर में घटा देवै अनन्तर लग्न जोड संकता करै तो जल सहम होता है, और दिनमें वर्ष प्रवेश होतो पुण्य सहम में शनैश्चर को घटावे, और रात्रि में शनैश्चर में पुण्य सहम को घटावे लग्न मिलाय संकता करने से बन्धन सहम होता है ॥ २३ ॥

अथ जलपथ बन्धन सहमों का उदाहरण ।

जलपथ सहम साधनार्थ साढ़े तीन राशि ३।१५ में शनैश्चर ६।२२।२४।३६ को घटाने से ८।२२।३५।२४ इसमें लग्न मिलाय देने से राश्यादि ६।१०।१४।४२ यह जलपथ सहम हुआ, बन्धन सहम साधनार्थ पुण्य सहम ६।२।४६।५७ में ज्ञान ६।२५।२०।३६ को घटाया तो शेष ११।७।२६।२१ इसमें लग्न मिलाय संस्कार करने से राश्यादि ३।२८।३५।२७ यह बन्धन सहम हुआ ।

कन्या और अश्व सहमों का साधन ।

चन्द्रं सितादपास्योक्तं सदा कन्याख्यमुक्तवत् ।
पुण्यादर्कमपास्याययोगादश्वोऽन्यथा निशि ॥ २४ ॥

भावार्थ—दिन व रात्रि अर्थात् सर्वदा वर्ष प्रवेश होने शुक्र में चन्द्रमा को घटा लग्न जोड़ उक्तवत् संस्कार करने से कन्या सहम होता है, और दिन में वर्ष प्रवेश हो तो पुण्य सहम को सूर्य को घटा देवे, रात्रि के लिये सूर्य में पुण्य सहम को घटावे अनन्तर शेष में ग्यारहवें भाव को जोड़ संस्कार करने से अश्व सहम होता है संस्कार करना यवनाचार्य के मत में नहीं है, संस्कार अर्थात् एक राशि को जोड़ना इसका समरसिंह, यवन ताजिक, मनुष्य ताजिक इन ग्रन्थों में सविस्तार लिखा है इस कारण वहाँ देखना,यहाँ विस्तार भय से नहीं लिखा यह सहमों का साधन वर्णन किया ॥ २४ ॥

अथ कन्या अश्व सहमों का उदाहरण ।

भा० कन्या सहम साधनार्थ शुक्र ७।१५।३२।४८ में चन्द्रमा ५।२२।३६।१ को घटाया तो शेष १।२२।५५।४७ इसमें लग्न जोड़ संस्कार करने से राश्यादि ३।११।६।२ यह कन्या नामक सहम हुआ और अश्व सहम साधनार्थ पुण्य सहम ६।२।४६।५७ में सूर्य ६।७।३०।६ को घटाने से शेष ११।२५।१६।५१ इसमें ग्यारहवाँ भाव १०।६।२८।४६ संयुक्त कर देने से यह १०।४।४८।३७ यह अश्व सहम हुआ ॥

अथ सहमकुण्डलीयम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
पुण्य	गुरु	विद्या	यश	मित्र	माहात्म्य	आशा	सामर्थ्य	भ्रातृ	गौरव	राज	तात	माता	सुत	जीवित	अं०	कर्म
६	१	१	०	३	१	११	०	२	१	१०	१०	१०	४	१०	१०	१
०	३	३	४	१६	२८	२५	१५	१५	४	३	३	२४	१५	२१	२४	२६
[illegible]	३०	३०	५४	१२	२४	३	८	१६	५४	४	४	४८	३५	०	४८	३०
४	२५	३५	२७	२६	१२	४	२८	५३	३२	४६	४६	१५	५२	३६	१५	८

१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
रोग	मन्मथ	कलि	क्षमा	शास्त्र	बन्धु	बन्धक	मृत्यु	देशा	अर्थ	परदार	अन्य०	वणिक्	कार्य	विवाह	प्रसव
८	६	०	०	१०	४	९	८	०	६	१०	११	९	५	२	१
१४	१३	१५	१५	९	८	२८	१३	८	१६	२६	१७	२८	७	११	२५
१०	४३	८	८	२५	१६	३	५४	४४	२८	११	५५	३	१९	१७	२८
४५	२	२८	२८	४६	३८	५४	१९	४७	५	५८	२७	५४	६	२८	२०

३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
सन्ताप	श्रद्धा	प्रीति	बल	देह	जाड्य	व्या०	पानी०	शत्रु	शौर्य	उपाय	दरिद्र	गुरु०	जल०	बंधन	कन्या	अ०
६	११	८	०	०	१०	१	२	३	१	८	१०	४	९	३	३	१०
१४	११	१८	४	४	१२	२८	१८	१८	२८	२१	२	२०	१०	२८	११	४
४	६	५०	५४	५४	२७	३०	२५	२१	२४	०	४६	४०	४५	३५	६	२८
११	३	५०	३२	३२	३४	८	५	४१	१२	३६	५८	१०	४०	३७	३	३७

अथ सहमानां फलानि निरूप्यन्ते ।

[illegible] सहमं तदंशाः स्वीयोदयस्था विहता त्रिशत्या ।
[illegible] स्तिथिमहितन्यैः स्यात्तद्दशायां तदसंभवे वा ॥ २० ॥

[illegible] अब सहमों के फल का वर्णन करते हैं, जिस सहम

का शुभाशुभ फल जानने पर दिन संख्या जानने की इच्छा हो तो उस सहम राशि स्वामी को सहम में हीन करना, शेष को अंश करके सहम राशि के उदय से गुणा करना तदनन्तर तीनसौ से भाग लेना, लब्ध दिन संख्या जानना, इसमें सहम का फल होता है. किसी आचार्य का मत है कि सहम स्वामी के दशा समय में सहम फल होता है, उदाहरण—जैसे पुण्य सहम राश्यादि ९ । २ । ४९ । ५७ में सहम राशि स्वामी शनि ६ । २२ । २४ । ३६ को घटाया तो शेष २ । १० । २५ । २१ इसके अंश ७० । २५ । २१ इनको सहम राशि (मकर) का उदय २९८ से गुणन करने से २० । ९ । ८५ । ५४ । १८ हुए इसमें ३०० से भाग देने से लब्ध दिनादि ६९ । ५७ अर्थात् २ मास, ९ दिन ५७ घटी जानना, वर्ष प्रवेश दिन से इतने समय तक पुण्य सहम का फल होवेगा ऐसे ही अन्य सहमों का फल समय गणित रीति से निकालना ॥ २५ ॥

सहमों के बल का वर्णन ।

स्वोच्चादिसत्पदगतो यदि लग्न दर्शी वीर्यान्वितः सहमपो यदि नेक्षतेऽगम् । नासौ बली रविशशिश्रितभेशदर्शपूर्णान्तलग्नपबलस्य विचारणेत्थम् ॥ २६ ॥

भाषार्थ—यदि सहम राशि का स्वामी अपने उच्च आदि उत्तम अधिकार में प्राप्त होकर लग्न को देखता हो तो बली जानना. यदि लग्न को नहीं देखे तो बलहीन जानना, तथा जन्म समय सूर्य और चन्द्रमा जिस २ राशि पर स्थित हों उन राशियों के स्वामी और जन्म के निकट अमावस्या व पूर्णमासी जितनी घड़ी हो उस समय का लग्न साधन करने पर जो जो लग्न आवें उन लग्नों के स्वामी इन चारों के बल का विचार पूर्वोक्त प्रकार जानना तथा इन चारों का बल पूर्वाचार्य हिल्लाज और मनुष्य जातक के आयुर्दायाध्याय में अच्छे प्रकार वर्णन किया है यद्यपि यहां इन बलों का विचार उपयोगी नहीं तथापि प्रसङ्ग वश से यहां कहा है ॥ २६ ॥

सहम का निर्बलत्व और बलत्व का वर्णन ।

पंचवर्गी बलेनोनो न हर्षस्थानमाश्रितः ।
अवलोयं लग्नदर्शी बली स्वल्पोऽस्ति चेत्पदे ॥ २७ ।

भा० – जो पंचवर्गी बल से हीन और पूर्वोक्त चारों हर्षद स्थानों से रहित तथा जो ग्रह लग्न को न देखे तो उसे निर्बल जानना चाहिये एवं जो ग्रह स्वल्प (छोटे) पद (अधिकार) में विराजमान होकर लग्न को देखे तो उसको बलवान जानना, यहां जो ग्रह अपने उच्च अपने घर में हो वह महाधिकार वाला कहाता है और जो अपने हद्दा में वह मध्यम अधिकार वाला, तथा जो अपने त्रैराशिक व अपने नवांश में हो वह स्वल्प अधिकार वाला कहाता है ॥ २७ ॥

सहम की वृद्धि और ह्रास्ता का वर्णन ।

स्वस्वामिना शुभखगैः सहितं च दृष्टं स्वामी बली च यदि तत्सहमस्य वृद्धिः । चेत्स्वामिना शुभखगैश्च न युक्त दृष्टं तत्सम्भवो नहि भवेदिति चिन्त्यमादौ ॥ २८ ॥

भावार्थ—जो सहम अपने स्वामी करके व शुभग्रहों करके युक्त वा दृष्ट हो तो सहम स्वामी बलवान और सहम की वृद्धि जानना, अर्थात् फल देने में समर्थ होगा और जो सहम अपने स्वामी से अथवा शुभग्रहों से युक्त न हो और न देखा जाता हो तो उस सहम का सम्भव नहीं होगा अर्थात जैसा नाम कहा है वैसा फल नहीं देगा इत्यादि पहिले ही से चिन्तवन कर विचार करना चाहिये ॥ २८ ॥

सहम के असम्भव लक्षण ।

अष्टमादिपतिनायुतेक्षितं पापदृग्युतमथेत्थशालितैः । सम्भवेऽपि विलयं प्रयाति तत्तेन जन्मनि पुरंदमीच्यताम् ॥२९॥

भा०—जो सहम को लग्न से अष्टम राशि स्वामी से युक्त हो या देखा जाता हो [illegible] पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो अथवा उन अष्टम राशि स्वामी और [illegible] होवे तो वह अपने स्वामी वा शुभ ग्रहों करके [illegible] के सम्भव को नाश कर देता है अर्थात जैसा [illegible] नहीं कर सकता है, इसी से जन्म समय में सहम के [illegible] विचार करें ॥ २९ ॥

[illegible] का ज्ञान ।

[illegible] सहमानां बलाबलम् ।

विमृश्य सम्भवो येषां तानि वर्षे विचिन्तयेत् ॥ ३० ॥

भा०—पहले जन्म समय में संपूर्ण सहमों का बल और सबल विचार करके जिन सहमों के फलकी प्राप्ति का सम्भव होय उन्हीं को वर्ष में निश्चय करे, और जिन सहमों का कोई फल होन हो उनको वर्ष में कभी न विचारे ॥ ३० ॥

पुण्य सहम का फल।

सबले पुण्यसहमे धर्मसिद्धिर्धनागमः।
शुभस्वामीक्षितयुते व्यत्यये व्यत्ययं विदुः ॥ ३१ ॥

भा०—पुण्य सहम बलयुक्त हो और शुभग्रह अपने स्वामी से युक्त हो वा देखा जाता हो तो धर्मकी सिद्धि और धनकी प्राप्ति होवे, इससे विपरीत हो अर्थात् जो पुण्य सहम निर्बल होकर पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो धर्म और धनका नाश जानना ॥ ३१ ॥

पुण्य सहम का अशुभ फल।

लग्नात् षष्ठाष्टरिष्फस्थं धर्मभाग्ययशोहरम्।
शुभस्वामिदृशा प्रान्ते सुखधर्मादिसम्भवः ॥ ३२ ॥

भा०—जो पुण्य सहम वर्ष लग्न से छठे आठवें बारहवें स्थानमें स्थित होवे तो सम्पूर्ण वर्ष भर धर्मभाग्य व यश इनको हरण करता है, और उसको शुभ ग्रह व उसका स्वामी देखता होवे तो वर्ष के अन्त में सुख और धर्म आदि की प्राप्ति होवेगी, अर्थात् वर्ष के पूर्वार्द्ध में अशुभ फल, और उत्तरार्ध मे शुभ फल होवेगा ॥ ३२ ॥

पाप ग्रहों और शुभ ग्रहों के संबन्ध से युति व दृष्टि फल।

पापयुक् शुभदृष्टं चेदशुभं प्राक्ततः शुभम्।
शुभयुक्तं पापदृष्टमादौ शुभमसत्परे ॥ ३३ ॥

भा०—यदि पुण्य सहम पापग्रहों से युक्त और शुभ ग्रहों से देखा जाता हो तो वर्ष के पूर्वार्धमें अशुभ, और उत्तरार्धमे शुभ होताहै, और जब पुण्य सहम शुभग्रहों से युक्त और पापग्रहों से देखा जाता हो तो वर्ष के पूर्वा-

र्ध में शुभ और उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है, और जो पापग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त अशुभ फल होवेगा, और शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो वर्ष भर शुभफल होगा। पापग्रह और शुभग्रह मिले हों तो मिश्रित फल होवेगा यह अर्थ से ही सिद्ध होता है ॥ ३२ ॥

पुण्य सहम की प्रशंसा ।

यत्राब्दे पुण्यसहमं शुभं सोऽत्रशुभावहः ।
अनिष्टेऽस्मिन् शुभो नेति पुण्यमादौ विचारयेत् ॥३४॥

भा०—जिस वर्ष में पुण्य सहम शुभ हो तो वह वर्ष अच्छे फल को देने वाला होता है और जिस वर्ष में पुण्य सहम अनिष्ट होवे तो वह वर्ष अशुभ जानना इस कारण आदि में पुण्य सहम को विचारे ॥ ३४ ॥

जन्म काल में पुण्य सहमका अशुभ लक्षण ।

सूतौ षष्ठाष्टरिष्फस्थे मध्ये पापहतं पुनः ।
पुण्यं धर्मार्थसौख्यघ्नं पत्यौ दग्धे फलं तथा ॥ ३५ ॥

भा०—जन्म समय में लग्न से ६।८।१२ इन स्थानों में यदि पुण्य सहम स्थित होवे और पापग्रहों से युक्त दृष्ट वर्ष समय में हो तो वह धर्म अर्थ और सौख्यका नाश करने वाला होता है, तैसे ही पुण्य सहम स्वामी के अस्त होने से फल होता है, अर्थात धर्मादिकका नाशक होता है ॥ ३५ ॥

सहमान्यखिलान्यित्थं सूतौ वर्षे विचिन्तयेत् ।
मान्द्यारिकलिमृत्यूनां व्यत्ययादादिशेत्फलम् ॥ ३६ ॥

भा०—इस प्रकार जन्म काल और वर्ष में सम्पूर्ण सहमों को चिंतवन [illegible] रोग, शत्रु, कलह, मृत्यु और दारिद्र इन सहमों के फलका पुण्य [illegible] विपरीत कहैं, जैसे ग्रन्थकार नीलकण्ठ आगे कहेंगे, यथा—
[illegible] दारिद्र्य मृत्यु, रोग, शत्रु,
[illegible] इन सहमों के निर्देश कहा गया जैसे 'कार्यादिकनाशगता
[illegible] यहां यह विचार कर
[illegible] और [illegible] अशुभ होने से दारिद्र भी इन

सहमों का फल अशुभ आता हो तो अशुभ फल कहना और यदि रोगादि सहमों का अशुभ फल आता हो तो शुभ कहना चाहिये ॥ ३६ ॥

कार्य सिद्धि सहम का शुभाशुभ फल ।

कार्यसिद्धिसहमं युतं शुभैर्दृष्टमित्थशालगं जयप्रदम् ।
संगरेऽथ शुभपापदृष्टियुक् क्लेशतो जय उदीरितो बुधैः ३७

भा०—जो कार्य सिद्धि सहम शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तथा शुभ ग्रहों का इत्थशाल योग होवे तो संग्राम में जय का देने वाला होता है, और यदि कार्य सिद्धि सहम शुभ ग्रहों से व पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो कष्ट से जय प्राप्त होती है, ऐसा पण्डितों ने कहा है ॥ ३७ ॥

कलि सहम का शुभाशुभ फल ।

कलिसद्मपमिश्रखगदृष्टिसंयुतं यदिपापमूथशिलगं कलेर्मृतिम् ।
अथतत्र सौम्यसहितावलोकिते जयमेति मिश्रदृशितःकलिव्यथे ३८

भा०—जिसके वर्ष काल में कलिसहम शुभ ग्रहों वा पापी ग्रह से दृष्ट हो अथवा संयुक्त हो वैसे ही यदि पाप ग्रहों के साथ इत्थशाल योग करता हो तो वह मनुष्य लड़ाई के प्रसङ्ग में मृत्यु को प्राप्त होता है, तथा जो कलिसहम शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो जय प्राप्त होवे है, अथवा शुभ ग्रह और पाप ग्रह दोनों देखते हों तो कलह और दुःख ये दोनों प्राप्त होते हैं ॥ ३८ ॥

विवाह सहम का शुभाशुभ फल ।

विवाहसद्माधिपसौम्यदृष्टं युतं शुभैर्मूथशिलं शुभाप्तिम् ।
कुर्याद्यदा मिश्रसमेतदृष्टं कष्टादथक्रूरमतीश्वरेर्न ॥ ३९ ॥

भा०—जिस मनुष्य के वर्ष काल में विवाह सहम अपने स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो वा शुभ ग्रहों से मुथशिल योग करता हो तो उस प्राणी के विवाह की प्राप्ति को करता है और यदि शुभ ग्रहों और पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो, तो बड़े कष्ट से विवाह होता है, अथवा यदि विवाह सहम पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो वा मुथशिल योग करता हो तथा वर्ष लग्न व विवाह सहम से अष्टम स्थान

के स्वामी करके युक्त व दृष्ट वा इत्थशाल योग होवे तो उस वर्ष में विवाह नहीं होवेगा, ऐसा कहना ॥ ३९ ॥

यश सहम का शुभाशुभ फल ।

यशोधिपेनैधनगे खलेन युतेक्षित सद्यशसो विनाशः ।
पापार्जितस्यायशसोऽस्ति लाभो नष्टौजसि स्यात्कुलकीर्तिनाशः ॥

भावार्थ—जिसके वर्षकाल में यशस्सहम का स्वामी आठवें स्थान में प्राप्त होकर पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो उसके समीचीन यशों का नाश होता है, अर्थात् सुन्दर यश को प्राप्त नहीं होता है किन्तु पाप सम्बन्ध से पैदा हुए अयश का लाभ होता है और वह यशस्सहम का स्वामी अष्टम भाव में स्थित होकर अस्त होजावे तो उस मनुष्य के कुल की कीर्ति का नाश होता है ॥ ४० ॥

यश सहम के शुभाशुभ फलों का और वर्णन ।

शुभेत्थशाले शुभदृग्युते वा बलान्विते स्याद्यशसोऽभिवृद्धिः ।
युद्धे जयो वाहनशस्त्रलाभः पापेसराफादयशोऽर्थनाशः ॥४१॥

भा०—जो यशस्सहम का स्वामी शुभ ग्रह के साथ इत्थशाल योग करे अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट वा युक्त होकर बल युक्त होवे तो उसके यश की वृद्धि और युद्ध में जय तथा वाहन (हाथी, घोड़ा आदि) और हथियार इनका लाभ होवे और जो यशस्सहम स्वामी पाप ग्रहों के साथ ईसराफ योग करे तो यश की हानि और धन का नाश होवे ॥ ४३ ॥

आशा सहम का शुभाशुभ फल ।

[illegible] षष्ठाष्टरिष्फविवर्जितःसौम्ययुतेक्षितश्च ।
[illegible] ॥४२॥

[illegible] सहम और आशा सहम का स्वामी लग्न से ६ । ८ । १२ [illegible] शुभ ग्रहों से युक्त [illegible] हो तो अपना मनोरथ सिद्ध [illegible] का लाभ होता है, और जो पाप ग्रहों से [illegible] होवे तो [illegible] प्राप्त होता है । ४२ ॥

रोग सहम का अशुभ फल ।

मांद्याधिपः पापयुतेक्षितश्च पापः स्वयं रोगकरो विचिन्त्यः ।
नेदित्थशालोमृतिपेन मृत्युस्तदा भवेद्धीनबलेतिकष्टात् ॥४३॥

भा०—जो रोग सहमका स्वामी पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो, और वा स्वयं पापग्रह हो तो रोग करने वाला जानना, तथा यदि रोग सहमाधीश लग्न से अष्टम भवन के स्वामी के साथ इत्थशाल करता होवे तो उस प्राणी की मृत्यु होवै और यदि रोग सहम स्वामी बलहीन होवे तो अतिकष्ट से मरण होवै, ऐसा कहना ॥ ४२ ॥

रोग सहमका शुभाशुभ और फल ।

स्वस्वामिसौम्येक्षणभाजि मान्द्ये नाथे सवीर्येऽष्टषडंत्यवर्ज्जे ।
रोगस्तदा नैव भवेद्विमिश्रं युतेक्षिते रुग्मयमस्ति किंचित् ॥४४॥

भा०—जिस मनुष्य के वर्षकाल में रोग सहम अपने स्वामी वा शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तथा रोग सहमाधीश ८ । ६ । १२ इन स्थानों को छोड़कर किसी अन्य स्थानों में स्थित होकर बलवान होवें, तो उस मनुष्य को किसी प्रकार का रोग नहीं होता है, और जो रोग सहमका स्वामी शुभ ग्रहों वा पापग्रहों से युक्त हो व देखा जाता हो, तो कुछ थोड़ा रोग भय होता है ॥ ४४ ॥

अर्थ सहमका शुभाशुभ फल ।

अर्थाख्यं शुभनाथदृष्टसहितं द्रव्यागमात्सौख्यदं पापैर्दृष्टयुते स्नेहस्च विलयं कुर्यादथो पापयुक् सद्दृष्टं च शुभेत्थशालि यदि तत्पूर्वं धनं नाशयेत्पश्चादर्थसमुद्भवं च ससुखं व्यत्यासतो व्यत्ययः ॥ ४५ ॥

भा०—जिस मनुष्य के वर्ष कालमें अर्थ सहम शुभग्रह व अपने स्वामी से दृष्ट व युक्त हो तो वह उस मनुष्य को द्रव्य की प्राप्ति से सुख को देता है, और यदि पापग्रहों से दृष्ट व युक्त हो तो धनका नाश करता है, अथवा जो अर्थ सहम पापग्रहों से युक्त होकर शुभ ग्रहों से देखा जाता

हो, तथा शुभ ग्रहोंके साथ इत्थशाल योग करता होवै, तो पूर्व संचित किये हुए धनका नाश करता है, फिर पीछे कुछ कालान्तर में सुख समेत् धनको देता और यदि अर्थ सहम शुभग्रह वा पाप ग्रहों से देखा जाता हो तथा शुभग्रह पापग्रहों के साथ मुथशिल (इत्थशाल) योग करै तो शुभ ही फल देता है ॥ ४५ ॥

शत्रु मित्र दृष्टि फल ।

रिपुदृष्टया रिपोर्भीतिस्तस्करादेर्धनक्षयः ।
मित्रदृष्टया मित्रयोगाद्धनं मानं यशःसुखम् ॥४६॥

भा०—जो सहम शुभग्रह व पापग्रह की शत्रु दृष्टि से देखा जाता हो तो शत्रु से भय हो और चोरों से धनका क्षय होवै, और जिस सहम को शुभग्रह पापग्रह मित्र दृष्टि से देखता हो तो मित्रके योग (सम्बन्ध) से धन व मान, यश व सुखको प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

पुत्र सहमका शुभाशुभ फल ।

स्वस्वामिदृष्टं सुतमात्मजस्य लाभं सुखं यच्छति पुत्रसद्म ।
पापान्वितं सौम्यखगेत्थशालिप्राग्दुःखदं पुत्रसुखाय पश्चात् ४७

भा०—जो पुत्र सहम शुभ ग्रहों व अपने स्वामी से देखा जाता हो अथवा [illegible] हो तो पुत्रका लाभ और पुत्र सम्बन्धी सुख प्राप्त होता है तथा जो पुत्र सहम पापग्रह युक्त शुभग्रह से इत्थशाल योग करता होवै तो पुत्र [illegible] के पश्चात् पुत्र सुख होता है ऐसा कहना ॥ ४७ ॥

[illegible] सहमका शुभाशुभ और फल ।

[illegible] नाशाय पुत्रस्य गतोजर्मांशे ।
[illegible] पुत्रस्य [illegible] शुभमित्रदृष्टः ॥४८॥

[illegible] और पापग्रह से देखा [illegible] पुत्रका नाश होवे तथा जन्म [illegible] में पुत्र [illegible] हो और [illegible] ॥ ४८ ॥

पितृ सहम का शुभाशुभ फल ।

पित्र्यं सदीक्षितयुतं पतियुक्तदृष्टं तातस्य यच्छति धनाम्बर-
मानसौख्यम् । पत्यौ गतोऽजमि मृतौ खलमूसराफे नाशः
पितुश्चरगृहे परदेशयानात् ॥ ४९ ॥

भा० — जो पितृसहम शुभ ग्रहोंसे युक्त व दृष्ट हो अथवा अपने स्वामी से युक्त दृष्ट हो तो उस मनुष्य के पिता के लिये धन, वस्त्र, मान और सुखको देता है, और यदि पितृ सहम का स्वामी निर्बल अथवा अस्तंगत हो वा वर्ष लग्न से आठवें स्थान में स्थिर होकर पापग्रहों के साथ मूसरीफ (इत्थशाल) योगको करै और चरराशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में स्थित हो तो उसका पिता परदेश में यात्रा करता हुआ मृत्यु को प्राप्त होगा ऐसा कहना ॥ ४९ ॥

पितृ सहम का शुभाशुभ फल ।

शुभेत्थशाले खलखेटयोगे गदप्रकोपः प्रथमं महान्स्यात् ।
पश्चात्सुखं विंदति पूर्णवीर्ये नाथे नृपान्मानयशोऽभिवृद्धिः ५०

भा०—जो पितृसहम पापग्रहों के साथ इत्थशालयोग को करै, पुनः यदि पापग्रहों से युक्त हो तो वर्ष के प्रारंभ में बड़े रोगका कोप होवेगा, फिर वर्षके उत्तरार्धमें पिता सुखको प्राप्त होवेगा तथा यदि पितृसहमका स्वामी पूर्णबली होवे तो उसका पिता राजाके आश्रयसे मान,यश,बड़ाई व द्रव्यको प्राप्त होवेगा

बन्धन सहमका शुभाशुभ फल ।

बन्धनाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिना न हि तदाऽस्ति बन्धनम्
पापवीक्षितयुतेऽस्ति बन्धनं पापजे मुथशिले विशेषतः ॥५१॥

भा०:—यदि बन्धन सहम अपने स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो तो बन्धन नहीं होगा अर्थात् जेलखाने नहीं जायगा, और जो पाप दृष्ट व युक्त हो तो बन्धन होवेगा, तथा जो बन्धन सहम और उसका स्वामी ये

दोनों पाप ग्रहों से इत्थशाल योग करे तो विशेष करके बन्धन होगा ऐसा जानना ॥ ५१ ॥

गौरव सहम का शुभाशुभ फल ॥

गौरवाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिना शुभखगैः सुखाप्तये ।
राजगौरवयशोम्बराप्तये पापवीक्षितयुते पदक्षतिः ॥ ५२ ॥

भावार्थः—जो गौरव सहम अपने स्वामी व शुभ ग्रहों से युक्त हो या देखा जाता हो तो सुख, राजगौरव, यश व वस्त्र, इनकी प्राप्ति होवे, और यदि पाप ग्रहों से युक्त व दृष्ट हों तो अधिकार का क्षय होजावे अर्थात् यह मनुष्य बेरोजगार हो जावे ॥ ५२ ॥

पुनः गौरव सहम का शुभाशुभ फल ।

शुभाशुभैर्दृष्टयुतं खलैश्चेत्कुर्वेत्थशालं धनमाननाशम् ।
पूर्वं विधत्ते चरमे शुभैत्थशाले सुखं वाहनशस्त्रलाभम् ॥ ५३ ॥

भावार्थः—यदि गौरव सहम शुभ वा पापयुक्त वा दृष्ट हो और इत्थशाल योग करे तो वर्ष के पूर्वार्द्ध (प्रथम ६ मास) में धन और मान का नाश करे, तथा यदि केवल शुभ ग्रह से इत्थशाल योग करे तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में सुख, वाहन और शस्त्र इनका लाभ करे ॥ ५३ ॥

कर्म सहम का शुभाशुभ फल ॥

कर्मभावसहमाधिपौ शुभैः स्वामिना मुथशिला बलान्विताः ।
[illegible] पापदृष्टियुतितोऽशुभप्रदाः ॥ ५४ ॥

भावार्थः—यदि दशमेश और कर्म सहम का स्वामी और दोनों के [illegible] शुभ ग्रहों व अपने स्वामी के साथ इत्थशाल योग [illegible] उनके लाभ को देते हैं, और यदि पाप [illegible] फल को देते हैं अर्थात् पापयुत दृष्ट [illegible] ॥ ५४ ॥

[illegible] सहम का शुभाशुभ और फल ।

[illegible] शुभा दृष्टाः [illegible] ।

राज्यभ्रंशः कर्मनाशश्च राज्यकर्मेशयो रन्ध्रमृगरिःफो खलेन ॥५५॥

भावार्थ- -चतुर्थ भाव स्वामी और दशम स्वामी ये दोनों अस्तंगत हों या वक्री होवें तो भाग्य का नाश करते हैं, तथा दोनों नीचराशिगत पड़के देवें लग्न में वा नीच युक्त हों तो विशेष करके भाग्य का नाश करते हैं, तथा यदि राज्य सहम वा भाग्य सहम ये दोनों के स्वामी पाप युक्त वा दृष्ट हों अथवा पाप ग्रहों से मृगरिःफ योग हुई तो राज्य और कर्म का नाश होवे ॥ ५५॥

मन्दादि युक्त वाले सहमों का अर्थ ।

उपदेशागुरुर्ज्ञानं विद्याशास्त्रं श्रुतिस्मृती ।
मोहोजाड्यं बलं सैन्यमंगं देहो जलंद्युतिः ५६

भावार्थ-गुरु सहम को उपदेश, और विद्या सहम को ज्ञान सहम, और विद्या सहम को शास्त्र, श्रुति, स्मृति सम्बन्धी सहम जाड्य को मोह और बल को सैन्य, देह को शरीर, जल को द्युति (कांति) भी कहते हैं ५६

गुरुतामंडलेशत्वं गौरवं मानशालिता ।
निग्रहानुग्रहविभू राजाच्छत्रादिलिंगभाक् ॥ ५७ ॥
माहात्म्यं मंत्रगांभीर्यं धृतिबुद्ध्यादिशालिता ।
सामर्थ्यं देहजाशक्तिः शौर्यं यत्नोऽरिनिग्रहः ॥ ५८॥

भावार्थः—गुरुता शब्द से मण्डलेशत्व, गौरव को मानशाली, राजशब्द से क्षत्रिय निग्रह अनुग्रह का विभु जानना राजशब्द का लक्षण यह है कि जो बांधने और अनुग्रह करने में समर्थ होकर छत्र, चमर आदि चिन्हों का सेवने वाला होता है ॥ ५७ ॥ महत् के भाव को माहात्म्य और महत्व कहते हैं, मंत्र यह है कि जो एकान्त में विचारा जायँ, उसका गाम्भीर्य(अप्रकटता) किसी से नहीं कहना यहां यह शंका है कि अप्रकाश कैसे होता है, तहां समाधान यह है कि धैर्य और परिणाम जो बुद्धि आदि से युक्त हो, इसी से प्रकाश रहित होता है, अर्थात् ऐसे रूप से जो युक्त हो वह महात्म्य कहा जाता है—सामर्थ्य शब्द से देह से उत्पन्न हुई शक्ति, और शौर्य शब्द से शत्रु के पकड़ने का यत्न किया जाय उसे कहते हैं ॥ ५८ ॥

दशा दिवस लाने का वर्णन ।

शुद्धांशकांस्तान्गुणयेदनेन लब्धध्रुवांकेन भवेद्दशायाः ।
मानं दिनाद्यं खलु तद्ग्रहस्य फलान्यथासां निगदेत्तु शास्त्रात् ॥

भावार्थः-पूर्वोक्त लब्ध हुए ध्रुवांक (दशागुणकांक) से सर्व शुद्धांशों को भी गुणना चाहिये, ऐसा करते हुए उस २ ग्रह के दिनादिक दशा को प्रमाण होता है, ऐसे ही दशा के दिन आदिकों को लाकर इन दशाओं के शुभ व अशुभ फलों को ज्योतिःशास्त्र से कहै ॥ ६६ ॥

अंशों के साम्य का निर्णय ।

शुद्धांशसाम्ये बलिनोदशाद्या बलस्य साम्येऽल्पगतेस्तु पूर्वा ।
साम्ये विलग्नस्य खगेन चिन्त्याबलादिका लग्नपतेर्विचिन्त्या ६७

भावार्थः--दो ग्रहों के अंशों करके साम्य रहते पंचवर्गी में जिस का बल अधिक हो उसकी दशा प्रथम होती है, अर्थात् शोध्य, शोधक दोनों ग्रहों के अंश समान हों उन दोनों में से पंचवर्गी में से बल अधिक हो उसकी दशा पहिले कही जावेगी यहां पर विचार कर्तव्य है कि "शुद्धांशसाम्ये" यह अपपाठ है, क्योंकि इस पाठ में किसी आचार्य का [illegible] नहीं देख पड़ता है, इस कारण "हीनांशसाम्ये" ऐसा पाठ [illegible] चाहिये इस पाठ में सब आचार्यों का सम्मत भी है, इससे [illegible] इस पाठ को [illegible] समझना चाहिये, और यहां दशा का क्रम [illegible] है, तदनन्तर शोधन करने में शुद्धांश होते हैं [illegible] शुद्धांशों का समान हो जिसका बल पंचवर्गी [illegible] दशा होती है, तदनन्तर दूसरे की और [illegible] बल वाले की दशा पहिले होगी और [illegible] तो पहिले [illegible] की दशा जानना [illegible]

[illegible]

[illegible] ग्रह [illegible] है, [illegible]

हीनांशाः							
श	मं	गु	चं	सू	शु	बु	ल
६	७	१२	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४८	३०	२९	३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५४	६	८	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

से देखना यहाँ सब ग्रहों की अपेक्षा न्यून अंश वाला शनैश्चर है इस कारण प्रथम शनैश्चर ६।४८।५४ को स्थापित किया फिर मंगल ७।३०।६ को फिर गुरु १२।२९।८ को फिर सोम १५।३२।२६ इत्यादि क्रम से हीनांश ग्रहों को स्थापन करे, फिर पात्यांशों को स्थापित करे, उसकी रीति यह है कि प्रथम शनैश्चर के पात्यांश ६।४८।५४ फिर इनको मंगल के अंशों में घटाकर शेष ०।४१।१२ मंगल के पात्यांश हुए, ऐसे ही पूर्वांशों को अगाड़ी में शोधने से सबों के पात्यांश होंगे इन सब पात्यांशों का योग करने से २९।३५।१२ यह योग सम्पूर्ण हीनांशों के अन्त में स्थित ग्रह के तुल्य है, इससे ठीक हुआ, जो सब यथा में स्पष्ट लिखा है, देखना अब दशा दिवस लाने का प्रकार यह है कि पात्यांश योग २९।३५।१२ में से अंशों को साठ से गुणाकर कला जोड़कर साठ से गुणाकर विकलाङ्क जोड़ दिये तो १०६५।१२ यह भाजक हुआ, अब वर्ष मिती दिन ३६० इसको साठ से गुणा तो कलात्मक २१६०० यह हुआ फिर इसको ६० से गुणा तो १२९६००० यह भाज्य हुआ इसमें योगरूप भाजक से भाग लेने पर १२।१०।३ ध्रुवाङ्क (दशागुणकांक) हुआ, इस करके शनैश्चर के ६।४८।५४ पात्यांशों को गुणा किया तो ८२।५५।२७ यह शनैश्चर दशा के दिवसादि हुए, इसी प्रकार अन्य पा-

लोमक्रमेण हीनांशाः पात्यांशाः

०	श	मं	गु	चं	ल	शु	सू	बु	रा
हीनांशाः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पात्यांशाः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मॉट्यमानेन वर्षदशाप्रवेशनक्रम् ।

दशा	श	मं	गु	चं	ल	शु	बु	सू	यो	०
दशादिवसाः	८२	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३६०	दिन
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	घटी
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	पल

सूर्य	सू	सू	स	सू	सू	स	सू	सू	सू	राशि
	९	०	०	२	३	४	६	७	९	राशि
	७	०	८	६	४	१७	७	५	७	अंश
	३०	२५	४६	४७	२७	१८	१०	५८	३०	कला
	६	२४	४२	१	२८	२०	१४	१४	६	विकला

ग्रहों को ध्रुवाङ्क गुण देवे तो ग्रहों के दशा के दिनादि आजावेंगे. यह सौर मान से दशाओं का क्रम हुआ और इस सौरमान ही से सम्पूर्ण पण्डित जन दशाओं को बनाकर वर्ष के विशेष प्रमाण मानते और स्थापन करते हैं, सावन मान को स्थापित नहीं करते. परन्तु सावन मान से दशा लाने का क्रम सौरमान ही के समान है केवल भेद इतना है कि सावन मान के दिनादि ३६५ । १५ । ३१ यह वर्ष मिति है, इसको दो बार साठ से गुणने पर १३१४६३१ यह भाज्य हुआ इसमें १० [illegible] इससे भाग देने पर १२ । १० । ४२ यह गुणक उत्पन्न हुआ इसी तरह शनैश्चर के पात्यांशों को गुण दिया तो ८४ । ७ । ५२ यह शनैश्चर दशादिनादि हुए, ऐसे ही अन्य ग्रहों के भी दशादिनादि आजावेंगे, यहां उसके [illegible] लिखने की आवश्यकता नहीं।

दशामानं समामानं प्रकल्प्योक्तेन वर्त्मना ।
अन्तर्दशा साधनीया पात्यांशवशेन तु ।
आद्यान्तर्दशापाकपतेस्तत्क्रमतोऽपरा ॥ ६८ ॥

अन्तर्दशा लाने का प्रकार ।

[illegible] की दशा में अन्तर्दशा लाना होवे तो उस दशा के [illegible] को समामान कल्पना करे अर्थात् दशा के [illegible] मध्यमान कल्पना करे अर्थात् दशा के दिन घटी पलों [illegible] इस मार्ग से अन्तर्दशा का साधन करो [illegible] दो बार साठ से गुणा करने पर जो अङ्क [illegible] पात्यांशों के योगफल भाजक से भाग लेवे [illegible] गुणक से पात्यांशों से गुण देवे तो अन्तर्दशा के [illegible] अन्तर्दशा का क्रम यह है कि महादशा में जिसकी [illegible] अन्तर्दशा होती फिर उसी क्रम से आगे [illegible] ॥ ६८ ॥

अन्तर्दशा का उदाहरण।

जैसे शनैश्चर की दशा के ८२। ५४। १८ पल दिनादि हैं इनको साठ से सौ भाग गुणा किया तो २९८४५८ पल आदि हुआ इसमें पाच्यांश योग ... १९। २५। ... इसकी सौ भाग मान से गुणा तो ... पल आदि हुआ, उस से भाग लिया तो २। ४८। ६ पल गुणक हुआ, इस गुणक से शनैश्चर के पाच्यांशों को ६। ४८। ४३ को गुणा किया तो १९। ५। ४८ पल शनैश्चर की अन्तर्दशा के दिन घड़ी पल हुए, ऐसे ही शनैश्चर की दशा के सम्पूर्ण ग्रहों की अन्तर्दशा बनाकर लिखे, एवं अन्तर्दशा तथा अन्तर में प्रत्यन्तर का क्रम जानना।

अथ शनैश्चरान्तर्दशाचक्रम्								
श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मास प्रवेश और दिन प्रवेश लाने की रीति।

एकैकराशिवृद्ध्या चेत्तुल्योंऽशाद्यैर्यदा रविः।
तदा मासप्रवेशो द्युप्रवेशश्चेत्कलासमः॥ ६९॥

भाषार्थः—जन्मकालीन सूर्य जितनी संख्या की राशि वाला होवे उसको ग्यारह स्थानों में रखना चाहिये जिस मास घटी पलात्मक काल में एकादि राशि वृद्धि से युक्त होकर यथास्थित अंशादि के बराबर सूर्य हो तो उतनी संख्या वाला मास प्रवेश जानना चाहिये अर्थात् वर्ष प्रवेश समय में ही पहले मास का प्रवेश होता है, वहां जन्मकालीन सूर्य के समान सूर्य रहते हैं यदि दूसरे मास का प्रवेश करना होवे तो एक राशि को जोड़ देवे उसी से अंश कला विकलाओं का समत्व रहेगा, राशि के युक्त होने पर उस पूर्व के बराबर सूर्य जिस समय में हो तभी दूसरे मास का प्रवेश होता है ऐसे ही एक एक राशि बढ़ाने पर आगे २ के मासों का प्रवेश जानो, यदि दिन प्रवेश करना हो तो अंशों में एक एक जोड़ता जावे उस से कला विकलाओं का समत्व जिस समय में हो तभी दिन का प्रवेश होता है॥ ६९॥

पंचांग से मास प्रवेश की घड़ी लाने का प्रकार ।

मासाऽर्कस्य तदासन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम् ।
कलीकृत्वाप्तगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम् ॥ ७० ॥
तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वं मासार्केऽधिकहीनके ।
तद्वाराद्ये मासवेशो द्युवेशोऽप्येवमेव च ॥ ७१ ॥

भाषार्थ—एकर राशिके अंशमें मासप्रवेशका सूर्य होताहै, इसीके समीपवर्ती पंचांग में लिखा जो अवधि का रवि और मास प्रवेश का रवि इन दोनों का अन्तर करें फिर उसकी कला करे तदनन्तर अवधिस्थ रवि की गति से भाग [illegible] वार घटी पल मिलेंगे इनको अवधिस्थ वारादि में युक्त करे अथवा [illegible] देवे, [illegible] मास प्रवेश का रवि अधिक होवे तो अवधिस्थ वारादि में युक्त करना चाहिये और यदि मास प्रवेश के रवि से अवधिस्थ [illegible] होवे तो घटा देवे, फिर उस शेष वारादि अर्थात् वार घटी [illegible] मास का प्रवेश होवेगा, एवं दिन प्रवेश निकालने की रीति [illegible] वारादि के स्थान पर पंडित विश्वनाथ दैवज्ञ ने [illegible] पंचांग में (अब्दपति) [illegible] बनाया [illegible] को जोड़ते हैं, परन्तु यह ग्रन्थकार [illegible] अब्दपति का प्रकार ग्रन्थ विस्तार से [illegible] नहीं लिखा गया ॥ ७० ॥ ७१ ॥

यह भाज्य हुआ, इसे वर्षदिन भाजक से भाग दिया तो लब्ध २ इसको वार समझो शेष [illegible] को ६० से गुणा तो [illegible] यह भाज्य भया, इसमें भाजक से भाग लिया तो लब्ध १० यह घटी जानो. शेष ८१० को ६० से गुणा किया ४८६०० इसमें भाजक से भाग लिया तो १३ लब्ध हुए इसको पल जानो, अब यह विचार करो कि मास प्रवेश के पूर्व के [illegible] सूर्य जो था है इसके ० । ३० । १३ को [illegible] समझ कर इस वारादि को [illegible] वार, ३ । ० । ० में घटाया तो ३ । २९ । ४७ यह वार घटी पल हुए, इस प्रकार फाल्गुन कृष्ण पंचमी भौमवार २९ घटी ४७ पल पर द्वितीय मास का प्रवेश मालूम हुआ, एवं अन्य मासों का प्रकार जानना, ऐसे ही एक एक अंश घटाते जाना और कला समान करें पूर्वोक्त रीति से घटी पल को मालूम करते जाना तो दिन प्रवेश बनते जावेंगे, मास दिन प्रवेश काल से लग्न और भावों को भी साधन करे और पंचवर्गी बल साधन करके पंचाधिकारी बनाकर मासपति दिनपति भी जानना, और द्वादशवर्गी आदि बलों का भी विचार करना ।

पूर्व वर्ष से आगे के वर्ष का ध्रुवा जानने का क्रम (ग्रन्थान्तर)

शशीबाणचन्द्रैः कुरामैः खरामैर्युतं पूर्ववर्षोद्भवं वासराद्यम् ।
भवेद्ग्रिमो वर्षवेशस्तदानीं तिथेर्योजितं शंकरैर्जायतेत्र ॥ १ ॥

भाषार्थः—पूर्व वर्ष के वारादि में १ । १५ । ३१ । ३० जोड़ देने से आगे वाली वर्ष का प्रवेश होता है, अर्थात् वार में १, घटी मे १५, पलों में ३१, विपलों में ३० जोड़ना और तिथि में ११ जोड़ना, तो आगे के वर्ष प्रवेश का ध्रुवा होता है, योग में १०, नक्षत्र में १०, लग्न में ३॥ साढे तीन जोड़ने का मत किसी किसी पंडितों का है ॥ १ ॥

जन्म लग्न से वर्ष लग्न जानना (ग्रन्थान्तर)

गताब्दात्रिनिघ्नाद्विधाशून्यरामैरवाप्तंफलंचार्द्धराशीषु युक्तम् ।
ततोभानुभिर्भक्तशेषेण युक्तात्ततो जन्मलग्नाद्भवेदब्दलग्नम् ॥२॥

भाषार्थ—गत वर्ष गण को तीन से गुणा करके दो स्थानमें स्थापन करना एक जगह तीस का भाग देके लब्ध फल दूसरी जगह वाले में जोड़

भाषार्थः - उस चिन्तामणि नामक दैवज्ञ का पुत्र अनन्त गुणों से युक्त अनन्त नामक पुत्रों में प्रसिद्ध होता भया, जो कि सज्जनों के आनन्दार्थ ज्योतिषशास्त्र में श्रेष्ठ कामधेनु नामक ग्रन्थ के ऊपर टीका को रचता भया और दुर्जनों को दूर करके जातक शास्त्र के मार्ग को निरूपण करता भया कि जिससे उत्तम शास्त्रों के अनुष्ठान में लगा पद्य द्वारा शुभ और अशुभ कर्मों का निरूपण होता है ॥ ७३ ॥

पद्माम्बनन्दमापि ततो यदभिरन्दोर्नीलकण्ठः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः ।
विद्वच्छिवप्रीतिकरं व्यधात्तं संज्ञाविवेकं सहमादितन्त्रम् ॥ ७४ ॥

अन्वयः - अथो अनन्तदैवज्ञात् पद्मानाम्नी या अम्बा (माता) तस्या श्रीनीलकण्ठः पाण्डित्यादिगुणोपेतो नीलकण्ठाख्यः पुत्रोऽभवत् (जातः) कथंभूतः विद्वान् पंडितः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः (वेदशास्त्रपरायणः) संज्ञाविवेकं (संज्ञा विचार) ग्रन्थं कृतवान् कथंभूतं, सहमादितन्त्रं सहमनिरूपकं शास्त्रम् तन्त्रं भूयात् सम्यक् अत्र ग्रन्थे सहमविचारं सम्यक् निरूपितवान् पुनः कीदृशं विद्वच्छिवप्रीतिकरं पण्डितशिवप्रीतिदम् ॥ ७४ ॥

भाषार्थः - तदनन्तर उन अनन्त दैवज्ञ से पद्मानाम माता ने पांडित्यादि गुणों से युक्त नीलकंठ नाम के पुत्र को उत्पन्न किया जो कि सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञाता और वेदविहित कर्मों का करने वाला ऐसा नीलकंठ संज्ञातंत्र को रचता भया जिसमें सहमों का निरूपण अच्छे प्रकार से किया गया, और जो विद्वान् रूप शिवजी के लिये ही प्रीति को देता है, ऐसा यह सहमोत्तम संज्ञातन्त्र है ॥ ७४ ॥

इति नन्दीमपुरे श्रीवन्मिश्रशोभारामात्मजचन्द्रमुखीगर्भजज्योति-
र्वित्पंडितनारायणप्रसादकृतायां नीलकंठीताजिकग्रन्थे
नारायणीभाषाटीकायां संज्ञातन्त्रे सहमादिनिरूपणं
नाम तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

द्वितीयं वर्षतन्त्रं प्रारभ्यते ।



भाषाकार कृत मङ्गलाचरण ।

नत्वा भवानीतनयं गजास्यं नारायणो भूसुरवृन्दभक्तः ।
श्रीनीलकंठोक्तशुभाब्दतंत्रे टीकां प्रवक्ष्ये सुगमां मनोज्ञाम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—भवानीतनयं (पार्वतीपुत्रं) गजास्यं (गजाननं गणेशं) नत्वा (नमस्कृत्य) भूसुरवृन्दभक्तः नारायणः (मिश्रनारायणप्रसादाख्योऽहं) श्रीनीलकण्ठोक्तशुभाब्दतंत्रे (श्रीनीलकण्ठदैवज्ञकृतसमीचीनवर्षतन्त्रे) सुगमां (सरलां) मनोज्ञाम् (मनोहराम्) टीकां प्रवक्ष्ये (कथयिष्ये) ॥ १ ॥

भावार्थ—श्रीपार्वती जी के पुत्र हाथी के समान मुख वाले श्रीगणेश जी को प्रणाम करके ब्राह्मणों का भक्त मैं नारायणप्रसाद श्रीनीलकण्ठ दैवज्ञ के बनाये हुए सुन्दर वर्षतन्त्र में सरल मनोहर भाषाटीका को वर्णन करूँगा ॥१॥

लिए गणेश जी प्रसन्न हों बिना महादेव आदिक सम्पूर्ण देवता अपने अपने मनोरथों को निर्विघ्नतापूर्वक पाने को नहीं समर्थ होते हैं यह निश्चय करके वेदश्रुतियों में सुना जाता है, इससे श्रीगणेश की स्तुति अवश्य ही करनी योग्य है । १ ॥

वर्षतन्त्रारम्भः ।

जातकोदितदशाफलं न यत्स्यात्कालफलदं स्फुटं नृणाम् ।
तत्र न स्फुरति दैवविन्मतिस्तद्ब्रुवेऽब्दफलमादिताजिकात् ॥२॥

भावार्थ—जातक शास्त्र में जो कुछ शुभ व अशुभ फल मनुष्यों को बहुत काल में फल देने वाले होते हैं ऐसा प्रगट है, क्योंकि जातक शास्त्र में ग्रहों की वर्ष समूह वाली दशा गणित करने से आती है उस फल में पण्डितों की बुद्धि काम नहीं देती है, कि किस समय क्या फल होवेगा, इस कारण वर्ष के मध्य में फल के जानने को ताजिक ग्रंथों से शुभ व अशुभ फल को वर्णन करता हूं ॥ २ ॥

गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमा गणात् ।
खवेदाप्तघटीयुक्ता जन्मवारादिसंयुताः ॥ ३ ॥
अब्दप्रवेशोवारादिस्पष्टतष्टेऽद्रिनिर्दिशेत् ।
शिवघ्नोऽब्दः खखाद्रीन्दुलवाढ्यः खाग्निशेषितः ॥ ४ ॥
जन्मतिथ्यन्वितस्तत्रतिथावब्दप्रवेशनम् ।
तत्कालेऽर्कोजन्मकालरविणास्याद्यतरसमः ॥ ५ ॥
एकैकराशिवृद्धश्चेत्तुल्यांशश्चेयदारविः ।
तदामासप्रवेशोद्युप्रवेशश्चेत्कलासमः ॥ ६ ॥

इन चार श्लोकों का भावार्थ पूर्व संज्ञातन्त्र में वर्णन करचुके हैं इस कारण यहां वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

तात्कालिकास्तुखचराः सुधिया विधेयाः स्पष्टाविलग्नमुखभावग-

णोऽविचेयः । वीर्यं तथोक्तविधिना निखिलग्रहाणामब्दाधिपस्य विषये कथयामि युक्तिम् ॥ ७ ॥

भावार्थ—पण्डितों को उचित है, कि प्रथम तात्कालिक ग्रहों को गति सहित स्पष्ट करें और लग्नादि भावों को स्पष्ट पूर्वक साधन करें, तदनंतर पूर्वोक्त पञ्चवर्गी व द्वादशवर्गी के द्वारा संपूर्ण ग्रहों का बलाबल विचार करें, [illegible] भाग में वर्षेश की विधि जानने के अर्थ युक्ति को वर्णन करता हूं॥७॥

वर्षेश का निर्णय ।

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपोमुंथहाधिप इतित्रिराशिपः ।
[illegible]राशिपतिरह्निचन्द्रमाधीश्वरो निशिविमृश्य पंचकम् ॥८॥
वर्षाधिपं तन्नुवीक्षमाणः सर्वेषु यो लग्नमवीक्षमाणः ।
नैवाब्दपो दृष्ट्यधिकत्वेऽपि स्याद्बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ९
बलादिसाम्येऽपि निर्बलत्वे वर्षाधिपः स्यान्मुथहेश्वरस्तु ।
[illegible] तन्नुवीक्षमाणा वीर्याधिकोऽब्दस्य विभुर्विचिन्त्यः १०
[illegible]साम्ये [illegible]निशीन्दुराशीशिति केचिदाहुः ।
[illegible] सूर्यराशी स वर्षाधिपश्चान्द्रभपान्यथात्वे ॥ ११ ॥

भावार्थ – वर्षेश निर्णय के इन चारों श्लोकों की भाषाटीका प्रथम [illegible] में लिख चुके हैं, इस कारण यहां लिखने की आवश्यकता नहीं है । ८—११ ।

[illegible] भिन्न वश से फल का वर्णन ॥

[illegible] लग्नोदयोऽब्दजनुषोमदृशां[illegible]
[illegible] । [illegible] विदधाति कार्येन[illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥

वचन है कि जो लग्न को नहीं देखते से भी पञ्चाधिकारियों में से अधिक बल वाला ग्रह वर्षेश होता है, इस कारण यह वाक्य कहा, और इस प्रसंग समय व जन्म समय में उदय को प्राप्त हो तथा समान बल हो, अर्थात् बलहीन नहीं होवे, ऐसा वर्षेश ग्रह सम्पूर्ण उत्तम फल को करता है, शरीर में आरोग्यता, राज्य धन की प्राप्ति और बहुत सुख को करता है ॥ १२ ॥

पंचवर्गी बल के अनुरोध से वर्षेश का फल वर्णन ।

बलपूर्णेऽब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम् ।
अधमे दुःखरोगादिभयानि विविधाः शुचः ॥ १३ ॥

भावार्थ — जो वर्ष का स्वामी पूर्ण बली हो अर्थात् पंचवर्गी में दस विश्वा से अधिक बल वाला हो तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त शुभ फल होता है, मध्य बली अर्थात् दस तक बल होवे तो मध्यम फल होता है, और जो हीनबल हो अर्थात् पांच विश्वा से न्यून (कमती) बल हो, तो दुःख शरीर में रोग, व शत्रुगणों से भय तथा अनेक तरह के शोकों को करता है ॥ १३ ॥

वर्षेश सूर्य का फल ।

सूर्येऽब्दपे बलिनि राज्यसुखात्मजार्थलाभः कुलोचितविभुः परिवारसौख्यम् । पुष्टं यशोगृहसुखं विविधा प्रतिष्ठा शत्रुविनश्यति फलंजनि खेटयुक्त्या ॥ १४ ॥

भावार्थ—जो सूर्य वर्षेश हो और पूर्ण बली होवे तो राज्य, सुख, पुत्र, द्रव्य इनका लाभ हो, कुल के अनुसार प्रभुता हो, परिवार से सुख हो, देह के लिये पुष्टता, यश, गृह का सुख, तथा शत्रुओं का नाश होवे, परन्तु ऐसा फल तब होता है कि जब जन्म काल में वर्षेश उत्तम बली हो तो परमोत्तम फल होता है, और यदि मध्य बली हो तो उत्तम फल, अधम बल होने से मध्यम फल जानना, तथा जो जन्म काल में वर्षेश ग्रह मध्यम बली होकर वर्ष समय में उत्तम बली हो तो उत्तम ही फल होता है, जो मध्यम बली हो तो मध्यम फल अधम बली हो तो अधम फल होता है, और यदि जन्म काल में वर्षेश ग्रह अधम बली होकर वर्ष काल में उत्तम बली होवे तो मध्यम फल को देता है, मध्यम बली होवे तो अधम फल, अधम बली

होवे तो अधमाधम फल देता है, यह फल जन्म काल में ग्रहों के विचार से कहना योग्य है ॥ १४ ॥

मध्ये रवौ फलमिदं निखिलं तु मध्यं स्वल्पं सुखं स्वजनतोऽपि विवादमाहुः। स्थानच्युतिर्न च सुखं कृशता शरीरे भीतिर्नृपान्मुथशिलो न शुभे न चेत्स्यात् ॥ १५ ॥

भाषार्थः—जो वर्षेश सूर्य मध्यम बली हो तो पहिले कहा हुआ सम्पूर्ण फल मध्यम होवे, और थोड़ा सुख, न स्वजनों से कलह, स्थान का नाश, सुख की हानि, देह में दुर्बलता और राजा से भय होवे, ऐसा अनिष्ट फल तब जानना कि जब शुभग्रहों से वर्ष स्वामी ग्रह का इत्थशाल योग न होवे ॥ १५ ॥

सूर्ये बलेन रहितेऽब्दपतौ विदेशयानं धनक्षयशुचोरिभयं च तन्द्रा। लोकापवादभयमुग्ररुजोऽतिदुःखं पित्रादितोऽपि न सुखं सुतमित्रभीतिः ॥ १६ ॥

भाषार्थः—जो सूर्य निर्बल होकर वर्ष का स्वामी होवे तो विदेश गमन धन नाश, शोक, शत्रु भय, आलस्य, लोकापवाद (मिथ्या कलंक) भय, [illegible] और कठिन रोग, पिता आदिकों से भी सुख हानि, पुत्र और मित्रों से भय [illegible] होवे ॥ १६ ॥

चन्द्र वर्षेश फल।

चन्द्रेऽब्दपे मुथशिले [illegible] चेत्।
[illegible] जन्मनि [illegible] ॥ १७ ॥

[illegible] चन्द्रमा वर्षेश होकर जिस ग्रह के [illegible] यदि उस वर्षेश का चन्द्रमा [illegible] ग्रह के साथ [illegible] हो तो वर्ष [illegible]

[illegible] त्रिविधे [illegible]

वर्षेश मंगल का फल ।

भौमेऽब्दपेबलिनिकीर्तिजयारिनाशसेनापतित्वरणनायकताप्रदिष्टा। लाभः कुलोचितधनस्य नमस्यताचलोकेषुमित्रसुतवित्तकलत्र-सौख्यम् ॥ २१ ॥

भा०-जिसके वर्षकाल में मंगल पूर्णबली होकर वर्षपति होवै तो वह प्राणी कीर्तिवाला जयवाला व शत्रुओं का नाश करने वाला होकर सेनापति होता है जिससे वह रणनायक (संग्राम का स्वामी) कहा जाता है और कुल के उचित धनको पाकर लोक में जनों से पूजित होकर मित्र पुत्र धन स्त्री सुखको पाता है ॥ २१ ॥

मध्येऽब्दपेऽवनिसुते रुधिरस्रुतिश्चकोपाधिकाशकटशस्त्रहतिश्चि-न्ता । स्वामित्वमात्मगणतोबलगौरवंचमध्यंसुखंनिखिल मुक्त-फलं विनिन्द्यम् ॥ २२ ॥

भा०-जिसके वर्ष प्रवेश समय में मंगल मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे तो पुरुष के रुधिर [illegible] अर्थात् फोड़ा फुन्सी आदि से रुधिर बहै, और वह बहुत कोपवाला व गाड़ी से गिरकर चोट व किसी हथियार [illegible] से [illegible] अपने गणों का स्वामी [illegible] बल और गुरुतासहित [illegible] सुख होता है, यह सब कहा हुआ फल पण्डितों को निन्दित [illegible] ॥ २२ ॥

नीचेऽब्दपेऽसृजि [illegible] लोकापवादभयमात्मधियावि-नाशः । कार्यस्य सिद्धिनिगमभयं विदेशयानं चापनयतो-[illegible] ॥ २३ ॥

भा०-जिसके वर्ष प्रवेश समय में मंगल [illegible] होकर वर्षेश होवै [illegible] (निन्दात्मक) [illegible] बुद्धि से [illegible] होता है, तथा [illegible] और बड़े गणों से [illegible]

युक्त होकर विदेश को जाता है, और स्वगृह को शुद्धमति नहीं देखता होवे तो मनोऽग्नि (कुशान्त) से ग्रस होजाता है ॥ २३ ॥

बुध वर्षेश का फल ।

सौम्येऽब्दपे बलवति प्रतिवाददक्षेऽन्यमन्त्रशास्त्रसदःप्रहतौ विजयो-ऽर्थलाभः । ज्ञानं कलागणितवैद्यमनं गुरुत्वं राजाश्रयेण नृपता नृपमन्त्रिता वा ॥ २४ ॥

भा०—जिसके वर्ष प्रवेश समय में पूर्ण बलवान होकर बुध वर्षेश का स्वामी होवे तो वह वादी प्रतिवाद शीघ्र उत्तर देने व लिखने व छन्द वेदान्तादि शास्त्रों में प्रवीण होकर समीचीन व्यवहारों में विजय व धनको पाता है और ज्ञानवान व सब कलाओं (कारीगरी की विद्याओं) में कुशल (निपुण) होकर गणित तथा वैद्य विद्याकी गुरुता को जानता हुआ राजा के आश्रय से राजा के समान व राजा का मन्त्री होता है ॥ २४ ॥

अब्दाधिपे शशिसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमे निखिलमेतदथाध्वया-नम् । वाणिज्यवर्तनमथात्मजमित्रसौख्यं सौम्येत्थशालवशतोपरथा न सम्यक् ॥ २५ ॥

भा०—जिसके वर्ष प्रवेश समय में बुध मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो पूर्वोक्त सब फल मध्यम होता है, और वह प्राणी यात्रा द्वारा व्यापार कर्म को करता है, उसी से अपने पुत्र व मित्रवर्गों को सुख देता है, परन्तु बुध शुभग्रहों के साथ इत्थशाल के वश से शुभफल होता है इस से अन्यथा हो तो अशुभ फल जानना अर्थात् बुधका पापग्रहों के साथ ईसराफ योग होवे तो अनिष्ट फल जानना ॥ २५ ॥

सौम्येऽब्दपेऽधमबले बलबुद्धिहानिर्धर्मक्षयः परिभवो निजवा-क्यदोषात् । विक्षेपतो विपदतीव मृषैव साक्ष्यं हानिः परव्यहृतेः सुतवित्तमित्रैः ॥ २६ ॥

भा०—जिसके वर्ष प्रवेश समय में बुध अधमबली होकर वर्ष का स्वामी

होवे तो उस प्राणी के बलबुद्धि की हानि होती है, और वह प्राणी धर्म का नाश करता हुआ अपने वाक्य दोष से तिरस्कार (अनादरभाव) को प्राप्त [illegible] सा होकर अनेकानेक विपत्तियों को सहता हुआ बहुत झूँठी गवाही देता हुआ पराये व्यवहार में अपने पुत्र, मित्र व धन इन करके हानि को प्राप्त होता है ॥ २६ ॥

गुरु वर्षेश का फल ।

जीवेऽब्दपे बलयुते परिवारसौख्यं धर्मो गुणग्रहिलताधनकीर्तिपुत्राः । विश्वस्यता जगति सन्मतिविक्रमाप्तिर्लाभोनिधेर्नृपनिर्गौरवमन्यरिहनम् ॥ २७ ॥

भावार्थः—जिसके वर्षप्रवेश समय से बृहस्पति पूर्ण बली होकर वर्ष का स्वामी होवे तो आदमी परिवार से सुखी, धर्मात्मा, गुणों का ग्राहक होता है और कीर्ति, धन, पुत्र इनका सुख व लोक में विश्वासी उत्तम बुद्धि बल की प्राप्ति, निधि (खजाना) का लाभ, राजा से बड़ाई, शत्रुओं का नाश इन [illegible] है, अर्थात् यह सम्पूर्ण उत्तम फल होते हैं ॥ २७ ॥

[illegible] सुरगुरौ [illegible] मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं फलमिदं नृप[illegible] । [illegible] शस्त्र[illegible] दारिद्र्यमर्थविलय[illegible] ॥ २८ ॥

[illegible] वर्षेश समय में बृहस्पति मध्यम बली होकर वर्ष का [illegible] सम्पूर्ण उत्तम फल मध्यम होता है, और [illegible] का [illegible] होता है, जो [illegible] आदमी दरिद्री होकर अपनी [illegible] धन का नाश होता है ॥ २८ ॥

[illegible] मित्र[illegible] । [illegible] ॥ २९ ॥

भावार्थः—जिसके वर्ष प्रवेश समय में बृहस्पति अधम बली होकर वर्षेश होवे तो धन धर्म, सुख की हानि होवे, और पुत्र मित्र कुटुम्बी जन तथा स्त्री भक्ति उनको छोड़ देते हैं, और लोक के अपवाद अर्थात् मिथ्या कलंक करि व्याकुल होकर कष्ट को प्राप्त होता है, और उसके शरीर में कफ रोग आकर घर कर लेता है जिससे हीन बली होकर वह मनुष्य कलह आदि करता रहता है, और शत्रु से भय और बन्धुजनों से कलह को प्राप्त होता है ॥ २९ ॥

वर्षेश शुक्र का फल ॥

शुक्रेऽब्दपे बलिनि नीरुजता विलाससच्छास्त्ररत्नमधुराशनभोगतोषाः । क्षेमप्रतापविजया वनिताविलासो हास्यं नृपाश्रयवशेन धनं सुखं च ॥ ३० ॥

भावार्थ—जिसके वर्ष प्रवेश समय में शुक्र उत्तम बली होकर वर्षेश होवे तो वह प्राणी रोग रहित (आरोग्य शरीर) व सुन्दर शास्त्र और रत्नों का विलासी होकर मधुर पदार्थों का भोजन करने वाला व भोगों से सन्तुष्ट व कल्याण युक्त व प्रतापी शत्रुओं का जीतने हारा व वनिताओं के हाव भाव कटाक्षों से आनन्दित व हँसता हुआ प्रति दिन प्रसन्न मन वाला व राजा के आश्रय वश से धन और सुख को प्राप्त होता है ॥ ३० ॥

अब्दाधिपे भृगुसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाल्पवृत्तिः । गुप्तं च दुःखमिखिलं सुनिबद्धवृत्तिः पापारिवीक्षितयुते विपदोऽर्थनाशः ॥ ३२ ॥

भावार्थ—जिसके वर्ष प्रवेश समय शुक्र मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो पूर्व कहा हुआ सब फल मध्यम होवे और वह प्राणी थोड़ी जीविका वाला होता है, और संपूर्ण दुख छिपा हुआ होवे, कोई दुख देखने में प्रगट न होवे, और जीविका बंधी हुई होवे अर्थात् चाकरी (वेतन, पगार) जितनी बंधी हो उससे अधिक प्राप्त नहीं होवे, जो शुक्र पापग्रहों से या शत्रु से दृष्ट युक्त हो तो विपत्ति और धन का नाश होवे ॥ ३१ ॥

शुक्रेऽब्दपेऽधमबले मनसोऽतितापो लोकापहासविपदो निजवृत्तिनाशः । द्वेषः कलत्रसुतमित्रजनेषु कष्टादन्नाशनं च विफलक्रियता न सौख्यम् ॥ ३२ ॥

भाषार्थ—जिसके वर्ष प्रवेश समय में शुक्र अधम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो उस प्राणी के मन को बहुत ताप हो, लोक में उपहास हो [illegible] हो, अपनी जीविका का नाश हो, और स्त्री, पुत्र, मित्रों के विषे द्वेष [illegible] होवे, तथा कष्ट से अन्न मिले जो कार्य आरम्भ करै वह निष्फल होवे ॥ ३२ ॥

वर्षेश शनि का फल।

मन्देऽब्दपे नलिनिनूतनभूमिवेश्म चौराप्तिरर्थनिचयो यवनावनीशात् । आरामनिर्मितजलाशयसौख्यमंगपुष्टिः कुलोचितपदाप्तिगुणाग्रणीत्वम् ॥ ३३ ॥

भाषार्थ—जिसके वर्ष प्रवेश समय में शनि उत्तम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे [illegible] अर्थात् भूमि, घर, [illegible] इनकी प्राप्ति होवे और [illegible] से धन मिले, तथा बगीचा, तालाब, कूआ, बावड़ी बनवावे और [illegible], और अपने कुल के उचित पद को प्राप्त होने वाला [illegible] होता है। ३३ ॥

[illegible] मध्यबले [illegible] निखिलमन्न- [illegible] । [illegible]कृतान्यरतिम्नुता[illegible]पापं फलं [illegible] ॥ ३४ ॥

मन्दे बलेनरहितेऽब्दपतौ क्रियाणां वध्यत्वमर्थविलयो विपदां-ऽरिभीतिः । स्त्रीपुत्रमित्रजनवैरकदन्नभुक्तिः सौम्येत्थशालियुजि सौख्यमपीपदाहुः ॥ ३५ ॥

भावार्थः- जिसके वर्षप्रवेश समय में हीन बल वाला शनैश्चर वर्ष का स्वामी हो, तो उस वर्ष में सम्पूर्ण क्रियाओं का नाशक तथा धन का नाश, विपत्ति, वैरी का भय, और स्त्री, पुत्रजन इन से वैर होता है, तथा खराब आदि कुछ अन्न प्राप्त होता है, शनिश्चर के साथ शुभ ग्रहों का इत्थशाल हो तो कुछ सुख भी मिलता है, ऐसा आचार्यों ने कहा है ॥ ३५ ॥

वर्षेश द्वारा सम्पूर्ण वर्ष का शुभाशुभ फल ।

वर्षेश्वरो भवति यः सदशाधिपोऽब्दे ज्ञेयोऽखिलेऽब्दजनुषोर्बलमस्य चिन्त्यम् । वीर्यान्वितेऽत्रनिखिलं शुभमब्दमाहुर्हीनेत्वनिष्टफलता मृगता समत्वे ॥ ३६ ॥

भावार्थः—जो ग्रह वर्ष का स्वामी होता है, वही सम्पूर्ण वर्षभर दशा का स्वामी जानना, उसका बल जन्म समय और वर्ष समय पंचवर्गी द्वारा चिन्तवन करना, बलवान हो तो संपूर्ण साल पर्यंत शुभ फल जानना, हीन बली हो तो अनिष्ट फल, और मध्य बली हो तो मध्यम फल जानना ॥३६॥

इत्थशाल योग द्वारा वर्षेश का फल ।

येनेत्थशालोऽब्दपतेर्ग्रहोसौ स्वीयस्वभावात्स फलं ददाति ।
शुभेसराफे शुभमस्ति किंचिदनिष्टमेवाशुभमूसरीफे ॥ ३७ ॥

भावार्थः—वर्ष का स्वामी जिस ग्रह के संग इत्थशाल योग करे तो वह ग्रह अपने स्वभाव (संज्ञातन्त्र में कहे हुए स्वरूप) वश से शुभ फल को देता है, और वर्ष स्वामी ग्रह शुभ ग्रह के साथ ईसराफ योग करे तो शुभ फल होता है, पाप ग्रह के साथ ईसराफ योग करे तो कुछ अनिष्ट फल होता है ॥ ३७ ॥

हद्दा द्वारा वर्षेश का फल ।

हद्दे यादृशि यः खेट आधत्तेऽत्र च यो ग्रह. ।

जन्मन्यब्दे च तादृक्चेत्तदात्मफलदस्त्वसौ ॥ ३८ ॥

भावार्थः–जो वर्षेश्वर ग्रह अपने मित्र अथवा शत्रु हद्देश में हो और मित्र दृष्टि व शत्रु दृष्टि से तेज को धारण करता हो अर्थात् इत्थशाल योग होवे, तथा जन्म समय वर्ष समय में उक्त तरह से समान हो तो शुभ या अशुभ फल दशा के अनुसार देता है अर्थात् शुभ ग्रह होवे तो शुभ फल और पापग्रह होवे तो अनिष्ट फल का देने वाला होता है ॥ ३८ ॥

जन्मकालीन शुभाशुभ फलदायि ग्रह द्वारा वर्षेश का फल ।

यो जन्मनि फलं दातुं विभुर्मूसरिफोऽस्य चेत् ।
अब्दलग्नाब्दपभवस्तस्मिन्नब्देन तत्फलम् ॥ ३९ ॥
अन्यागमे फलमादेश्यमित्थशाले विशेषतः ।
नोभयं चेत्तदाप्यस्ति जन्माश्रयमितिस्फुटम् ॥ ४० ॥

भावार्थः [illegible] ग्रह जन्मकाल में अपने भाव का फल देने को समर्थ है, [illegible] लग्न स्वामी और वर्षेश के संग इसराफ योग होवे तो [illegible] भाव में उत्पन्न हुआ फल नहीं होता है ॥ ३९ ॥ [illegible] इसराफ योग नहीं होवे तो जन्म कालिक [illegible] है तथा जो इत्थशाल योग होवे तो विशेष करके [illegible] और जो इसराफ व मुसरिफ दोनों योग नहीं होवें तो [illegible] अन्यत्र [illegible] है, क्योंकि कोई [illegible] है, यद्यपि (अन्यागमे फलमादेश्यम्) इस करके मुसरिफ [illegible] में ऐसा कहा गया, अन्यथा [illegible] ग्रन्थकार नीलकण्ठजी का [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ४१ ॥

भा०—जन्म समय में पंचम भावका स्वामी अपने (पाँचवें) भाव को देखता हुआ यह ग्रह इष्ट फल देने को समर्थ होकर वर्ष में जहां कहीं स्थित है और वर्षेश के साथ इत्थशाल योग को करता है, इससे इस वर्ष में पुत्रका लाभ होवेगा, ऐसे ही अन्य भावों में वर्ष लग्नेश और वर्षेश इन दोनों के साथ भावेश का इत्थशाल योग करके उदाहरण को जान लेना ॥ ४१ ॥

इसका उदाहरण ॥

अब्देश्वरो गुरुर्मित्रदृग् मित्रदृशा शशी ।
सहोत्थाद्यादमृदृस्सवर्गेन्दुस्तेन शोभनः ॥ ४२ ॥

भा०—वर्षका स्वामी बृहस्पति जन्म समय मित्र दृष्टि में है और मित्र दृष्टि से चन्द्रमा के साथ इत्थशाल योग है अर्थात् चन्द्रमा बृहस्पति में अपने तेज को धारता है, इस कारण वर्ष समय शुभ जानना चाहिये ॥ ४२ ॥

वर्षेश फल का उपसंहार ।

एवमुन्नेयमन्यच्च शुभाशुभफलं बुधैः ।
बलाबलविवेकेन योगत्रयविमर्शतः ॥ ४३ ॥

भा०—अब वर्षेश फलाध्याय का उपसंहार (समाप्त) करते हैं—कि इसी प्रकार अन्य शुभ पंडितों करके बलाबल के विचार और मुथशिल, कम्बूल, इसराफ, इन योगों के ज्ञान से जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

इति श्रीनीलकंठीभाषाटीकायां वर्षतंत्रे वर्षेश फल
निरूपणाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

अथ मुथंहानिरूपणाध्यायो द्वितीयः प्रारभ्यते ।

मुन्थहा के जानने का प्रकार ।

स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान्मुथहा भ्रमेण ।
स्वजन्मलग्नंरवितष्टयातशरद्युतं साभमुखेंथिहा स्यात् ॥ १ ॥

भा०—अपनी जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक २ राशि भोग करता हुआ मुन्थहा भ्रमण करता है, अर्थात् जन्म लग्न से प्रत्येक वर्ष एक एक राशि बढता

है. अपनी जन्म लग्न संख्या में गत वर्ष संख्या जोडकर बारह का भाग देवे शेषांक रहे मेषादि मुंथहा राशि होती है, इसका उदाहरण संज्ञा तन्त्र में कह चुके हैं ॥ १ ॥

मुन्थहा की उपपत्ति ग्रहों के समान है ।

प्रत्यहं शरलिप्ताभिर्वर्द्धते सानुपाततः ।
सार्धमंशद्वयं मासमित्याहुः केपि सूरयः ॥ २ ॥

भावार्थः--प्रति दिन मुंथहा अनुपात (त्रैराशिक) से पांच २ कला बढती है इस प्रकार एक मास में अढाई अन्श बढे है यह कितनेक विद्वानों ने कहा है ॥ २ ॥

स्वामी और शुभ ग्रहों द्वारा मुन्थहा का फल ।

स्वामिसौम्येक्षणात्सौम्यं क्रूरदृष्ट्या भयं रुजः ।
भावालोकनसंयोगात्फलमस्या निरूप्यते ॥ ३ ॥

भावार्थः--अपने स्वामी शुभग्रह के देखे जाने से मुन्थहा शुभफल देता है [illegible] शुभ ग्रह स्वामी वा पाप ग्रह स्वामी क्रूर दृष्टि से देखता हो तो [illegible] है [illegible] द्वादश भावों में स्थित व ग्रहों की दृष्टि तथा [illegible] इस मुंथहा का फल निरूपण किया जाता है ॥ ३ ॥

[illegible] भाव में स्थित मुन्थहा का फल ।

[illegible] ॥ ४ ॥

भावार्थः--वर्ष लग्न से [illegible] इन स्थानों में स्थित मुन्था [illegible] और [illegible] इन स्थानों में जाने से व्याधि [illegible] [illegible] स्थानों में स्थित हो तो उद्यम करने से [illegible]

[illegible] स्थित मुन्थहा का फल ।

[illegible] प्रमादम् ।

शरीरपुष्टिं विविधोद्यमाश्च ददाति वित्तं मुथहा तनुस्थः ॥५॥

भा०—लग्न में स्थित मुन्था शत्रु नाश मनमें प्रसन्नता लाभ प्रताप की वृद्धि राजा सों प्रसन्नता देह में पटुता इनको करै है अनेक उद्यमों से धनको देवै है ॥ ५ ॥

दूसरे भाव में स्थित मुंथहा का फल ।

उत्साहतोऽर्थागमनं यशश्च स्वबन्धुसन्माननृपाश्रयश्च ।
मिष्टान्नभोगो बलपुष्टिसौख्यं स्यादर्थभावे मुथहा यदाब्दे ॥६॥

भा०—जो वर्ष प्रवेश समय में मुन्थहा दूसरे भाव में होवै तो उत्साह से धन पाकर वह प्राणी लोक में यशस्वी और अपने बंधुजनों से सन्मान को प्राप्त होता हुआ राजा के आश्रय से मिष्टान्न भोग बल पुष्टि सुख को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

तीसरे भाव में स्थित मुन्थहा का फल ।

पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानि सौन्दर्यसौख्यंद्विजदेवपूजा ।
सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकीर्तिर्नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीया ।७॥

भा०—यदि मुन्थहा तीसरे भाव में होवै तो अपने ही पराक्रम से धन यश, सुख, ब्राह्मण और देवताओं की पूजा, सबका उपकार दृढ शरीर, यश, राजा का आश्रय यह सब फल होता है ॥ ७ ॥

चौथे भाव में स्थित मुन्थहा का फल ।

शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्ग्यैर्वैरं मनस्तापनिरुद्यमत्वे ।
स्यान्मुंथहायां सुखभावगायां जनापवादामयवृद्धिदुःखम् ॥८॥

भा०—चौथे भाव में मुन्था स्थिर होने से शरीर पीडा, शत्रु भय, अपने कुटुम्बी जनों से वैर, मनको ताप, निरुद्यमता (बेरोजगार) मनुष्यों में अपवाद, (कलङ्क) रोग और दुःखकी वृद्धी इनको करता है ॥ ८ ॥

पंचम भाव के मुन्थहा का फल ।

यदींथिहा पंचमगाब्दवेशे सद्बुद्धिसौख्यात्मजवित्तलाभः ।

प्रताप वृद्धिर्विविधा विलासाः देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ।९।

भावार्थ—जो वर्ष प्रवेश समय में मुंथा पांचवें स्थान में स्थित हो तो सुन्दर बुद्धि व सुख, पुत्र, द्रव्य इनका लाभ, प्रताप की वृद्धि अनेक प्रकार के विलास, देवता और ब्राह्मणों में भक्ति राजा की प्रसन्नता से शुभ फल होते हैं ॥ ९ ॥

छठे भाव के मुंथा का फल ॥

कृशत्वमंगेषु रिपूदयश्च भयं रुजस्तस्करतो नृपाद्वा ।
कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चेद् दुर्बुद्धिवृद्धिःस्वकृतोऽनुतापः१०

भावार्थ—जो मुंथा छठे भाव में स्थित होतो शरीर में दुर्बलता शत्रुओं का उदय, रोग, चोर वा राजा से भय, कार्य और धन का नाश, दुष्टबुद्धि की वृद्धि, अपने किये हुए कार्यों से पश्चात्ताप, ये अशुभ होते हैं ॥ १० ॥

सातवें भाव के मुंथा का फल ।

कलत्रबन्धुव्यसनादिवैरं निरुत्साहभंगो धनधर्मनाशः ।
द्यूनोपगा चेन्मुथहा तनोःस्याद्रुजा मनोमोहविरुद्धचेष्टा ॥११॥

भावार्थ—जो वर्ष प्रवेश समय में मुंथा सातवें घर में स्थित होवे, तो [illegible], उत्साह भंग धन और धर्म का नाश, रोग [illegible] ॥ ११ ॥

आठवें भाव के मुंथा का फल ।

[illegible] विनाशो धर्मार्थनाशो व्यसनागमश्च ।
[illegible] चेन्मुथहा नराणां [illegible] स्याद्गमनं सुदूरे ॥१२॥

[illegible] शत्रुओं का भय, [illegible] धर्म का नाश, कष्ट देने वाला रोग, [illegible] ॥ १२ ॥

नवें भाव के मुंथा का फल ।

[illegible] पुत्रकलत्रसौख्यम् ॥

देवद्विजार्चा परमं यशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेन्थिहायाम् १३

भा०—नवम स्थान में मुंथहा होने से स्वामित्व, राजा से धन की प्राप्ति धर्म का उत्सव, पुत्र की तरफ से सुख, देवता और ब्राह्मणों का पूजन, परम यश भाग्य का उदय, यह सब उत्तम फल प्राप्त होते हैं ॥ १३ ॥

दशम भाव में मुंथहा का फल ॥

नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ।
यशोभिवृद्धिं विविधार्थलाभं दत्तेम्बरस्था मुथहा पदाप्तिम् १४

भावार्थ—दशम भाव में स्थित मुंथा राजा की प्रसन्नता, अपने जनों का उपकार करना व कराना, अच्छे कर्मों की सिद्धि, ब्राह्मण और देवताओं में भक्ति, व यश की वृद्धि, अनेक प्रकार के धनों का लाभ व स्थान की प्राप्ति, इन सबों को देती है ॥ १४ ॥

ग्यारहवें स्थान में स्थित मुंथा का फल ॥

यदीन्थिहा लाभगता विलाससौभाग्यनैरुज्यमनःप्रसादाः ।
भवन्ति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभमिताप्तयश्च ॥१५॥

भा०—यदि मुंथा ग्यारहवें स्थान में स्थित होवे तो स्त्रियों के विलास से युक्त, सुन्दर भाग्य आरोग्यता, चित्त में प्रसन्नता, राजा के आश्रय से धन की प्राप्ति, उत्तम मित्र, पुत्र, वांछित पदार्थों की प्राप्ति, ये उत्तम फल होते हैं ॥१५॥

बारहवें स्थान में मुंथहा का फल ।

व्ययोधिको दुष्टजनैश्च संगो रुजा तनौ विक्रमतोर्थसिद्धिः ।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा तदा स्याज्जनतोपि वैरम् १६

भा०—बारहवें स्थान में मुंथहा स्थित हो तो अधिक व्यय (ज्यादा-खर्च) दुष्ट मनुष्यों से संग, देह में रोग, अपने पराक्रम से अर्थ सिद्धि, धर्म व धन की हानि अपने या अन्यजनों से वैर, ये अशुभ फल होते हैं ॥ १६ ॥

क्षत दृष्टि द्वारा क्रूर ग्रह स्थित मुंथा का फल ।

क्रूरैर्दृष्टः क्षुतदृशा यो भावो मुथहात्र चेत्।

शुभं तद्भावजं नश्येदशुभं चापिवर्द्धते ॥ १७ ॥

भा०—पापग्रह जिस भाव को क्षुत दृष्टि (अशुभ दृष्टि) से देखता हो और यदि उसी भाव में मुंथा स्थित हो तो उस भाव से उत्पन्न शुभ फल नाश को प्राप्त होता है और उस भाव संबन्धी अशुभ फल बढाता है।

भाव स्थित मुंथा का फल।

शुभस्वामियुक्तेक्षिता वीर्ययुक्सेन्थिहास्वामिसौम्येत्थशालं प्रपन्ना शुभं भावजं वर्धयन्नाशुभंसान्यथात्वेन्थाभाव ऊह्योविमृश्य १८

भा०—जो मुंथा शुभ ग्रह स्वामी से युक्त हो वा देखा जाता हो अथवा [illegible] में उत्तम बल पाता हो अथवा शुभ ग्रह स्वामी के साथ इत्थशाल करे, तो [illegible] उस भाव सम्बन्धी फल को बढावे है और अशुभ फल का नाश करे है, [illegible] जो मुंथा [illegible] स्वामी से युक्त न हो और न शुभ ग्रहों के साथ [illegible] न करता हो किंतु पाप ग्रहों से दृष्ट होकर पापग्रहों के साथ मिलाप [illegible] हो तो उस भाव सम्बन्धी अशुभ फल बढता हुआ शुभ फल नाश [illegible] है और [illegible] या पापग्रह से दृष्ट होकर शुभ व पापग्रहों से मिलाप [illegible] तो उस ग्रह के बल के वश से विचार कर शुभ व अशुभ को जानना [illegible] । १८ ।

पापग्रहों से युक्त मुंथा का फल।

[illegible] क्रूरखेटैस्तु सा चेत् [illegible] न नाशःशुभं च १९

[illegible] ८ । १२ । ६ । ८ । ४ इन स्थानों में से किसी [illegible] होवे, तो उस वर्ष में [illegible] है, और जो मुंथा शुभ [illegible] तो उस [illegible] का नाश नहीं [illegible]

पापग्रह और शुभग्रहों से युक्त मुंथा का फल ।

यद्येष यत्रापि हतो भावो नश्येत्स सर्वथा ।
उभयत्र शुभस्त्वेतु भावोऽसौ वर्द्धतेतराम् ॥ २० ॥

भावार्थः— जन्म लग्न से व वर्ष लग्न से पूर्वोक्त अनिष्ट जगह में स्थित पाप युक्त मुंथा हो तो मनुष्य को उस भाव सम्बन्धी अनिष्ट फल को सर्वदा अवश्य ही देती है. और जो मुंथा दोनों जगह (जन्मस्थान व वर्षलग्न) में शुभग्रहों से युक्त हो तो वह मुंथा स्थान भाव अतिशय करके वृद्धि को प्राप्त होता है अर्थात् वह मुंथा उस भाव अवश्य ही अच्छे फल को देती है ॥ २० ॥

वर्षेप्यनिष्टगेहस्थायद्भावेजनुषिस्थिता ।
क्रूरोपघातात्तं भावं नाशयेच्छुभयुक्शुभाः ॥ २१ ॥

भावार्थ—वर्षप्रवेश समय में वर्षलग्न से जन्मलग्न से भी अनिष्ट जगह अर्थात् चौथे, छठे, सातवें, आठवें, बारहवें घर में मुंथा विराजमान हो तो जन्म समय में जन्मलग्न से जिस भाव में मुंथा विराजमान हो यदि वह भाव वर्ष समय में पापग्रहों से संयुक्त हो तो उस जन्मस्थित मुंथहायुक्त भाव को नाश करे है और यदि वर्ष में अनिष्ट स्थानस्थ मुंथहा अच्छे ग्रहों से युक्त हो तो अच्छा फल देवे है ॥ २१ ॥

उदाहरण ।

जनुर्लग्नतस्तुर्यगा सौम्ययुक्ताऽब्दवेशेपितृव्यस्य लाभं विधत्ते ।
नृपाद्भीतिदा पापयुक्तातिकष्टाऽष्टमादावपीत्थं विमर्शो विधेयः ॥२२॥

भावार्थः—वर्ष में जन्मलग्न से चौथे घर में विराजमान मुंथहा वर्षप्रवेश समय में अच्छे ग्रह से युक्त हो तो चचा को लाभ होता है और पापयुक्त हो तो राजा से भय होता है और अति कष्ट प्राप्त होता है ऐसा जानना एवं आठवें आदि अनिष्ट घरों का विचार करना ॥ २२ ॥

वर्षेश के बल से भाव स्थित मुंथा का फल ।

यस्मिन्भावे स्वामिसौम्येक्षिता चेद्भावो जन्मन्येष यस्तस्य वृद्धिः ।
एवं पापैर्नाश उक्तस्तु तस्येत्यूह्यं तं वीर्याद्वर्षपःसौख्यमेव ॥२३॥

भा०—वर्ष प्रवेश समय में वर्ष लग्न से मुथहा जिस भाव में स्थित हो और उस भाव के स्वामी व शुभग्रह से दृष्ट हो, वह राशि जन्म समय में जिस भाव में हो उस भाव का फल प्राप्त होता है पाप युक्त होने से भावका नाश होता है, और वर्ष स्वामी ग्रह बलवान होवे तो मुथहाकृत अशुभ फल अरिष्ट फल नहीं करता शुभ ही देता है ॥ २२ ॥

ग्रहों की राशि ग्रहों के साथ व ग्रहों की दृष्टि द्वारा मुथा का फल ।

यदीन्थिहा सूर्यगृहे युता चेत्सूर्येण राज्यं नृपसंगमं च ।
दत्ते गुणानां परमामवाप्तिं स्थानान्तरस्येति फलं दृशोपि ॥२४॥

भा०—जो मुथहा सूर्यकी राशि (सिंह) में स्थित हो वा सूर्य से युक्त हो तो उस प्राणी के अर्थ राज्य और राजा के संगम को देवे है, और [illegible] गुणों के परम उत्कृष्ट स्थान को पाकर अर्थात् गुणज्ञ होकर [illegible] होवे है और जो सूर्य मुथहा को देखता होवे तो भी यही फल [illegible] ॥ २४ ॥

[illegible] शुक्लेन्दुगृहेथ दृष्टेन्दुनापि वा धर्मयशोभिवृद्धिम् ।
[illegible]नोपमतिमवृद्धिं ददाति पापेक्षणतोतिदुःखम् ॥ २५ ॥

भा०—[illegible] जो प्रवेश समय में मुथहा चन्द्रमा से युक्त हो या चन्द्रमा [illegible] में स्थित हो अथवा चन्द्रमा देखता हो तो उस प्राणी [illegible] बुद्धि की वृद्धि इन शुभ फलों [illegible] पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तो अति दुःख [illegible]

[illegible] युक्ता [illegible] दृष्टा च [illegible] करोति ।
[illegible] सौम्यान्विता सौम्यगृहे विशेषात् ॥२६॥

[illegible] भाव में युक्त हो व [illegible] की [illegible] और [illegible] से याग, [illegible] ([illegible]) में हो [illegible] ॥ २६ ॥

बुधेन शुक्रेण युतेक्षिता वा तद्भेपि वा श्रीमतिलाभसौख्यम् ।
धर्मं यशस्त्वाप्यतुलं विधत्ते कष्टं च पापेक्षणयोगतः स्यात्॥२७॥

भा०—जो मुथहा बुध और शुक्र से युक्त वा दृष्टि अथवा इनकी ३। ६। २। ७ राशि में स्थित हो तो स्त्रियों से सुख, व मति (बुद्धि) का प्रकाश व धनका लाभ, सुख धर्म और अतुल यश प्राप्त होवे है और पाप ग्रहों के देखने वा योग से मुथहा अनिष्ट को देवे है, अर्थात् उस मनुष्य को बहुत कष्ट प्राप्त होता है ॥ २७ ।

गुरोः क्षिता वा गुरुणा गुरोर्भे यदीन्थिहा पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
ददाति हेमाम्बररत्नभोगं शुभेत्थशालादिह राज्यलाभः ॥२८॥

भा०—यदि मुथहा बृहस्पति से युक्त व बृहस्पति की ९। १२ राशि में स्थित हो तो पुत्र स्त्री का सुख देवे है, और सुवर्ण, वस्त्र, रत्न, भोग, इनको भी देवे है, शुभग्रह के साथ इत्थशाल योग हो तो राज्य का लाभ करे है ॥ २८ ॥

शनेर्गृहे तेन युतेक्षिता वा यदीन्थिहा वातरुजं विधत्ते ।
मानक्षयं वह्निभयं धनस्य हानिं च जीवेक्षणतः शुभाप्तिः ॥२९॥

भा०—यदि मुथहा शनि की राशि (मकर कुम्भ) में अथवा शनैश्चर से युक्त अथवा शनैश्चर की दृष्टि से युक्त हो, तो वात रोग करे है और मानका क्षय, अग्नि भय धनकी हानि करे है, तथा यदि पूर्वोक्त मुथहा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह मनुष्य शुभ फल पाता है ॥ २९ ॥

राहु मुख मुन्था का फल ॥

तमोमुखे चेन्मुथहा धनाप्तिं यशः सुखं धर्मसमुन्नतिं च ।
सितेज्ययोगेक्षणतः पदाप्तिं सुवर्णरत्नाम्बरलब्धयश्च ॥ ३० ॥

भा०—जिसके वर्ष प्रवेश समय में जो मुथहा राहुके मुखमें विराजमान हो तो धनकी प्राप्ति हो, और यश सुख व धर्मकी उन्नति हो तथा पूर्वोक्त मुथहा शुक्र बृहस्पति के योग से व दृष्टि से युक्त होने पर पद (अधि-

कार) की प्राप्ति को और सुवर्ण, रत्न, वस्त्र, इनको प्राप्त करता है, अर्थात् ये सब उत्तम फल प्राप्त होते हैं ॥ ३० ॥

राहु के मुख पृष्ठ पूंछका लक्षण ।

भोग्या राहोर्लवास्तस्य मुखं पृष्ठं गता लवाः ।
ततस्सप्तमभं पुच्छं विमृश्येति फलं वदेत् ॥३१॥

भा०--जिस राशि पर राहु स्थित है उसकी वक्रगति से जो भोग्य अन्श हैं उनको मुख कहते हैं और जो भुक्त अन्श हैं वे पृष्ठसंज्ञक जानने चाहिये, जैसे कन्या के दश अन्शों पर राहु है तो दश अन्श मुखसंज्ञक हैं, और [illegible] के जो बीस अन्श पृष्ठ संज्ञक हैं, और जिस राशिपर राहु स्थित है उससे सातवीं राशिको पुच्छ कहते हैं, जैसे कि कन्या राशि से सातवीं मीन राशि पुच्छ संज्ञक जानो इनको विचार कर फल कहै ॥ ३१ ॥

[illegible] पूंछ में स्थित मुन्था का फल ।

[illegible]भागे न शुभप्रदा स्यात्तत्पुच्छभागाद्रिपुभीतिकष्टम् ।
[illegible] हानि[illegible] गृहवित्तनाशः ॥३२॥

भा०--[illegible] में राहुके पृष्ठ भाग में मुन्था स्थित [illegible] कल्याण को देती है और जिसके राहुकी पूंछ [illegible] करती है और जि-[illegible] धन और सुखकी हानि [illegible] इस प्रकार की मुन्था होवे, तो घर और धन [illegible] ।

[illegible] शुभाशुभ फल ।

[illegible] नाशोऽशुभं समाने ।
[illegible] स्यादशुभत्र राशौ ॥ ३३ ॥

वर्ष के आदि में अशुभ फल देते हैं ऐसा कहा है और जो जन्मकाल व वर्ष काल में तुल्य बल होवें तो समान फल होता है ॥ ३३ ॥

मुंथा स्वामी का अशुभ फल वर्णन ।

षष्ठाष्टमान्त्ये मुथिर्चेन्थिहेशोऽस्तगोऽथ वक्रोऽशुभदृष्टयुक्तः ।
क्रूरान्तुर्यास्तगतश्च भर्त्ता न स्याच्छुभं यच्छति वित्तनाशम् ॥३४॥

भावार्थ — जिसके स्वामी वर्षकाल मुंथा का स्वामी छठे, आठवें, बारहवें घरों इन अनिष्ट घरों में बैठा हो अथवा अस्त होगया हो या वक्री हो तथा पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो, अथवा क्रूर ग्रहों के घर से ४ । ७ घर में विराजमान हो तो शुभ फल नहीं किन्तु रोग व धन की हानि करता है ॥ ३४ ॥

मुंथा स्वामी का और अशुभ फल वर्णन ।

यद्यष्टमेशेन युतोऽथ दृष्टः क्षुताख्यदृष्ट्या न शुभस्तदापि ।
योगद्वये स्यान्निधनं यदैकयोगस्तदा मृत्युसमत्वमाहुः ॥ ३५ ॥

भावार्थः—जिसके वर्षलग्न से आठवीं जगह का स्वामी शुभ ग्रह व पाप ग्रह से युक्त मुन्था का स्वामी हो या क्षुत् दृष्टि अर्थात् चौथी, सातवीं, पहली दसवीं दृष्टि से देखा जाता हो तो शुभ फल का देने वाला नहीं जानना, और जिसके यह दोनों योग हों तो उस आदमी का मरण ही होता है और कदाचित् एक ही योग हो तो मृत्यु समान कष्ट होवे, ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ ३५ ॥

मुंथा और उसके स्वामी का शुभाशुभ फल वर्णन ।

मुथहा तत्पतिर्वापि जन्मनीक्षितयुक् शुभैः ।
वर्षारम्भे शुभं दत्तेऽब्दे चेदन्त्येऽन्यथाशुभम् । ३६ ॥

भावार्थः—जिसके जन्म कुण्डली में मुंथा व उसका स्वामी शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वह वर्ष के पूर्व भाग में शुभ फल को देवे, और इससे अन्यथा हो अर्थात् पापग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो वर्ष के अन्त्य भाग में

अशुभ फल को देता है. अब यह विचारना चाहिये कि (अन्यथा) इसमें [illegible] का श्लेष (आलिंगन) है इसी से अशुभ फल कहा जाता है परन्तु यह पाठ सन्देह युक्त है इस कारण (नसत्) ऐसा पाठ होना चाहिये ॥३६॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां मुथहाफलनिरूपणं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथाऽरिष्टविचाराध्यायस्तृतीयः प्रारभ्यते ।

लग्नेशेऽष्टमगेऽष्टेशे तनुस्थे वा कुजेक्षिते ।
ज्ञजीवयोरस्तगयोः शस्त्रघातो विपन्मृतिः ॥ १ ॥

भाषार्थः-अब अरिष्ट विचार नामक तीसरा अध्याय वर्णन करते हैं जिसके वर्ष समय में लग्न का स्वामी आठवें स्थान में हो अथवा आठवें घर का स्वामी लग्न में मङ्गल की दृष्टि हो अथवा बुध और बृहस्पति ये दोनों अस्तंगत हों अर्थात् सूर्य के साथ अस्तभाव को प्राप्त हो तो किसी हथियार के लगने से अनेक विपत्तियों से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अस्तलग्नेशरन्ध्रेशौ व्ययगाष्टत्रिकोणगौ ।
[illegible] मृत्युप्रदौ [illegible] ॥ २ ॥

[illegible] लग्न का स्वामी, और आठवें घर का स्वामी, ये दोनों [illegible] किसी जगह में स्थित होवें और [illegible] इन ग्रहों के जो माल, यान, [illegible] है यहां लग्नेश अष्टमेश [illegible] होता है इन तीनों [illegible] हो जाता है तो [illegible] ॥ २ ॥

[illegible] यदा ।
[illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] और [illegible]

अष्टम स्थान का स्वामी होकर वर्ष लग्न से सातवें घर में विराजमान हो, ऐसा कितनेक आचार्य कहते हैं, और अन्य कई आचार्य ऐसा कहते हैं कि जन्मकालीन लग्नका स्वामी वर्षकाल में वर्ष लग्न से आठवें स्थानका स्वामी और पंचाधिकारी उनसे हीनबल होता हुआ सूर्य के सान्निध्यवश से अस्त हो के और दोनों मतों में सूर्य करके देखा जाता हो ऐसा ग्रह उस प्राणी के लिये मृत्यु, कष्ट, रोग और आपदा इन्हों को देता है, अब यहां पर विचार करना चाहिये कि इस श्लोक में (अस्तगो यदा) ऐसा पाठ ग्रन्थकार ने व्यर्थ में पढ़ा है, क्योंकि सूर्य के सान्निध्यवश (ग्रहके अस्तंगतत्व) में और दृष्टि असम्भव है, तो (सूर्य दृष्टः) यह पाठ व्यर्थ सी है तथा सूर्य से इतर ग्रहों से बारहवीं राशि को प्राप्त ग्रहका अस्तत्व का सम्भव और दृष्टि का सम्भव नहीं है, अथवा (अस्तगः) यहां पर (सप्तमगः) यह पाठ होना था परन्तु पाठ में छन्दो भंग हो जावेगा, और यह अर्थ सम्यक् नहीं, वास्तव में (अस्तगः) इसके स्थान पर (लग्नगः) ऐसा पाठ चाहिये, और यहां पर यह चाहिये कि जिसके वर्ष लग्न अष्टम स्थान का स्वामी लग्न में प्राप्त होकर सूर्य से देखा जाता हो तो वह उस प्राणी को मृत्यु देता है, समरसिंह आचार्य का प्रमाण है कि-(चेज्जन्मनाथो विरलो मृतीशो लग्ने गतो भास्कर दृष्टमूर्तिः ॥) शस्त्राभिघातं नृपतेश्च कष्टं कुष्ठं शरीरे मरणेन तुल्यम् इस समरसिंह के वचन को सर्वथा सत्य मानना परमावश्यक है ॥३॥

अस्तगौ मुन्थहालग्ननाथौ मन्देक्षितौ यदा ।
सर्वनाशो मृतिः कष्टमाधिव्याधिभयं रुजः ॥ ४ ॥

भा०—जिसके वर्षकाल मुन्थहा लग्नका स्वामी और वर्ष लग्न का स्वामी ये दोनों सूर्य के सान्निध्य वश से अस्त को प्राप्त होकर शनैश्चर से देखे जाते हों, तो उस प्राणी के सर्व अर्थात् द्रव्य, स्त्री, पुत्र, आदिकों का नाश, मृत्यु, कष्ट व आधि, (मानसी दुःख) व्याधि (शरीर व्यथा) भय रोग आदि उत्पन्न होते हैं ॥ ४ ॥

क्रूरमूसरिफोऽब्देशो जन्मेशः क्रूरितः शुभैः ।
कम्बूलेऽपि विपन्मृत्युरित्थमन्याधिकारतः ॥ ५ ॥

भा०-जिसके वर्ष काल में वर्षका स्वामी पाप ग्रहके साथ ईसराफ योग को करै और जन्म लग्नका स्वामी अस्तङ्गत आदिकों से क्रूर भावको प्राप्त होवै और वर्ष स्वामी व लग्न स्वामी इनमें से किसी एक का शुभ ग्रह के साथ कम्बूल योग होवै, और शुभग्रहों के वा जन्म लग्नेश और वर्षेश इन दोनों के वा इनमें से किसी एक के साथ यदि चन्द्रमा मुथशिल योग को करता हो तो उस प्राणी को नाना प्रकार के दुःखों के अनुभव से मृत्यु होती है अर्थात् वह प्राणी अनेक कलेशों को भोगता हुआ पतित होता है, फिर शुभ कम्बूल के प्रभाव में क्या ही कहना है, ऐसा ही अन्य अधिकार होता है ॥ ५ ॥

क्रूरा वीर्याधिकाःसौम्या निर्बला रिपुरन्ध्रगाः ।
तदाधिव्याधिभीतिः स्यात्कलिर्हानिस्तथा विपत् ॥ ६ ॥

भा०—जो क्रूरग्रह अधिक बली हो और शुभग्रह निर्बल हो और छठे आठें स्थान में स्थित हों तो आधि, व्याधि, कलह, हानि तथा विपत् ये अशुभ फल होते हैं ॥ ६ ॥

नीचे शुक्रो गुरुः शत्रुभागे सौम्यखवोपि न ।
लग्नेशोऽष्टमगोऽष्टेशो तनौ वा मृतिमादिशेत ॥ ७ ॥

भा०—जो वर्ष काल में शुक्र नीच राशि में स्थित हो और बृहस्पति शत्रु [illegible] में स्थित हो तो उस प्राणी को सुख नहीं होता है तथा वर्ष लग्न का [illegible] स्थान में हो अथवा आठवें स्थान का स्वामी वर्ष लग्न में [illegible] तो उस प्राणी की मृत्यु [illegible] ॥ ७ ॥

निर्बलौ धर्मवित्तगौ दुश्चिक्यास्तनौ स्थिताः ।
[illegible] लग्नेशो यदि शुक्रोऽपि मन्दिना ॥ ८ ॥

[illegible] में लग्न और [illegible] स्थान का स्वामी [illegible] हो [illegible] ॥ ८ ॥

[illegible]

शरीरपीडामृत्युर्वा साधिव्याधिभयं द्रुतम् ॥ ९ ॥

भा०—जो वर्ष कालमें चन्द्रमा नीच राशि में स्थित हो और बुध, गुरु शुक्र ये शुभ ग्रह अस्त होगये हों तो यह प्राणी अपने भाई बन्धुओं से वियुक्त (जुदा) होना दुःख पीड़ा युक्त शरीर वाला होकर मर जाता है अथवा यह प्राणी मानसी व्याधि अनेक रोगों से पीड़ित होकर शीघ्र ही भयको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अब्दलग्नंजन्मलग्नंराशिभ्यामष्टमं यदा ।
कष्टं महाव्याधिभयं मृत्युः पापयुतेक्षणात् ॥ १० ॥

भा०—जो वर्ष कालमें जन्म लग्न वा जन्म राशि से वर्ष लग्न आठवें होवें, तो कष्ट और महाव्याधियों से भय होता है, और वर्ष लग्न पाप ग्रहों से युक्त हो अथवा उसको पापग्रह देखते हों तो मृत्यु होती है यह योग किसी प्रकार दान मान और पूजादिकों से निवारण नहीं हो सकता है ॥ १० ॥

जन्मन्यष्टमगः पापो वर्षलग्ने रुगाधिदः ।
चन्द्राऽब्दलग्नपौ नष्टबलौ चेत्स्यात्तदा मृतिः ॥ ११ ॥

भा०—जो जन्म कालमें जन्म लग्न से आठवें पापग्रह स्थित हो वही (पापग्रह) यदि वर्ष लग्न में स्थित होवे, तो रोग और आधि (मानसी पीडा) को देता है और चन्द्रमा तथा वर्ष लग्नका स्वामी हीनबली हो अथवा चन्द्र राशी वर्ष लग्न स्वामी ये दोनों पंचवर्गी बल से नष्ट बली हों तो उस प्राणी की मृत्यु होवे ॥ ११ ॥

जन्माब्दलग्नपौ पापयुक्तौ पतितभस्थितौ ।
रोगाधिदौ मृत्युकरावस्तगौ नेक्षितौ शुभैः ॥ १२ ॥

भा०—जिसके वर्ष काल में जन्म लग्न का स्वामी व वर्ष लग्न का स्वामी ये दोनों पापग्रहों से युक्त होकर वर्ष लग्न से चौथे, छटे आठवें, बारहवें, इन स्थानों में किसी स्थान में स्थित होवें, तो उस प्राणी के अर्थ रोग और मानसी व्याधि को देते हैं, यदि वे दोनों सूर्य के सन्निध्यवश से अस्त होकर शुभग्रहों से न देखे जावें अर्थात् अस्त को प्राप्त हों और उन

[illegible] न देखें तो उस आदमी के अर्थ मृत्युकारक होते हैं अर्थात् ऐसे योग में वह आदमी मर जाता है ॥ १२ ॥

व्ययाम्बुनिधनारिस्था जन्मेशाब्दपमुंथहाः ।
एकर्क्षगास्तदा मृत्युः पापक्षुतदृशा ध्रुवम् ॥ १३ ॥

भावार्थः-जिसके वर्षकाल में एक राशि में प्राप्त हुए जन्मलग्न स्वामी वर्ष स्वामी और मुंथहा ये तीनों वर्षलग्न से बारहवें, चौथे, आठवें और छठे इन घरों में से किसी घर में विराजमान होवें, और असत् प्रतिबंधक में उस आदमी की मृत्यु होती है, और यदि पूर्वोक्त जन्मलग्न स्वामी और मुंथहा ये तीनों पापग्रहों से क्षुतदृष्टि अर्थात् चौथे, सातवें, दसवें और पहले इन स्थानों में विराजमान दृष्टि करके देखे जावें तो उस आदमी का निश्चय मरण होता है, इस श्लोक में कितनेक आचार्य ऐसी व्याख्या करते हैं कि [illegible] वर्षलग्न का स्वामी और मुंथा करके मुंथा के स्वामी का ग्रहण होता है ऐसा भी सम्भव हो सकता है क्योंकि स्वामियों के प्रकरण में पाठ है, इससे यह भी व्याख्या ठीक समझना चाहिये ॥ १३ ॥

चन्द्रो व्यये शनियुतः शुभः षष्ठेऽर्थनाशकृत् ।
चित्तवैकल्यमशुभैस्त्राणञ्च शुभेक्षणात् ॥ १४ ॥

भावार्थः- जिसके वर्षकालिक लग्न से बारहवें घर में शनैश्चर से युक्त [illegible] होवे और छठे घर में शुभग्रह बैठा हो तो उस मनुष्य के [illegible] है और जो पापग्रहों के साथ योगकारक ग्रहों का यथा [illegible] होवे तो उस आदमी के चित्त की वैकल्य (व्याकुल होना) [illegible] है, यदि वहां अच्छे ग्रहों की दृष्टि होवे तो [illegible] होते हैं, कितनेक आचार्य ऐसा [illegible] इत्यादि योग शनैश्चर व शुक्र से ही होता [illegible] है, क्योंकि चन्द्रमा का शत्रु शनि है इससे [illegible] हो सकता है, सो तो ठीक नहीं है, क्योंकि [illegible] का अभाव है, इसलिये उक्त [illegible] ॥ १४ ॥

चन्द्रोऽर्कमण्डलगतो रिपुरिष्फाष्टबन्धुगः ।
त्रिदोषतस्तस्य रुजो विविधेऽब्दे दशा शुभम् ॥ ३५. ॥

भावार्थः—जो वर्ष काल में चन्द्रमा अस्तभाव को प्राप्त होकर वर्ष लग्न से छठे, बारहवें आठवें चौथे इन घरों में से किसी घर में विराजमान हो तो वात पित्त कफ से उत्पन्न अनेक रोग उस आदमी को होते हैं तथा यदि उसन चन्द्रमा को शुभग्रह देखता हो तो उस आदमी के वर्ष अच्छा फल होता है अब यहां पर इस श्लोक में (रिपुरिष्फाष्टबन्धुगः) के जगह में (रिपुरिष्फाष्टम-स्थितः) ऐसा शुद्ध पाठ है क्योंकि मणित्थ नामक आचार्य ने कहा है कि चंद्रमा सूर्य के मण्डल में विराजमान हो अथवा छठे, बारहवें और आठवें इन भावों में स्थित हो तो उस आदमी को त्रिदोषज (वात पित्त कफ से उत्पन्न) रोग होते हैं और चंद्रमा की दशा में बड़ा कष्ट होता है । उक्तं च मणित्थेन—" शशीदिननाथकरमंडलस्थो षष्ठे व्यये वा मृतिभावसंस्थः । त्रिदोषतोऽसौ गदपिः प्रकोपैः करोति कष्टं निज दशायाम् ॥ इससे इस श्लोक में (रिपुरिष्फाष्टबन्धुगः) ऐसा पाठ नहीं चाहिये ॥ १५ ॥

हद्दाहायनलग्नेशौ संप्राप्ताष्टान्त्ये खलान्वितौ ।
स्वदशायां निधनदौ शुभदृष्ट्या शुभं वदेत् ॥ १६ ॥

भावार्थः—जिसके वर्ष समय लग्न में हद्दा का स्वामी और वर्ष लग्न का स्वामी ये दोनों सातवें, आठवें, बारहवें इन घरों में से किसी घर में पापग्रहों से युक्त या विराजमान होवे तो ये स्वामी अपनी दशा में अथवा अन्तर्दशामें उस आदमी को मार डालते हैं और जब उन स्वामियों को अच्छे ग्रह मित्र दृष्टि से देखते हों तो मरण नहीं होता है, किन्तु उनकी दशा व अंतर्दशा में सुखी होके कल्याण को प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अब्दलग्नाद्वक्रऋजू व्ययार्थस्थौ रुजा तदा ।
एवं वर्षाब्दलग्नेशजन्मेशैरपि बन्धनम् ॥ १७ ॥

भावार्थ—जिसके वर्षप्रवेश में मार्गी ग्रह और वक्री ग्रह ये दोनों वर्ष लग्न से बारहवें, दूसरे घर में हों अर्थात् बारहवें मार्गी पापग्रह हो, और दूसरे

घर में चक्री पापग्रह हो तो उस आदमी के शरीर में रोगों की उत्पत्ति होती है. इसी प्रकार वर्ष स्वामी व वर्षलग्न स्वामी व जन्मलग्न स्वामी ये पापी होकर बारहवें और दूसरे घर में विराजमान हों अर्थात् वर्षस्वामी व वर्ष लग्न स्वामी पापी होकर दूसरे या बारहवें घर में विराजमान हों और जन्म लग्न स्वामी दूसरे या बारहवें घर में हो ऐसा कर्तरी योग होवे तो उस आदमी को कारागार की प्राप्ति होती है, अर्थात् वह आदमी किसी मुकदमे में फंसकर जेलखाने में वास करता है ॥ १७ ॥

नीचे त्रिराशिपे पापदृष्टे कार्यं विनश्यति ।
इन्थिहेशेऽब्दपे वारिभेऽस्तं याते रुजो विपत ॥ १८ ॥

प्रश्न [illegible] लग्न [illegible] जो त्रैराशिप स्वामी वह यदि नीच राशि में विराजमान होता हुआ पापग्रहों से देखा जाता हो तो उस प्राणी के [illegible] कार्य नाश की प्राप्ति होती है तथा मुन्था स्वामी वर्ष स्वामी शत्रु [illegible] प्राप्त होवें तो उस आदमी के शरीर में [illegible] के रोग होते हैं, [illegible] फल प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अथ [illegible] चन्द्रमा के अरिष्ट का वर्णन ।

चन्द्रो [illegible] नगतो दृष्टोऽशुभैर्नाशुभैः ।
[illegible] मृत्युमथवा [illegible] ॥
[illegible] रुजं [illegible] ।
[illegible] ॥ १९ ॥

[illegible]

इन मतांमतानि चन्द्रमा का शुभ ही फल कहा है, यथा मध्नाद्गतान्य- (हिमकरिनः) चन्द्रम्न, (निजनवनुमनारिवान्यगः शीतरश्मिः) ऐसे ही ग्रन्थों में जानो, ऐसा चन्द्रमा मंगल से देखा जाता हो तो उस के लिये शस्त्र का भय देता है, अथवा किसी हथियार से भय वो करता है, शत्रु, चैनु, इनसे देखा हुआ चन्द्रमा राज से भय को देने वाला जाना है, और केवल शुक्र ही से देखा हुआ चंद्रमा वात दोषों से उत्पन्न भय और दरिद्रता को करता है। अब कहे हुए चन्द्रमा का अपवाद है, जिसके पूर्वोक्त चन्द्रमा को बुध, बृहस्पति शुक्र ये तीनों ग्रह मित्र से देखते हों तो उस प्राणी को शुभ होता है, अथवा केवल बृहस्पति ही सा हो तो भी शुभ कहना चाहिये ॥ १९ ॥

मुंथा कृत अरिष्ट का वर्णन ।

शन्द्रिर्नेक्षितयुता शनिनेन्थिहाधिव्याधिप्रदा जनुषि रिष्फसुखारिरन्ध्रे । यूने च वर्षतनुर्नैधनगा मृतिं सा दत्ते खलेक्षितयुतापि चिन्त्यमार्यैः ॥२० ।

भा०—जिसके वर्षकाल में पापग्रह से युक्त मुंथा को शनैश्चर देखता हो, अथवा युक्त हो तो उस प्राणी को मानसी व्याधि को देती है, तथा यह मुन्था जन्म समय में बारहवें, चौथे, छठे, आठवें और सातवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित मुंथा यदि वर्ष लग्न से आठवें स्थान में विराजमान हो और विशेष करके उसको पापग्रह देखते हों तो उस प्राणी की मृत्यु को वह मुंथा देती है, यह भी श्रेष्ठपण्डितों करके चिंतन करना चाहिये ॥ २० ॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षफलतंत्रेऽरिष्टाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अथारिष्टभंगो नाम चतुर्थाध्यायो व्याख्यायते ।

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षितयुतोपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणगोऽरिष्टं नाशयेत्सुखवित्तदः ॥ १ ॥

अब अरिष्टभंगनाम चौथे अध्याय की व्याख्या करते हैं।

भा०—जिसके वर्ष काल में लग्न का स्वामी पंचवर्गी के बल से बलिष्ट (उत्तम बली) हो और उसको शुभ ग्रह देखते हों अथवा शुभग्रह युक्त हो और केन्द्र १।४।७।१० स्थान में वा त्रिकोण ९।५ स्थान में स्थित हो तो सम्पूर्ण अरिष्टता का नाश करता हुआ सुख और धन को देता है ॥ १ ॥

गुरुः केन्द्रे त्रिकोणे वा पापादृष्टः शुभेक्षितः ।
लग्नचन्द्रेन्थिहाऽरिष्टं विनाश्यार्थं सुखं दिशेत् ॥ २ ॥

भा०—जिसके वर्ष काल में बृहस्पति केन्द्र वा त्रिकोण स्थान में स्थित हो और उसको पापग्रह नहीं देखें किन्तु शुभग्रह देखते हों तो वह उस प्राणी के [illegible] इन सबों में उत्पन्न अरिष्ट को नाश करके [illegible] धन व सुख को देता है ॥ २ ॥

सहमं स्वामिना सद्दृष्टं सौख्ययशोऽर्थदम् ।
लग्ने तृतीयेऽथ गुरुर्जन्मेट् सौख्यार्थदः सुखे ॥ ३ ॥

[illegible] जिसके [illegible] अपने स्वामी से युक्त [illegible] हो तो वह उस प्राणी के लिये [illegible] यश और [illegible] है तथा बृहस्पति लग्न में हो अथवा तीसरे [illegible] का स्वामी विद्यमान होवे, तो [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] शुभमित्रदृष्टः ।
[illegible] नृपतिप्रसादम् ॥ ४ ॥

[illegible] में स्थित हो और [illegible] बृहस्पति [illegible] शुभग्रह देखते हों तो [illegible] से राजा [illegible] ।

[illegible]

राज्यं गजाश्वाम्बररत्नपूर्णं रिष्टस्य नाशोऽप्यतुलं यशश्च॥ ५ ॥

भा०-जिसके वर्ष लग्न से नवम स्थान का स्वामी और धन स्थान का स्वामी ये दोनों पंचवर्गी बल से बलिष्ठ और पापग्रहों से नहीं देखे हुए, लग्न में बैठे होवें तो उस प्राणी के अरिष्ट का नाश होता है, और वह प्राणी हाथी, घोड़े व रत्नों से परिपूर्ण राज्य को प्राप्त होकर लोक में अतुल यश को पाता है. अथवा जब पंचवर्गी के उत्तम बल से संयुक्त और पापग्रहों से नहीं देखे जाते हुए ऐसे धर्म व धन के स्वामी लग्न में प्राप्त होवें तब वह प्राणी उक्त फल को प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यैः केन्द्रत्रिकोणोपगतैश्च सौम्यैः ।
रत्नाम्बरस्वर्णयशस्सुखाप्तिर्नाशोऽप्यरिष्टस्य तनोश्च पुष्टिः॥६॥

भा०-जिसके वर्ष काल में वर्ष लग्न से तीसरे, छठे, ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में पाप ग्रह स्थित हों, और केन्द्र १।४।७।१० और त्रिकोण ९।५। इन स्थानों में से किसी स्थान में शुभ ग्रह विद्यमान होवें, तो वह प्राणी रत्न, कपड़े, सोना, यश और कीर्ति इनको प्राप्त होकर परमानन्द में मग्न रहता है, और उसके अरिष्टों का नाश होता है, और उसके शरीर की पुष्टि होती है ॥ ६ ॥

यदासवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा ।
केन्द्रत्रिकोणायधनस्थितास्ते सुखार्थहेमाम्बरलाभदाः स्युः ॥७॥

भा०-जिसके वर्ष काल में मुथहा स्वामी वा वर्ष और जन्म लग्न स्वामी ये तीनों पंचवर्गी के बल से युक्त होकर केन्द्र १।४।७।१० और त्रिकोण ९।५ ग्यारहवें, और दूसरे इन स्थानों में से अन्य किसी स्थान में विराजमान हों तो उस प्राणी के अर्थ, सुख, धन, सुवर्ण और वस्त्र इन सबों को देते हैं ॥ ७ ॥

तुङ्गे शनिर्वा भृगुजो गुरुर्वा शुभेत्थशालाद्यवनाद्धनाप्तिम् ।
वली कुजो वित्तगतो यशोऽर्थतेजांस्यकस्माच्च सुखानि दद्यात्

भा०--जिसके वर्ष प्रवेश समय में शनि, शुक्र, गुरु ये तीनों अप-

ने २ उच्च स्थानों में स्थित हों और शुभग्रहों के साथ इत्थशाल को करैं तो यवन (मुसलमान) लोगों से धन की प्राप्ति होती है, अर्थात् शनि, शुक्र [illegible], इनमें से कोई एक ग्रह शुभग्रहों से इत्थशाल को करता हुआ अपने उच्च घर में स्थित हो तो वह प्राणी म्लेच्छ (मुसलमान) के सकाश से धन को पाता है और जो उक्त तीनों ग्रह शुभग्रहों के साथ इत्थशाल (मिलाप) को करते हुए अपने अपने उच्च स्थानों में वास करैं, तो बहुत धन की प्राप्ति होती है तथा [illegible] मङ्गल दूसरे स्थान में स्थित हो तो उस प्राणी के अर्थ, यश तेज और [illegible] सुख को देता है। ८।

सूर्येज्यशुक्रा मिथ इत्थशालं कुर्युस्तदा राज्ययशस्सुखार्थाः।
सूर्यः कुजो वोपचये ददाति भद्रं यशोमंगलमित्थिहायाः॥९॥

भा०—जिसके वर्ष काल में सूर्य, गुरु शुक्र ये तीनों ग्रह परस्पर इत्थशाल योग को करैं तो उस प्राणी के अर्थ, राज्य, यश, सुख और धन इन सबको देते हैं तथा जिस प्राणी के वर्ष समय जिस किसी स्थान में [illegible] [illegible] से ३। ६। १०। ११ इन स्थानों में से किसी स्थान में सूर्य [illegible] होवे, अथवा मंगल ही स्थित हो तो उस प्राणी के [illegible] [illegible], यश, मङ्गल, [illegible] इन्हों को देता है॥९॥

[illegible] स्वे पापास्त्र्यायगता यदि।
[illegible] हेम सुखं कीर्तिं नरोऽश्नुते॥१०॥

[illegible]—[illegible], ये तीनों अपने [illegible] में हों और सूर्य, मङ्गल [illegible] [illegible] में स्थित हों तो वह मनुष्य अपने [illegible] सुवर्ण, सुख, और कीर्ति इनको [illegible] होता [illegible] ऐसा कहा है परन्तु [illegible] [illegible] नहीं [illegible]॥१०॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]॥११॥

भाषार्थ—जिसके वर्ष में बुध, शुक्र ये दोनों मुथशिफ योग करें और गुरु वर्षलग्न से तीसरे घर में हो वह मनुष्य राज्य, यश, सुवर्ण, चांदी और मूँगा इन सबों को प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

भौमो मित्रगृहेऽब्देशः कम्बूली स्वगृहादिगैः।
गजाश्वहेमाम्बरभूलाभं दत्ते सुखाधिकम् ॥ १२ ॥

भाषार्थः—जिसके वर्षकाल में मङ्गल वर्ष का स्वामी होकर अपने मित्र घर में बैठा हो, और अपने घर व उच्चादि घरों में विराजमान ग्रहों के साथ इत्थशाल करता हो और अपने घर व अपने उच्चादि में स्थित चन्द्रमा के सङ्ग इत्थशाल योग करे तभी कम्बूल कहा जाता है, ऐसा मङ्गल उस मनुष्य के अर्थ हाथी, घोड़ा, सोना, कपड़े पृथ्वी लाभ इनको और अधिक सुखको देताहै॥१२

राजयोग सम्बन्धी शुभाशुभ फल।

इत्थं जन्मनि वर्षे च योगकर्तुर्बलाबलम्।
विमृश्य कथयेद्राजयोगं तद्भङ्गमेवच ॥ १३ ॥

भाषार्थः—जन्मकाल और वर्षकाल में राजयोग करने वाले ग्रह के बलाबल का विचार करके राजयोग वा राजयोग भङ्ग को कहे ॥ १३ ॥

राजयोग भङ्ग वर्णन।

अब्देन्थिहेशादिखगाः खलैश्चेद्युतेक्षिता अस्तगनीचगा वा।
सौम्या बलोना नृपयोगभंगं तदा वदेद्वित्तसुखक्षयञ्च ॥ १४ ॥

भाषार्थः—जिसके वर्षकाल में वर्ष स्वामी मुथहा स्वामी आदि शब्द से वर्षलग्न स्वामी, ये ग्रह पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों और शुभग्रह हीन बली हों तो राजयोग का भङ्ग कहना, तथा पूर्वोक्त वर्षेशादि ग्रह सूर्य के सान्निध्य वश से अस्तंगत हों, अथवा नीच राशि में बैठा हो और शुभ ग्रह पंचवर्गी बल से हीन बली हो तो भी राजयोग का फल नहीं होवे है इन दोनों योगों में धन और सुख का नाश होता है ॥ १४ ॥

इति नीलकंठीभाषाटीकायां वर्षफलतन्त्रेऽरिष्टभङ्गाध्यायश्चतुर्थः ४ ॥

अथ द्वादशभावविचाराध्यः पंचमः प्रारभ्यते ।

बारहवें भावों का वर्णन ।

यो भावः स्वामिसौम्याभ्यां दृष्टो युक्तोऽयमेधते ।
पापदृष्टयुतो नाशो मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥ १ ॥

भावार्थः-जो भाव अपने स्वामी और शुभग्रह से देखा जाता हो अथवा संयुक्त हो तो वह भाव वृद्धि को करता है, परन्तु उस भाव का स्वामी शुभ ग्रह या पापग्रह हो, यहां शुभ पाप का नियम नहीं है और जो भाव अपने स्वामी व शुभग्रहों को छोड़कर अन्य पापग्रहों से देखा जाता हो या युक्त हो तो उस भाव का नाश हो जाता है, अर्थात् वह भाव फल करने को समर्थ नहीं होता है, तथा जो भाव मिश्र अर्थात् अच्छा ग्रह या पापग्रह दोनों से देखा जाता हो अथवा युक्त हो तो उस भाव का मिश्र (शुभाशुभ मिला हुआ) फल कहना ॥ १ ॥

लग्नस्वामी का शुभाशुभ फल ।

लग्नाधिपे वीर्ययुते सुखानि नैरुज्यमर्थागमनं विलासः ।
स्थानभ्रंशोऽयुक्तार्थलाभः क्लेशाधिकत्वं विपदल्पवीर्ये ॥२॥

भावार्थः-जो लग्न का स्वामी पूर्ण बल से बलवान् होवे तो सुख व आरोग्य और धन का आगम, व आनन्द को करता है तथा जो लग्नेश [illegible] स्थान भ्रष्ट हो और थोड़ा ही धन लाभ होवे और जो अल्प [illegible] क्लेश अधिक हो और विपत् (आपदा) होती है ॥ २ ॥

[illegible] स्वामी ग्रहों के तीन वर्गों फलों का वर्णन ।

[illegible]निवृत्तानिममा नाथायर्थाकाम्वान मूर्यो नष्ट-
[illegible] कुर्यान्निम्नाहनाप । नीचत्वं पितृमातृनाग-
[illegible] दारिद्र्यं च पगानतो गृहकनिव्यं या-
[illegible] ॥ ३ ॥

[illegible]

और आदि शब्द से विभाजित व जिन राशि के स्वामी ग्रहण किये जाते हैं, इन अधिकारियों में से जिस किसी अधिकार को प्राप्त होकर सूर्य नष्ट बल अर्थात् बलहीन दशा में अस्त हो जाता हो तो वह उस प्राणी की त्वचा (खाल) और नेत्रों को नष्ट करता है, अर्थात् ऐसा सूर्य होवे तो वह प्राणी कोढ़ी होकर लोगों से त्यक्त होजाता है, और उन्माद से रहित उत्तम जीवता हुआ भारा फिरा से वर्जित होता है तथा जिस प्राणी के पूर्वोक्त अधिकारियों में से किसी अधिकार विषे चन्द्रमा नष्टबल हो तो उस प्राणी के नेत्र और कीर्ति कार्यों का नाश होता है, और वह दरिद्री होकर जहां जाता है वहां अनादर को पाता हुआ स्त्रियों से कलह करता है और मानसी व्याधि व रोगों से भयभीत होता है ॥ ३ ॥

मंगल का फल।

भौमे चलत्वं भीरुत्वं बुधे मोहपराभवौ।
जीवे धर्मक्षयः कष्टफला जीवितवृत्तयः ॥ ४ ॥

भा०—जो मंगल जन्मसमय में उक्त अधिकारियों में से जिस किसी अधिकार को प्राप्त होकर मङ्गल नष्टबली हो तो उस प्राणी का मन चलायमान रहता है, और वह चोर आदिकों से भयभीत होता है और उक्त अधिकारियों में बुध नष्टबली हो तो उस प्राणी को मोह पराभव फल होता है, तथा जिसके उक्त अधिकारियों में बृहस्पति नष्टबली हो तो धर्म का क्षय होता है और बड़े कष्ट से कन्द मूल फलादिको खाके जीवित करने वाला वह प्राणी होता है, अथवा कष्ट रूप फल से ही जीवित करने हारा जानना ॥ ४ ॥

शुक्र और शनि का फल।

शुक्रे विलाससौख्यानां नाशः स्त्रीभिः समं कलिः।
सौरे भृत्यजनादुःखं रुजो वातप्रकोपतः ॥ ५ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में उक्त अधिकारियों में से जिस किसी अधिकार को प्राप्त होकर शुक्र बलहीन हो तो उस प्राणी के विलास क्रीड़ा आदि और सौख्य का नाश होता है और स्त्रियों के साथ कलह करने

जाता वह होता है, एवं उक्त अधिकारियों में से किसी अधिकार में प्राप्त होकर बलहीन नष्ट वर्ती हो तो सेवक से क्लेश प्राप्त होता है, तथा वातरोग से पीड़ा को प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

लग्न का फल ।

लग्नं पापयुतं सौम्यैरदृष्टं सहितं नृणाम् ।
विवादं वञ्चनां दुष्टमशनं चापि विन्दति ॥ ६ ॥

भावार्थः-जिसके वर्षप्रवेश समय में वर्षलग्न पापग्रहों से युक्त हो और शुभग्रहों से न देखा जाय न युक्त हो तो वह आदमी मनुष्यों का बिगाड़ (झगड़ा) और लोगादिकों से ठग जाना व दुष्ट भोजन इन अशुभ फलों को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

वर्णित अधिकारियों के होते हुए फल का वर्णन ।

जन्माब्दाङ्गपजन्मपाब्दमुथहानाथा बलाढ्यास्तदा रम्यं वर्षमशान्ति सर्वमतुलं सौख्यं यशोऽर्थागमः । षष्ठाष्टान्त्यगता नभोऽपि पतनं दुःखार्तिभीतिप्रदा निर्वीर्या यदि वर्षमेतदशुभं वाच्यं सुखेच्छा विना ॥ ७ ॥

धन नाश योग का वर्णन ।

मूर्तौ धनप्रदः खेटो धनाधीशश्च तौ यदि ।
वर्षे नष्टौ वित्तनाशान्यनिक्षेपापवाददौ ॥ ८ ॥

भा० - जिसके जन्मकाल में धनका देने वाला ग्रह और धन स्थान का स्वामी ये दोनों यदि वर्ष में नष्टबली होवैं तो उस पुरुष का धन नाश हो और दूसरे मनुष्य के यहां धरे हुए धनका अपवाद अर्थात् जिसके यहां धन धरने को दिया है वह कहे कि हमारे पास नहीं धरा है और यदि जन्मकालिक दोनों ग्रह बलिष्ठ होवैं तो धन नाश करने वाले होते हैं ॥ ८ ॥

एवं समस्तभावानां मूर्तौ नाथाश्च पोषकाः ।
अब्दे नष्टबलास्तेषां नाशायोह्या विचक्षणैः ॥ ९ ॥

भा०-इसी प्रकार जिसके जन्म कालमें सम्पूर्ण भावों के मध्य जिन जिन भावों में फलके देने वाले ग्रह स्थित होवें, और उन भावों के स्वामी फल देने को समर्थ होवैं, यदि वेही वर्ष कालमें बलवान होय तो उस मनुष्य के वे अपने भाव सम्बन्धी फलको देते हैं, और जब उक्तग्रह वर्ष में नष्ट बलवाले होय तो उन भावों को नष्ट करते हैं अथवा उन भावों का जैसा फल है उसको नहीं दे सकते हैं यह पण्डितों करके जानना चाहिये ॥ ९ ॥

इति प्रथम भाव विचारः ॥ १ ॥

धन भाव का विचार ॥

वित्ताधिपो जन्मनि वित्तगोऽब्दे जीवो यदा लग्नपतीत्थशाली
तदा धनाप्तिः सकलेऽपि वर्षे क्रूरेसराफे धनधान्यहानिः ॥१०॥

भा० —जिसके जन्म कालमें बृहस्पति धन भावका स्वामी होकर वर्ष में दूसरे स्थान में स्थित हो और लग्न स्वामी के साथ इत्थशाल योग को करता हो तो उस प्राणी के अर्थ धनकी प्राप्ति सम्पूर्ण वर्ष भर होवै है, और जो बृहस्पति लग्न स्वामी को छोड अन्य किसी पापग्रह के साथ ईसराफ योग को करै तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त धन धान्य की हानि को करै है ॥ १० ॥

दूसरे धन लाभ योग।

जन्मन्यर्थावलोकीज्योऽब्देऽब्देंशो वलवान यदा।
तदा धनाप्तिर्बहुला विनायासेन जायते॥ ११ ॥

भा०—जिनके जन्म कालमें बृहस्पति दूसरे स्थान को देखता हो और [illegible] वर्ष में [illegible] स्वामी होकर बलवान होवे तो उस वर्ष में उस प्राणी को [illegible] परिश्रम धन लाभ होता है॥ ११ ॥

[illegible] सम्पूर्ण भावों में अति देश।

एवं [illegible] जन्मन्यब्दे तद्भावगो गुरुः।
लग्नेशेनेत्थशाली चेत्तद्भावजसुखं भवेत॥ १२ ॥

भा०—जिसके जन्म कालमें बृहस्पति जिस भावका स्वामी हो यदि वर्ष [illegible] भाव में [illegible], और [illegible] लग्न स्वामी के इत्थशाल योग को [illegible] उसी भावका फल मिलता है अर्थात् उस भाव से उत्पन्न [illegible] होता है॥ १२ ॥

[illegible] योग का और वर्णन।

[illegible] पश्यंस्तानब्देऽब्दपो गुरुः।
[illegible] सौख्यमुक्तं ताजकवेदिभिः॥ १३ ॥

[illegible] बृहस्पति जिस भावको देख रहा हो और [illegible] उस भाव सम्बन्धी सुखको प्राप्त होता है [illegible] है॥ १३ ॥

[illegible] योग और [illegible] योग।

[illegible] पश्येदब्दे [illegible]।
[illegible] सर्वमिष्टम्॥ १४ ॥

हो राजदण्ड भय होता है, अर्थात् वह किसी मुकदमे में फँसकर जुरमाने के योग्य होता है ॥ १४ ॥

अन्य धन लाभ योग का वर्णन ।

गुरुर्वित्ते शुभैर्दृष्टो युतो वा राज्यसौख्यदः ।
जन्मलग्ने च मुथहा राशिं पश्यन्विशेषतः ॥ १५ ॥

भावार्थः-जिसके वर्षकाल में गुरु धन भाव में विराजमान हो और उस को शुभ ग्रह देखते हों वा शुभग्रहों से युक्त हो तो उस आदमी को अर्थ राज और सुख को देते हैं तथा जन्म समय जन्मलग्न में गुरु हो और वर्ष समय वर्षलग्न में स्थित होकर जिस राशि में मुंथा हो उस राशि को देखता हो तो विशेष करके राज्य वा सुख को देने वाला होता है अथवा जन्म समय गुरु शुभग्रहों से दृष्ट वा युक्त होकर धन स्थान में बैठा हो और वर्षकाल में भी उसी स्वरूप से मुथहा को देखता हुआ धन भाव में जा पड़ा हो तो विशेष करके राज्य व सौख्य को देता है ॥ १५ ॥

शुक्र योग से धन योग और उसके नाश का वर्णन ।

एवं सितेऽब्दे भूरि द्रव्यं धान्यं च जायते ।
वित्तलग्नेशसंयोगो वित्तसौख्यविनाशदः ॥ १६ ॥

भावार्थ--पूर्वोक्त प्रकार से शुक्र वर्ष का स्वामी होता हुआ धनस्थान में विराजमान हो और उसको शुभ ग्रह देखते हों वा शुभ युक्त हो तो बहुत धन व धान्य होता है तैसे ही जन्मलग्न वर्षलग्न और मुंथा जिस राशि में स्थित हो और शुक्र देखता हो अथवा इन्हीं में से किसी में विराजमान हो तो विशेष करके बहुत धन व धान्य को देता है, अब धन क्षय योग को दिखाते हैं, जो धन भवन में धन भाव का स्वामी और लग्न स्वामी इनका योग होवे तो वह धन व सौख्य के विनाश को देता है ॥ १६ ॥

अन्य धन प्राप्ति योग ।

एवं बुधे सवीर्ये स्याल्लिपिज्ञानोद्यमैर्धनम् ।
जन्मलग्नगतास्सौम्या वर्षेऽर्थे धनलाभदाः ॥ १७ ॥

भा०—ऐसे ही (पूर्वोक्त प्रकार) बुध बलिष्ट होकर वर्षका स्वामी हुआ धन भाव में स्थित हो और उसको शुभग्रह देखते हों अथवा शुभ ग्रहों से युक्त हो तैसे ही जन्म लग्न वर्ष लग्न और मुथहा जिस राशि में स्थित हो इन्हीं को अथवा इनमें से किसी को बुध देखता हो अथवा यही बुध से युक्त हों, तो लिखने व ज्ञानरूपी (व्याख्यानादि) उद्यम से धन प्राप्त होता है, तथा जिसके जन्म लग्न में शुभग्रह स्थित हों और वेही यदि वर्ष समय धन भाव में स्थित हों तो धन लाभ के करने वाले होते हैं ॥ १७ ॥

बहुत धन लाभ योग ।

मालसद्मनि वित्ते वा बुधेज्यसितसंयुते ।
तैर्वा दृष्टे धनं भूरि स्वकुले राज्यमाप्नुयात् ॥ १८ ॥

भा०—जिसके वर्ष प्रवेश समय में मालसद्म (धन सद्म) और धन भाव में दोनों बुध, बृहस्पति, और शुक्र से संयुक्त हों वा इन करके देखे जाते हों तो उसको बहुत धन व अपने कुलमें राज्य इनको प्राप्त होता है यवन [illegible] माल धनको कहते हैं ॥ १८ ॥

अन्य धन लाभ योग वर्णन ।

अर्थार्थसहेशौ चेन्दुर्भमित्रदृशेक्षितौ ।
बलिनौ शुभगौ लाभप्रदौ [illegible] ॥ १९ ॥

भा०—[illegible] वर्ष में धन भावका स्वामी और धन सद्म का स्वामी [illegible] करके मित्र दृष्टि से देखे जाते हों, और ये दोनों बलमें उत्तम [illegible] बहुत लाभ को देते हैं और जो पूर्वोक्त [illegible] शुभ ग्रह [illegible] ॥ १९ ॥

[illegible] वर्णन ।

[illegible] शुभगो धनम् ।
[illegible] वित्तनाश[illegible] ॥ २० ॥

[illegible] और वर्ष लग्न इन्हीं के स्वामियों [illegible] अथवा धन प्राप्त

होता है और उन दोनों का इत्थशाल योग होवे तो उसके धनका नाश होता है और अनीति में वर्ताव करता हुआ वह मनुष्य धनहीन होता है ॥ २० ॥

अन्य धन योग ।

जन्मनीज्योऽस्ति यद्राशौ स राशिर्वर्षलग्नगः ।
शुभस्वामीक्षितयुतो नैरुज्यस्वाम्यवित्तदः ॥ २१ ॥

भा०—जन्म समय बृहस्पति जिस राशि में हो यदि वह राशि वर्ष लग्न हो, और शुभग्रहों या अपने स्वामी से दृष्ट या युक्त हो तो आरोग्यता प्रभुता और वित्त (धनको) देवे ॥ २१ ॥

अन्य धन लाभ व नाश योग ।

सूतौ लग्ने रविर्वर्षे धनस्थोधनसौख्यदः ।
शनौवित्तेकार्यनाशोलाभोल्पोऽथधनव्ययः ॥ २२ ॥

भा०—जन्म समय सूर्य लग्न में हो और वर्ष समय धन स्थान में स्थित हो तो धन व सुखको देता है और जो धन भाव में शनि हो तो कार्य का नाश करता है और थोड़ा लाभ कराकर धनको खर्च करा देता है ॥ २२ ॥

शनि के दृष्ट अपवाद से धन नाश योग ।

भ्रातृसौख्यं गुरुयुते भृतगः स्युः शुभेक्षणात् ।
क्रूरयोगेक्षणात्सौख्यं विपरीतं फलं भवेत् ॥ २३ ॥

भा०—जिसके वर्ष समय धन भावमें स्थित शनैश्चर बृहस्पति से युक्त हो तो उसको अपने भाई बन्धुओं से सुख होता है और जो पूर्वोक्त शनि को शुभ ग्रह देखते हों तो उसको बड़े ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं कि जो पूर्वधन लाभ कारक ग्रह पाप ग्रहों से युक्त हुए हों तो सम्पूर्ण फल विपरीत होता है अर्थात् धनकी हानि होती है ॥ २३ ॥

जन्म समय धन भाव के फल का अलग २ वर्णन

वित्तेशो जन्मनि गुरुर्वर्षेवर्षेशतं दधत् ।
यद्भावगस्तमाश्रित्य लाभदो लग्न आत्मनः ॥ २४ ॥
वित्ते सुवर्णरूप्यादेर्भ्रात्रादेः सहजक्षेगः ।

भा०—जो वर्ष काल में वर्ष का स्वामी सूर्य वा शुक्र हो और पंचवर्गी बल से बलिष्ठ होवें और पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट न हो तो उसको भाइयों का सुख प्राप्त होता है तथा इससे विपरीत वर्षेश सूर्य शुक्र निर्बली होकर पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो भाइयों से कलह आदि होवें ।

दुश्चिकलिः सहजपोऽब्दपतौ तथा वा जीवे बलेन रहिते सहजे सहोत्थे । वैरं तृतीयभवनाधिपतौ सराफे मान्द्यं कलिं स्वजनसोदरतश्च विन्द्यात् ॥ २९ ॥

भा० जिसके वर्ष काल में तीसरे भाव का स्वामी वर्ष का अधीश होता हुआ सूर्य के सान्निध्य से अस्त होजावे अथवा दुष्ट स्थान में स्थित हो तो वह भाई बन्धुओं करके कलह करता है और उन सूर्य शुक्रों में कोई एक वर्ष का स्वामी होकर अस्तंगत होजावे तो वह भी युद्धादिकों करके कलह करता है और जो बृहस्पति सबल बल से युक्त होकर तीसरे भवन में स्थित हो तो भाइयों के साथ वैर होता है, जो वर्ष स्वामी तीसरे भाव के स्वामी के साथ इसराफ योग करता हो तो उसके शरीर में बड़ा भारी कष्ट आकर प्राप्त होता है, इसी से वह निर्बल होकर अपने मित्रवर्गों से वा अपने बन्धुओं से लड़ाई का करने हारा होता है ॥ २९ ॥

यद्येत्थशाल सहजेश्वरेण गुरुस्तृतीये सहजात्सुखाप्तिः ।
सारे विधौ स्यात्कलहस्तृतीये दृष्टो युतौ नो गुरुणा यदा तौ ३०

भा०—जो वर्ष लग्न स्वामी वा वर्षेश इन दोनों में से किसी एक का तीसरे भाव के स्वामी के साथ इत्थशाल योग होवे तो उस प्राणी को भाइयों से सुख की प्राप्ति होती है, और बृहस्पति तीसरे भाव में स्थित हो तो भी भाइयों से सुख मिलता है और जो तीसरे भाव में मंगल सहित चन्द्रमा स्थित हो और यदि वे दोनों बृहस्पति से नहीं देखे जावें अथवा न युक्त हों तो भाइयों के साथ युद्धादिकों करके लड़ाई होती है ॥ ३० ॥

अन्य भ्रातृ सुखकारक योगों का वर्णन ।

सहजे सहजाधीशेधिकारिणि समागते ।

लग्नपो वा मुथशिले मिथः सौख्यं सहोत्थयोः ॥ ३१ ॥

भा०—जिसके वर्षकाल में तीसरे भाव का स्वामी पांचों अधिकारियों में से किसी अधिकार में विद्यमान होकर तीसरे भाव में स्थित हो और उसी के वर्ष [illegible] वर्ष लग्न स्वामी इन दोनों में से किसी एक का इत्थशाल योग होवे, तो उसके भाइयों को परस्पर सुख प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

भ्रातृदोष योग ।

[illegible] कलहः शनौ भौमर्क्षगे रुजः ।

[illegible] [illegible] वदेत्सहजगे स्फुटम् ॥ ३२ ॥

भा० जिसके वर्ष समय में तीसरे भाव के स्वामी के साथ पापग्रह ईसराफ [illegible] तो [illegible] के भाइयों का परस्पर कलह होता है शनि [illegible] ([illegible]) में से किसी राशि में स्थित होकर तीसरे भाव में [illegible] हो तो [illegible] से [illegible] होते हैं वैसे ही मंगल [illegible] [illegible] इनमें से किसी राशि में स्थित हो तो भाइयों को [illegible] फल को कहे ॥ ३२ ॥

[illegible] के [illegible] योग का वर्णन ।

[illegible] सहजे शुभैः ।

[illegible] मिथः [illegible] भवेद्बहु ॥ ३३ ॥

[illegible] ([illegible]) में मंगल स्थित हो [illegible] ([illegible]) में स्थित हो और तीसरे स्थान में [illegible] दृष्ट हो तो परस्पर भाइयों को बहुत [illegible] ३३

भावार्थः—जिसके जन्मकाल व वर्षकाल में बुध, शुक्र ये दोनों बलवान होकर तीसरे भाव में स्थित हों ऐसे ही गुरु बलवान होकर तीसरे घर में बैठा हो तो भाई और बन्धुगणों को सुख से रखने वाले होते हैं और अपने घर व अपने इष्ट आदि को प्राप्त होकर बुध जन्म समय लग्न में स्थित हो और वर्ष समय तीसरे घर में स्थित हो तो भाइयों की वृद्धि होती है ॥ ३४ ॥

सहज भाव में दुःखकारक योगों का वर्णन ।

पापान्विते तु सहजे सहमेशभावेनाथेक्षणेन रहिते सहजस्य दुःखम् । एवं सहोत्थसहमेऽपि वदेत्तदीशौ दग्धौ यदा सहजनाशकरौ विचिन्त्यौ ॥ ३५ ॥

भा०—जिसके वर्षकाल में तीसरा भाव पापग्रहों करके युक्त होवे और उसको सहज सहम का स्वामी और सहज भाव का स्वामी ये दोनों नहीं देखते होंय तो उस आदमी के भैया को दुःख होता है, ऐसे ही भ्रातृ सहम भी पाप ग्रहों करके युक्त होवे और उसको उसका स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी ये दोनों नहीं देखें तो भी भाइयों को कष्ट होवे, और भ्रातृभाव के साथ ये दोनों अस्तङ्गत होकर अपने नीच आदि खराब स्थान में स्थित होवें तो उसके भाइयों को नष्ट करते हैं ऐसा पण्डितों करके चिन्तवन करना चाहिये ॥३५॥

भाइयों के बुरे योगों का वर्णन ।

तृतीयपाब्दपतौ द्युनस्थे लग्नेश्वरे वा सहजैर्विवादः ।
तृतीयपो जन्मनि तादृगब्दे शुभेक्षितस्तत्र सहोत्थतुष्ट्यै ॥३६॥

भा०—जिसके वर्षकाल में तीसरे भाव के स्वामी से सातवें स्थान में वर्ष स्वामी स्थित हो अथवा लग्न स्वामी तीसरे घर के स्वामी से सातवें घर में विराजमान हो तो उसका भाइयों से युद्ध होता है, अब अच्छा योग कहते हैं—जिसके जन्म समय तीसरे स्थान का स्वामी उस सहजभाव में विराजमान हो और उसको अच्छे ग्रह देखते हों अथवा यदि वही (तीसरे भाव का स्वामी)

[illegible] ग्रहों से युक्त हो एवं वर्षकाल में भी तीसरे घर का स्वामी अपने स्थान में स्थित हो और उसको अच्छे ग्रह देखते हों तो उसके भ्रातों को सन्तोष होता है, और सब प्रसन्नता पूर्वक रहते हैं ॥ ३६ ॥

इति सहजभावविचारः ।

चौथे भाव का विचार वर्णन ।

तुर्ये रवीन्दू पितृमातृपीडा पापान्वितौ पापनिरीक्षितौ च ।
जन्मस्थसूर्यर्क्षगतेऽर्कपुत्रेऽवमानना वैरकली च पित्रा ॥ ३७ ॥

भा०—जिस मनुष्य के वर्षकाल में सूर्य पापग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में स्थित हो तो उसके पिता को पीड़ा होती है, ऐसे ही चन्द्रमा जो पापग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में स्थित हो तो माता को पीड़ा होती है, और सूर्य चन्द्र दोनों पापयुक्त या पापदृष्ट होकर चतुर्थ भाव में स्थित हों तो माता पिता दोनों को क्लेश होवे एवं जन्म समय सूर्य जिस राशि में [illegible] उस राशि में शनि स्थित हो तो उसके पिता का अपमान होता है और वह मनुष्य भी पिता के साथ वैर और कलह को करता है जिससे [illegible] ॥ ३७ ॥

[illegible] सुतो गुरुश्चेत् प्रीतिर्गुणानि पित्रोः ।
[illegible] सौम्ययुगन्ति पित्रोः ॥ ३८ ॥

योस्तु । दग्धे तुरीयगृहगे च यदान्यिहाया नाशस्तयोस्सद्मयो रपि दग्धयोः स्यात् ॥ ३९ ॥

भा०—जिसके जन्म कालमें और वर्ष काल में चौथे भावका स्वामी नष्टवीर्य होवे तो उसके माता पिताको दुःख करता है और जो मातृ पितृ सहम पापग्रहों से पीड़ित होता हुआ चौथे स्थान में स्थित हो तो उसके माता पिताका नाश होता है, तथा जो मातृ पितृ सहम ये दोनों दग्ध हों अथवा अस्तादि दोषों से युक्त हों तो भी माता पिताका नाश होता है ॥ ३९ ॥

माता पिता के अनिष्ट योगों का वर्णन ।

जन्मन्यम्बुगृहं यच्च तत्पतिस्तत्पदोपगौ ।
शन्यारौ क्लेशदौ पित्रोर्न चेत्सौम्यनिरीक्षितौ ॥ ४० ॥

भा०—जिसके जन्म कालमें चौथे घर व चौथे स्थान का स्वामी इन दोनों के स्थानों में शनि मंगल स्थित हों और शुभग्रहों से यदि युत वा दृष्ट न हों तो उसके माता पिता को कष्ट देते हैं ॥ ४० ॥

शुभ अशुभ योगों का वर्णन ।

मातुः पितुश्च सहमे तनुपेत्थशाले तुर्येपिचेत्थमवगच्छ सुखानि पित्रोः । चेदष्टमाधिपतिना कृतमित्थशालं पित्रोर्विपद्भय-मनिष्टकृतेसराफे ॥ ४१ ॥

भा०—जिसके वर्ष कालमें माता पिता सहम लग्न स्वामी के साथ इत्थ-शाल योग करता हो तो उसके माता पिता के अर्थ सुख प्राप्त होवै एवं चौथा भाव वर्ष लग्न स्वामी के साथ इत्थशाल करै तो भी माता पिता को सुख जानो, अब अशुभ योग दिखाते हैं, माता पिता सहम वर्ष लग्न से आठवें घर के स्वामी के साथ इत्थशाल योग करै तो उसके माता पिता बड़े दुःखको प्राप्त होते हैं, और जो माता पिता सहम पापग्रहों से मिलाप करते हुए ईसराफ योग करैं तो माता पिताको भय प्राप्त होता है ॥ ४१ ॥

इति सुख भाव विचारः ॥

पंचम भाव का विचारः ।

पुत्रायगो वर्षपतिर्गुरुश्चेत्सूर्यारसौम्योशनसोथ वेत्थम् ।
[illegible]पुत्रसौख्याय खलार्दितास्ते दुःखप्रदाः पुत्रत एव चिन्त्याः ।

भा०—जिसके वर्ष प्रवेशमें यदि वर्षका स्वामी होकर बृहस्पति पांचवें व ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो पुत्रों को सुख होता है, अथवा सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र इनमें से कोई एक वर्ष का स्वामी होता हुआ पांचवें और ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो वह पुत्रों को सुख कारक जानना [illegible] बृहस्पति, सूर्य, मंगल, बुध, और शुक्र ये पांचों ग्रह यदि पाप ग्रहों से पीड़ित हों तो पुत्रों को दुःख देते हैं, यह पंडितों करके चिन्तन करना चाहिये ॥ [illegible] ॥

पुत्र प्राप्ति योग वर्णन ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुताप्ति सौम्येक्षितेप्यतिसुखं यदि [illegible] । सौम्येक्षितःशुभगृहे सकुजो बुधश्चेत्पुत्रायगः सुत[illegible] [illegible] सुताप्तिम् ॥ ४३ ॥

[illegible] जिसके वर्ष [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्राप्ति होती है यदि उस [illegible] [illegible] वर्ष का [illegible] और शुभग्रह देखते होवें तो बालकों को बहुत सुख होता [illegible] मंगल सहित बुध शुभ ग्रहों की राशि में स्थित शुभ [illegible] ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो पुत्रों को सुख करता है, [illegible] उक्त स्थानों में नहीं स्थित [illegible] ॥ [illegible] ॥

पुत्र प्राप्ति और पुत्र दोष का योग का वर्णन ।

पुत्रेऽपो जनुषि गृहे विलग्नमेतत्पुत्राप्त्यै बुधसितयोरपीत्थमूह्यम् । यद्राशौ जनुषि शनिः कुजश्च सोऽब्दे पुत्रार्तिं तनुसुतगः करोति नूनम् ॥ ४५ ॥

भा०—जन्म समय पुत्रपति जिस स्थान में स्थित हो यदि वह स्थान वर्ष समय लग्न में हो तो पुत्र प्राप्ति के अर्थ जानना, एवं बुध शुक्र के स्थान को भी जानना, तथा अशुभ योग यह है कि जन्म समय शनि मंगल जिस राशि में स्थित हों वह राशि वर्ष काल में लग्न में वा पंचम भाव में हो अथवा शनि मंगल एक साथ लग्न में व पांचवें स्थान में स्थित हों तो निश्चय करके पुत्रों को पीड़ा करते हैं ॥ ४५ ॥

पुत्र प्राप्ति योग का अन्य वर्णन ।

पुत्रे पुण्यस्य सद्म पुत्राप्त्यै शुभदृष्टियुक् ।
लग्नपुत्रेश्वरौ पुत्रे पुत्रदौ बलिनौ यदि ॥ ४६ ॥

भावार्थ—वर्ष में पांचवें पुण्य सहम शुभ ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो पुत्र की प्राप्ति जानना, तथा यदि लग्नेश और पुत्र भावेश बलवान होकर पंचम भाव में स्थित हों तो पुत्र को देते हैं ॥ ४६ ॥

शुभाशुभ योग वर्णन ।

चन्द्रो जीवोऽथ वा शुक्रः स्वोच्चगः सुतदः सुते ।
वक्री भौमस्सुतस्थश्चेदुत्पन्नसुतनाशनः ॥ ४७ ॥

भावार्थः—जो वर्ष काल में चन्द्र, गुरु, अथवा शुक्र अपने उच्च राशि में प्राप्त होकर पंचम भाव में स्थित हो तो पुत्र को देते हैं तथा यदि वक्री मंगल पांचवें स्थान में स्थित हो तो उत्पन्न पुत्र का नाश करता है । ४७ ॥

पुत्र प्राप्ति व पुत्र नाश का योग वर्णन ।

पुत्राधिपो जन्मनि भार्गवोऽब्दे पुत्रे विलग्नाधिपतीत्थशाली ।
पुत्रप्रदो मन्दपदस्थपुत्रे पापाधिकारीक्षित आत्मजार्तिः ॥४८॥

भा०—जन्मकालमें पंचम भाव का स्वामी शुक्र वर्षमें पंचम भाव में स्थित हो और वर्षलग्न स्वामी के साथ इत्थशाल योगको करै तो पुत्र को देता है, तथा मन्द (शनि) का स्थान वर्षमें पांचवां हो और पंचाधिकारियों में स्थित [illegible] देखता हो तो पुत्रों को पीड़ा होती है ॥ ४८ ॥

यद्राशिगो ग्रहः सूतौ स राशिस्तत्पदाभिधः ।
वर्षे जन्मोत्थसौख्याय वर्षे तद्दुःखदोऽन्यथा ॥ ४ ॥

भा० जन्मकाल में जो ग्रह जिस राशि में स्थित हो वह राशि उस ग्रह [illegible] कहलाती है वह राशि वर्षकाल में उस भाव को प्राप्त हो [illegible] तो जन्मकालीन उस भाव से उत्पन्न शुभ फलों का देने [illegible] वर्ष [illegible] में उक्त स्थान में स्थित ग्रहादि [illegible] फल अशुभ होजाता है ॥ ४९ ॥

इति पंचमभावविचारः ॥

षष्ठभाव विचार ।

[illegible] तनुगतौ [illegible] स्यात्सन्निपातभवभीरुगो- [illegible] पापदृशेऽनिल- [illegible] ॥ ५० ॥

[illegible] स्वामी [illegible] पापग्रहों से पीड़ित होता [illegible] पीड़ित होता है और [illegible] ज्वर, [illegible] रोग, [illegible] पापग्रहों से पीड़ित [illegible] और [illegible] चन्द्रमा के साथ [illegible] होते है ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] स्त्रि [illegible] तुर्ये [illegible] तनुगौ [illegible]
[illegible] ॥

भावार्थः—क्षयरोग नामक रोग होता है यह पूर्व श्लोक से सम्बन्ध रखता है एवं मङ्गल वर्षेश होकर पापग्रहों से पीड़ित व वक्रगति वाला होता हुआ छठे भाव में विराजमान हो तो रुधिर विकार से रोग उत्पन्न होता है, एवं जहाँ जिसके सूर्य वर्ष का स्वामी होकर पापग्रहों से पीड़ित होता हुआ छठे भाव में बैठा हो तो दाह पित्त उत्पन्न होता है, अथवा आठवें घर में उक्त प्रकार से सूर्य विराजमान हो तो नेत्रों से दुःख होता है, तथा शुक्र वर्ष स्वामी होकर पापग्रहों से पीड़ित हो छठे भाव में विराजमान हो और उसको छठे भाव का स्वामी देखता हो अथवा शुक्र छठे भाव के स्वामी से युक्त हो तो श्लेष्मा रोग होता है, एवं चन्द्रमा यदि वर्षेश होकर छठे भाव में विराजमान हो तो कफ सम्बन्धी रोग होता है ॥ ५१ ॥

बुध का फल वर्णन ।

एवं बुधे पापयुतेऽब्दपेशे वातोत्थरोगो जनिलग्ननाथः ।
पापोऽब्दपेन क्षुतदृष्टिदृष्टो रोगप्रदोमृत्युकरः सपापः ॥ ५२ ॥

भावार्थः—इस प्रकार बुध वर्ष का स्वामी छठे घर में विराजमान हो और वक्री ग्रह व पापग्रहों से युक्त हो तो वातरोग पैदा होता है और जो जन्म कालीन लग्न का स्वामी पाप ग्रह होकर वर्तमान वर्ष के स्वामी करके क्षुतदृष्टि से देखा जाता हो तो यह रोग का देने वाला और जो जन्मकालीन लग्न का स्वामी पाप ग्रह होकर वर्षकाल में पापग्रहों से युक्त हो और उसका वर्ष स्वामी खरान निगाह से देखता हो तो वह मृत्यु का देने वाला होता है ॥ ५२ ॥

शनि कृत अरिष्ट योग वर्णन ।

मृत्यार्किभे लग्नगते रूक्षशीतोष्णरुग्भयम् ।
शनीक्षिते याप्यता स्यातसपापे मृत्युमादिशेत् ॥ ५३ ॥

भावार्थ—जिसके जन्म समय शनिश्चर जिस राशि में बैठा हो वह राशि वर्ष समय लग्न में विराजमान हो तो उसके शरीर में रुखाई, जूड़ी, ज्वर आदि रोगों का भय होता है. शनिश्चर जन्म समय जिस राशि में हो वर्ष समय वह राशि उसका पद भया, यदि वर्ष समय शनि उस जगह (पद) को देखे तो वैद्यक शास्त्र में प्रसिद्ध याप्यरोग को करता है तथा जो शनि पापग्रहों से यु

होकर [illegible] पापयुक्त अपने पद को देखे तो वह आदमी मृत्युवश होकर यमालय को जाता है ॥ ५३ ॥

मङ्गल कृत अरिष्ट योग वर्णन ।

एवं भौमे चतुर्दृशा रक्तपित्तरुजोऽग्निभिः ।
ततोऽन्ये बहुला रोगाः शुभदृष्टौ रुगल्पता ॥ ५४ ॥

भावार्थः—एवं मङ्गल जन्म समय जिस राशि में बैठा हो वह राशि यदि [illegible] में [illegible] हो और उसको मङ्गल शत्रु (१ । ४ । ७ । १०) दृष्टि से [illegible] हो तो उस आदमी को रक्तविकार, पित्तदोष से उत्पन्न रोग व अग्नि [illegible] रोग होते हैं, तथा जो उस लग्न राशि को शुभग्रह देखते [illegible] उसके शरीर में थोड़े रोग होते हैं ॥ ५४ ॥

[illegible] अरिष्ट योग वर्णन ।

[illegible] रोगपदः स्वनरभानुनि-[illegible] । [illegible] पतिते मितेऽर्के स्थानेऽथ [illegible] ॥ ५५ ॥

[illegible]

[illegible] वर्णन ।

[illegible] ।
[illegible]

[illegible]

में स्थित हो और मंगल वर्षलग्न में हो तो उनको आलस्य सहित मूर्छा होती है तथा जो चन्द्रयुक्त मंगल लग्न में स्थित हो और पापयुक्त गुरु अशुभ भाव में हो तो उसके रोग का नाश होता है, तथा जन्म समय केन्द्र में पापग्रह हों यदि वर्ष समय में भी पापग्रह लग्न में स्थित हों तो उसको रोग करते हैं और गुरु की नव राशि में स्थित पापग्रह देखते हों तो कफ रोग को उत्पन्न करते हैं ॥ ५६ ॥

दिनेऽब्दप्रवेशो विलग्नेऽब्दमृत्योर्यदा इत्थहद्दागृहाद्योऽधिकारः ।
रवेर्वा कुजस्याग्रपीडाज्वरःस्याद्दृशासौम्यखेटात्थयान्तेसुखाप्तिः

भा०-जो दिन में वर्ष प्रवेश हो और जन्मकाल वर्षकाल के लग्न में सूर्य या मंगल का इत्थशाल वा हद्दा व स्वगृहादि अधिकार हो तो उस वर्ष में ज्वर पीड़ा होती है और जो लग्न में स्थित मंगल को सूर्य को शुभग्रह देखते हों तो वर्ष के अन्त में सुख की प्राप्ति होती है ॥ ५७ ॥

रोग नाश व रोगोत्पत्ति का वर्णन ।

निशि सूतौ वर्द्धमाने चंद्रे भौमेत्थशालतः ।
रुगस्येदेघते मंदेत्थशालाद्व्यत्ययोऽन्यथा ॥ ५८ ॥

भा०—जिसका रात्रि में जन्म हो और शुक्लपक्ष का वर्द्धमान चन्द्रमा वर्षकाल में मंगल के साथ इत्थशाल योग को करता हो तो उसका रोग नाश को प्राप्त होता है, तथा चन्द्रमा जो शनि के साथ इत्थशाल योग को करता हो तो रोग को बढ़ाता है, इससे विपरीत अथवा कृष्णपक्ष में जन्म हो और चन्द्रमा वर्ष में मंगल से इत्थशाल करता हो तो रोग की वृद्धि हो शनि के साथ इत्थशाल करे तो रोग का नाश करे ॥ ५८ ॥

रवावीदृशि विरकेतुयुतेब्दन्निखिलं गदः ।
अधिकारी वली सूतावब्दे केतुज्ञयुक्तथा ॥ ५९ ॥

भा०—तथा अन्य दो योगों को कहतेहैं कि वर्ष में केतु और बुधसे युक्त होकर, सूर्य मंगल के साथ इत्थशाल योग को करें तो वर्ष पर्यन्त रोग करता है, तथा जन्म काल में कोई किसी के अधिकार में हो अथवा

इत्यादि में होके अनिष्ट हो और यदि वर्ष कालमें वही ग्रह केतु, बुध से. युक्त होवे तो वर्षा भर रोग को देता है ॥ ५९ ॥

शूल योग वर्णन ।

चतुर्थेऽस्ते च मुथहा क्षुतदृष्ट्या शनीक्षिता ।
शूलपीड़ा पापखगैर्दृष्टा तत्परिणामजा ॥ ६० ॥

भा०—वर्ष लग्न से चौथे और सातवें स्थान में मुथहा स्थित हो और शनैश्चर शत्रु दृष्टि से देखता हो तो शूल पीड़ा होवै, और उक्त मुथहा को पापग्रह देखते हों तो [illegible] होकर फिर शूल रोग हो जावै ॥ ६० ॥

[illegible] के वश पीड़क योग का वर्णन ।

जन्मभर्क्षान्तगितराशिगते महीजे सूर्यांशगे पिडकशीतलिकादि मानयम । [illegible] न बुधं न मेन्दौ कुष्ठ भगं [illegible] ॥ ६१ ॥

भा० [illegible] गशि में स्थित मंगल [illegible] शीतला आदि [illegible] रोग उत्पन्न होते हैं, एवं जन्म [illegible] राशि में स्थित [illegible] रोग होते हैं ॥६१॥

[illegible] योग वर्णन ।

[illegible] पापान्वितौ [illegible] ।
[illegible] ॥ ६२ ॥

[illegible] स्थान में स्थित हो [illegible], शत्रु पीड़ा आदि [illegible]

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ ६३ ॥

भा०—जिसके वर्षकाल में मुथहा, वर्ष लग्न मुथहा स्वामी वर्ष लग्न स्वामी ये चारों पापग्रहों से युक्त स्थित हों तो रोग को देने वाले होते हैं और जो इनके मध्य में कोई एक ही पापग्रह स्थित हो तो भी उसको रोग देता है, तथा जिसके वर्ष समय छठे स्थान का स्वामी शुभ ग्रह होकर छठे स्थान में स्थित हो तो स्त्री की प्राप्ति जानो यही समरसिंह का मत है कि छठे स्थान का स्वामी शुभ ग्रह होकर छठे भाव में स्थित हो तो भामिनी को रोग की प्राप्ति होती है ॥ ६३)

रोग स्थान योगवर्णन ।

रोगकर्त्ता यत्र राशावंशे स्याद् नयोर्बली ।
तत्स्थानं तस्य रोगस्य वाच्यं राशिस्वरूपतः ॥ ६४ ॥
जन्मषष्ठाधिपे भौमे वर्षे षष्ठगते च रुक् ।
क्रूरेत्थशाले विपुलः शुभदृग्योगतस्तनुः ॥ ६५ ॥

भा०—पूर्वोक्त प्रकार से रोग कर्त्ता ग्रह जिस राशि नवांश में हो और राशि नवांशों के बीच जो राशि बली हो वह राशि उस रोग के राशि स्वरूप (वात पित्त कफ सन्नि.) करके उसका स्थान (घर) कहना चाहिये ६४ जन्म समय छठे भाव का स्वामी मंगल हो, सो वर्ष समय भी ही मंगल छठे स्थानमें स्थित हो तो वह उस प्राणी को रोग करता है, तथा पूर्वोक्त मंगल छठे भाव में स्थित होकर पापग्रहों के साथ इत्थशाल योग करता हो तो बड़ा भारी रोग करता है, और जो उक्त मंगल को शुभ ग्रह देखते हों अथवा वह मंगल ही शुभ ग्रहों से युक्त हो तो थोड़ा रोग होता है ॥ ६५ ॥

इति षष्ठभाव विचारः ॥

सप्तम भाव विचार ।

बली सितोब्दाधिपतिः स्मरस्थः स्त्रीपक्षतःसौख्यकरो विचिन्त्यः
ईज्येक्षितोऽत्यन्तसुखं कुजेनाधिकारिणा प्रीतिकरो मिथः स्यात्

भा०....जिसके वर्षकाल में बलवान शुक्र का स्वामी होकर सातवें भाव में स्थित हो तो उसकी स्त्री के घर से सुख करता है ऐसा जानना, तथा जो पूर्वोक्त शुक्र को गुरु देखें तो वह उस प्राणी के अर्थ बड़ा सुख दे.

और पञ्चाधिकारियों में से किसी अधिकार में स्थित होकर मंगल उक्त शुक्र को देखता हो तो उस प्राणी की भार्या और उसकी दोनों को परस्पर बहुत प्रीति होती है ॥ ६६ ॥

जारता योग और विवाह योग वर्णन ।

बुधेऽचिन्ते जारता स्याल्लघ्व्या मन्देन वृद्धया ।
गुन्द[illegible]ष्ट्या नवा भार्या सन्तितिस्त्वरिततत: । ६७ ॥

भा० –जिसके वर्षकाल में शुक्र वर्ष का स्वामी होकर सातवें स्थान में [illegible] हो और उसको बुध देखे तो उस प्राणी का थोड़ी उमर वाली स्त्री के [illegible] और कर्म [illegible] है, और जो उस शुक्र को शनि देखता हो तो बूढ़ी स्त्री के [illegible] ([illegible]) होता है, तथा जो उस शुक्र को बृहस्पति देखते [illegible] नया विवाह नवीन भार्या के साथ होता है, और उससे अति शीघ्र [illegible] होता है [illegible] इस श्लोक में ([illegible]) ऐसा पाठ है सो [illegible] जानना क्योंकि पूर्व श्लोक में (इज्येक्षितो) ऐसा कह [illegible] है, इस कारण [illegible] नवा भार्या । ऐसा पाठ उचित है, कारण [illegible] गुरुदृष्टिर्व [illegible] संक्रमान:) ऐसे [illegible] है, और ऐसे ही ताजिक मुक्तावलि में भी कहा है ([illegible]) इति ॥ ६७ ॥

[illegible] और [illegible] योग ।

[illegible] दारसौख्यं बलान्विते ।
[illegible] भार्याभाग: मितेन्दुगे । ६८ ॥

[illegible] स्थान में [illegible] है, [illegible] राशि में हो [illegible] स्वामी हो [illegible]

[illegible] योग वर्णन ।

[illegible] ज्योतिषमतादिदं न ।
[illegible] त्रिया: ॥ ६९ ॥

भाषार्थः—वर्षलग्न स्वामी, सातवें घर का स्वामी इन दोनों का परस्पर इत्थशाल हो तो स्त्रीलाभ योग कहना, अर्थात् विवाह द्वारा स्त्री का लाभ होवे, और जो स्त्री सप्तम का स्वामी या सातवें भाव का स्वामी निर्बल (क्रूर ग्रहों के योग वा दृष्टियुक्त, या अस्तङ्गत) हो तो स्त्री को कष्ट देने वाला जानना ॥६९॥

थोड़ा स्त्री सुख और बहुत स्त्री सुख योग ।

नष्टेन्दौ शुक्रपदगे मैथुनं स्वल्पमादिशेत् ।
जन्मशुक्रर्क्षगो भौमः स्त्रीसुखोत्सवकृद्बली ॥ ७० ॥

भाषार्थ—जो वर्ष समय शुक्र विराजमान राशि में अर्थात् शुक्र के साथ निर्बल चन्द्रमा विराजमान हो तो थोड़ा मैथुन करे, तथा जन्म समय शुक्र जिस राशि पर हो उस राशि पर बली मङ्गल होवे तो उसको स्त्री को सुखों के उत्सवों का करने वाला जानना ॥ ७० ॥

स्त्री सुख सम्बन्धी चार योग ।

जन्मास्तपेन्दुपसितेन युतेक्षिते स्यात्स्त्रीसंगमो बहुविलाससुखप्रधानः । केन्द्रत्रिकोणगगुरौ शनिशुक्रभस्थे स्त्रीसौख्यमुक्तमिति हद्दविवाहपोश्च ॥ ७१ ॥

भा०—जिसके वर्ष समय जन्मलग्न से सप्तम घर का स्वामी वर्षेश शुक्र से युक्त हो अथवा दृष्ट होवे तो उसको बहुत विलासों और सुख समूहों से स्त्री का समागम होता है तथा जन्म समय शुक्र स्थित राशि में गुरु हो सो वर्ष में केन्द्र त्रिकोण में विराजमान हो तो स्त्री सुख कहना, एवं वर्षकाल में हद्दा स्वामी जन्मकालीन शुक्र स्थित राशि में विराजमान होकर केन्द्र त्रिकोण में हो तो स्त्री सुख कहना, तथा विवाह सहम का स्वामी जन्मकालीन शुक्राधिष्ठित राशि में विराजमान होकर वर्ष समय केन्द्र त्रिकोण जगह में विराजमान हो तो स्त्रीसुख कहना, यहां चार केन्द्रों में लग्न को छोड़कर ३ अर्थात् ४।७।१० घरों का ग्रहण है यह समरसिंह का वचन है. ग्रन्थकर्त्ता ने फल के साम्य की उक्ति के लाघव से लग्न को कहा है सो बोद्धव्य है, ये चारों योग करे ॥ ७१ ॥

स्त्री क्लेश और विवाह योग ।

अधिकारीपदस्थेऽर्के स्त्रीभ्यो व्याकुलतानिशम् ।

भी लाभ योग जानना, तथा स्त्री सहम को मंगल व शुक्र देखते हों तो निश्चय स्त्री का लाभ होता है ॥ ७५ ॥

विवाह के करने का योग ।

सूतौ वा दारसहमे तद्दृष्टे योषिदाप्यते ।
स्वामिदृष्टं स्त्रीसहमं शुक्रदृष्टं विवाहकृत् ॥ ७६ ॥

भा०—जिसके वर्ष कालमें स्त्री सहम शुक्र और मङ्गल से देखा जाता हो तो उसको स्त्री प्राप्ति होती है, तथा स्त्री सहम अपने अपने स्वामी और शुक्रसे देखा जाता हो तो वह विवाह का करने वाला होता है, और जो स्त्री सहमका स्वामी अपने घरको देखता हो और उसी को शुक्र देखता हो तो अवश्य उस प्राणी का विवाह होता है ॥ ७६ ॥

स्त्री सुख प्राप्त योग ।

सूतौ द्यूनाधिपे वर्षे सहमेशे स्त्रियाः सुखम् ।
जन्मास्तपेन्थिहानाथवर्षेशाःखे द्युने तथा ॥ ७७ ॥

भा०—जिसके जन्म समय सप्तम घरका स्वामी वर्ष कालमें स्त्री सहमका स्वामी हो तो उसको स्त्री से सुख प्राप्त होता है, तथा जन्म लग्न से सातवें भावका स्वामी और वर्षमें मुथहा स्वामी, वर्ष स्वामी ये तीनों दशम स्थान में तथा सातवें घरमें हों तो भी उसको स्त्री से सुखको प्राप्ति होती है ॥ ७७ ॥

विदेश गमन योग वर्णन ।

मुथहातो द्यूनसंस्थः स्वगृहोगतः शशी ।
विदेशगमनं कुर्यात् क्लेशः पापेक्षणाद्भवेत् ॥७८॥

भा०—जो वर्ष कालमें अपने घर व अपने उच्च में प्राप्त चन्द्रमा मुथहासे सातवें स्थान में स्थित हो तो उस प्राणी के अर्थ विदेश गमन कराता है, यदि उक्त चन्द्रमा को पापग्रह देखते हों तो उसको कष्ट होता है ॥ ७८ ॥

इति सप्तमभाव विचारः ॥

अष्टम भाव विचारः ॥

भौमेऽब्दपे क्रूरहतेऽयसा घातो बलोज्झिते

अग्निभीरग्निभे क्रूरनराद्विपदभे मृतिः ॥७९॥
वियत्यब्दनिशामात्यरि पुनस्करजं भयम् ॥
तुर्ये मातुः पितृव्याद्वा मातुलात्पितृतो गुरोः ॥८०॥

भा० — जो वर्ष कालमें मंगल वर्ष का स्वामी होता हुआ क्रूर ग्रहों से [illegible] निर्बल होकर [illegible] किसी घरमें स्थित हो तो उसके अङ्ग में लोहे से [illegible] होता है, [illegible] मंगल अग्नि [illegible] राशिमें हो तो अग्नि से भय होता है, तथा [illegible] राशि में स्थित हो तो उग्र [illegible] वालों (चौरादिकों) से मृत्यु होवै [illegible] चौरादि जनों करके मारा जावै । ७९ । तथा मंगल वर्षेश हो और [illegible] क्रूर ग्रहों से पीडित होकर दशम भावमें स्थित हो तो [illegible] राजा [illegible], शत्रु और चोरों से भय कहना, और जो पूर्वोक्त मंगल [illegible] स्थित हो तो उसको माता, चाचा, मामा, पिता और गुरु [illegible] भय होवै ऐसा कहना ॥ ८० ॥

[illegible] मृत्यु योग वर्णन ।

[illegible]निशाग्नेद्रित्थशालिन इमे निधन [illegible] । [illegible]मये मृतिर्व तत्र सार्ककुजे नृपभयं [illegible] ॥ ८१ ॥

[illegible] वर्ष [illegible], मृत्यु का स्वामी और वर्ष स्वामी ये [illegible] योग करते होवें तो वे मृत्यु [illegible] ग्रह की दशा में [illegible] होता है तथा जिसको वर्ष प्रवेश हो और [illegible] है ॥ ८१ ॥

[illegible] मृत्यु योग वर्णन ।

भा०—जिसके जन्म समय सूर्य शुक्र के साथ मुथशिह योग करे वर्ष समय पंचाधिकारियों में से किसी अधिकार में प्राप्त होकर केन्द्र १।४।७।१० में स्थित होय, तो राजा से और रोग से भय होवे तथा जन्म समय जिस राशि में मंगल हो वर्ष में उस राशि पर गुरु अधिकारी होकर स्थित हो तो रोग होता है, तथा वह अधिकारी होकर मंगल क्रूर दृष्टि से देखा जाता हो तो शरीर में विकार उत्पन्न होवे, तथा पंचाधिकारी में गुरु मंगल से देखा जाता हो और मंगल की राशि में स्थित हो अथवा युद्ध में मंगल से पराजित हो तो राजद्वार में फंसकर बंधन में पड़े मृत्यु पाता है ।

रोग योग वर्णन ।

भौमस्थानेऽधिकारिन्दौ शुभं नृपभयं रुजः ।
मन्दोधिकारी खे लोहहतेः पीड़ाकरः स्मृतः ॥ ८३ ॥

भा०—जन्म समय मंगल जिस राशि में हो उस राशि पर वर्ष समय अधिकार युक्त चंद्रमा स्थित हो तो शुभ राज भय और रोग होता है, तथा जो शनैश्चर किसी (पंचाधिकारी) अधिकार में प्राप्त होकर वर्ष लग्न से दशम स्थान में स्थित हो तो लोह के प्रहार से पीड़ा करने वाला जानना ऐसा पूर्वाचार्यों ने वर्णन किया है ॥ ८३ ॥

अन्य मृत्यु योग

भौमेष्टमे भयं वह्नेः प्रहारो वा नृपाद्भयम् ।
आरे खस्थे चतुष्पद्भ्यः पातो दुःख रुजोऽसृजः ॥ ८४ ॥

भा०—जिसके वर्ष समय वर्ष लग्न से आठवें स्थान में मंगल स्थित हो उसको अग्नि से भय, हथियार से घाव और राजा से भय होता है तथा वर्ष लग्न से दशम स्थान में मङ्गल स्थित हो तो वह किसी चौपाये घोड़ा आदि से गिर कर दुःख को प्राप्त होवे और लोहू के विकार से रोग उत्पन्न होवे ।

धन नाश और विवाद योग का वर्णन ।

वित्ताष्टगेज्यो धनहा यद्यब्देशोऽशुभेक्षितः ।
मन्दे द्यूने दुर्वचनापवादकलिभर्त्सनम् ॥ ८५ ॥

भा०—यदि वर्ष का स्वामी बृहस्पति होकर दूसरे वा आठवें

विराजमान हो और उसको पापग्रह देखते हों तो वह धन का नाश करनेवाला होता है, तथा वर्षलग्न से सातवें घर में शनि विराजमान हो तो दुर्वचन, अपवाद कलह और तिरस्कार इन सबों को प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥

महा अल्प मृत्यु योग ।

पतिते ज्ञे क्रूरदृष्टारेत्थशाले मृतिं वदेत् ।
कुजदृष्टास्थिते नाशः सौम्यदृष्ट्या शुभं भवेत् ॥ ८६ ॥

भा० — जिसके वर्षकाल में बुध पतित होकर क्रूर दृष्टि से मङ्गल के साथ इत्थशाल योग को करै तो विद्वान् उसका मरण कह देवें, और जो उक्त बुध मङ्गल के दृष्टा में विराजमान हो तो द्रव्यादिकों का नाश होता है, यदि इन दोनों योगों में बुध को शुभग्रह देखें तो शुभ कहना ॥ ८६ ॥

कलह योग ।

लग्नाधिपे नष्टदग्धे गोपिकादोऽशुभान्विते ।
[illegible]मन्दगमनो जीवो नाधिकारी कलिः प्रभुः ॥ ८७ ॥

[illegible] वर्षकाल में [illegible] नष्ट वा दग्ध होता हुआ दग्ध (अस्तङ्ग) [illegible] और अन्य [illegible] में कलह होता है, [illegible] और वर्षकाल में पञ्चाधिकार [illegible] कलह हो ॥ ८७ ॥

[illegible] और प्रवास योग ।

[illegible] प्रभुत्वर्शनात् ।
[illegible] निर्दिशेत् ॥ ८८ ॥

दग्धो जन्मांगपो वर्षेऽष्टमो रोगकली दिशेत् ॥ ८६ ॥

भावार्थः—जिसके वर्षकाल में वर्ष का स्वामी मंगल से हत (पीड़ित) होवे तो उसके वैरियों व कुटुम्बियों से कलह होता है, और संग्राम में भय होता है, तथा जिसके जन्मलग्न का स्वामी वर्ष में अस्त होकर आठवें घर में स्थित हो तो उसको रोग और कलह के कारण पीड़ा कष्ट देवें ॥ ८६ ॥

वाद कलह योग वर्णन ।

सूत्यब्दयोरधिकृतो भौमस्थाने गुरुर्हतः ।
पापैर्वादः स्फुटोप्येवं तादृशीन्दौ शनेः पदे ॥ ९० ॥

भावार्थ—जन्मकाल और वर्षकाल में गुरु अधिकारी होकर जन्म कुण्डली में स्थित मंगल की राशि में विराजमान हो और पापग्रहों से पीड़ित हो तो लोगों के साथ स्फुट (प्रगट) वाद होता है, तथा जन्मकाल और वर्षकाल में अधिकारी होकर चन्द्रमा जन्म समय में शनि जिस राशि में हो उस राशि पर विराजमान हो और पापग्रहों से हत हो तो प्रगट कलह होता है ॥ ९० ॥

विदेश गमनादि योग वर्णन ।

सूत्यब्दयोरधिकृतो चन्द्रे बुधपदे हते ।
क्रूरैर्विदेशगमनं वादः स्याद्विमनस्कता ॥ ९१ ॥

भा०… जिसके जन्मकाल और वर्षकाल में अधिकार को प्राप्त चन्द्रमा जन्म समय में बुध जिस राशि में विराजमान हो उस राशि पर बैठा हो और पापग्रहों से पीड़ित होवे तो वह मनुष्य विदेश गमन में अन्य जनों के साथ विवाद (झगड़ा) करने से दुष्ट स्वभाव वाला होजावे ॥ ९१ ॥

शस्त्र अस्त्र मृत्यु योग ।

मेषे सिंहे धनुष्यारेऽब्दपे रन्ध्रेऽसितो भयम् ।
मृतौ मृतीशलग्नेशौ मृत्युदौ पापदृग्युतौ ॥ ९२ ॥

भा०…जिसके वर्षकाल में मेष, सिंह और धन इन राशियों में से किसी राशि में मंगल बैठा हो और वर्षस्वामी वर्षलग्न से आठवें घरमें बैठा हो तो खड्ग से भय होता है, और जो मेष, सिंह, धन इन राशियों में से कोई २

[illegible] घर में हो, वहीं का स्वामी होकर मँगल स्थित हो तो खड्ग से भय हो, [illegible] लग्न से आठवें भाव का स्वामी आठवें घर में विराजमान हो और [illegible] हो, और पापग्रहों की दृष्टि हो या पापग्रहयुक्त [illegible] ॥ ९२ ॥

सामान्य वर्ष योग ।

यच्चर्क्षे जन्मनि कुजः सोऽब्दलग्नपगो यदा ।
[illegible] वर्षपनिर्नष्टबलस्तत्र न शोभनम् ॥ ९३ ॥

[illegible] मंगल जिस राशि में हो वह राशि यदि वर्षलग्न से हो और [illegible] होकर विराजमान हो तो वर्ष पर्यंत [illegible] ॥ ९३ ॥

[illegible] में भय और गिरने का योग ।

[illegible] भौमयुते स्याष्टमे वाहनाद्भयम् ।
[illegible] भौमेऽष्टमे तु पतनं वाहनाद्वदेत् ॥ ९४ ॥

[illegible] मंगल से युक्त होकर [illegible] विराजमान हो तो वाहन (सवारी) से भय होता [illegible] विराजमान हो तो [illegible] ॥ ९४ ॥

[illegible] योग ।

[illegible] मूर्तिः ।
[illegible] मूर्तिः ॥ ९५ ॥

अन्य महा मृत्यु योग वर्णन ।

पुण्यसद्मेश्वरः पुण्यसद्मादष्टमगो यदा ।
मृत्यष्टमेशः पुण्यस्थो मृतिदः पापदृग्युतः ॥ ९६ ॥
मृत्यष्टमगतो राशिः पुण्यसद्मनि नाथयुक् ।
अब्दलग्नादष्टमर्क्षं चेदित्थं स्यान्मृतिस्तदा ॥ ९७ ॥

भा०—जो पुण्य सद्मका स्वामी पुण्य सहम से अष्टम स्थान में प्राप्त हो और पापग्रहों से युक्त दृष्ट हो, तो मरण होता है, तथा जन्म कालमें आठवें स्थानका स्वामी वर्ष समय पुण्य सहम में स्थित हो और पापदृष्ट वा युक्त हो तो मृत्यु को देने वाला जानना ॥ ९६ ॥ जन्म समय लग्न से आठवीं राशि पुण्य सहममें स्थित होकर जो अपने स्वामी से युक्त हो तो मृत्यु होती है ॥९७॥

पुण्यसद्माशुभाक्रान्तं मृतीशोन्यारि रन्ध्रगः ।
मुथहेशोऽब्दपो वापि मृत्युं तत्र विनिर्दिशेत् ॥ ९८ ॥
सक्रूरे जन्मपे मृत्यौ मृतिश्चेदित्थहाकियुक् ।
भौमे क्षुतेक्षणात्तत्र मृत्युः स्यादात्मघाततः ॥९९ ॥

भा०—जिसके वर्ष कालमें पुण्य सहम पापग्रहों से युक्त हो, और यदि आठवें स्थान का स्वामी बारहवें, छठे, आठवें इन किसी स्थानमें ·स्थानों में से स्थित हो तो मृत्यु कहना, तथा मुथहाका स्वामी और वर्ष का स्वामी पापग्रह से युक्त होकर बारहवें, छठे और आठवें इन स्थानों में से किसी स्थानमें स्थित हो तो उसके मृत्यु को कह देवे ॥ ९८ ॥ वर्ष कालमें जन्म लग्नका स्वामी पापग्रहों से युक्त होकर आठवें स्थान में स्थित हो तो मृत्यु होती है, तथा यदि मुन्था जिस किसी स्थान में शनैश्चर से युक्त स्थित हो और उसको मङ्गल क्षुत् (१४ । ७ । १०) स्थान दृष्टि से देखता हो तो इस योग में उस प्राणीकी आत्मघात से मृत्यु कहना ॥ ९९ ॥

मन्दोऽष्टमे मृतीशेत्थशाला मृत्युकराः स्मृताः ।
शुभेत्थशालात्सर्वेऽपि योगा नाशुभदायकाः ॥१००॥

मृतिरन्ध्रपतिर्मन्दोऽष्टमोऽब्दे लग्नपे न चेत ।
इत्थशाली क्रूरदृशा तत्काले मृत्युदायकः ॥ १०१ ॥

भा० - वर्ष काल में शनैश्चर आठवें स्थान में स्थित होके आठवें स्थान के स्वामी के साथ इत्थशाल योग को करे तो उसको मृत्युकारक होता है, तथा पूर्वोक्त सम्पूर्ण मृत्यु योगों में परिहारक ग्रहों के साथ इत्थशाल योग होवें तो परिहारक ग्रह अशुभ फलके देने वाले नहीं होते हैं किन्तु शुभ फलको देते हैं ॥ १०० ॥ जन्म समय अष्टम स्थान का स्वामी शनैश्चर वर्षकाल में आठवें स्थान में स्थित होता हुआ वर्ष लग्न स्वामी के साथ क्रूर दृष्टि (१ । ४ । ७ । १०) से इत्थशाल योग को करता हो तो उसी [illegible] मारने के [illegible] को देने वाला होता है ॥ १०१ ॥

अष्टम भाव विचारः ।

(नवम भाव विचारः)

यात्रा लाभ योग वर्णन ।

[illegible] त्रिनवगे [illegible] बलान्विते ।
[illegible] मार्गे स्वर्गे कार्यं स्थिरं ततः ॥१०२॥
[illegible] मार्गगोऽम्बदः ।
[illegible] स्यात्सर्वाभिरतो भवेत् १०३॥

अन्ते वा कुगतिः सौम्ये देवयात्रातथाविधे ॥ १०४ ॥
क्रूरार्दिते कुयानं स्यादगुरावेवं विचिन्तयेत् ।
इत्थशाले लग्नधर्मपत्योर्यात्राप्यचिन्तिता ॥ १०५ ॥

भावार्थः- जो गुरु वर्ष का स्वामी होता हुआ वर्षलग्न से तीसरे नवमें घर में विराजमान हो तो उसको मार्ग में सुख होता है और जो पूर्वोक्त शुक्र वक्री हो अथवा मार्ग में अनिष्ट ग्रह से अस्त हो जावे तो उसको कुत्सित (बुरा) गमन होता है, अथवा यात्रा करने से कार्य लाभ नहीं होता, तथा बुध वर्षेश होता हुआ, बलवान होता हुआ वर्षलग्न से तीसरे या नवम घर में विराजमान हो तो किसी देवता के उद्देश से गमन होता है यही तीर्थ यात्राका उपलक्षण जानना ॥ १०४ ॥ और जो वह गुरु, बुध पापग्रहों से पीड़ित या युक्त हो तो यात्रा कुत्सित (अच्छा नहीं) कहना, एवं गुरु वर्षेश बली होकर वर्षलग्न से तीसरे, नवमें घर में विराजमान हो तो देव यात्रा हो और जो गुरु वर्षेश पाप पीड़ित या पाप युक्त हो तो कुयान (नेष्ट गमन) होता है तथा वर्षलग्न स्वामी के साथ नवम भाव स्वामी का इत्थशाल योग होवे तो अचिन्तित (नहीं स्मरण की हुई) यात्रा होती है ॥ १०५ ॥

चिन्तित यात्रा योग वर्णन ।

लग्नेशो धर्मपे यच्छन्स्वं महश्चिन्तिताध्वदः ।
एवं लग्नाब्दपयोगे मुथहांगपयोरपि ॥ १०६ ॥

भावार्थ—जो वर्षलग्न स्वामी नवमभाव स्वामी के साथ इत्थशाल योग करे तो वह उस आदमी के अर्थ चिन्तित गमन को देता है, एवं वर्षलग्नस्वामी वर्षेश के साथ इत्थशाल योग करे, तथा मुथहा स्वामी वर्षलग्न स्वामी के साथ मुथशिल योग करे तो भी चिन्तित गमन को देवे ॥ १०६ ॥

समीचीन यात्रा योगों का वर्णन ।

गुरुस्थाने कुजे धर्मे सद्यात्रा भृत्यवित्तदा ।
ज्ञस्थाने लग्नपो भौमो दृष्टः सद्यानसौख्यदः ॥ १०७ ॥
स्वस्थानगो वा बलवांल्लग्नदर्शी सुयानदः ।

सफल विदेश यात्रा योगों का वर्णन।

द्यूनेन्थिहा धर्मे इन्दौ सबलेर्थाद्विदेशजः ।
वर्षेशो बलवान्पापो युतः केन्द्रेऽधिकारवान् ॥ १११ ॥
अधिकारे गतिं संख्ये सैनापत्येऽपि वा वदेत ।
एवं बुधे कुजे जीवयुतेर्काग्निर्गते पुनः ॥ ११२ ॥
परसैन्योपरि गतिर्जयः ख्यातिसुखावहः ।
जीवान्नवमगे भौमे शुभा यात्रा नृणां भवेत ॥ ११३ ॥

भा०—जिसके सातवें स्थान में बुधग्रह और नवमे स्थान में बलसहित चन्द्रमा हो तो विदेश का लाभ कारक मार्ग जानना, तथा वर्ष का स्वामी बली व पापग्रहों के योग से रहित, पंचाधिकारियों के बीच अधिकारी होकर केन्द्र १।४।७।१० स्थान में स्थित हो ॥ १११ ॥ उसका किसी अधिकार में गमन होता है अथवा रणभूमि व सेना के स्वामित्व में गमन होता है इसी प्रकार बुध और मंगल बलिष्ठ व उदित व बृहस्पति से युक्त होकर केन्द्र में स्थित हों तो ॥ ११२ ॥ पर सेना के ऊपर गमन (धावा करना) होता है, कि जिससे वह मनुष्य जय, ख्याति (प्रसिद्ध) और सुखको प्राप्त होता है, वर्ष कालमें बृहस्पति से नवम स्थान में मंगल स्थित हो तो मनुष्यों की शुभ यात्रा होती है ॥ ११३ ॥

इति नवम भाव विचारः ।

दशम भाव विचारः ।

(राज्य सुख धन लाभ योग)

सबलेब्दपतौ खस्थे राज्यार्थसुखकीर्तयः ।
स्थानान्तराप्तिरन्यस्मिन्केंद्रे गृहसुखाप्तयः ॥ ११४ ॥
इत्थं बली रविर्भूस्थः पूर्वार्जितपदाप्तिकृत् ।
एकादशेस्मिन्सख्यं स्यान्नृपामात्यगणोत्तमैः ॥११५॥

भा०—जो बलसहित वर्षका स्वामी दशम स्थान में स्थित हो तो

राज्य, धन, सुख, और कीर्ति ये सब प्राप्त होते हैं, तथा बलवान वर्षेश [illegible] को छोड़ अन्य केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में स्थित हो तो दूसरे घर की [illegible] सुख आदि की प्राप्ति से युक्त होता है ॥ ११४ ॥ इसी प्रकार [illegible] का स्वामी होकर वर्ष लग्न से चौथे स्थान में स्थित हो तो वह [illegible] (स्थान) की प्राप्ति का करने वाला होता है, तथा ऐसा [illegible] लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह राजा और उत्तम मन्त्रीगणों से [illegible] ॥ ११५ ॥

राज्य प्राप्ति योग और राजा से धन का योग ।

[illegible]स्थानेस्थिता लग्ने [illegible] वा राज्यसिसौरव्यदा ।
[illegible] पापसंयुक्तौ भूपाद्धनवधं दिशेत् ॥ ११६ ॥

[illegible] राशि [illegible] लग्न में हो और मुथहा [illegible] हो और मुथहा स्थित हो तो उस प्राणी [illegible] राशि (तुला) में प्राप्त और [illegible] स्थान में स्थित हो तो राजा की आज्ञा से [illegible]) करे ॥ ११६ ॥

[illegible] योग वर्णन ।

[illegible] स्थाननाशो नृपाश्रयः ।
[illegible] ॥ ११७ ॥

वर्षेशे राज्यसत्समेऽर्केशात्यले महानृपः ॥ ११८ ॥

भा०—जो वर्षकाल में दशम भाव का स्वामी, वर्ष लग्न स्वामी, और वर्षेश इन तीनों का परस्पर इत्थशाल योग होवे तो राज्य का देने वाला होता है, तथा वर्षेश राज्य भवन में स्थित हो और सूर्य के साथ इत्थशाल योग को करे तो बड़ा भारी राजा होने का योग जानना ॥ ११८ ॥

द्रव्य नाश योग ।

शनिस्थाने कुजः पश्यन्मुथहां पापकर्मतः ।
नृपभीतिं वित्तनाशं दद्याद्दशमगो यदि ॥ ११९ ॥

भा०—जिसके जन्म समय शनि स्थित राशि पर वर्ष समय मंगल वर्ष लग्न से दशम घर में स्थित हो और मुथहा देखता हो तो उस मनुष्य को पाप कर्म से राज भय और धन नाश को देता है ॥ ११९ ॥

पापवृद्धि और पुण्य वृद्धि योग ।

ईदृशे त्रिनवस्थेऽस्मिन्दग्धे नष्टेघसंचयः ।
मंदोब्दपोऽधिकारी त्रिधर्मगोधर्मवृद्धियः ॥ १२० ।

भा०—जन्म समय शनि जिस राशि में स्थित हो वर्ष समय उस राशि पर स्थित हो और अस्तंगत व नष्ट बल होता हुआ वर्ष लग्न से तीसरे व नववें स्थान में स्थित हो तो उसको पापवृद्धि से क्लेश होता है तथा शनि वर्ष का स्वामी और अपने उक्त अधिकारों में अधिकारी होकर वर्ष लग्न से तीसरे व नववें स्थान में स्थित हो तो धर्म की वृद्धि होवे, जिससे कि उसको सुख प्राप्त होता है ॥ १२० ॥

दुष्ट योग और शुभ योग वर्णन ।

तस्मिन्दग्धे विनष्टे च पापकृद्धर्मनिंदकः ।
ईदृशीदृक्फलं सूर्ये गुरावित्थं नयार्थभाक ॥ १२१ ॥

भा०—तहां दुष्ट योग को प्रथम कहते हैं, जिसके वर्षकाल में वह शनैश्चर वर्ष का स्वामी होकर अधिकारी व दग्ध (अस्तंगत) वा बल रहित होकर वर्ष लग्न से तीसरे वा नववें स्थान में स्थित हो तो वह मनुष्य पापी व

[illegible] निन्दक होता है तथा सूर्य वर्ष का स्वामी होकर अधिकारी व अस्तंगत व [illegible] होता हुआ वर्ष लग्न से तीसरे वा नवमें स्थान में स्थित हो तो भी इस प्राणी के [illegible] पूर्वोक्त फल कहना । अब शुभ योग कहते हैं कि [illegible] [illegible] वर्ष का स्वामी होके अधिकारी व दग्ध वा बल रहित होता हुआ वर्ष लग्न से तीसरे वा नवमें घर में स्थित हो तो वह पुरुष नीति मार्ग [illegible] को पाता है ॥ १२१ ॥

मुथहा [illegible] शुभ फल ।

तत्रास्था मुथहा पुण्यागमं पापं खलाश्रयत् ।
[illegible] रवौ [illegible] वर्षे मुथशिलं यदि ॥ १२२ ॥
लग्नाधिपेन राज्याप्तिर्मका वीर्यानुमानतः ।
[illegible] दग्धौ धर्मराज्यच्च[illegible] ॥ १२३ ॥

[illegible]—[illegible] तीसरे वा नवमें घरमें मुथहा होतो [illegible] [illegible] उक्त मुथहा को पापग्रह देखते हों वा पाप ग्रहों से [illegible] होता है [illegible] जन्म लग्न से दशम घर का स्वामी [illegible] और [illegible] लग्न स्वामी के [illegible] [illegible] बल प्रमाण [illegible] स्वामी धर्म [illegible] ॥ १२३ ॥

इति [illegible] ।

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ १२४ ॥

[illegible]

शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट होकर बुध बलसहित वर्ष लग्नमें स्थित हो तो लिखने पढ़ने से लाभ होता है ॥ १२४ ॥

अशुभ फल वर्णन ।

अस्मिन्षष्ठाष्टन्त्यगते सक्रूरे नीचकर्मकृत् ।
क्रूरेक्षणे न वा लाभोऽस्तंगते लिखनादितः ॥१२५॥

भा०—पूर्वोक्त वर्षेश्वरो बुध वर्ष लग्नमें छठे आठवें बारहवें इन स्थानों में से किसी स्थानमें स्थित हो और पापग्रहों से युक्त हो तो वह पुरुष नीच कर्म करने वाला होवै अथवा पूर्वोक्त बुध वर्षेश होके छठे, आठवें बारहवें स्थान में स्थित हुआ पापग्रहों से देखा जाता हो या अस्तन्गत हो तो लिखने पढ़ने से लाभ नहीं होवै ऐसा कहना ॥ १२५ ॥

शुभा शुभ योग वर्णन ।

जीवेऽब्दपे क्रूरहते लग्ने हानिर्भयं नृपात् ।
अस्मिन्नधिकृन्ते द्यूने व्यवहाराद्धनाप्तयः ॥ १२६ ॥

भा०—जो बृहस्पति वर्षेश हो और पापग्रहों से पीड़ित होके वर्ष लग्न में स्थित हो तो द्रव्य की हानि और राजा से भय होता है तथा बृहस्पति वर्षेश उच्चाधिकार आदिको प्राप्त होके वर्ष लग्नसे सातवें घर में स्थित हो तो वाणिज्य से धनका लाभ होवे ॥ १२६ ॥

प्राप्ति योग वर्णन ।

लग्नायेशेत्थशालेस्याल्लाभःस्वजनगौरवम् ।
सर्वेपि लाभे वित्ताप्त्यै सबला निर्बला न तु ॥ १२७ ॥

भा०—जिसके वर्षकाल में लग्न स्वामी और लाभ स्वामी इन दोनों का परस्पर इत्थशाल योग होवै तो उस मनुष्य को लाभ और अपने जनों में गौरव (बड़ाई) होवै है, तथा यदि सम्पूर्ण ग्रह बली होकर लाभ स्थान में स्थित हो तो द्रव्यकी प्राप्ति जानना और जो सम्पूर्ण ग्रह बलहीन होकर लाभ घर में स्थित हों तो द्रव्य प्राप्ति के अर्थ नहीं जानना ॥ १२७ ॥

खत्ता स्थित द्रव्य प्राप्ति योग ।

सवीर्यो ज्ञः समुथहो लग्नेऽर्थसहमे शुभाः ।
तदा निखातद्रव्यस्य लाभः पापदृशा न तु ॥१२८॥

भा०—जिनके वर्ष काल में बलवान मुथहा सहित बुध वर्ष लग्न स्थित हो और शुभग्रह द्रव्य सहम में स्थित हो तो उस प्राणी को [illegible] द्रव्य का लाभ होता है और उक्त योग पर पापग्रहों की दृष्टि हो [illegible] में गड़े हुए द्रव्य का लाभ कदापि नहीं होता है ॥ १२८ ॥

इति लाभ भाव विचारः ।

अथ व्यय भाव विचारः ।

[illegible] बलो व्ययमृतिस्थौ यद्राशिगौ तदनुसारि [illegible]। षष्ठेऽब्दपे भृगुसुतेऽथ विनष्टवीर्ये दृष्टे खलैः [illegible] [illegible] ॥ १२९ ॥

[illegible] चतुरंघ्रिभमथान्त्यमित्यर्थादमुदितं फलमब्दना[illegible] [illegible] राशिगो [illegible] स्याद्व्याकुलत्व मशुभा[illegible] [illegible] ॥ १३० ॥

रिपुओं का नाश और मनमें व्याकुलता होती है अथवा उक्त मंगल चन्द्रमा सहित पापग्रहों से पीड़ित दशम भाव में स्थित हो तो पूर्वोक्त फल कहना यहां इस श्लोक में (व्यर्थे कुजे शोभनगे) यह पाठ ग्रन्थकार ने अपनी बुद्धि से आदर मान रक्खा परन्तु मेरे (व्यर्थे कुजे शनि युते) यह पाठ उचित है, क्योंकि समर सिंह ने कहा है कि (शनियुजि कुजे गगने चेतो व्याकुलत्वं तुरंग नाशश्च) शनि से युक्त वर्षेश मंगल दशम स्थान में हो तो चित्त की व्याकुलता और घोड़ों का नाश होता है एवं ताजिकालंकार में भी कहा है (भौमे मन्दयुते स्थिते च दशमे व्याद्याकुलत्वं मनःपश्वादीनां क्षतिः इतिः) मंगल वर्ष का स्वामी होता हुआ शनैश्चर युक्त दशम स्थान में हो तो व्याकुलता और घोड़ों का क्षय होता है ॥ १३० ॥

षष्ठे रवौ खलहते चतुरंघ्रिभस्थे भृत्यैः समं कलिरथाष्टमरिष्फ-गेऽपि । मन्देऽब्दपे बलयुते रिपुरिष्फसंस्थे भूवासनद्रुमजलाशयैर्निर्मितिश्च ॥ १३१ ॥

भा०—जो सूर्य वर्ष का स्वामी होके पाप ग्रहों से युक्त चतुष्पद राशि में स्थित छठे स्थान में हो अथवा आठवें बारहवें स्थान में स्थित हो तो सेवकों के साथ कलह होवे, तथा वर्ष का स्वामी बल सहित शनि हो और छठे बारहवें स्थान में स्थित हो तो उसको उजाड़ भूमि में बसाता हुआ बाग कुआ, तालाब को निर्माण करता है अर्थात् वह प्राणी उजाड़ भूमि में ग्राम को बसावे और कहीं बाग कुआ तालाब बनवावे ॥ १३१ ॥

दशवें स्थान को प्राप्त हुए ग्रहों का फल ।

स्वर्क्षोच्चगे कर्मणि सूर्यपुत्रे नैरुज्यमर्थाधिगमश्च जीवे ।
सूर्ये नृपाद्वाऽब्दाबलात्कुजेऽर्थो बुधे भिषग्ज्योतिषकाव्यशिल्पैः ॥

भा०—जिसके वर्ष काल में शनैश्चर वर्षेश होता हुआ अपनी राशि व अपने उच्च राशि में स्थित हो और वर्ष लग्न से दशम घर में हो तो शरीर आरोग्यता और धन की प्राप्ति जानना, एवं बृहस्पति वर्षेश होकर अपनी राशि व उच्च राशि में होके दशम भाव में हो तो आरोग्यता व धन मिलता है एवं सूर्य वर्षेश होता हुआ अपनी राशि व अपने उच्च राशि मे होके दशम

[illegible] में विराजमान हो तो राजा से धन मिलता है, एवं मङ्गल वर्षेश होता हुआ अपने राशि व उच्च में विद्यमान होकर दशम जगह विराजमान हो तो उसको [illegible] से धन मिलता है, तथा बुध वर्षेश होता हुआ अपने राशि या उच्च राशि में विद्यमान होके दशम जगह विराजमान हो तो वैद्यकी, ज्योतिष, [illegible] कारीगरी आदि करके धन लाभ होता है ॥ १३२ ॥

निर्बल शनि का फल ।

मन्देऽब्दपे गतबले नैराश्यं दौःस्थ्यमादिशेत ।
[illegible]ऽब्देशे शशिस्थाने मन्देऽब्दजनुषोर्हते ॥ १३३ ॥
सर्वकर्मसु वैकल्यं वक्रेऽस्ते च तथा पुनः ।
[illegible]कर्मगृहमनाथाः शनियुतेक्षिताः ॥ १३४ ॥

[illegible]—जो शनिश्चर वर्ष का स्वामी होता हुआ बलहीन हो वर्षलग्न [illegible] में विराजमान हो तो वह मनुष्य आशाहीन होकर चंचल चित्त को [illegible], [illegible] स्वामी [illegible] हो और शनिश्चर जन्म और वर्ष [illegible] विराजमान हो, उस राशि में बलरहित होकर [illegible] वह मनुष्य सम्पूर्ण कामों के करने में विकल और सामर्थ्य [illegible] या अस्तङ्गत हो तो भी उक्त फल कहना [illegible] और दशम [illegible], कर्मगृहेश ये तीनों शनिश्चर से [illegible] ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

[illegible] का फल ।

[illegible] च [illegible] ।
[illegible] तथा ॥ १३५ ॥

[illegible] निर्बल होकर वर्षलग्न [illegible] दशम [illegible] का स्वामी [illegible] में बैठा [illegible]

इति व्ययभावविचारः ।

वर्ष के सामान्य शुभाशुभ फल ।

यत्र भावे शुभफलो दुष्टो वा जन्मनि ग्रहः ।
वर्षे तद्भावगस्तादृक् तत्फलं यच्छति ध्रुवम् ॥ १३६ ॥

भा०—जन्म समय जिस भाव में शुभ व अशुभ फल का देने वाला जो कोई ग्रह हो यदि वही ग्रह वर्षलग्न में उसी के समान होकर उसी भाव में विराजमान हो तो उस भाव के शुभ वा अशुभ फल को निश्चय करके देता है ॥ १३६ ॥

वर्ष में ग्रहों का फल पाक वर्णन ।

चेज्जन्मनि स्युः सबला विवीर्या वर्षे शुभं प्राक्चरमे त्वनिष्टम् ।
दद्यु विलोमं विपरीततायां तुल्यं फलं स्यादुभयत्र साम्ये ॥१३७॥

भा०—जन्म समय में जो ग्रह बलवान होकर वर्ष समय में बलहीन होवें तो वह पूर्वार्ध में शुभ और उत्तरार्ध में अशुभ फल देवे हैं इससे विपरीत हो तो विपरीत फल जानना, अर्थात् जन्मकाल में निर्बल हो और वर्ष काल में सबल हो तो वर्ष के पूर्वार्ध में अनिष्ट और उत्तरार्ध में अच्छा फल जानना तथा जो समान बल हो तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त समान फल होता है, जो जन्म समय वर्ष समय श्रेष्ठ बली हो तो सालभर श्रेष्ठ फल, हीन बली हो तो साल-भर अनिष्ट फल देते हैं इस प्रकार ग्रहों से उत्पन्न फल उन ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में कहना चाहिये ॥ १६७ ॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षतन्त्रे तन्वादिद्वादशभावविचारोनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ दशाफलाध्यायः षष्ठः प्रारभ्यते ।

पूर्ण बल युक्त लग्न का फल ।

हेममुक्ताफलद्रव्यलाभमारोग्यमुत्तमम् ।
कुरुते स्वामिसन्मानं दशालग्नस्य शोभना ॥ १ ॥

मध्यम बलवाली सूर्य की दशा का फल ।

दशारवेर्मध्यबलस्य पूर्वमिदं फलं मध्यममेव दत्ते ।
ग्रामाधिकार व्यवसाय धैर्यैःकुलाऽनुमानाच्च सुखादिलाभः ॥६॥

भा०—जो मध्यम बलयुक्त सूर्यकी दशा हो तो पूर्वोक्त फल मध्यम देती है । ग्रामके अधिकार से और उद्योग से व धीरज करके व कुल के अनुमान से सुख आदि प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

अल्पबली सूर्य की दशा का फल ।

दशारवेरल्पबलस्य पुन्सां ददाति दुःखं स्वजनैर्विवादात् ।
मतिभ्रमं पित्तरुजं स्वतेजो विनाशनं धर्षणमप्यरिभ्यः ॥७॥

भा०—जो अल्पबली सूर्य की दशा हो तो मनुष्यों को अपने जनों के साथ लड़ाई होने से दुःखको देती है, और मतिभ्रम, पित्त से रोग अपने तेजका विनाश शत्रु से धर्षण (दबाव) यह अशुभ फल देती है ॥ ७ ॥

नष्टबली सूर्य दशा का फल ।

दाशरवेर्नष्ट बलस्य पुन्सांनृपाद्रिपोर्वा भय मर्थ नाशम् ।
स्त्री पुत्र मित्रादि जनैर्विवादं करोति बुद्धि भ्रममामयंच ॥८॥

भा०—नष्ट बलवाली सूर्य की दशा मनुष्यों को राजा और शत्रु से भय और धन नाश को करती है । तथा स्त्री, पुत्र, मित्र आदि जनों से विवाद (लड़ाई) बुद्धि भ्रम और रोग को करती है ॥ ८ ॥

सूर्य के विशेष स्थान स्थिति से दशा का फल ।

लग्ना द्रविः षट्त्रिदशाय सस्थो निन्द्योऽपिदत्तेशुभमर्ध मेव ।
मध्यत्वमूनः शुभतांचमध्या यातीत्थमत्यन्त शुभःशुभःस्यात्॥६॥

भा०—वर्ष लग्न से सूर्य छठे, तीसरे, दशवें, ग्यारहवें इन स्थानों में स्थित हो तो अनिष्ट दशा का फल भी आधा शुभ देता है और मध्यम बल हो तो शुभ फल हो और हीन बली हो तो मध्यम फल हो और पूर्ण बली हो तो बहुत ही शुभ फल होता हैं ॥ ६ ॥

मध्यत्वमूनः शुभतां च मध्यो यातीत्यमिन्दुः शुभतां च मध्ये १४

भा०—छठें, आठवें, बारहवें, इनसे इतर राशि में स्थित निर्बल भी चन्द्रमा अपनी दशा में आधा सुख देता है, और हीनबली चन्द्रमा मध्यम फल और मध्यम बली चन्द्रमा शुभ फल देता है और जो चन्द्रमा पूर्ण बली हो तो अत्यन्त शुभ फल देने वाला जानना ॥ १४ ॥

पूर्ण बली मंगल की दशा का फल ।

दशापतिः पूर्णबलो महीजः सेनापतित्वं तनुते नराणाम् ॥
जयं रणे विद्रुमहेमरक्त वस्त्रादिलाभं प्रियसाहसत्वम् ॥१५॥

भा०—जो दशा का स्वामी मंगल पूर्ण बली होवे तो मनुष्यों को सेनापतित्व (फौजका मालिक) बनावे और संग्राम में जय व मूंगा, सोना, लाल कपड़े आदिक लाभ और प्रिय साहसत्व इनको देता है ॥ १५ ॥

दशा पतिर्मध्य बलो महीजः कुलाऽनुमानेन धनं ददाति ।
राजाधिकारं त्वथ तत्परत्वं तेजास्वता कान्तिवलाभि वृद्धिम्॥१६।

भा०—जो दशा का स्वामी मङ्गल मध्यबली हो तो कुलके अनुमान से धनको देवे है तथा राजा से किसी अधिकार का लाभ और उस अधिकार में सावधानत्व और तेज कान्ती व बल वृद्धि इन सबको देता है ॥ १६ ॥

अल्प बल मंगल की दशा का फल ।

दशापतिः स्वल्पबलो महीजो ददाति पित्तोष्णरुजं शरीरे ।
रिपोर्भयं वन्धन मास्यतोऽसृक्स्रुवं च वैरं स्वजनेश्वशश्वत् १७॥

भा०—जो अल्पबली मंगल की दशा हो तो शरीर में पित्त और ताप से रोग और शत्रु से भय तथा बन्धन मुख से रुधिर टपकना, और निरन्तर अपने भाई बन्धुओं से भय इन सबों को देता है ॥ १७ ॥

नष्ट बली मंगल की दशा का फल ।

दशापतिर्नष्टबलो महीजो विवादमुग्रं जनयेद्रणं वा ।

चौराद्भयं रक्तरुजं ज्वरं च विपत्तिमन्यस्वहृतिं खर्जूम् ॥ १८ ॥

भावार्थः—जो मंगल नष्ट बलवाला होकर दशा को स्वामी हो तो [illegible] विवाद (कठिन झगड़ा) वा संग्राम, और चोरों से भय, रक्तविकार, ज्वर और विपत्ति, विजातीय जन से धन हरण और खाज को उत्पन्न करता है ॥ १८ ॥

तीसरे, छठे, ग्यारवें स्थान में स्थित मङ्गल का फल ।

त्रिषडायगतो भौमो नष्टवीर्यः शुभार्द्दः ।

मध्ये हीनः शुभोमध्यः शुभोऽत्यन्त शुभावहः ॥ १९ ॥

[illegible] जो तीसरे, छठे, ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में [illegible] मंगल स्थित हो तो आधा शुभ फल देता है और जो हीन बली [illegible] स्थानों में से किसी स्थान में हो तो मध्यम फल देता है, [illegible] पूर्ण बली, मंगल स्थित हो तो अत्यन्त शुभ फल को [illegible] है ॥ १९ ॥

पूर्णबली बुध की दशा का फल ।

[illegible] पूर्णबली बुधश्चेद्यशोऽभिवृद्धिं गणितात्सुशिल्पात् ।
[illegible] मैत्रीं महतां नृपादेर्दौत्यं च वै दृव्यगुणोदयं च ॥२०॥

[illegible] पूर्ण बली हो तो गणित व सुन्दर [illegible] वृद्धि, तथा राजादिकों की मित्रता और [illegible] और [illegible] गुणों के उदय को [illegible] ॥ २० ॥

[illegible] की दशा का फल ।

[illegible] मुहद्भयो लिपिकाव्यशिल्पैः
[illegible] गौरव्यम ॥ २१ ॥

[illegible]
[illegible]

ता है और नदियों किनारों व मनुष्यों में गमागम से मध्यम हो सौख्य को
ता है ॥ २१ ॥

स्वल्प बलवान् बुध दशा का फल ।

शापतौ स्वल्पबले बुधे स्यान्मानस्य नाशः स्वजनापवादः ॥
कार्यकोपस्वजनाद्यनिष्टं धनव्ययं रोगभयं च विन्द्यात्॥२२॥

भा०- जो बुध स्वल्प बली होकर दशा का स्वामी हो तो मान का
श और अपने जनों में कलह, बिना प्रयोजन कोप आदि से अनिष्ट, धन का
र्च रोग भय यह अशुभ फल जानना ॥ २२ ॥

हीन बली बुध की दशा का फल ।

शापतौ हीनबले बुधे स्यात्स्वबुद्धिदोषो वध बंधभीतिः ।
रे गतिर्वातकफामयार्तिर्निखातद्रव्यस्य च नापि लाभः ॥२३॥

भा०-टी०-जो दशा का स्वामी बुध हीन बल वाला हो तो अपनी
द्धि के दोष से वध बन्धन भय (जेल खाने से डर) और दूर गमन वात
कफ रोग से पीड़ा और निखान द्रव्य का न मिलना इन सबों को देता है॥२३॥

छठे बारहवें, आठवें स्थान की इतरराशि में स्थित बुध का फल ।

षडष्टान्त्येतरर्क्षस्थो नष्टो ज्ञोऽर्धशुभप्रदः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तं शुभावहः ।२४।

भा० -जो वर्ष समय में वर्ष लग्न से छठे आठवें और बारहवें इन
ानों में से किसी स्थान में नष्ट बली बुध स्थित हो तो अपनी दशा में
ाधा शुभ फल देता है । अल्पबली हो तो मध्यम फल मध्य बली हो तो
म फल, पूर्ण बली हो तो अत्यन्त शुभ फल, देते हैं ॥ २४ ॥

पूर्ण बली बृहस्पति की दशा का फल ।

ुरोर्दशा पूर्णबलस्य दत्ते मनोदयं राजसुहृद्गुरुभ्युः ।
ीत्यर्थलाभोपचयं सुखानि राज्यं सुताप्तिं रिपुरोगनाशनम्॥२५॥

भा०— वर्ष प्रवेश समय बृहस्पति की दशा पूर्ण बली हो

[illegible] मित्र [illegible] गुरुजनों से मान (सन्मान) का उदय हो, और कीर्ति [illegible] की वृद्धि, सुख, राज्य, पुत्र की प्राप्ति तथा शत्रु व रोग का नाश [illegible] ॥ २५ ॥

मध्य बली गुरु की दशा का फल ।

गुरोर्दशा मध्यबलस्य धर्मे मतिं सखित्वं नृपमंत्रिवर्गैः ।
[illegible] मानार्थसुखादिलाभं सिद्धिं सदुत्साहबलातिरेकाम् ।२६।

[illegible] मध्य बली बृहस्पति की दशा हो तो धर्म में मति मंत्रि [illegible] से मित्रता और मान, धन सुख का लाभ, बल के अतिरेक वाली सिद्धि [illegible] कार्यों की सिद्धि उनको देती है ॥ २६ ॥

[illegible] बली गुरु की दशा का फल ।

[illegible] दत्ते रोगं दरिद्रत्वमथारिभीतिम् ॥
[illegible] धनप्रणाशं वैराग्यमथ च सुखं न किंचित् ॥ [illegible]७

[illegible] बृहस्पति की दशा होवे तो रोग, [illegible] धर्म और धन का नाश [illegible] वैराग्य [illegible] नहीं होती है ॥ २७ ॥

[illegible] की दशा का फल ।

[illegible] दत्ते [illegible] कलानिम् ।
[illegible] धर्मादिनाशं तनुपीडनं च ॥ [illegible]८ ॥

[illegible] की दशा होवे तो [illegible] मनुष्यों को [illegible] और [illegible] ॥[illegible]८॥

[illegible] की दशा का फल

[illegible]

[illegible] सुखावहः ॥[illegible]॥

[illegible]

रहित उक्त स्थानों में हो तो अपनी दशा में साधारण फल देते हैं और जो हीन बली शुक्र उक्त स्थानों में हो तो मध्यम फल जानना, तथा मध्यम बली शुक्र उक्त स्थान में हो तो अपनी दशा में अच्छा फल देते हैं और जो पूर्ण बली शुक्र उक्त स्थानों में हो तो अपनी दशा में अत्यन्त शुभ फल देता है ॥ २९ ॥

पूर्ण बली शुक्र की दशा का फल ।

दशा भृगोःपूर्णबलस्य सौख्यं स्रग्गन्धहेमाम्बरकामिनीभ्यः ।
हयादिलाभं सुतकीर्तितोषत्वं रुज्यगान्धर्वरतिं पदाप्तिम्॥३०॥

भावार्थः—पूर्ण बली शुक्र की दशा में सौख्य, माला, सुगन्धि, सोना, वस्त्र स्त्री से सुख, घोड़े आदि का लाभ, पुत्र प्राप्ति, कीर्ति, प्रसन्नता, आरोग्यता, गान में प्रीति, स्थान का लाभ इन सबों की प्राप्ति होती है ॥ ३० ॥

मध्यम बली शुक्र की दशा का फल ।

दशा भृगोर्मध्यबलस्य दत्ते वाणिज्यतोऽर्थागमनं कृषेश्च ।
मिष्टान्नपानाम्बरभोगलाभं मित्रांश्च योषित्सुतसौख्यलाभम्॥३१॥

भा०—मध्यबली शुक्र की दशा व्यापार से धन को देते हैं, तथा खेती से धन का लाभ हो और मीठे अन्न का भोजन वस्त्र व भोगों का लाभ, मित्र और स्त्री पुत्रों से सौख्य का लाभ होता है ॥ ३१ ॥

अल्प बली शुक्र की दशा का फल ।

दशा भृगोल्पबलस्य दत्ते मतिभ्रमं ज्ञानयशोऽर्थनाशम् ।
कदन्नभोज्यं व्यसनातयार्तिं स्त्रीपक्षवैरं कलिमप्यरिभ्यः ॥३२॥

भा०—जिसके वर्ष प्रवेश समय अल्प बल वाली शुक्र की दशा हो तो मतिभ्रम, ज्ञान यश और धन का नाश और कुत्सित (सामा काकुनि) अन्न का भोजन दुःख, रोग से पीड़ा और ससुरारि वालों से वैर, शत्रुओं से भी कलह इन अशुभ फलों को देते हैं ॥ ३२ ॥

नष्ट बली शुक्र की दशा का फल ।

दशा भृगोर्नष्टबलस्य दत्ते विदेशयानं स्वजनैर्विरोधम् ।

पुत्रार्थभार्याविपदो रुजश्च मतिभ्रमोऽपि व्यसनं महांतम्॥३३॥

भावार्थ--जो नष्ट बली शुक्र की दशा हो तो विदेश गमन और स्वजनों से [illegible] को देवे है और पुत्र, धन और भार्या इन्हों से विपत्तियों को और रोग, मतिभ्रम तथा महान दुःख इन सबों को देवे है ॥ ३३ ॥

[illegible] आठवें बारहवें स्थानों से इतरराशि में स्थित शुक्र का फल ।

[illegible]रिष्फेतरगो भृगुर्निन्द्योऽर्धसत्फलः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तं शुभावहः ॥ ३४ ॥

भावार्थ [illegible], आठवें, बारहवें स्थान से अन्य घरों में विराजमान [illegible] भी आधा फल करता है और जो [illegible] बली शुक्र [illegible] घरों में [illegible] विराजमान हो तो मध्य फल जानना [illegible] हो तो शुभ फल जानना, पूर्ण बली हो तो अत्यन्त शुभ फल [illegible] ॥ ३४ ॥

पूर्ण बली शनि की दशा का फल ।

[illegible] शनेः पूर्णबलस्य [illegible] नवीनवेश्माम्बरभूमिसौख्यम् ।
[illegible]निर्मितिश्च [illegible]नृपतेर्धनाप्तिः ॥३५॥

[illegible] शनि की दशा नवीन घर, वस्त्र, भूमि, सौख्य इनको देती है [illegible] हुआ [illegible] मनुष्य [illegible] के अत्यन्त [illegible] राजा से धन को पाता है ॥ ३५ ॥

[illegible] शनि की दशा का फल ।

[illegible] मध्यभागाद[illegible]नाथनाप्तिम् ।
[illegible]मात्रभोगः ॥ ३६ ॥

[illegible] की दशा हो तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का भोजन [illegible] ३६

अल्प बली शनि की दशा का फल ।

॥ शनेरल्पबलस्य पुंसां तनोति दुःखं रिपुतस्करेभ्यः ।
रिद्र्यमात्मीयजनापवादं रोगं च शीतानिलकोपमुग्रम् ॥३७॥

भावार्थ—अल्प बल वाली शनि की दशा मनुष्यों को शत्रु व चोरों से
दुःख को विस्तार करे है और अपने जनों से अपवाद, दरिद्रता, रोग और
शीत पवन के उग्र कोप को करे है ॥ ३७ ॥

नष्ट बली की शनि दशा का फल ।

दशा शनेर्नष्टबलस्य पुंसामनेकधातुव्यसनानि दत्ते ।
स्त्रीपुत्रमित्रस्वजनैर्विरोधं रोगाभिवृद्धिं मरणेनतुल्यम् ॥३८॥

भा०—शनि की दशा जो नष्ट बली हो तो मनुष्यों को तो अनेक
धातुओं (वात, पित्त, कफ़ादिक) से दुःख को देवे है और स्त्री, पुत्र, मित्र
। अपने जनों से विरोध को करे है और मरण समान रोग
बढ़ावे है ॥ ३८ ॥

तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थान में प्राप्त शनि की दशा का फल ।

त्रिषष्ठलाभोपगात मन्दो निन्द्योऽर्द्धसत्फलः ।
मध्यो हीनःशुभोमध्यः शुभोऽत्यंतं शुभावहः ॥ ३९ ॥

भा०—जो तीसरे, छठे, ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में शनि
ग हो तो नष्ट बली भी शनि आधा शुभ फल देवे है और हीनबली हो तो
ध्यम फल मध्य बली हो तो शुभ फल और पूर्ण बली हो तो अत्यन्त शुभ
। को देवे है ॥ ३९ ॥

द्रेष्काणवश से लग्न दशा का फल ।

दशा तनोः स्वामिबलेन तुल्यं फलं ददातीत्य परो विशेषः ।
रे शुभा मध्यफलाशुभा च द्विमूर्तिभेऽस्माद्विपरीतमूह्यम् ॥४०॥
निष्ट मिष्टं च समास्थिरर्क्षे क्रमादृहकाणैः फलमुक्तमाद्यैः ।
रस्वामियोगेक्षणतःशुभंस्यात्पापेक्षणात्कष्टफलं च वाच्यम्॥४१

٢

लिखते हैं—दशाफलं इत्यादि श्लोकों में अन्तर्दशा साधन करने का प्रकार पूर्व संज्ञातन्त्र में कह चुके हैं इससे यहां लिखना आवश्यक नहीं है, यहां अन्तर्दशा का भी फल चार प्रकार का बल देखके कहना, अन्तर्दशापति शुभ ग्रहों की दृष्टि वा शुभ ग्रह युक्त हो वा शुभ ग्रह से मैत्री हो तो उसी अनुसार देखकर फल का विचार करना ॥ १ ॥ २ ॥

चन्द्रारजीवाः सौम्येज्यशुक्रा रविविधू तथा ।
मन्देज्यशुक्राः सूर्येन्दुभौमाः सौम्येज्यसूर्यजाः ॥ ३ ॥
जीवज्ञशुक्राः सूर्यादेः शुभा अन्तर्दशा इमाः ।
अन्येषामशुभास्तथा इति वामनाभाषितम् ॥ ४ ॥

भावार्थः—सूर्यदशा में चं. मं. बृ. की अन्तर्दशा, और चन्द्रमा की दशामें बु. बृ. शु. की अन्तर्दशा तथा मङ्गल की दशा में सू. चं. की अन्तर्दशा, बुध की दशा में श. बृ. शु. की अन्तर्दशा, गुरु की दशा में सू. चं. मं. की अन्तर्दशा, शुक्र की दशा में बु. बृ. श. की अन्तर्दशा, शनि की दशा में बु. बृ. शु. की अन्तर्दशा अच्छा फल देते हैं यह सूर्यादि ग्रहों की दशामें शुभान्तर्दशा है अन्य अन्तर्दशा अशुभ जानना यह वामनाचार्य ने कहा है ॥ ३ ॥ ४ ॥

लग्न में स्थित सब ग्रहों का फल ।

सूर्यारमन्दास्तनुगाज्वरार्ति धनक्षयं पापयुगिंदुरित्थम् ।
शुभान्वितः पुष्टतनुश्चसौख्यंजीवज्ञशुक्राधनधान्यलाभम् ॥५॥

भा०—रवि मङ्गल शनि इनमें से कोई भी ग्रह जो लग्नमें स्थित हो तो ज्वर पीड़ा और धनहानि को करे है, इसी प्रकार पापग्रह सहित चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो ज्वर की पीड़ा और धनक्षय करता है और जो शुभग्रहों से युक्त पुष्ट शरीर वाला चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो वह सौख्य को करता है, बुध शुक्र लग्न में हों तो धन धान्य के लाभ को करते हैं ॥ ५ ॥

धन भाव में स्थित ग्रहों का वर्णन ।

चन्द्रज्ञजीवास्फुजितो धनस्था धनागमं राज्यसुखं च दद्युः ।
पापा धनस्था धनहानिदाः स्युर्नृपाद्भयं कार्यविघातमार्किः ॥६॥

भा०—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये जो धन भाव में स्थित हों तो धन का आगम और राज्य व सुख को देते हैं. तथा जो पापग्रह धन भाव में स्थित हों तो धन हानि को देते हैं, और शनैश्चर धन भाव में हो तो राजा से भय और कार्य का नाश करता है ॥ ६ ॥

तीसरे भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

दुश्चिक्यगाःखलखगाधनधर्मराज्यलाभप्रदाबलयुताः क्षितिलाभदाःस्युः । सौम्याः सुखार्थसुतमानयशोविलासं लाभाय हर्षमतुलं वितनोति चन्द्रः ॥ ७ ॥

भा०—तीसरे स्थान में जो पापग्रह स्थित हों तो धन धर्म, राज्य लाभ को देते हैं, और जो बल से युक्त पापग्रह तीसरे भाव में हो तो पृथ्वी के लाभ को देते हैं, तथा शुभग्रह जो तीसरे स्थान में विद्यमान होवें तो सुख, धन, पुत्र, मान, यश और विलास इन्हों के लाभ को देते हैं, तथा निश्चय करके चन्द्रमा [illegible] अत्यन्त आनन्द को करता है ॥ ७ ॥

चौथे भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

[illegible] सितगुरू स्वजनं सुखं च कुर्यः शुभेन सहितः सुखयानमेति [illegible] पापखगाःसुखार्थनाशं रुजं स्वजनमप्यतुलं भयं च [illegible]

भा०— [illegible] पापग्रह युक्त चन्द्रमा स्थित हो तो कष्ट और रोग [illegible] पूर्ण होकर चन्द्रमा स्थित हो तो सुख [illegible] स्थित हों तो [illegible] सुख को देते हैं [illegible] स्थित हो तो भय और [illegible] का नाश रोग कष्ट [illegible] ॥ ८ ॥

[illegible] भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

[illegible] भृगुसूनोर्निर्दिष्टः ।

[illegible] ॥ ९ ॥

भा०—जो शुभग्रह पंचम घर में स्थित हों तो पुत्र, धन, सुख, इनके समूहों को देते हैं, पंचम स्थान में स्थित शुक्र इनको देता है तथा पापग्रह जो पंचम स्थान में स्थित हों तो पुत्र, धन, सुख, बुद्धि इनको हरने वाला होते हुए और भय, शाप और कलह को देते हैं ॥ ९ ॥

छठे भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

षष्ठ पापा वित्तलाभं सुखाप्तिं भौमोऽत्यन्तं हर्षदःशत्रुनाशम् ।
सौम्याभीतिं वित्तनाशं कलिं च चन्द्रो रोगं पापयुक्तः करोति ॥

भा०—जो छठे स्थान में पापग्रह स्थित हों तो द्रव्य का लाभ और सुख की प्राप्ति करते हैं और मंगल अत्यन्त हर्ष को देता और शत्रुओं का नाश करता है, पंचम भाव में स्थित शुभ ग्रह धननाश, और कलह को करते हैं, तथा पाप ग्रह चंद्रमा रोग को करता है ॥ १० ॥

सातवें भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

सपापःशशीसप्तमोव्याधिभीतिंखलःस्त्रीविनाशंकलिंभृत्यभीतिम् ।
शुभाःकुर्वते वित्तलाभं सुखाप्तिं यशोराजमानोदयं बन्धुसौख्यम् ॥

भा०—पाप ग्रह के सहित चन्द्रमा सप्तम स्थान में स्थित हो तो व्याधि (रोग) भय को करता है, पापग्रह सातवें स्थान में स्थित हो तो स्त्री का नाश, सेवक से भय को करता है, तथा शुभग्रह जो सातवें स्थान में स्थित हों तो धन लाभ, और सुख की प्राप्ति, यश, राजा से मान का उदय, बन्धुजनों से सौख्य इनको करते हैं ॥ ११ ॥

आठवें भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

चन्द्रोऽष्टमे निधनदःखलखेटयुक्तःपापाश्चतत्रमृतितुल्यफलंचविंद्यात् ।
सौम्याःस्वधातुवशतोरुजमर्थहानिं मानक्षयंसुथशिलेशुभजंशुभश्च ।

भावार्थ—जो वर्ष प्रवेश समय पापग्रहयुक्त चन्द्रमा आठवें स्थानमें स्थित हो तो मरण को देता है, और यदि केवल पापग्रह स्थित हों तो मरण तुल्य फल देते हैं ऐसा जानना तथा जो शुभग्रह आठवें स्थान में स्थित हों तो

[illegible] [illegible] में [illegible] व धन हानि और मान [illegible] को देते हैं. तथा जो [illegible] के साथ इत्थशाल योग होवे तो अनिष्ट फल भी शुभ [illegible] है ॥ १२ ॥

नवम भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

तनुगि [illegible] पशुपीडनं खलखलेऽतिमुदो रविरत्र चेत् ।
[illegible] धर्म विवृद्धिदाः खलखगे त्वशुभान्यपरे जगुः ॥ १३ ॥

[illegible] में जो पापग्रह [illegible] हों तो भाइयों से [illegible], [illegible] को पीडा हो, और नवम भाव में सूर्य [illegible] हो तो अति आनन्द [illegible] है, [illegible] नवम स्थान में स्थित हो तो वे धन और धर्म की [illegible] कोई आचार्य कहते हैं कि पापग्रह भी नवम भाव [illegible] ॥ १३ ॥

दशम भाव में स्थित ग्रहों का फल ।

[illegible] व्यवसायपराक्रमैः ।
[illegible] ॥ १४ ॥

[illegible] और [illegible] का नाश करता [illegible] दशम भाव में [illegible] हों तो वह व्यापार और पराक्रमों [illegible] हैं, और [illegible] (अन्य) ग्रह [illegible] और [illegible] में गुण [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करते हैं और जो उनके सहित शुभग्रह लाभ स्थान में विद्यमान हों तो वे अपने फलको क्रमसे करते हैं ॥ १५ ॥

बारहवें स्थान में स्थित ग्रहों का फल ।

पापा व्यये नेत्ररुजं विवादं हानिं धनानां नृपतस्करादेः ।
सौम्या व्ययं सद्व्ययवाहारमार्गे कुर्युः शनिर्हर्षविवृद्धिमत्र ॥ १६ ॥

भा०— जो पापग्रह बारहवें स्थान में स्थित हों तो नेत्र रोग विवाद, और राजा व चोर आदिकों से धन हानि को करते हैं, और जो शुभग्रह बारहवें भाव में स्थित हों तो अच्छे व्यवहार के मार्ग में खर्च कराते हैं, और जो शनैश्चर यहां व्ययभाव में हो तो हर्ष सहित बहुत बढती को देते हैं ॥१६॥

अध्याय की समाप्ति ।

श्रीगर्गान्वयभूषणो गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो
ऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुःपद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलु नीलकंठ- विबुधो विद्वच्छिवाऽनुज्ञया
भावस्थग्रहपाकदौस्थ्यसुखतायुक्तं फलं सोऽभ्यधात् ॥१७॥

इति श्रीनीलकण्ठ्यां वर्ष तन्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

श्रीगर्गाचार्यजी के वंश में भूषण ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता, चिन्तामणि नाम होता भया, उसका पुत्र अनन्त मतिवाला अनन्त नामक भया, जिसने दुष्टों के मतध्वंस के अर्थ जन्मपद्धति को बनाया, उसका पुत्र विशेष विद्वान नीलकण्ठ नामक विद्वान शिवजी की आज्ञा से भावस्थ ग्रहों की दशा के अशुभ व शुभ फलको कहता भया ॥ १७ ॥

इति श्रीज्योतिर्विच्छिरोमणि नारायणप्रसादकृतायां ताजिकनीलकण्ठीभाषाटीकायां अन्तर्दशा तथा भावस्थग्रहफलाध्यायः सप्तम् ॥ ७ ॥

अथ मासदिनप्रवेशफलाष्टमोऽध्यायः प्रारभ्यते ।

मासार्कस्य तदासन्नपंक्तयर्केण सहांतरम् ।
कलीकृत्याथत्यासं दिनाद्येन युतोनितम् ॥ १ ॥

तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वमासोंकऽधिक हीनके ।
तद्वाराद्ये मासवेशो द्युवेशोप्येवमेव हि ॥ २ ॥

भा० —यहां प्रथम दोनों श्लोकों में मास प्रवेश और दिन प्रवेश निकालने की रीति वर्णन करते हैं जो पूर्व संज्ञा तन्त्र में कह चुके हैं इस कारण इनके अर्थ लिखने की यहां आवश्यकता नहीं ॥ १ ॥ २ ।

मास और दिन प्रवेश का फल ।

मासप्रवेशकाले यो ग्रहान्भावांश्च साधयेत् ।
तत्रामासतनोर्नाथो मुंथहो जन्मपस्तथा ॥३ ॥
त्रिराशिपो दिननिशो रवीन्दुभपतिस्तथा ।
अब्दप्रवेशलग्नेश एषां वीर्याधिकस्तनुप ॥४॥
तद्वन्मासपतिर्ज्ञेयस्तनोर्नान्यं शुभाशुभम् ।
प्राग्वं मासलग्नेशं मासाधिपतिमूचिरे ॥५॥
दिनेन दिनलग्नेश तथा प्रोचुर्दिन चणाः ।
मासवल्लग्नपोरान्यं फलं वर्षशवद्बुधैः ॥ ६ ॥

[illegible] मास प्रवेश कालमें पूर्वोक्त प्रकार से [illegible] मासपति के निर्णय के [illegible] मास लग्न पति ([illegible]) [illegible] इस क्रम में [illegible] ([illegible]) चौथा त्रिराशि [illegible] पति, ([illegible]) [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]

का स्वामी भारु लोग कहते हैं, यहां भी अपकारियों का निश्चय नहीं है इस प्रकार मासेश और दिनेश का निश्चय करके उनका फल वर्षेश के समान कहना, इस प्रकार परिष्कृत करके विचार करना योग्य है ॥ ६ ॥

मास फल।

लग्नांशाधिपतिर्विलग्नपनवांशेशेन मैत्रीदृशा दृष्टो वा सहितः शशी च यदि तौ मैत्रीदृशाऽऽलोकते । तस्मिन्मासि तनौ सुखं वहुविधं नैरुज्यमित्थं फलं तावद्यावदिनेस्युरित्थमथ तां संचार्य वाच्यं फलम् ॥ ७ ॥

भावार्थः—मासलग्न के नवांश का स्वामी मास लग्नेश नवांश के स्वामी के साथ मित्रता करता हुआ देखता हो, अथवा युक्त हो और उन दोनों स्वामियों को चन्द्रमा मित्र दृष्टि से अवलोकन करे तो उस मास में नाना प्रकार का सुख और बदन में निरोगता होती है, इस प्रकार मास फल तबतक होता है जब तक यह ग्रह (लग्ननवांशस्वामी, लग्नाधीशनवांशस्वामी, चन्द्रमा) इस प्रकार के होंय अर्थात् इन तीनों प्रतिदिन चलते हुओं का राशि संचार होय तब तक शुभ फल कहना ठीक है ॥ ७ ॥

अनिष्ट फल।

तौ चेच्छत्रुदृशा मिथश्च शशिना दृष्टौ मनोदुःखदौ रोगाधिक्यकरौ च कश्चिदनयोर्नीचेऽस्तगो वा यदि । कष्टात्सौख्यमिह द्वयं यदि पुनर्नीचास्तगं स्यान्मृतिस्सृत्यब्दोद्भवरिष्टतो मृतिसमं स्यादन्यथा ऊचिरे ॥ ८ ॥

भा०—यदि वे लग्नांशनाथ लग्नेशांशनाथ दोनों परस्पर शत्रु दृष्टि से देखते हों और उन दोनों को चन्द्रमा भी शत्रु दृष्टि से देखता हो तो मनो दुःख (चिन्ता को देते हुए रोग को बढ़ाते हैं तथा पूर्वोक्त दोनों स्वामियों के बीच जो कोई एक नीच राशि को प्राप्त हो अथवा अस्त होगया हो तो वह कष्ट को देकर पीछे से सौख्य देता है, अथवा वे दोनों नीच राशि में

दिगनमान हों वा अस्तङ्गत हों अथवा एक नीच राशि में हो एक अस्तङ्गत हो तो मृत्यु होती है. ऐसा फल तब जानना जब कि जन्मकाल और वर्षकाल में अरिष्ट योग की उत्पत्ति होवे. अन्यथा मृत्यु समान कष्ट जानना यह आचार्यों ने कहा है ॥ ८ ॥

मास लग्न सम्बन्धी शुभाशुभ फल।

भावांशाधिपतिः स्वभावपनवांशेशेन मैत्रीदृशा दृष्टो वा [illegible]: शशी च यदि तो मैत्रीदृशालोकते। तद्भावोत्थसुखं [illegible] तद्व्यत्यासतःकीर्तितं नीचास्तादिफलं चलग्नवदिदं [illegible] धिया ॥ ९ ॥

[illegible]:–मासलग्न में जिस भाव का विचार करे तो उस भावके नवांशका [illegible] उस भाव के स्वामी के नवांश स्वामी करके मित्र दृष्टि से देखा जाता हो अथवा [illegible] और यदि चन्द्रमा भी यदि उन भावनवांश स्वामी और भावेशनवांश [illegible] को मित्र दृष्टि से देखे तो उस भाव से उत्पन्न सुख उस महीना में [illegible] तो [illegible] फल (कष्टादि) कहना, और इस [illegible] का फल पूर्वोक्त लग्न के समान बुद्धिमानों करके [illegible] है, [illegible] भावेशनवांशनाथ इन दोनों में [illegible] हो, एक शुभ हो [illegible] एक अस्तङ्गत हो, एक शुभ हो तो [illegible] मध्य फल को करता है, दोनों नीचास्तादि [illegible] फल देते हैं ॥ ९ ॥

[illegible] वर्णन।

[illegible]भांशनाथा यदंशाधिपमित्रदृष्टा।
[illegible] तद्भावोत्थसौख्याय नचेदनिष्टम ॥ १० ॥

[illegible] और पापग्रह [illegible] [illegible] भावनवांश [illegible] करके मित्रदृष्टि से [illegible] का सौख्य होता है, और [illegible] ॥ १० ॥

नवांश के वश से उत्पन्न भाव के शुभाशुभ फल का वर्णन ।

निर्बला व्ययषष्ठाष्टांशपाः सत्फलदायकाः ।
अन्ये सवीर्याः शुभदा व्यत्यये व्यत्यय स्मृतः ॥ ११ ॥

भा०—यदि अनिष्टकारक बारहवें, छठे, आठवें इन भावों के नवांश स्वामी निर्बल (बल से रहित) होंय तो उस भाव में शुभ फल के देने वाले कहे हैं, और इनसे शेष भावों के नवांश स्वामी यदि बलिष्ठ हों तो उस उस भाव में शुभ फल देने वाले होते हैं, और जो कहे हुये से विरुद्ध हों तो उलटा होता है ॥ ११ ॥

अधिकारी ग्रहों का विरुद्ध स्थान में स्थित अनिष्टफल का वर्णन ।

लग्नेशमासेशसमेशमुथाधिशाःपडष्टोपगताः सपापाः ।
दृष्टाःखलःशत्रुदृशात्रमासेव्याध्यादिविद्विड्भयदुःखदाःस्युः॥१२॥

भा०—वर्ष लग्नस्वामी, मासस्वामी, वर्षस्वामी, और मुथहा स्वामी, ये चारों पापग्रहों से युक्त होकर, छठे वा आठवें स्थान में स्थित होय, और इन चारों को पापग्रह शत्रु दृष्टि से देखते हों तो उस मास में व्याधि आदि, व शत्रु भय और दुःख को देते हैं ॥ १२ ॥

केन्द्रत्रिकोणायगतास्तु लग्नमासाऽब्दपा वीर्ययुतानराणाम् ।
नैरुज्यशत्रुक्षयराज्यलाभमानोदयात्यद्भुतकीर्तिदाः स्युः ॥१३॥

भावार्थ—वर्षलग्नेश, मासेश, और वर्षेश्वर, ये तीनों बलवान होकर केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में, त्रिकोण ९।५ स्थान और एकादश स्थान इन स्थानों से किसी स्थान में स्थित हों वे मनुष्य को आरोग्यता, शत्रुक्षय, राज्यलाभ, मान का उदय, और अति अद्भुत कीर्ति इनको देते हैं ॥ १३ ॥

मतमतान्तर वर्णन ।

इन्थिहा लग्नपो राशीयों बली तत्र हद्दपाः ।
दशेशाः स्वाँशतुल्याहैरित्युक्तं केश्चिदागमात् ॥ १४ ॥

भावार्थ—मासमुथहा, मास लग्न इनकी जो बली राशि उस राशि में जो

हद्दा के स्वामी वे अपने अंश तुल्य दिनों करके दशा के स्वामी होते हैं आगम (मूल शास्त्र) से कितनेक विद्वानों ने कहा है ॥ १४ ॥

अन्य आचार्यों का मत ।

रवीन्द्वोरसमावेशान्नैतद्युक्तं परे जगुः ।
दशाअन्तर्दशाब्दे फलमाब्दन्तु युज्यते ॥ १५ ॥

भा०—यह पूर्वमत सूर्य और चन्द्रमा के सम्बन्ध से नहीं होने से युक्त नहीं है यह दूसरे आचार्य कहते हैं, और अब मासदशा अन्तर्दशा का फल वर्णन करते हैं कि वर्षदशा अंतर्दशा के विभाग की रीति से किये हुए विभाग में वर्ष का कहा हुआ फल युक्त ही होता है ॥ १५ ॥

दिन प्रवेश का फल ।

दिनप्रवेशकालेपि ग्रहान्भावांश्चसाधयेत् ।
चंद्रलग्नांशकाभ्यां तु फलं तत्र वदेद्बुधः ॥१६॥

भा० दिन प्रवेश समय में भी ग्रह और भावों को साधे उस दिन प्रवेश [illegible] और [illegible] नवांशों करके शुभाशुभ फल का पंडित वर्णन करे ॥१६॥

दिन स्वामी का निर्णय ॥

[illegible] दिनमासाब्दलग्नपाः ।
[illegible] दिनेशः परकीर्तितः ॥ १७ ॥

[illegible] राशिस्वामी, दिनलग्नेश, [illegible] इन भावों के बीच बलवान होय [illegible] आचार्यों ने दिन का स्वामी कहा है ॥ १७ ॥

[illegible] शुभाशुभ फल वर्णन ।

[illegible] चन्द्र [illegible] बलिनः स्मृताः ।
[illegible] ॥१८॥

[illegible] चन्द्रमा और [illegible]
[illegible]

तीसरे, छठे, ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हों तो वह दिन में विलास, मान, धन, और यश इनहीं से पूर्ण सुख को देते हैं ॥१८॥

छठे, आठवें, बारहवें आदि स्थान में स्थित दिनेशादिकों का फल ।

षडष्टरिष्फोपगतादिनाऽब्दमासेन्थिहेशा· खलखेटयुक्ताः ।
गदप्रदामानयशोहराश्च केन्द्रत्रिकोणायगताः सुखाप्त्यै ॥१९॥

भा०—दिनेश वर्षेश, मासेश, मुन्थेश, ये चारों पापग्रहों से युक्त होकर छठे, आठवें, और बारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हों तो यह रोगों को देते हुए मान और यश को हरते हैं, और जो दिनेश आदि चारों केन्द्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ९।५ वा ग्यारहवें इन स्थान में से किसी स्थान में स्थित हो तो सुख की प्राप्ति होती है ॥ १९ ॥

दिन लग्न नवांश द्वारा फल ।

लग्नांशकः सौम्यखगैः समेतो दृष्टोऽपि वा मित्रदृशेन्दुनापि ।
नैरुज्यराज्यादिशरीपुष्टिर्मासोक्तिदुःखमतोन्यथात्वे ॥ २० ॥

भा०-जो दिन लग्न नवांश राशि शुभग्रहों से युक्त वा मित्रदृष्टि से दृष्ट होय, तो वह आरोग्यता, राज्य आदि शरीरपुष्टि को देता है, और जो उक्त प्रकार से विपरीत हो तो (वो चन्द्रदृशा०) इस मासोक्त रीति से फल जानना चाहिये ॥ २० ॥

उक्त रीति से भाव फल के अर्थ का अतिदेश ।

यदंशकः सौम्ययुतेक्षितो वा स्निग्धेक्षणाद्भावजसौख्यकृत्सः ।
दुःखप्रदःप्रोक्तवदन्यथात्वे सर्वेषु भावेष्वियमेव रीतिः ॥२१॥

भा०जिस भाव के नवांश राशि शुभग्रहों से युक्त अथवा मित्रदृष्टि से देखाजाता हो तो उस भाव के उत्पन्न सौख्य का करने वाला होता है,अन्यथा दुःख देता है, यह रीति सब भावों के विचार में जानना ॥ २१ ॥

छठे और बारहवें भाव में विशेष वर्णन ।

षष्ठांशकस्सौम्तयुतोरोगदः पापयुक्शुभः
व्ययांशे शुभयुग्दृष्टे सद्व्ययः पापतस्त्वसत् ॥ २२ ॥

भा०—जो छठे भावका नवांश राशि शुभग्रहों से युत वा दृष्ट हो तो [illegible] [illegible] देता है और जो पापग्रहों से युक्त हो तो वह शुभफलको देता है, और जो बारहवें भावका नवांश राशि शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो अच्छे काममें [illegible] खर्च होता है, पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो निकृष्ट काम में खर्च होता है ॥ २२ ॥

सप्तम भाव में विशेष फल ।

जायांशः सौम्ययुग्दृष्टः स्वस्त्रीसौख्यविलासकृत् ।
पापैर्युक्ते [illegible] दुःखं पापन्तस्थे मृतिंवदेत् ॥ २३ ॥
शुभमध्यस्थिते त्यंशे बहुलं कामिनीसुखम् ।
[illegible] रतिं गुरावन्यखगेऽन्यासु रतिं वदेत् ॥ २४ ॥

भा०—सप्तम भावका नवांश राशि शुभग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो [illegible] [illegible] और [illegible] को करता है तथा जो पापग्रहों से युक्त [illegible] हो तो घर में लड़ाई, और दुःख होता है, और जो पापग्रहों के मध्य [illegible] हो तो [illegible] मृत्यु [illegible] ॥ २३ ॥ तथा जो सप्तम भाव नवांश राशि [illegible] में स्थित हो तो स्त्री सुख अधिक होता है, और जो [illegible] [illegible]) में स्थित हो तो अपनी स्त्रीमें रति (रमण) करै और [illegible] स्थित हो तो अन्य भार्या में रमण करै ॥ २४ ॥

अष्टम भाव का फल ।

[illegible] ।
[illegible] सौम्यं [illegible]नाऽनुसारतः ॥२५॥

[illegible] अष्टम भाव [illegible] राशि [illegible] लग्न आठवें घरमें [illegible] [illegible] हो तो [illegible] मरण होता है, [illegible] हो तो [illegible] [illegible] हो तो [illegible] [illegible] वर्ण लग्नानुसार [illegible] [illegible]

कर्तरी योग का फल ।

द्विद्वादश घ्ला हानि व्ययैसौम्याः शुभव्ययम् ।
कर्तरी पापजा रोगं करोति शुभजा शुभम् ॥२६ ॥

भा०—जिसके दिन प्रवेश लग्न से दूसरे और बारहवें घरमें पापग्रह स्थित हों तो वह उसके धनका नाश करते हैं, और जो बारहवें घर में शुभग्रह स्थित हों तो उत्तम काम में खर्च होता है, पापग्रह से उत्पन्न कर्तरीयोग रोग करता है, और शुभग्रह जनित कर्तरीयोग शुभ फलको देता है ॥ २६ ॥

चन्द्रकृत अरिष्ट योग ।

लग्नेष्टमे वा क्षीणेन्दुर्मृत्युदः पापदृग्युत ।
रोगो वा ग्रहणं वापि रिपुतः शस्त्रभीरपि ॥२७॥

भा०—जो दिन प्रवेश लग्नमें अथवा दिन प्रवेश लग्न से आठवें स्थान में पापग्रहों से दृष्ट वा युक्त होकर क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो उस प्राणी के अर्थ मृत्यु को देता है, अथवा वह रोगी होकर वैरियों से पकड़ा जाता है और किसी हथियार से भय भी होता है ऐसा जानना ॥ २७ ॥

पुनःचन्द्रकृत अनिष्ट वर्णन ।

चन्द्रे सभौमे निधनारिसंस्थे नृणां भयं शस्त्रकृतं रिपोर्वा ।
पापैःसुखस्थैःपतनं गजाश्वायनात्तनौ स्याद्बहुला च पीडा ॥२८॥

भा०—जो वर्ष लग्न से आठवें व छठे स्थानमें मंगलसहित चन्द्रमा स्थित हो तो मनुष्यको हथियारसे भय वा शत्रु भय से होताहै, और जो पापग्रह चतुर्थ स्थान में स्थित हों तो हाथी वा घोड़े की सवारी से गिरना होता है कि जिससे शरीर में बड़ी भारी पीडा होती है ॥ २८ ॥

शुभाशुभ फल वर्णन ।

शुभा द्यूने विजयदा द्यूतादर्थे सुखावहाः ।
नवमे धर्मभाग्यार्थराजगौरवकीर्तिदाः ॥२९॥

भा०—जो शुभग्रह दिन प्रवेश लग्न से सप्तम स्थान में स्थित हों तो वे जुवां से विजय को देते हैं, और जो दूसरे घरमें स्थित होंतो सुखको प्राप्त

करते हैं, और जो नववें स्थान में हो तो धर्म, भाग्य, धन, राजगुरुत्व औ कीर्ति को देते हैं ॥ २९ ॥

दिन प्रवेश में चन्द्रमा की अवस्था ।

दिनप्रवेशोस्ति विधुरवस्थायां तु यादृशि ।
तदवस्तातुल्यमसौ फलंदत्ते न संसयः ॥ ३० ॥

भा० —दिन प्रवेश समय चन्द्रमा जिस अवस्था में स्थित हो तो उसी अवस्था के तुल्य फलको देता है इसमें संदेह नहीं है ॥ ३० ॥

अवस्था लाने का प्रकार ।

विहाय राशिं चन्द्रस्य भागाद्द्विघ्नाः शरोद्धृता ।
लब्धं गता अवस्थास्स्युर्भोग्यायाः फलमादिशेत् ॥ ३१ ॥

भा०—दिन प्रवेश समय में स्पष्ट चन्द्रमा की राशि को छोडकर अंशादि [illegible] दोस गुणा करें फिर उनमें पांचका भाग लेने से लब्ध हो सो गत अ[illegible] [illegible] हैं, उनमें जो भोग्यावस्था उसका फल कथन करें ॥ ३१ ॥

[illegible]वस्था फल ।

[illegible]वासः प्रवासोपगे रात्रिनाशेऽर्थनाशस्तु नष्टोपगे मृत्यु भीतिः ।
[illegible]ज्जयावस्थितो जयस्तु विलासस्तु हास्योपगे कामिनीभिः ॥ ३२ ॥
[illegible]नामोपगे [illegible] प्रसुप्तानि निद्रां कलिर्दुःखपाते ।
[illegible]नि:सुखं [illegible]कम्पनासुस्थितासुकर्मणा ॥ ३३ ॥

[illegible] अवस्था में चन्द्रमा हो तो प्रवास (परदेश को [illegible] [illegible] नाश, (३) मृतावस्था में [illegible] [illegible] में कामिनियों के साथ विलास, (६ [illegible] [illegible] होते हैं (७, क्रीडा अवस्था में [illegible] [illegible] और कलह करते हैं, (९) दुःख अवस्था [illegible] [illegible] [illegible] होते हैं, (११) [illegible] [illegible] प्राप्ति होती है, (१२) सुस्थितावस्था में [illegible] [illegible] ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

[illegible]

अथमृगयादि विचारोनामनवमोऽध्यायःप्रारभ्यते ।

मृगयादि विचार ।

सर्वार्थी कुजज्ञौनृपाखेटसिद्ध्यै न सिद्धिर्यदा वीर्यहीनाविमौस्तः ।
जलाखेटमाहुः सवीर्यैर्हृद्भैर्जलाख्यैर्नगाख्यैर्नगाखेटमाहुः ॥१॥

भावार्थः—(प्रथम मृगया विचार करते हैं) जो मङ्गल और बुद्ध ये दोनों बलिष्ठ हों तो यह राजाओं के शिकार की सिद्धि के अर्थ होते हैं, तथा जो दोनों निर्बल हों तो मृगया (शिकार) की सिद्धि नहीं होती है, जलसंज्ञक राशियों (कर्क, वृश्चिक, मीन) करके जल सम्बन्धी शिकार को कहते हैं और पर्वत संज्ञक राशियों (मे. मि. ध.) करके पर्वत सम्बन्धी शिकार को कहते हैं ॥ १ ॥

लग्नास्तनाथौ केन्द्रस्थौ निर्बलौ क्लेश दायिनी ।
मृगयोक्ता शुभफला वीर्याढ्यौ यदि तौ पुनः ॥ २ ॥

भा०—लग्न और सप्तम स्थान स्वामी ये दोनों यदि निर्बल होकर पहले, चौथे, सातवें, दशवें इन स्थानों में से किसी स्थान में विराजमान हों तो वह मृगया क्लेश की देने वाली होती है, पुनः यदि यह दोनों बली होकर केन्द्र में विराजमान हों तो मृगया शुभ फल देती है ॥ २ ॥

भोजन चिन्ता ।

लग्नाधिपो भोज्यदाता सुखेशो भोज्यमीरितम् ।
बुभुक्षा मदपः कर्मपतिर्भोक्तेति चिंतयेत् ॥ ३ ॥

भा०—लग्न स्वामी भोजन का देने वाला, चौथे घर का स्वामी भोजन की वस्तु आचार्यों ने कही है, सप्तम भाव का स्वामी भोजन की इच्छा, दशम घर का स्वामी भोजन कर्ता, यह विचार करे ॥ ३ ॥

लग्ने लाभे च सत्खेटैर्युते दृष्टे च भोजनम् ।
जीवे लग्ने सिते वापि सुभोज्यं दुःस्थितावपि ॥ ४ ॥

मन्दे तमसि वा लग्ने सूर्येणालोकिते युते ।
लभ्यते भोजनं नाऽत्र शस्त्रभीतिस्तदा क्वचित् ॥ ५ ॥
रविदृष्टं युतं वापि लग्नं न यदि तत्र हि ।
उपवासस्तदा वाच्यो नक्तं वा विरसाशनम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—लग्न से ग्यारहवें घर में शुभ ग्रह युक्त हों अथवा शुभग्रहों की [illegible] हो तो भोजन प्राप्त होता है, वा गुरु वा शुक्र लग्न में हों तो [illegible] की प्राप्ति में भी सुन्दर भोजन का लाभ होता है ॥ ४ ॥ [illegible] शनि वा राहु विराजमान हो और उसको सूर्य देखता हो वा सूर्ययुक्त हो तो इस योग में भोजन नहीं मिलता, किन्तु कहीं से शस्त्र भय होवे है ॥ ५ ॥ [illegible] सूर्य से [illegible] वा युक्त हो तो उपवास कहना चाहिये अथवा रात्रि में [illegible] भोजन मिलेगा ऐसा कहना ॥ ६ ॥

चन्द्रे कर्मगते भोज्यमुक्तं शीतं गुरौ कुजे ।
[illegible] रसमादिशेत् ॥ ७ ॥
[illegible] सिते सूर्ये तैलसंस्कृतमर्कजे ।
[illegible] विरसं च असंस्कृतम् ॥ ८ ॥

[illegible] विराजमान हो तो गरम भोजन [illegible] विराजमान हो तो [illegible] भोजन मिलता [illegible] के अनुसार भोजन के [illegible] में रस को [illegible] विराजमान हो तो भोजन में [illegible] विराजमान हो तो तेल में बना हुआ [illegible] विराजमान हो तो रस [illegible] ॥ ७ ॥ ८ ॥

[illegible] ॥ ९ ॥

[illegible]

जाति के घर में भोजन आचार्यों ने कहा है और जो चौथे घर का स्वामी बलवान होकर चौथे घर में विराजमान हो तो भोजन सुन्दर मिलता है तथा जो चौथे घर का स्वामी चरराशि में विराजमान हो तो अनेक बार भोजन प्राप्त हो, स्थिर राशि में विराजमान हो तो एक बार, द्विस्वभाव राशि में विराजमान हो तो दो बार भोजन प्राप्त होवे ॥ ९ ॥

मूलत्रिकोणगे खेटे लग्ने पितृगृहेऽशनम् ।
मित्रालये मित्रभस्थे शत्रुगेहेऽरिगेहगे ॥ १० ॥
शुभेक्षितयुते लग्ने बलाढ्ये स्वगृहे भुजि ।
ग्रहराशिस्वभावेन यत्नादन्यच्च चिन्तयेत् ॥ ११ ॥

भावार्थः—जो ग्रह मूलत्रिकोण में विराजमान होकर लग्न में बैठा हो तो पिता के घर में भोजन मिलता है, मित्र के राशि में विराजमान होने से मित्र के घर में भोजन मिलता है, दुश्मन के घर में विराजमान हो तो दुश्मन के घर में भोजन प्राप्त होता है ॥ १० ॥ तथा जिसके भोजन समय में शुभ ग्रहों से दृष्ट वा युत और बल से पुष्ट ऐसा लग्न हो तो अपने घर में भोजन प्राप्त होता है, पण्डित को उचित है कि ग्रहों के राशि स्वभाव से यत्न पूर्वक भोजन पदार्थों का चिन्तवन करे ॥ ११ ॥

ग्रहों के बल द्वारा भोजन के अन्न ।

तिलान्नमर्के हिमगौ सुतंदुला भौमे मसूराश्चणकाश्च भोज्यम् ।
बुधे समुद्गाःखलु राजमाषा गुरौ सगोधूमभुजिः सवीर्ये ॥१२॥
शुक्रे यवा वाजरिका युगंधराः शनौ कुलित्थादि समाषमन्नम् ।
भोज्यं तुपान्नं शिखिराहुवीर्याच्छुभेक्षणालोकनतःसहर्षम् ॥१३॥

भावार्थः—जो लग्न में बल सहित सूर्य हो तो तिलों के लड्डुओं का भोजन प्राप्त होवे, चन्द्रमा हो तो चावल, मङ्गल बली हो तो मसूर और चना, बुध बलवान हो तो मूँग सहित उड़द लोबिया का भोजन मिले, गुरु बली हो तो गेहूं का भोजन प्राप्त होवे ॥ १२ ॥ शुक्र बलवान हो

तो चन, बाजरा, जुन्हरी और जिमीकन्द का भोजन होता है, तथा जो शनैश्चर बली हो तो उड़दों समेत कुलथी आदि अन्नों का भोजन प्राप्त होता है और केतु राहु ये दोनों बलवान हों और शुभग्रह देखते हों तो आनंद सहित भूमी व कनकी आदि के अन्नों का भोजन प्राप्त होता है।

सूर्ये मूलं पुष्पमिन्दौ कुजे स्यात्पत्रं शाखाँ चापि शाकं सजीवे।
शुक्रेज्यज्ञे व्यंजनं भूरिभेदं मन्देनेत्थं सामिषं राहुकेत्वोः ॥ १४ ॥

भा०—जो सूर्य बलवान हो तो मूली का शाक भोजन में प्राप्त होता है, और चंद्रमा के बलिष्ठ रहते पुष्प (गोभी आदि का फूल शाक) मंगल के बलवान रहते डाली सहित पत्तों का शाक, शुक्र, बृहस्पति और बुध इनके बली रहते नाना प्रकार के व्यंजनों का भोजन प्राप्त होता है, और जो राहु केतु ये दोनों बल से संयुक्त हों तो मांस समेत व्यंजनों का भोजन प्राप्त होता है।

अथ चिन्ता वर्णन।

लग्नांशगेऽर्के तनुगेपि वास्मिन्दुःस्वप्नमीक्षेत यथार्कबिम्बम्।
[illegible] बलिष्ठेथापि चन्द्रे शुभ्राश्चरत्नाम्बरवस्त्रपुष्पम् ॥ १५ ॥
[illegible] कुजे सुवर्णं रक्ताम्बरस्रङ्मणिविद्रुमाणि।
[illegible] हयस्वर्गनिवर्मवार्ता गुरौ रतिं धर्मकथां सुरेज्याम् ॥ १६ ॥

[illegible] लग्न के नवांश अथवा लग्न में स्थित हो तो मनुष्य [illegible] है, जैसे सूर्य का बिम्ब लाल कपड़े और अग्नि आदि [illegible] हो तो स्वप्न में श्वेत घोड़ा, रत्न, कपड़ा, [illegible] दिखाई दे सकता है, और मंगल जो लग्न नवांश [illegible] सुवर्ण, लाल कपड़ा रक्त फूलों की माला, [illegible] देखता है तथा जो बुध लग्न के नवांश में [illegible] की सवारी स्वर्ग में गमन, [illegible] देखता है, और जो बृहस्पति [illegible] स्वप्न [illegible]

कथाओं का वर्णन करना, और शिवालय, ठाकुरद्वार, आदिकों में देव-मूर्तियों का दर्शन और मनोनीत मित्र प्यारों का समागम इन सबों को देखता है ॥ १५ ॥ १६ ॥

सद्बन्धुसंगं च सिते जलानां पारं गतिं देवरतिं विलासम् ।
शनावरण्याद्रिगतिश्च नीचैः संगं च राहौ शिखिनीत्थमवेम् ॥१७॥

भा०—जो शुक्र नवांश, वा लग्न में हो तो जल राशी के तट पर गमन, देवरति और विलास को देखता है, एवं शनि लग्न के नवांश वा लग्न में हो तो स्वप्न में वनभ्रमण, पर्वत पर चढ़ना, और नीचों की संगति को देखता है, इसी प्रकार राहु और केतुका स्वप्न दर्शन जानना ॥ १७ ॥

स्वप्न में चन्द्रमा द्वारा स्त्री रमण ।

सहजधीमदनायरिपुस्थितो यदि शशी गुरुभानुसितेक्षितुः ।
नवमकेन्द्रगतेशु शुभग्रहेष्ववलया मनुजो रमते तदा ॥१८॥

भा०—तीसरे, पांचवें, सातवें, ग्यारहवें, और छठे इन स्थानों में से किसी स्थान में यदि चन्द्रमा स्थित हो और उसको गुरु, सूर्य, शुक्र, ये तीनों देखते हों और नवें, पहले, चौथे, सातवें, दशवें इन स्थानों में शुभग्रह हों तो स्वप्न में सुन्दर प्यारी स्त्री के साथ रमण करता है ॥ १८ ॥

ग्रन्थकार के वंश का वर्णन ।

असिदसीमगुणमंडितपंडिताग्र्योऽख्यफणिजंगपगवीःश्रुतिवित्सुवृत्त
साहित्यरीतिनिपुणो गणितागमज्ञश्चिन्तामणिर्विपुलगर्गकुलावतंस

भा०—अपरिमित गुणों से भूषित जो पण्डित उन्हों में श्रेष्ठ, महाभाष्य के पढाने वाले, वेदविहित कर्मों के जानने वाले अच्छे आचरणों के करने हारे, साहित्य रीति में निपुण गणितशास्त्र के ज्ञाता, सुन्दर गर्गकुल के भूषण रूप ऐसे चिन्तामणि नामक होते भये ॥ १९ ॥

तदात्मजो ऽनन्तगुणोत्थमन्तो योधोक्तदुक्तीः किल कामधेनुम् ।
सत्तुष्टये जातकपद्धतिं च न्यरूपयद्द्दष्ट मतं निरस्य ॥२०॥

भा० — उन चिन्तामणि के पुत्र अनन्त गुणों से युक्त अनन्त नाम जिन्हों ने सज्जनों के आनन्दार्थ ज्योतिषशास्त्र में प्रसिद्ध पंचांग (तिथि का साधक कामधेनु नामक ग्रन्थ के ऊपर तिलक बनाया, और दुष्टों के म को दूर कर जातकपद्धति की जिससे उत्पन्न बालक व कन्याओं के जन्म का शुभाशुभ फल कहा जाता है, तिसको निरूपण करते भये ॥ २० ॥

पद्माम्बयाऽसावि ततो विपश्चित् श्रीनीलकंठः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः ।
विद्वच्छिवप्रीतिकर व्यधासीत् समाविवेकं मृगयावतंसम् ॥२१॥

भा०—उन अनन्त दैवज्ञ से पद्मानाम्नी माता ने विद्वान् वेद वेदांगों के ज्ञाता नीलकंठ नामक पुत्र को उत्पन्न किया जो कि विद्वान् शिवजी की प्रीति का करने वाला जिसमें मृगया आदि का वर्णन भली भांति किया ऐसे वर्ष [illegible] विचार को करता भया ॥ २१ ॥

वर्ष तन्त्र का पूर्ति समय ।

शाके नन्दाभ्रबाणेन्दुमिते आश्विनमासके ।
शुक्लाऽष्टम्यां समातन्त्रं नीलकंठबुधोऽकरोत् ॥२२॥

भा०—श्री शालिवाहनजी के शाके १५०९ आश्विन शुक्ला अष्टमी को श्री नीलकंठजी इस वर्ष तन्त्र को पूर्ण करते भये ॥ २२ ॥

इति ताजिकनीलकंठी भाषाटीकायां वर्ष तन्त्र समाप्तम् ।

अथ तृतीयं प्रश्नतन्त्रं प्रारभ्यते ।

[illegible] का [illegible] ।

[illegible] हि दैवज्ञ [illegible] ।
[illegible] ॥१॥

भावार्थ—ईश्वर की जो देव से शुभाशुभ फल कहने की शक्ति हो तो ग्रहों के संसार में मनुष्यों का शुभाशुभ फल कह सकता है ॥ १ ॥

ब्रह्मा से प्रश्न और स्वर की उत्पत्ति ।

अथोपविष्ट पुरा विष्णोर्ज्ञानार्थं समुपस्थितः ।
वचनं लोकनाथोपि ब्रह्मा प्रश्नादिनिर्णयम् ॥ २ ॥

भा०—पूर्व जब ब्रह्मा को कर्म का परिपाक जानने की इच्छा हुई तब विष्णु के समीप गये वहां विष्णुजी के मुख कमल से प्रश्न और स्वर का निर्णय सुनकर ब्रह्माजी ने प्रश्नादि निर्णय को ज्योतिष द्वारा जगत में प्रगट किया ॥ २ ॥

प्रश्न समय नियम ।

तस्मान्नरःकुसुमरत्नफलाग्रहस्तःप्रातःप्रणम्यवरयेदपि प्राङ्मुखस्थः
होरांगशास्त्रकुशलान्हितकारिणश्चसहत्यं दैवगणकान्सकृदेवपृच्छेत्

भा०—इस कारण मनुष्य प्रश्न करने के समय हाथ में फूल, रत्न फल आदि वस्तु लेके प्रातःसमय पूर्वमुख बैठ होरांग शास्त्र में कुशल और हित करने वाले ज्योतिषी पंडितों को एकत्र कर प्रश्न निमित्त वरण करें, और थोड़े अक्षरों में एक ही बार प्रश्न करें ॥ ३ ॥

किसकी वाणी मिथ्या नहीं होती उसका वर्णन ।

देशभेदं[1] ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ।
यः कथयति शुभाशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥ ४ ॥

भा०—जो प्रश्न समय पंडित देशभेद से ग्रह गणित करके अथवा दस प्रकार का ग्रह गणित भाव चलाचल तथा स्थानादि ग्रहगणित व जातकादि और भी संपूर्ण प्रश्न गणित को भी देखकर अच्छे प्रकार का विचार कर शुभ वा अशुभ फल कहता है, उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ॥४॥

---

१ दशभेदमपि पाठान्तरम् ।

प्रश्न कथन में योग्य और अयोग प्रश्नकर्ता ।

क्षुद्रपाखण्डधूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके ।
ज्ञानं न तथ्यतामेति यदि शंभुः स्वयं वदेत् ॥५॥
भक्तार्तदीनवदने दैवज्ञो न दिशेद्यदि ।
विफलं भवति ज्ञानं तस्मादेभ्यः सदावदेत् ॥६॥

भा०—क्षुद्र (कृपण, अधम, क्रूर) पाखंडी, धूर्त (मायावी, चोर) और श्रद्धारहित उपहासक (हंसी से पूछने वाला) इन अयोग्य पुरुषों से अर्थात् इनके पूछने में प्रश्न ज्ञान यथार्थ नहीं होता, चाहे स्वयं शंभु उत्तर देवें ॥५॥ तथा भक्त, दुःखी, दीनवदन, इनको जो दैवज्ञ नहीं बतलाता है, तो उसका ज्ञान विफल होता है इस कारण इनके प्रश्न को अवश्य कहे ॥ ६ ॥

ऋजुरयमनृजुर्वा प्रष्टा पूर्वं परीक्ष्य लग्नबलात् ।
गणकेन फलं वाच्यं दैवं तच्चित्तगं स्फुरति ॥ ७ ॥

भा०—गणित प्रथम लग्न बल से प्रश्नकर्ता के चित्त की परीक्षा करे कि यह प्रश्नकर्ता सरल स्वभाव (सीधा) है या कुटिल है, यह पहिले परीक्षा करके प्रश्न फल कहे, क्योंकि लग्न से प्रश्नकर्ता के चित्त की गति और दैव (प्रारब्ध) स्फुरण होता है ॥ ७ ॥

[illegible] शशिनि शनौ केन्द्रस्थे ज्ञे दिनेशरश्मिगते ।
[illegible] समदृष्टा लग्नगचन्द्रेऽनृजुः प्रष्टा ॥ ८ ॥
[illegible] शुभदृष्टे सबलः केन्द्रान्विते भवेत्कुटिलः ।
[illegible] दृष्टा [illegible] न सरलोऽन्यः ॥ ९ ॥

[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] और [illegible]

जानना, तथा लग्न में और चारों स्थान में शुभग्रहों की दृष्टि हो वा चन्द्र गुरुकी दृष्टि हो तो वह प्रश्नकर्ता सरल स्वभाव है ऐसा जानना ॥ ९ ॥

यदि गुरुबुधयोरेकः पश्यत्यस्ताधिपं च रिपु दृष्ट्या ।
तत्कुटिलः प्रष्टा स्याच्चनयो रेकगतयोःसाधुः ॥१०॥
सम्यग्विचार्य लग्नंतृणात्प्रश्नं सकृद्यथाशास्त्रम् ।
यस्त्वेकंवतेऽसौ तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥११॥

भा०—जो गुरु बुध ये दोनों सप्तम स्थान के स्वामी को शत्रु दृष्टि से देखते हों तो प्रश्नकर्ता कुटिल जानना। तथा इन दोनों में से एक भी मित्र दृष्टि से देखता हो तो प्रश्नकर्ता को साधु स्वभाव जानना ॥ १० ॥ ज्योतिषी ऐसा पण्डित अच्छे प्रकार यथाशास्त्रानुसार लग्न को विचार कर एक ही प्रश्न को कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ॥ ११ ॥

बहुत प्रश्नों के विषय में विधि ।

बहूनि यदि प्रश्नानि युगपद्यदि पृच्छति ।
प्रष्टा तेषां विधिंवक्ष्ये शास्त्रतो लोकतुष्टये ॥१२॥
आद्यतिमं लग्नतो चंद्रस्थानाद्द्वितीयकम् ।
सूर्यस्थानात्तृतीयं स्यात्तुर्यं जीवग्रहाद्भवेत् ॥१३॥
बुधभृग्वोर्बलीयः स्यात्तद्ग्रहात्पंचमं पुनः ।
राश्यनुरूपं कथयेत्संज्ञाध्यायोक्तवद्बुधः ॥१४॥

भा० —यदि प्रश्नकर्ता एकही समय में बहुत प्रश्न करे हैं, तो उसकी विधिको शास्त्रानुसार लोक प्रसन्नतार्थ वर्णन करता हूँ ॥ १२ ॥ पहला प्रश्न लग्न से जानना, दूसरा चन्द्रमा से तीसरा सूर्य के स्थान से, चौथा बृहस्पति के स्थान से विचारना ॥ १३ ॥ अनन्तर पांचवां प्रश्न बुध और शुक्र इन दोनों में जो बली हो उसको कहना, यहां राशतनुसार संज्ञाध्याय में कहे प्रकार धातु, रूप, रंग, आकार, गुण आदि के प्रभाव से वर्णन करना इस प्रकार पण्डित विचार करें ॥ १४ ॥

राशि चक्र का पूजन।

राशिचक्रं समभ्यर्च्य फलैः पुष्पैः सरत्नकैः ।
प्रष्टा सुभूमौ दैवज्ञानकं पृच्छेत्प्रयोजनम् ॥१५॥

भा०—फल, फूल और रत्नों से पवित्र भूमि पर बैठकर प्रश्नकर्त्ता राशि चक्र का पूजन करके दैवज्ञ (पण्डित) से अपने प्रयोजन को [illegible] ॥ १५ ॥

दीप्तादि अवस्थाओं का महात्म्य।

दशभेदं ग्रहाणां च गणितं भावजं तथा ।
[illegible]कं च कथयेन्नानेकं प्राह पद्मभूः ॥१६ ॥
[illegible] दशभेदं च ग्रहाणां भावजं फलम् ।
[illegible] प्रवदेद्यस्तु तस्योक्तं नान्यथा भवेत् ॥१७॥

[illegible] दश भेदों को गणित तथा भाव से उत्पन्न [illegible] ऐसा ब्रह्मा जी ने कहा है ॥ १६ ॥ [illegible] और ग्रहों के भाव से उत्पन्न फल का विचार [illegible] ॥ १७ ॥

[illegible] के नाम।

[illegible] मुदितः [illegible] निपीडितः ।
[illegible] ॥१८॥

[illegible] ३ मुदित, ४ [illegible], ५ [illegible], ६ [illegible] ॥ १८ ॥

[illegible] का लक्षण।

[illegible] नीचे दीनः [illegible] ।
[illegible] ॥१९॥
[illegible] निपीडितः ।
[illegible] ॥२०॥

सुवीर्यः कथितः प्राज्ञैः स्वोच्चाभिमुखसंस्थितः ।
अधिवीर्यो निगदितः सुरश्मिः शुभवर्गगः ॥ २१ ॥

भा०—अपने उच्च राशि में स्थित ग्रह दीप्त कहा जाता है नीच राशि में हीन कहाता है, मित्र के घर में स्थित मुदित और अपनी राशि में स्थित ग्रह स्वस्थ ॥ १९ ॥ शत्रु के घर में स्थित ग्रह सुप्त और अन्य पाप ग्रहों से जीता हुआ ग्रह पीडित तथा नीचाभिलाषी ग्रह हीन और अस्तंगत ग्रह मुषित ॥ २० ॥ तथा उच्चाभिलाषी ग्रह सुवीर्य पण्डितों ने कहा है, और सुन्दर रश्मि व शुभवर्ग में प्राप्त ग्रह अतिवीर्य संज्ञक कहा जाता है ॥ २२ ॥

दीप्तादि अवस्थाओं का फल ।

दीप्ते सिद्धिश्च कार्य्याणां दीने दुःखसमागमः ।
स्वस्थे कीर्तिस्तथा लक्ष्मीरानन्दो मुदिते महान् ॥२२॥
सुप्ते रिपुभयं दुःखं धनहानि निपीडिते ।
मुषिते परिहीने च कार्यनाशोऽर्थसंक्षयः ॥ २६ ॥
गजाश्वकनकावाप्तिं सुवीर्ये रत्नसंपदः ।
अधिवीर्ये राज्यलब्धिर्ग्रहमित्रार्थसंगमः ॥२४॥

भा०—दीप्त अवस्था में स्थित ग्रह कार्य की सिद्धि करता है और दीन में दुःखका आगम स्वस्थ में कीर्ति तथा लक्ष्मी मुदित में अत्यन्त आनन्द ॥२२॥ सुप्तावस्था में शत्रुभय और दुःख पीडित में धनकी हानि मुषित और हीन में कार्य नाश व धनका नाश ॥ २३ ॥ सुवीर्यावस्था में हाथी, घोड़ा, सुवर्ण और रत्न वा सम्पत्ति का लाभ, अतिवीर्य में राज्य लाभ, मित्र, धन, इनका संगम प्राप्त होता है ॥ २४ ।

सूर्य का स्वरूप ।

पूर्वः सत्वं नृपस्तातः क्षत्रं ग्रीष्मोरुणश्चलः ।
मधूदृक् पैत्तिको धातुः शूरः सूक्ष्मकचो रविः ॥२५॥

भा०—तहां प्रथम पूर्व दिशाका स्वामी, सतोगुणी, राजा व पिता

[illegible], क्षत्रिय जाति, ग्रीष्मऋतु, रक्तवर्ण, चपल स्वभाव, शहद के रंग समान नेत्र, पित्त धातु, शूर सूक्ष्म (बारीक) केश ये गुण सूर्य के हैं ॥ २५ ॥

चन्द्रमा का स्वरूप ।

कफो वर्षा मृदुर्माता पयो गौरश्च सात्विकः ।
जीवो वैश्यश्चरो वृत्तो मारुताशो विधु सुदृक् ॥ २६ ॥

भावार्थः—कफ प्रकृति, वर्षाऋतु, कोमल देह माता स्थान, जलतत्व गौरवर्ण, सतोगुणी प्राणदाता, वैश्य जाति, चर स्वभाव गोलाकार वायु दिशा का स्वामी सुहावने नेत्र ये चन्द्रमा के गुण हैं ॥ २६ ॥

मङ्गल का स्वरूप ।

ग्रीष्मः क्षत्रतमो रक्तो याम्यः सेनाग्रणीश्चरः ।
गुहा भानुश्च पित्ताढ्य क्रूरः पित्तं शिखी कुजः ॥ २७ ॥

[illegible] ग्रीष्म ऋतु, क्षत्रिय जाति, तमोगुण रक्तवर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, सेना का अधिपति, चर स्वभाव गुफा [illegible] भाव, पीतवर्ण [illegible] स्वामी, [illegible] ये गुण मङ्गल के हैं ॥ २७ ॥

[illegible] ।

[illegible] हरिर्दूर्वा [illegible] कुमारकः ।
[illegible] शूद्रः सौम्यस्त्रिधातुकः ॥ २८ ॥

[illegible] नेत्र [illegible] दिशा का [illegible], उत्तर दिशा का [illegible] गुण हैं ॥ २८ ॥

[illegible] ।

[illegible] द्विजानन्दः ।
[illegible] नभा ॥ २९ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] हैं ॥ २९ ॥

शुक्र का स्वरूप ।

शुक्रः शांतो द्विजो नारी वैश्यो मंत्री चरः सितः ।
आग्नेयी दिक् कफस्त्वाम्लः कुटिलासितमूर्धजः ॥ ३० ॥

भावार्थ—शान्त स्वभाव, ब्राह्मणवर्ण स्त्रीसंज्ञक, वैश्य जाति, मन्त्रदाता, चर स्वभाव श्वेत वर्ण, अग्नि दिशा का स्वामी कफ प्रकृति, अम्ल धातु, वक्र, श्याम रंग केश ये लक्षण शुक्र के हैं ॥ ३० ॥

शनि का स्वरूप ।

कृष्णस्तमः कृशो वृद्धः पंढो मूलांत्यजोलसः ।
शिशिरः पवनः क्रूरः पश्चिमो वातुलः शनिः ॥ ३१ ॥

भावार्थः—कृष्णवर्ण, तमोगुणी, दुर्बल देह, वृद्धावस्था, नपुन्सक, मूल बीज, चाण्डालों का अधिपति, आलसी, शिशिर ऋतु का स्वामी, वायु धातु, क्रूर स्वभाव, पश्चिम दिशा का स्वामी, वाचाल ये शनि के गुण हैं ॥ ३१ ॥

राहु केतु का स्वरूप ।

राहुर्धातुः शिखी मूलं शेषमन्यच्च मंदवत् ।
चिंतनीयं विलग्नेशात्केन्द्रगाद्वा बलाधिकात् ॥ ३२ ॥

भा०—राहु धातु का स्वामी, जटाधारी, मूल बीज शेष गुण शनि के समान हैं ऐसा ही केतु जानना, ये सब पूर्वोक्त ग्रह लग्न या लग्नेश से अथवा केन्द्र स्थान में या जो अधिक बली हो उसके अनुसार प्रश्न समय लक्षण कहना, विशेष गुण तथा राशियों के गुण पहले संज्ञातन्त्र में कहचुके हैं ॥३२॥

लग्न में विचारने योग्य बात ।

सौख्यमायुर्वयो जातिरारोग्यं लक्षणं गुणम् ।
क्लेशाकृती रूपवर्णस्तनोश्चिन्त्यं विचक्षणैः ॥ ३३ ॥

भा०—सुख, आयु, अवस्था, जाति, आरोग्यता, शरीर के लक्षण, गुण, क्लेश, आकृति, रूप, रंग यह सब लग्न से पण्डितों करके विचारना चाहिये ॥ ३३ ॥

धन भाव में विचारने योग्य बात ।

मुक्ताफलं च माणिक्यं रत्नधातुधनाम्बरम् ।
हयकार्याम्बविज्ञानं वित्तस्थानाद्विलोकयत् ॥ ३४ ॥

भावार्थ—मोती और माणिक, रत्न, धातु, धन, वस्त्र, अश्व सम्बन्धी व [illegible] सम्बन्धी कार्य यह सब धन भाव से देखे ॥ ३४ ॥

तीसरे भाव में विचारने योग्य बातें ।

भामिनी भ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृतामपि ।
कुर्वीत वीक्षणं विद्वान्सम्यक दुश्चिक्येवशमतः ॥ ३५ ॥

भा०—बहिन भाई, सेवक और दास कर्म करने से व्यापारादि कर्म भी [illegible] इन सब कर्मों का विज्ञान तीसरे घर से विचार करे ॥३५॥

चतुर्थ भाव में विचारने योग्य बातें ।

[illegible]निधानपि ।
[illegible] प्रवेशं च पश्येत्पातालतो बुधः ॥ ३६ ॥

[illegible] (अर्थात् [illegible]) [illegible] इनका [illegible] ॥ ३६ ॥

[illegible] योग्य बातें ।

[illegible]नां [illegible]पि ।
[illegible]नां [illegible] ॥ ३७ ॥

[illegible] आदि लेना) और [illegible] में निर्णय करना ॥ ३७ ॥

[illegible] योग्य बातें ।

[illegible] ।
[illegible] ॥ ३८ ॥

[illegible] ॥ ३८ ॥

सातवें भाव में विचारने योग्य बात ।

वाणिज्यं व्यवहारं च विवादंच समं परैः ।
गमागमकलत्राणि पश्येत्प्राज्ञः कलत्रतः ॥ ३६ ॥

भा०—व्यापार, व्यवहार, और अन्य के साथ विवाद अथवा मिलाप जाना आनना, और अपना स्त्री सम्बन्धी विचार, यह बुद्धिमान सातवें घर से विचारे ॥ ३६ ॥

अष्टम भाव में विचारने योग्य बात ।

नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये दुर्गे च शस्त्र संकटे ।
नष्टे दुष्टे रणे व्याधौ छिद्रे छिद्रं निरीक्षयेत् ।४।

भा०—नदी से तैरना, मार्ग सम्बन्धी विचार, विषम स्थान, किला, शस्त्रसंकट, और नष्टना, दुष्टता, रण में, व्याध में गृहच्छिद्र, इनमें जो विचार करना सो सब आठवें स्थान से विचारना ॥ ४० ॥

नवें भाव में विचारने योग्य बात ।

वापीकूपतडागादिप्रपादेव गृहाणि च ।
दीक्षा यात्रां मठं धर्मं धर्मान्निचिन्त्य कीर्तयेत् ॥४१॥

भा०-बावली, कुआं, तालाब, आदि तथा गौशाला, देवमन्दिर, यात्रा, मठ, धर्मकार्य, यह सब नवम स्थान से विचार करना ॥ ४१ ॥

दशवें भाव में विचारने योग्य बात ।

राज्यं मुद्रां परं पुण्यं स्थानं तातं प्रयोजनम् ।
वृष्ट्यादिव्योमवृत्तान्तं व्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ॥४२॥

भा०—राज्यमुद्रा (मोहर) पुण्य, स्थान, पिता, प्रयोजन, वृष्टि आदि आकाश का वृत्तान्त यह सब दशम स्थान से विचार करना चाहिये ॥ ४२ ॥

ग्यारहवें भाव में विचारने योग्य बात ।

गजाश्वयानवस्त्राणि सस्यकाञ्चनकन्यकाः ।
विद्यान् विद्यार्थयोर्लाभं लक्षयेल्लाभभावतः ॥४३॥

भा०—हाथी, घोड़ा, पालकी आदि वाहन, वस्त्र, अन्न, सुवर्ण, कन्या, विद्या, तथा धन का लाभ इनका पंडित ग्यारहवें स्थान से विचार करें॥४३॥

बारहवें स्थान में विचारने योग्य बातें।

त्यागभोगविवादेषु दानेष्टकृषिकर्मसु।
व्ययस्थानेषुसर्वेषु विद्धि विद्वन व्ययं व्ययात्॥४४॥

भा०—त्याग, भोग, दूसरे से कलह, दान, इष्टवस्तु खेती तथा सब प्रकार के खर्च, इन सब का विचार विद्वान बारहवें स्थान से जाने ॥ ४४ ॥

भावों का बलाबल।

योयो भावःस्वामिदृष्टो युतोवा सौम्यैर्वास्यात्तस्य तस्यास्तिवृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा॥४५॥

भा० जो जो भाव अपने स्वामी से अथवा शुभ ग्रह से देखा जाता हो वा युक्त हो तो उस भाव की वृद्धि होती है, एवं जो पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हो उस भाव की हानि जानना यह प्रश्न समय तथा जन्म समय में भी विचार करना ॥ ४५ ॥

प्रश्न से कार्य शुभ ज्ञान।

[illegible] त्रिकोणे यदि वा स्वतुङ्गे शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम्।
[illegible] [illegible]: कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं विमिश्रम्॥४६॥

[illegible] ॥ ४६ ॥

दृष्टि वश में कार्य सिद्धि वर्णन ।

लग्नपतिर्यदि लग्नं कार्याधिपतिश्च वीक्षते कार्यम् ।
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम् ॥ ४७ ॥
लग्नेश कार्येशं विलोकते लग्नपं तु कार्येशः ।
शीतगुदृष्टौ सत्यां परिपूर्णा कार्यनिष्पत्ति ॥ ४८ ॥

भा०—यदि लग्न का स्वामी लग्न को देखता हो और कार्य भाव का स्वामी कार्य भावको देखता हो, तथा लग्न स्वामी कार्य भावको और कार्य भावका स्वामी लग्न को देखता हो ॥ ४७ ॥ तथा लग्नका स्वामी कार्य भावके स्वामी को और कार्य भावका स्वामी लग्न स्वामी को देखता हो और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो कार्य की सिद्धि परिपूर्ण होती है ॥ ४८ ॥

लग्न के स्वामी आदिकी लग्न पर दृष्टि फल ।

कथयन्ति पादयोगं पश्यति सौम्यो न लग्नपो लग्नम् ।
लग्नाधिप न पश्यति शुभग्रहश्चार्धयोगोऽत्र ॥ ४९ ॥
एकःशुभग्रहो यदि लग्नाधिपं विलोकयति ।
लग्नं पादोनयोगमाहुस्तदा बुधाः कार्यसंसिद्धौ ॥ ५० ॥

भा०—सौम्य (शुभ) ग्रह लग्नको देखता हो और लग्न स्वामी लग्न को न देखता हो तो बुधजन चौथाई योगको कहते है, तथा लग्न स्वामी को शुभ ग्रह न देखता हो तो आधा योग अर्थात् दस बिस्वा कार्य सिद्धि कहना ॥ ४९ ॥ तथा यदि एक शुभग्रह लग्न को देखता हो और लग्न स्वामी भी देखता हो तो चौथा भाग कमती अथवा १५ बिस्वा कार्य सिद्धि योग बुधजन कहते हैं ॥ ५० ॥

इसी प्रकार और फल ।

लग्नपतिदर्शने सति शुभग्रहौ द्वौ त्रयोथ वा ,लग्नम् ।
पश्यन्ति यदि तदानीमाहुर्योगं त्रिभागोनम् ॥ ५१ ॥
क्रूरावेक्षणवर्ज्यश्चन्द्रः सौम्याश्च खेचरा लग्नम् ।
लग्नेशदर्शने सति पश्यन्तः पूर्ण योगकराः ॥ ५२ ॥

भा०—लग्न स्वामी की दृष्टि होने पर यदि दो अथवा तीन शुभग्रह लग्न को देखते हों तो त्रिभाग ऊन (तिहाई कमती) कार्य सिद्धि योग कहा है ॥ ५१ ॥ और यदि क्रूर ग्रहोंकी दृष्टि से वर्जित होकर चन्द्रमा और शुभ ग्रह लग्न को देखते हों, और लग्न के स्वामी की भी लग्न पर दृष्टि हो [illegible] क्रूर दृष्टि वर्जित चन्द्रमा और शुभग्रह लग्न व लग्नेश को देखते हों तो पूर्ण योग [illegible] २० [illegible] कार्य सिद्धि के करने वाले [illegible] ॥ ५२ ॥

अनिष्ट योग।

क्रूराक्रांतः क्रूरयुतः क्रूरदृष्टश्च यो ग्रहः।
विरश्मितां प्रपन्नश्च सोऽनिष्टफलदायकः ॥ ५३ ॥

भा०—यदि कार्य करने वाला ग्रह पापग्रह से पीड़ित, पापग्रह से युक्त [illegible] हो और [illegible] अर्थात् [illegible] हो तो वह [illegible] देने वाला होता है ॥ ५३ ॥

[illegible] काम कब होगा इस प्रकार का उत्तर।

[illegible] कार्यं कदा भविष्यत्यमुत्र पृच्छायाम्।
[illegible] कार्यं कार्याधिपः पश्येत् ॥ ५४ ॥
[illegible] पश्यति [illegible] तदैव भवेत्।
[illegible] तदा न स्यात् ॥ ५५ ॥

[illegible] कार्य कब होगा [illegible] कार्य भावका कार्य भावका स्वामी [illegible] तथा कार्य भावका स्वामी [illegible] कार्य सिद्धि [illegible] कार्य सिद्धि नहीं होगी [illegible]

[illegible] चन्द्रे [illegible] न यदा।
[illegible] तदा सिद्धिः ॥ ५६ ॥
[illegible] कार्याधीशो [illegible] लग्न।

कार्यस्य हानिरुक्ता लग्नेमृते किमपि नो वान्यम् ॥५७

भा०—और जो चन्द्रमा लग्न अथवा लग्न स्वामी को देखता हो अथवा लग्नेश कार्येश एक ही स्थान में स्थित हो तो कार्य की सिद्धि होवेगी ॥ ५६ ॥ जो लग्नेश कार्येश को न देखता हो अथवा कार्य स्थान को न दिखे तो कार्य हानि कही है लग्नको छोड़कर अन्य भावों से कुछ भी विचार न कहना ॥ ५७ ॥

द्रेष्काण वश से लाभालाभ का ज्ञान ।

लग्नपो मृत्युपश्चापि मृत्यौ स्यातामुभौ यदि ।
स्थितो द्रेष्काण एकस्मिन्नष्टुर्लाभस्तदा ध्रुवम् ॥५८॥
एवं द्वादशभावेषु द्रेष्काणे रेव केवलम् ॥
बुधो विनिश्चयं ब्रूयाद्योग ष्वन्येषु निस्पृहः ॥५९॥

भा०—जो लग्न स्वामी और अष्टमस्थान स्वामी ये दोनों अष्टम स्थान में एक ही द्रेष्काण में स्थित हों तो निश्चय प्रश्नकर्ता को लाभ होवे ॥ ५८ ॥ इस प्रकार बारहों भावों में केवल द्रेष्काण ही से निश्चय करके पंडित भावफल कहे, अन्य योगों से यही बली होता है ऐसा जानना ॥ ५९ ॥

लाभ आदि काल निर्णय ।

उदयोपगतं राशिं तत्कालीकृत्य लिप्तिकां गुणये !
छायांगुलेश्च कुर्यात् हत्वा मुनिभिस्ततःशेषः ॥६०॥
गणयित्वेवं प्राग्वत् हत्वा सौम्यस्य भवेदुदयः ।
कार्यप्राप्तिः प्रष्टर्वक्ताव्य नेतर्फग्रहे भवति ॥६१॥

भा०—प्रश्न समय की तत्काल लग्नको स्पष्ट करके उस समय बारह अंगुल की छाया से गुणन करके १४ से भाग देना जो शेष रहेसो मेषादि राशि जानना ॥ ६० ॥ सो राशि जो शुभग्रह की होतो कार्य सिद्धि हो पापग्रह की राशि हो तो कार्य हानि कहना ॥ ६१ ॥

ग्रहगुणकारो ज्ञेयो देवविदा पंच ५ विंशतिः सैकः ॥६१॥
मनवो १४ का ६ ष्टौऽन्त्रितयं३भवाः२१सूर्यादितो ज्ञेयः॥"

वा शुभ ग्रहों को योग सब स्थान में विचार करके प्रश्नकर्त्ता को शुभ फल कहना इससे विपरीत हो तो अशुभ फल कहना ॥ ६७ ॥

लग्नेशो मुथशिलो यस्मात्तस्मादतीतमाख्येयम् ॥
येनयुतस्तस्माद्भवेदप्यंयो योक्ष्यते तस्मात ॥६८॥

भा०—लग्नेश का जिसके साथ इत्थशाल योग हो उससे भूत (अतीत) कहना, और लग्नस्वामी का जिससे योग हो उसे वर्त्तमान कहना, और दृष्टि से भविष्य फल कहना ॥ ६८ ॥

शुभ फल वर्णन ।

यदिलग्ने लग्नपतिःसौम्ययुतो वा विलोकितः सौम्यैः ॥
तत्प्रष्टुर्व्याकुलता शरीरदोषा विनश्यान्ति ॥ ६९ ॥

भावार्थ—यदि लग्न का स्वामी लग्न में हो और उससे शुभ ग्रह युक्त हो वा शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो प्रश्नकर्त्ता के चित्त की व्याकुलता और शरीर दोष सब नाश होजाते हैं ॥ ६९ ॥

शुभाशुभ फल ।

पापोयदि लग्नपतिस्तदा कलिव्याधिधननाशाः ।
सौम्ये निवृत्तिबुद्धिर्द्रव्याप्तिः सौख्यमतुलं च ॥ ७० ॥

भावार्थ—यदि लग्न का स्वामी पापग्रह हो तो कलह, रोग धनका नाश हो और जो लग्न का स्वामी शुभग्रह हो तो पवित्र बुद्धि, द्रव्य की प्राप्ति, और अतुल सुख होता है ॥ ७० ॥

द्वितीय स्थान संबन्धी प्रश्न ।

धनलाभस्य प्रश्ने लग्नेशो नेन्दुनाऽथ धननाथः ।
कुरुते यदीत्थशालं शुभयुतिदृष्ट्यां भवेल्लाभः ॥ ७१ ॥
क्रूरग्रहैर्धनस्थैर्दूरे लाभोऽन्यदप्यशुभम् ।
क्रूरमुथशिले धनेशः प्रष्टा म्रियतेऽथ वा विलग्नेशो ॥७२॥
धनधनेपत्थशाले मन्दगतिर्यत्र भावानाम् ।

तनुधनसहजादीनां प्रष्टुस्तद्द्वारतो लाभः ॥ ७२ ॥

भा०—यहां धन लाभ प्रश्न में लग्नेश से चन्द्र, राशीश, और धन भावेश की इत्थशाल योग हो और शुभ ग्रह युक्त हो वा शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो धन का लाभ होवे ॥७१॥ पापग्रह धन स्थान में स्थित हों तो दूर में लाभ हो अथवा बहुत दिनों में लाभ हो, और अन्य भी कुछ अशुभ होवे। और धनेश वा लग्नेश ये दोनों पापग्रहों के साथ इत्थशाल करते हों, तो प्रश्नकर्ता को धन का नाश होवेगा ॥७२॥ तथा धनाभाव वा धनाभावस्वामी ग्रह मन्दगति वाला होकर तनु धन सहज आदि भावों में से जिस किसी भाव के साथ इत्थशाल करता हो तो उस भाव के द्वारा धन प्राप्त होवेगा ॥ ७२ ॥

प्रश्नदीपक के अनुसार धन लाभ योग ।

लग्नस्थं चन्द्रजं चन्द्रः क्रूरो वा यदि पश्यति ॥
धनलाभो भवत्याशु किं त्वनर्थो हि पृच्छतः । ७४॥
चन्द्रलग्नधनाधीशा दृष्टा युक्ताः परस्परम् ।
धनेन्द्रत्रिकोणस्थाःसद्यो लाभकराः स्मृताः । ७५ ॥

भा०—यदि बुध लग्न में स्थित हो और उसको चन्द्रमा अथवा [illegible] ग्रह [illegible] देखे, तो शीघ्र लाभ होता है, परन्तु प्रश्नकर्ता को अनर्थ [illegible] लग्न, धनाभाव इनकी परस्पर दृष्टि हो अथवा यह [illegible] स्थित हों और [illegible] में केन्द्र १ । ४ । ७ । १० स्थान में [illegible] में स्थित हों तो शीघ्र लाभ करने वाले होते हैं, [illegible] ॥

[illegible] लग्ने सौम्ययुतेक्षिते ॥
[illegible] विपर्यये ॥ ७६ ॥
[illegible] लग्नगे शुभे ।
[illegible] स्थानगते शुभे त्रिषि ॥ ७७॥

[illegible]

विपरीत फल कहना ॥ ७८ ॥ चतुर्थ का स्वामी भाव में पड़ता हो उसपर
... यदि ... के शुभ ग्रह हों अथवा ... में ... हो तो प्रश्नकर्ता को
... भय का नाश होगा ऐसा कहना ॥ ७७ ॥

तीसरे स्थान सम्बन्धी प्रश्न ।

सहजपतिर्यदि सहजं पश्यति चेत्तद्गतं शुभैर्दृष्टम् ।
तद्भ्रातरो गतरुजः स्वस्थाः क्रूरैस्तु गं वामम् ॥ ७८ ॥
यदि सहजपतिः षष्ठे नत्यानिना मथुशिलेऽथ तन्मांद्यम् ।
षष्ठेशे सहजस्थे सहजपतौ क्रूरगे वापि ।
सूर्यस्य रश्मिसंस्थे भयावहं भ्रातुरादेश्यम् ॥ ७९ ॥
षष्ठ इत्थुशलचापि अष्टमस्थेपि ।

भावार्थ -- यदि तीसरे भाव का स्वामी तीसरे घर को देखता हो, तृतीय
भाव व तृतीय भावेश को शुभ ग्रह देखते हों तो उस प्रश्नकर्ता के भाई का
रोग दूर होजावे और वह आरोग्य शरीर होजावे तथा यदि पाप ग्रह देखते
हों तो इससे विपरीत फल कहना ॥ ७८ ॥ यदि तीसरे भाव का स्वामी
छठे स्थान में हो या षष्ठेश से इत्थशाल करता होवे तो उसके भाई को उस
... होवे, या षष्ठेश तीसरे भाव में हो या तीसरे भाव का
स्वामी पापयुक्त हो या सूर्य के साथ (अस्तङ्गत) हो तो भी ऐसा ही फल
जानना ॥ ७९ ॥

षष्ठाष्टम भावेशौ यद्भावेशेनेत्थशालिनौ स्याताम् ।
पीडां तस्य प्रवदेत्षष्ठाष्टमभावगे वापि ॥ ८० ॥
एवं सर्वेपि यथा पित्रोस्तुर्ये सुतानां च ।
भृत्यचतुष्पदवर्गं स्यास्ते स्त्रियाः सुहृदोये ॥ ८१ ॥

जिस भाव के स्वामीके साथ इत्थ-
भा०-छठे आठवें स्थानके स्वामी ये दोनों जिस भाव के स्वामीके साथ इत्थ-
शाल करते हों अथवा छठे आठवें स्थान में स्थित हों तो उस भाव सम्बन्धी पीड़ा
कहनी ॥ ८० ॥ इस प्रकार सब भावों से विचार करना, जैसे चौथे स्थान के
स्वामी से षष्ठेश या अष्टमेश का इत्थशाल हो अथवा इन भावों के स्वामी

चतुर्थ स्थान में हों वा चतुर्थेश इन भावों में हों तो माता पिता को पीड़ा होवे एवं पंचम भाव से पुत्रों को, सप्तम भाव से सेवक, स्त्री, चतुष्पदें इत्यादि का विचार करना ॥ ८१ ॥

चौथे स्थान सम्बन्धी प्रश्न ।

लग्नपतीन्दुचतुर्थपतिमथुशिलमथवा ग्रहे गमनम् ।
प्रष्टुः पृथ्वीलाभदमसौम्यदृग्योगतो नैव ॥ ८२ ॥
यदि पृच्छति कृषिको मे क्षेत्राल्लाभो भवेन्न वा ।
लग्नं कृषिकस्तुर्यं भूमिद्यूनं कृषिस्तरुर्दशमम् ॥ ८३ ॥

भावार्थ—किसी प्रश्नकर्त्ताने पृथ्वी लाभ सम्बन्धी प्रश्न किया तो लग्न का स्वामी, चन्द्रमा और चतुर्थ भाव स्वामी ये तीनों परस्पर इत्थशाल योग करें अथवा एक ही घर में स्थित हों तो पृच्छक को पृथ्वी का लाभ होगा, और पाप ग्रह से [illegible] वा युक्त हों तो भूमि लाभ नहीं होवे ॥ ८२ ॥ [illegible] कोई प्रश्न करनेवाला पूछे कि हमको खेती से लाभ होगा या नहीं तो लग्न [illegible] और चतुर्थ भाव भूमि, सप्तम भाव खेती तथा दशम भाव को [illegible] इन भावों में बलाबल विचार करके प्रश्न का [illegible] ॥ ८३ ॥

[illegible] शुभग्रहै [illegible] कर्षकस्य कृषिनः स्यात् ।
[illegible] भूमिं प्रयात्येष ॥ ८४ ॥
[illegible] शुभं [illegible] विपर्ययम् ।
[illegible] शुभा ज्ञेयाः ॥ ८५ ॥

[illegible] स्थित हों तो कृषिकर्ता को खेती से [illegible] हों तो [illegible] नहीं [illegible] स्थित हों तो कृषिकर्ता को [illegible] स्थित हों तो [illegible] ॥ ८४ ॥

लग्ने क्रूरोपगते स्याच्चौरोपद्रवस्तु कृषिकर्तुः ।
वक्रातिचारवर्ज्ये क्रूरे चौरस्य कृषिलाभः ॥ ८६ ॥

भावार्थः—लग्न में पापग्रह स्थित हो तो खेती वाले को चोरों से उपद्रव हो अर्थात् कृषिकर्ता की चोरी होवे और लग्न स्थित पाप ग्रह जो वक्री या अतिचारी न हो तो चोर से भी लाभ होवे ॥ ८६ ॥

भूभाटकपृच्छायां लग्नं प्रष्टा च भाटकं द्यूने ।
तस्योत्पत्तिर्दशमे तथावसानं चतुर्थे स्यात् ॥ ८७ ॥
लग्नस्य लग्नपस्य च शुभयोगे शुभमशोभनं वामे ।
द्यूने क्रूरोपगते यस्मादपि भाटकस्ततोऽनर्थः ॥ ८८ ॥
दशमे क्रूरोपगते नोत्पत्तिर्बहुतरा भवेत्प्रष्टुः ।
क्रूरार्दिते तु तुर्ये स्यादवसाने शुभं नास्य ॥ ८९ ॥

भा०—अब पृथ्वीसम्बन्धी भाड़ा किराया किस्त आदि के प्रश्न में लग्न को प्रश्नकर्ता सप्तम को किराया दशम को उत्पत्ति चतुर्थ को परिणाम कल्पना करके इन स्थानों को विचार करके शुभाशुभ उत्तर देना ॥ ८७ ॥ लग्न और लग्न स्वामी शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो शुभ फल कहना, पाप ग्रह युक्त दृष्ट होवे तो अर्थात् अशुभ फल कहना, सप्तम स्थान में पाप ग्रह स्थित होवे तो भाड़ा आदि में किसी प्रकार का अनर्थ होता है ॥ ८८ ॥ दशम भाव में पापग्रह हो तो प्रश्नकर्ता को बहुत भाड़ा प्राप्त न होवेगा और चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह हो तो परिणाम अच्छा नहीं होवेगा अथवा भाड़ा मिलने में अनर्थ होवेगा ॥ ८९ ॥

पांचवें स्थान सम्बन्धी प्रश्न ।

यदि पृच्छत्येतस्याः स्त्रियो भवेन्मे प्रजा न वा कश्चित् ।
लग्नेशेन्द्वोः सुतपतिना मुथशिलभावे प्रसूतिः स्यात् ॥ ९० ॥
सुतभावपतिर्लग्ने लग्नपचंद्रौ सुतेथ वा स्याताम् ।
सत्वरितमेव वाच्या सविलंबं नक्तयोगेन ॥ ९१ ॥

भावार्थ—यदि कोई पृच्छक प्रश्न करे कि हमारी स्त्री को सन्तान होगी या नहीं तो लग्न स्वामी और चन्द्रमा इन दोनों का पञ्चम भाव स्वामी के साथ इत्थशाल होवे तो सन्तति अवश्य होवेगी ॥ ६० ॥ पंचम भाव का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश व चन्द्रमा पंचम स्थान में हो तो शीघ्र पुत्र उत्पन्न होवेगा तथा नक्तयोग होवे तो विलम्ब से पुत्र उत्पन्न होगा ऐसा कहना।

द्विशरीरे च विलग्ने शुभयुतपुत्रे द्व्यपत्ययोगोऽस्ति।
यदि लग्नपुत्रपतिपुरांशौ चेत्स्यात्तदा सुतो गर्भे ॥ ६२ ॥
पुंराशौ पुंग्रहकृतमुथशिलयुक्तस्तदासुतदः।
[illegible] विषुमपराह्णे सूर्यात्पृष्ठे तदा स्त्री स्यात् ॥ ६३ ॥

भावार्थ:—द्विस्वभाव लग्न हो और पंचम स्थान में शुभ ग्रह स्थित हो तो [illegible] देना चाहिये और यदि लग्नेश पंचमेश पुरुषराशि में स्थित हों तो [illegible] है ऐसा कहना ॥ ६२ ॥ तथा चन्द्रमा यदि पुरुष राशि में हो [illegible] इत्थशाल योग करे तो भी पुत्र उत्पन्न कहना, अथवा [illegible] के मध्य से पीछे राशि में चन्द्रमा स्थित हो तो कन्या होवेगी [illegible] ॥ ६३ ॥

[illegible] पुरुषः पुंराशौ चेत्तथापि मृतगर्भः।
[illegible] गर्भे दीर्घायुपुत्रसंभूतिः ॥ ६४ ॥
[illegible] न वा प्रश्नार्थं प्रयाति गर्भागमम्।
[illegible] मृत्युयोगविकल्पेन ॥ ६५ ॥

[illegible] पुरुष राशि में हो तो भी गर्भ में [illegible] मृत [illegible] पंचम स्थान [illegible] होगा ॥ ६४ ॥ जो प्रश्नकर्त्ता [illegible] लग्न स्वामी और [illegible] होगी ऐसा [illegible]

[illegible] नहीं।

आपोक्लिमेऽथशालादनीक्षणाल्लग्नपुत्रयोर्नैवम् ॥ ९६ ॥
चरलग्ने क्रूरेन्द्वोर्मुथशिलभावे विनश्यति हि गर्भः ।
लग्नपशशिनोस्तत्पतिरथ वक्रि मुथशिले पितथा ॥ ९७ ॥

भावार्थः—यदि लग्न स्वामी और चन्द्रमा का केन्द्रस्थान में स्थित पंचमेश के साथ इत्थशाल योग होवे तो भी गर्भिणी है अथवा आपोक्लिम स्थान में इत्थशाल होवे अथवा लग्न स्वामी पुत्र भाव को पुत्रभाव स्वामी लग्न को नहीं देखे तो गर्भवती नहीं है ॥ ९६ ॥ चरलग्न में पाप ग्रह चन्द्रमा के साथ इत्थशाल करे तो गर्भ नष्ट होजायेगा और लग्न स्वामी व चन्द्रमा नीचादि से पतित ग्रहों से इत्थशाल करे तो गर्भ नष्ट होजायेगा ॥ ९७ ॥

जीवितमरणप्रश्ने बालानामन्त्यपे शुभैर्दृष्टे ।
केंद्रस्थे सितपक्षे शुभयुक्तेन्त्ये विधौ जीवेत् ॥ ९८ ॥
क्रूरश्चेदंत्यपतिर्दग्धश्चापोक्लिमे च युतः ।
क्रूरैस्तु जातमात्रो म्रियते बालोऽथवा गर्भे ॥ ९९ ॥

भा०—बालक के जीवन मरण प्रश्न में बारहवें भाव का स्वामी जो केन्द्र में शुभ ग्रह दृष्ट हो और बारहवें शुक्लपक्ष का चन्द्रमा बैठा हो या शुभ ग्रह से युक्त हो तो बालक बड़ी उमर वाला होवेगा ॥ ९८ ॥ तथा जो द्वादशभाव का स्वामी क्रूर ग्रह हो और दग्ध हो या आपोक्लिम स्थान में पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो बालक उत्पत्ति समय या गर्भ में मर जायेगा ॥ ९९ ॥

प्रसवज्ञानप्रश्ने भुक्तांल्लग्नांशकान् परित्यज्य ।
भोग्याद्विचिन्त्य शेषाननुमित्यैवं वदेद्दिवसान् ॥ १०० ॥
यावन्तो नवमांशा गतास्तावन्तो गर्भस्य मासा गताः ।
यावन्तो भोग्यास्तावद्भिरग्रतः प्रसव इति व्याख्या ॥ १ ॥

भावार्थः—बालक उत्पन्न कब होगा इस प्रश्न में लग्न के भुक्त अंशों को छोड़कर भोग्यांश पर से दिनों का अनुमान करे वही दिन कहना, अथवा लग्न के भुक्त अँशों के समान गर्भ के भुक्त मास और भोग्यांशों से शेष दिन अनुमान से कथन करना ॥ १०० ॥ जितने नवांश गत हों उतने

गतमास गर्भ को जानना, जितने भोग्य हों उतने भोग्य मास जन्म होने के आगे कहना ॥ १ ॥

अथवा ।

लग्नाद्यतमे स्थाने शुक्रस्तावन्तो वन्देन्मासान् ।
यदि धर्मादूर्ध्वस्थस्तद्वदेत्पञ्चमस्थानात् ॥ २ ॥
लग्नांतर्दिनराशिर्दिवाग्रहो लग्नपश्च दिनराशौ ।
तद्दिवसे जन्म स्याद्विपरीते व्यत्यय श्चैषाम् ॥ ३ ॥

भा०—[illegible] लग्न से शुक्र जिस संख्या वाले स्थान में उतने महीने का [illegible] ऐसा कहना तथा जो नवम स्थान से आगे शुक्र हो तो पंचम [illegible] गणना करके गर्भमास कहना ॥ २ ॥ जो [illegible] और [illegible] राशि में स्थित हो तो दिन में [illegible], इससे विपरीत अर्थात् रात्रिबली लग्न हो और लग्नेश रात्रि [illegible] में हो तो रात्रि को प्रसव होवेगा ऐसा कहना, यहां ग्रह भी [illegible] हो लग्नेश रात्रि बली राशि में हो या इससे [illegible] में जो बली हो उस अनुसार फल कहना ॥ ३ ॥

[illegible] द्विग्नांशस्य द्वादशस्तमे चंद्रे ।
[illegible] प्रसवः स्यादनुमानः शास्त्रतः कार्यः ॥ ४ ॥
[illegible] भविता [illegible] ॥
[illegible] ॥ ५ ॥

[illegible] में चन्द्रमा जिस द्वादशांश में हो [illegible] मास में जन्म होगा [illegible], [illegible] ॥

यदि वा मिथो गृहगतौ स्यातामेतौ च संततिस्तदपि ।
वाच्या तस्मिन्नपि शुभयोगादन्यथा न पुनः ॥ ६ ॥
सुतास्मृतयुवतिज्ञाने सुतपोऽथ षष्टपः सूर्यात् ।
निर्गत्योदयमायात्ततः प्रसूते च नारीयम् ॥ ७ ॥
अथजीवभौमशुक्रा आकाशे उदयनिस्तथाप्येवम् ॥ ८ ॥

भावार्थ—यदि लग्नस्वामी, पंचमस्वामी, यह दोनों एक ही स्थान में अथवा परस्पर दूसरे के स्थान में विद्यमान हों तथा शुभ ग्रहों से युक्त हो तो सन्तति होवेगी अन्यथा नहीं होवेगी ॥६॥ यह स्त्री प्रसवती होवेगी अथवा नहीं ऐसे प्रश्न में पंचमभाव स्वामी षष्ठभाव स्वामी सूर्य के साथ निकल गया हो अर्थात् उदय होगया हो तो स्त्री प्रसववती होवे ॥७॥ अथवा बृहस्पति मंगल शुक्र दशम स्थान में स्थित हों तो भी प्रसववती होवेगी ॥ ८ ॥

छठे स्थान सम्बंधी प्रश्न ।

रोगदयमुत्थास्यति नवेतिलग्नं भिषग्द्युनम् ।
व्याधिर्दशमं रोगी हिबुकं भेषजनिहाहुराचार्याः ॥९॥
क्रूरार्दिते विलग्ने वैद्यान्नगुणस्तदौषधाद्रोगः ।
वृद्धिमुपयाति दशमे क्रूरे निजवृद्धितोप्यगुणः ॥ १० ॥

भा०—रोगी मनुष्य रोग से आराम पावेगा अथवा नही इस प्रश्न में लग्न से वैद्य, सप्तम भाव से रोग दशम भाव से रोगी, चतुर्थ भाव से औषध का विचार करना ऐसा पूर्वाचार्य्य कीर्तन करते हैं ॥९॥ जो लग्न पापग्रहों से युक्त हो तो वैद्य से गुण नहीं होगा अर्थात् वैद्य द्वारा रोग नही जायगा, और औषध से रोग वृद्धि को प्राप्त होवेगा अर्थात् बढ़ेगा तथा दशम स्थान में पापग्रहहों तो अपनी ही वृद्धिसे कोई अवगुण होजाने से रोग बढजावै ॥१०॥

अस्ते च क्रूरयुते मान्द्यान्माद्यं तथौषधाद्वन्धौ ।
सौम्योपगतेरेते रोगितारोगिणो भवति ॥ ११ ॥
लग्नेशेन्द्वोः सौम्येत्थशालतो रोगनाशनं वाच्यम् ।
वक्रे तु तत्र खेटे भूयोपि गदः समुपयाति ॥ १२ ॥

भा०—सप्तम स्थान में पापग्रह युक्त हों तो रोग में से रोग उत्पन्न होजावैं. तथा चौथे स्थान में पापग्रह हो तो औषध से दूसरा रोग होजावै. और इन सब में शुभग्रह हो तो रोगी रोग से आराम पाकर आरोग्य होजाता है ॥ ११ ॥ लग्न स्वामी और चन्द्रमा इनका शुभग्रह से इत्थशाल योग होवे तो रोग का नाश कहना और वह वक्र गामी हो तो फिर भी रोग उत्पन्न होजावै ॥ १२ ॥

भूमिस्थलग्ननाथः शशिमुथशिले भवेन्मृत्युः ।
लग्नेऽथे रन्ध्रपतौ लग्नपशशिनोर्विनाशो वा ॥ १३ ॥
लग्नाधिपतिःसूर्यश्चन्द्रः सप्तेशमुथशिलंविधायी ।
[illegible]षष्ठस्थेतन्मरणं रोगिणो वाच्यम् ॥ १४ ॥

भा०—लग्न का स्वामी चतुर्थ स्थान में स्थित होता हुआ चन्द्रमा के साथ [illegible] हो तो मृत्यु होवे, अथवा लग्न में अष्टम भाव का स्वामी और लग्न का स्वामी एवं चन्द्रमा अष्टम स्थान में हों तो भी मृत्यु होवे ॥ १३ ॥ लग्न का स्वामी सूर्य हो और चन्द्रमा सप्तम स्थान के साथ इत्थशाल योग करे, और अष्टम स्थान का स्वामी छठे स्थान में स्थित हो तो रोगी का [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] स्थितनाशस्वामिनापि केन्द्रस्थे ।
[illegible] मुथशिले मृत्युः स्याद्रोगपृच्छायाम् ॥ १५ ॥
[illegible] रन्ध्रे मुथशिलनः क्रूरपीडिते मरणम् ।
[illegible] पीडायुक्तेपि ॥ १६ ॥

[illegible] चतुर्थ [illegible] केन्द्र स्थान में स्थित हो [illegible] योग करता होवे, तो रोग प्रश्न में [illegible] अष्टम स्वामी का [illegible] तो मृत्यु होवे, तथा जो [illegible] ॥

[illegible] ।

तनुमृत्युभावनाथावन्योन्याश्रयगतौ मरणम् ॥१७॥
लग्ने चरे च रोगी क्षणे क्षणे स्यादरुक् सरुक् चापि ।
द्विशरीरे पररोगः स्थिरे गदस्यैकरोगत्वम् ॥१८॥

भा०—लग्न स्वामी मृत्युके द्रेष्काणमें हो तो मृत्यु होवे एवं लग्नका स्वामी अष्टम भावमें अष्टम भावका स्वामी लग्नमें स्थित हो, अथवा परस्पर दृष्टि हो तो भी मृत्यु होवै, चरलग्न हो तो रोगी क्षणक्षणमें सुखी दुःखी होता रहे, द्विःस्वभाव लग्न हो तो एक रोग से दूसरा रोग होवे, स्थिर लग्न हो तो आदि अन्त में एकही रोग रहै, ऐसा कहना ॥ १८ ॥

शशिनो वक्रमुथशिले स्थिररोगो मन्दमुथशिले पूर्वम् ।
मूत्रनिरोधाद्रोगोत्पत्तिर्ज्ञेया कृतप्रश्ने ॥ १९ ॥
अथ पृच्छायाःपूर्वं सप्ताहानि च विलोक्यचत्वारि ।
यदितेषु शशांकरवी शुभयुतदृष्टौ तदाशस्तम् ॥ २० ॥
अथ मंदोऽयमथ नवेति प्रश्ने लग्नेश्वरोऽथचंद्रो वा ।
षष्ठेशमुथशिली स्यादस्तमितस्तदा चन्द्रः ॥ २१ ॥

भा० – चन्द्रमा वक्री ग्रहसे इत्थशाल योग करै तो स्थिर रहै, शनैश्चर से इत्थशाल योग हो तो प्रथम मूत्रके निरोध से रोगकी उत्पत्ति इसकी हुई प्रश्न में जानना ॥ १९ ॥ अथ प्रश्न के प्रथम सात वा चार दिनमें सूर्य चन्द्रमा शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो तो शुभ फल जानना ॥ २० ॥ अथ यह रोगी होगा या नहीं इस प्रश्न में प्रश्न लग्नका स्वामी अथवा चन्द्रमा षष्ठेश से इत्थशाल करता हो अथवा अस्तङ्गत हो तो रोगी होवेगा ऐसा कहना ॥ २१ ॥

स्वामी सेवक और चतुष्पद का प्रश्न ।

ईशोऽन्यो मम भविता नवेति लग्नेश्वरस्य यदि केन्द्रे ।
नो भवति मुथशिलं षष्ठांत्यपतिभ्यांतदा नान्यः ॥२२॥

भा०—हमारा अन्य स्वामी होगा या नहीं अर्थात् अन्यत्र हमारी चाकरी होगी वा नहीं इस प्रश्न में लग्न स्वामी यदि केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में हो और

[illegible] वा बारहवें स्थान के स्वामी से इत्थशाल नहीं होवै तो अन्य स्वामी नहीं होवैगा ॥ २२ ॥

वक्री वाऽन्येन समं लग्नपतिःसहजनवमंसस्थेन ।
कुरुते यदीत्थशालं तदाऽन्यनाथो भवेत्प्रष्टः ॥ २३ ॥
लग्नपतौ केंद्रस्थेरिपुदृष्ट्या क्रूरवीक्षिते सुखपे ।
रविररश्मिगतेऽथ भवेद्यावज्जीवं नचाऽन्यपतिः ॥ २४ ॥

भा०—लग्नका स्वामी वक्री हो अथवा अन्य नवें स्थान में स्थित ग्रहसे इत्थशाल करता होवे, तो प्रश्नकर्त्ताका अन्य स्वामी होवैगा ॥ २३ ॥ तथा लग्नका स्वामी केन्द्र में हो और चौथे स्थान के स्वामी पर क्रूर ग्रह दृष्टि से [illegible] हो [illegible] स्वामी अस्त हो तो जब तक जीवै दूसरा स्वामी नहीं [illegible] ॥ २४ ॥

[illegible] भत्रो मे पृच्छायां लग्नपस्य [illegible] ।
[illegible] एव भवेत् [illegible] नशुभोऽन्येशः ॥२५॥

[illegible] स्वामी यही [illegible] है या अन्य इस प्रश्न में लग्नका [illegible] योग करता होवै तो यही स्वामी शुभ है, तथा [illegible] हो तो दूसरा स्वामी भी शुभ [illegible]

[illegible] लग्नभवने पूर्वोक्त एव विधिः ॥
[illegible] शुभमशुभं पृच्छकः स्वधिया ॥२६॥
[illegible] प्रश्ने लग्नेशसीत्थशालं [illegible] ।
[illegible] वा [illegible] नष्टार्थः ॥२७॥

[illegible] नष्टस्थान [illegible] में भी [illegible] अपनी बुद्धि अनुसार [illegible] शुभा-[illegible] [illegible] इत्थशाल करते हो अथवा [illegible] ॥ २७ ॥

भृत्यस्य वाहनस्य च यद्वा प्रश्ने च लग्नलग्नपती ।
अर्थी दाता सप्तमसप्तमपौ तद्बलात्प्राप्तिः ॥ २८ ॥

भाषार्थ—सेवक और वाहन के प्रश्न में लग्न और लग्न स्वामी अर्थी (लेने वाले) और सप्तम व सप्तमभाव स्वामी दाता (देने वाले) जानने इनका बलाबल देख के प्राप्ति अप्राप्ति कहनी, जैसा लग्न स्वामी का सप्तम भाव से व सप्तम भाव का स्वामी लग्न से अथवा लग्न स्वामी व सप्तम स्वामी का परस्पर इत्थशाल योग होवे तो सेवक व वाहन की प्राप्ति होगी, ईसराफ योग होने से नहीं प्राप्ति होगी ऐसा जानना ॥ २८ ॥

स्त्रीलाभ सम्बन्धी प्रश्न ।

स्त्रीलाभस्य प्रश्ने स्मराधिपे लग्नपेन शशिना वा ।
कृतमुथशिले युवत्या अयाचिताया भवेल्लाभः ॥ २९ ॥
यदि लग्नपो विधुर्वा द्यूने तदयाचितां स्त्रियं लभते ।
लग्नेशान्मूसरिफे चन्द्रेऽस्तमुथशिले स्वयं लाभः ॥ ३० ॥

भा०—स्त्री लाभ प्रश्न में सप्तम भाव का स्वामी और लग्न स्वामी या चन्द्रमा का इत्थशाल योग हो तो बिना याचना किये ही स्त्री का लाभ होवे ॥ २९ ॥ जो लग्न स्वामी वा चन्द्रमा सप्तम घर में हो तोभी बिना मांगे स्त्री प्राप्त हो अथवा लग्न स्वामी का सप्तम भाव से ईसराफ योग हो और चन्द्रमा का सप्तमेश से इत्थशाल हो तो स्वयं (बिना प्रयास अर्थात् आपही से) स्त्री प्राप्ति होवे ॥ ३० ॥

येन समं तु मुथशिलं तत्र विनष्टे च पापयुतदृष्टे ।
निकटीभूततदा किल विनश्यति स्त्रीगतं कार्यम् ॥ ३१ ॥
पापेऽत्र रन्ध्रनाथे स्त्रीजातेरेव विघटते कार्यम् ।
सहजपतौ भ्रातृभ्यस्तुर्येशे पितृव्य एव नान्येभ्यः ।
सौम्यकृतयुक्तिदृग्भ्यां पूर्वोक्तस्थानतः शुभंवाच्यम् ॥ ३२ ॥

भा०—जिस ग्रह के साथ इत्थशाल हो वह ग्रह नष्टबली और पाप ग्रह युक्त वा निगाह हो तथा सप्तम में नष्टबली ग्रह वा पापग्रह हो तो स्त्री लाभ

सम्बन्धी कार्य समीपवर्ती होने पर भी नष्ट हो जावै ॥ २१ ॥ सप्तम भाव [illegible] अष्टम भाव का स्वामी हो तो स्त्री सम्बन्धी कार्य न हो, तीसरे भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो भाई से, चतुर्थ भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो पिता व पिता के भाई से एवं जिस भाव का स्वामी से सम्बन्ध हो उस [illegible] कार्य का नाश होवे तथा जो सप्तम भाव वा सप्तम भावेश पर शु[illegible] [illegible] का योग हो अथवा शुभ ग्रह की नजर हो तो उक्त सम्बन्ध वाले से [illegible] का लाभ होवे ॥ २२ ॥

स्त्री प्रेम का प्रश्न।

स्त्रीनिम्मानप्रश्ने स्मरपतिलग्नेशमुथशिले स्नेहः।
[illegible] शशिकम्बूले तु सापि शुभा ॥२३॥
यदि मन्दो लग्नेशः केंद्रे च स्यात्तदा बली प्रष्टा।
[illegible] च मन्दे केंद्रे प्रतिवादिनोऽस्ति बलम् ॥ ३४ ॥

भाषार्थ- [illegible] स्त्री प्रीति के प्रश्न में सप्तम भाव स्वामी और लग्न [illegible] हो तो स्त्री में प्रीति होगी और उनकी शत्रु नजर हो तो [illegible] इत्थशाल योग करता हो तो भी [illegible] [illegible] ॥ २३ ॥ यदि शनि लग्न स्वामी केन्द्र में हो तो प्रश्न कर्ता [illegible] सप्तम भाव स्वामी शनि केन्द्र में हो तो प्रतिवादी को बली

सूर्यान्निर्गतशुक्रे वक्रेऽपि समेति चान्यथा रुष्टा ।
क्षीणेन्दौ बहुदिवसैः पूर्णविधौ च द्रुतमुपैति ॥ ३७ ॥

भाषार्थः—किसी प्रश्नकर्ता ने प्रश्न किया हो कि हमारी रूठी हुई स्त्री घर आवेगी कि नहीं तो इस प्रकार विचार करना कि चतुर्थ स्थान पर्यन्त सूर्य हो और चतुर्थ भाव के ऊपर शुक्र हो तो स्त्री नहीं आवेगी, तथा जो शुक्र वक्री होवे तो आवेगी ऐसा कहना ॥ ३६ ॥ सूर्य के साथ से निकल गया अर्थात् समीप ही शुक्र का उदय भया हो और वक्री शुक्र हो तो रुष्टा स्त्री आप ही आजावेगी, इससे विपरीत हो तो नहीं आवेगी, तथा जो क्षीण चन्द्रमा इससे सम्बन्ध करे तो बहुत दिनों में और पूर्ण चन्द्रमा सम्बन्ध करे तो शीघ्र रुष्टा स्त्री लौट आवेगी ॥ ३७ ॥

कन्या परीक्षा ।

एषा कुमारिका किल निर्दोषा किन्नवेति पृच्छायाम् ।
लग्ने स्थिरे स्थिरर्क्षे लग्नपशशिनोश्च निर्दोषा ॥ ३८ ॥
चरराशिगते रेतैरियं कुमार्यपि च जातदोषा स्यात् ।
द्विशरीरस्थे चन्द्रे चरलग्ने स्वल्पदोषा स्यात् ॥ ३९ ॥

भा०—यह कुमारी निर्दोष है या नहीं, इस प्रश्न में लग्न स्थिर हो और स्थिर राशि में लग्न का स्वामी व चन्द्रमा हो तो यह कन्या निर्दोष है ऐसा कहना ॥ ३८ ॥ तथा प्रश्न लग्न चर संज्ञक हो और लग्नेश व चन्द्रमा चर राशि में हो तो यह कन्या दोषी है और द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा स्थित हो व लग्न चर हो तो थोड़े दोष वाली जानना ॥ ३९ ॥

शशिभौमावेकर्क्षे स्थिरवर्जे तरपरेण गुप्तमियम् ।
रमिताशनिचन्द्रमसोर्लग्नपयोः प्रकटमुपभुक्ता ॥ ४० ॥
यदि भौमशनी केन्द्रे विधुदृष्टौ वृश्चिकेऽथ शुक्रः स्यात् ।
तद्द्रेष्काणेऽथ तदा निर्भ्रांतं जातदोषैषा ॥ ४१ ॥

भा०—चन्द्रमा, मङ्गल एक राशि में स्थित हों परन्तु वह राशि स्थिर

न हो तो यह कन्या किसी ने गुप्त रमण करी है. तथा जो शनि और चन्द्रमा लग्न स्थित हो तो प्रकट भोग करी है ॥ ४० ॥ तथा यदि मंगल शनि केन्द्र में स्थित हों और वृश्चिक में शुक्र हो और चन्द्रमा देखता हो, अथवा वृश्चिक के [illegible] में शुक्र हो तो यह स्त्री निस्सन्देह दोषी है ऐसा कहना ॥ ४१ ॥

प्रसूति परीक्षा ।

एषा किल प्रसूता सिते घटेऽङ्गे हरौ च नो सूता ।
अनयोरलिवृषगतयोः सूता नारी परिज्ञेया ॥ ४२ ॥
भौमबुधशुक्रचन्द्रा द्विशरीरे चापवर्जिते चेत्स्युः ।
[illegible] तत्प्रसूतिश्चापेनाग्रेण पृष्ठतः सूता ॥४३॥

भा० — यह स्त्री प्रसूत भई अथवा नहीं, इस प्रश्न में जो शुक्र कुम्भ [illegible] स्थित हो तो प्रसूत नहीं भई और शुक्र वृश्चिक का, वृष वृषका [illegible] भई है ऐसा जानना ॥ ४२ ॥ मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्रमा ये [illegible] द्विस्वभाव राशि में विद्यमान हों, तो यह स्त्री [illegible] प्रसूत हो [illegible] के पृष्ठभाग पर विद्यमान हो तो न आगे भई न पाछी [illegible]

[illegible] मृता [illegible] नु [illegible] ।
[illegible] ॥ ४४ ॥
[illegible] ।
[illegible] शनिभौमदृष्ट्या [illegible] गुर्वी ॥४५॥

[illegible] जानना, स्थिर हों तो स्थिर [illegible] नहीं जानना, और [illegible]

पतिव्रता परीक्षा ।

कुलटा सतीयमथवेति लग्नपतिश्चन्द्रमाश्च भौमेन ।
एकांशेन मुथशिलकृतनदैव भवने भजत्यन्यम् ॥४६॥
यदि ग्रहनिजगो भौमस्तदान्यदेशं प्रयाति जारकृते ।
रविणेति मुथशिले सत्युपभुक्ता सा तु राजपुरुषेण ॥४७॥
सौम्येन लेखकवणिक् निजभे शुक्रेण योषयैव स्त्री ।
एतैर्योगैरसती विपरीते सुचरित्तेतिविज्ञेयम् ॥४८॥

भा०—यह कुलटा है पतिव्रता है अथवा नहीं, इस प्रश्न में लग्नका स्वामी और चन्द्रमा मंगल के साथ एकही अंश पर इत्थशाल योग करता हो तो उसी घरमें किसी दूसरे से रमण करती है ॥ ४६ ॥ यदि मंगल अपनी राशि में हो तो किसी दूसरे पुरुष के साथ परदेश को निकल जावेगी, तथा जो सूर्य के साथ इत्थशाल उसका हो तो किसी राजपुरुष ने रमण करी है, ऐसा कहना ॥ ४७ ॥ तथा जो पूर्वोक्त मंगलका बुधके साथ इत्थशाल करे तो किसी लेखक वा वैश्य ने रमण करी है, और जो मंगलका शुक्र के साथ इत्थशाल हो तो स्त्री समान पुरुष ने संभोग करी है, इन पूर्वोक्त योगों के होने से व्यभिचारिणी, और इन योगों के न होने से पतिव्रता जानना ॥ ४८ ॥

लग्नपतिनाथ शशिना मूसरिफेभूसुते भवेज्जारः ।
त्यक्तः पुनर्गुरुदृशा पुत्रभयाद्रविदृशा च राजभयात् ॥४९॥
सितदृष्ट्या परनारीभयात्सितज्ञैकराशिगतदृष्ट्या ।
जारस्य स्थविरत्वाल्लज्जितत्वात्यजाति जारं सा ॥ ५० ॥

भा०—लग्न स्वामी वा चन्द्रमा से मंगलका ईसराफ योग होवै, तो स्त्री जार (व्यभिचारी पुरुष) से रमण करने वाली होगी, और जो बृहस्पति की दृष्टि होवै तो पुत्रके भय से, सूर्यकी दृष्टि हो तो राजभय से जार त्याग करै ॥ ४९ ॥ तथा जो मंगल पर शुक्रकी दृष्टि हो तो जारकी स्त्री के भय से स्त्री जारको परित्याग करै, और जो शुक्र बुध एक राशि पर स्थित हों और पूर्वोक्त मंगल को देखें तो जार पुरुषकी वृद्धावस्था होने से लज्जा मानकर जार को परित्याग कर देवै ॥ ५० ॥

अष्टम स्थान सम्बन्धी प्रश्न।

नृपसंग्रामप्रश्ने विलग्नलग्नेश संस्थितात्खेटात्।
शशिमूसरिफात्मष्टास्तास्तपसंस्थेंदुमुथशिलाच्छत्रुः ॥५१॥
अथवा शनिकुजजीवाः शीघ्रेभ्यो बलयुता उपरिचराः।
बुधसितचंद्रास्तेभ्यश्चदुर्वलाधश्चराश्च संचिन्त्याः ॥ ५२ ॥

भा० —राजा से संग्राम होने के प्रश्न में लग्न और लग्नेश प्राप्त ग्रहसे चन्द्रमा का इत्थशाल योग होवै, तो प्रश्नकर्त्ता का जय होवैगा, और सप्तम भाव तथा सप्तमेश का चन्द्रमा का इत्थशाल होवै तो शत्रु की जय होवैगी ॥ ५१ ॥ अथवा शनि, मङ्गल, बृहस्पति ये ग्रह बलवान् होकर शीघ्र गामी ग्रहों और [illegible] हों तो [illegible] विजय, और बुध, शुक्र, चन्द्रमा बलहीन होकर उनसे नीचे रहैं तो [illegible] की विजय होगी ॥ ५२ ॥

[illegible]नपतेः [illegible]शायां मुथशिले द्वयोःस्नेहः।
[illegible]ऽन्यो बद्धः स्यात् ॥ ५३ ॥
[illegible]नां [illegible]ऽन्यांगते न रण[illegible]।
[illegible] उपरिगे जयः [illegible] ॥५४॥

[illegible] और [illegible] दोनों का [illegible] और [illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] होगी ॥ ५४ ॥

[illegible]नीचगे।
[illegible] ॥५५॥
[illegible]शुभः [illegible]।
[illegible] ॥५६॥

भा०—एवं जो ग्रह मन्दगामी ग्रह अधिकांश और शीघ्रगामी ग्रह अल्पांश होवें चन्द्रमा से मध्यशिली लग्नगत नीचगत हो अथवा सप्तम भाव स्वामी केन्द्र में एवं लग्न व नीचगत हो तो रण में प्रष्टा की हानि करती ॥ ५५ ॥ क्रम से अन्तः अर्थात् दशम भाव से लग्न पर्यन्त शुभग्रह और लग्न से ऊपर अर्थात् लग्न से चतुर्थ भाव पर्यन्त हानि हो तो युद्ध में अच्छी सहाय प्राप्त होवें, तथा जो लग्न का स्वामी अष्टम हो वा अष्टमेश से इत्थशाल करता हो तो प्रश्नकर्ता का पराजय होवेगा ॥ ५६ ॥

सप्तेशे धनसंस्थे धनेशकृतमुथशिले रिपोर्नाशः ।
लग्नेशदशमपत्योर्मुथशिलतःपृच्छकस्य जयवीर्ये ॥५७॥
तुर्यास्तपयोरेवं शत्रोर्येगे जयो ज्ञेयः ।
उभयवर्गेपि केन्द्रे तत्पतिकृतमुथशिले बलं ज्ञेयम् ॥५८॥

भावार्थ—सातवें भाव का स्वामी धन भाव में स्थित हो और धनेश के साथ इत्थशाल करता हो तो शत्रु का नाश होवे, और लग्नेश दशमेश का इत्थशाल हो तो पराक्रम से प्रश्नकर्ता की विजय होवेगी ॥ ५७ ॥ एवं चतुर्थ भाव स्वामी सप्तम भाव स्वामी इन दोनों का इत्थशाल हो या योग हो तो शत्रु की जीत जानना, तथा जो दोनों के वर्ग स्वामियों में केंद्रस्थित स्थानेश से इत्थशाल करता हो तो प्रश्नकर्ता का पक्ष बलवान् जानना ॥५८॥

चरराशौ सबलत्वं जित्वा प्रान्ते विनाशस्तु ।
लग्नपतावन्त्यस्थे प्रष्टा नश्यति परोऽस्तपे षष्ठे ॥५९॥
खपतौ लग्ने प्रष्टुस्तुर्येशेऽस्ते रिपोः सहायबलम् ।
यन्मुथशिलौ रवीन्दू तस्य बलं मुसरिफे हानिः ॥ ६० ॥

भावार्थ—जिसका वर्गेश चरराशि में बलवान हो तो प्रथम शत्रु को जीत के आपको विनष्ट होजावेगा, तथा जो लग्नेश बारहवें स्थान में हो तो प्रश्नकर्ता नष्ट हो जावेगा, तथा जो सप्तमेश छठे हो तो शत्रु का नाश होवेगा ॥ ५९ ॥ दशम भाव का स्वामी लग्न में और चतुर्थ भाव

स्वामी सप्तम भाव में हो तो पृच्छक को शत्रु की सेना से महाभय मिले और सूर्य चन्द्रमा का इत्थशाल हो वा मुसरिफ हो तो उसकी सेना का नाश होवेगा ऐसा कहना ॥ ६० ॥

नवम स्थान संबन्धी प्रश्न ।

मम गमनं भविता किं नवेति लग्नेश्वरेऽथवा चन्द्रे ।
नवमेशमुथशिले सति नवगे वा स्याद्ध्रुवं गमनम् ॥६१॥
लग्नस्थे नवमपतौ लग्नाधिपमुथशिले च संचारात् ।
गहनो याति पुनर्नो नवमदृशा वर्जिते योगे ॥ ६२ ॥

प्रश्न हमारा गमन होगा वा नहीं इस प्रश्न में लग्न का स्वामी अथवा चन्द्रमा नवम स्थान के स्वामी से इत्थशाल योग हो वा लग्नेश नवम स्थान में हो तो गमन होगा ॥ ६१ ॥ नवम स्थान का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश से इत्थशाल करता हो तो स्थित रहेगा, तथा जो लग्नेश और नवम स्थान स्वामी की नवम स्थान में दृष्टि न हो तो मनुष्य गमन नहीं करे ॥६२॥

लग्नपतौ केन्द्रस्थे सहजेशमुथशिले च विक्रूरे ।
गमनं स्यात्किमपन्था केन्द्रे क्रूरे च नास्ति गतिः ॥६३॥
पापैः क्रूरैर्न [illegible] निर्याति विप्लुत एव ।
[illegible] राजकुलाच्चेष्टतो निजाद्वापि ॥ ६४ ॥

[illegible] केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में स्थित [illegible] इत्थशाल करता हो और पापी न हो तो गमन [illegible] हो तो गमन नहीं होवेगा ॥ ६३ ॥ [illegible] निश्चय गमन करे [illegible] राजकुल [illegible] ॥ ६४ ॥

[illegible] सूर्य [illegible] पापादिग्दृष्टे ।
[illegible] ॥ ६५ ॥

लग्नेशे नवमेशे शुभशीलकृतिरष्टमसप्तमे कष्टम् ।
उदयेस्मिन्वा गायाद्धिनिः मृतिःस्यात्सुखकरः पंथा ॥ ६६ ॥

भावार्थः—नवम भाव स्वामी का लग्नेश के साथ इत्थशाल हो और पाप ग्रह की दृष्टि हो तो गमन होगा परन्तु अन्त में कष्ट व धनका क्षय होवेगा ॥ ६५ ॥ तथा जो लग्न स्वामी व नवम स्वामी का इत्थशाल आठवें या सातवें स्थान में हो तो गमन करने में कष्ट होवे तथा जो ग्रह अस्त से उदय होगया हो तो मार्ग सुखकारी होवेगा ऐसा जानना ॥ ६६ ॥

लग्नान्मार्गानुभवो व्योम्नः कार्यं स्मराद्गतिस्थानम् ।
भूमेःकार्यं परिणतिरेवं लग्ने शरीरसुखम् ॥ ६७ ॥
दशमे शुभे च सिद्धिः कार्यस्यास्ते प्रयाति यत्स्थाने ।
तत्र शुभं च चतुर्थे परिणामः सुन्दरः कार्ये ॥ ६८ ॥

भा०—लग्न से मार्ग का अनुभव करना अर्थात् लग्न जैसा ह्रस्व वा दीर्घ वैसा ही मार्ग कहना तथा दशम भाव से कार्य, सप्तम भाव से गमन स्थान, चतुर्थभाव से कार्य का परिणाम एवं लग्नसे शरीर का सुख विचार करना॥६७॥ दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो कार्य सिद्धि होवे, सप्तम में हो तो सुख पूर्वक गमन, चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह हो तो कार्य का परिणाम अच्छा होवेगा ॥६८॥

लग्नेशं शशिनं वा यः क्रूरस्तुदति तत्रमनुजर्क्षे ।
मनुज त्रिराशिके वा तदा भयं द्विपदतो गंतुः ॥ ६९ ॥
जलराशौ वारिभयं चतुष्पदर्क्षे तथा श्वादेः ।
घटचापे द्रुमकंटकभयं हरौव्याघ्रसिंहादेः ॥ ७० ॥

भा०—अब लग्न स्वामी और चन्द्रमा को जो पाप ग्रह पीड़ित करे वह नरराशि या नरराशि के द्रेष्काण में हो तो गमनकर्ता को द्विपद (दो पैर वाले) से भय होवे ॥ ६९ ॥ तथा जो जलराशि में हो तो जल से भय होवे, चतुष्पद राशि में हो तो घोड़ा आदि चौपाये से भय होवे, तथा कुम्भ व धन का हो तो वृक्ष कंटकादि से भय हो और सिंह का हो तो व्याघ्रसिंहादिसे भय हो ॥७०॥

नगरप्रवेशतोऽस्मान् फलमस्ति न वाप्रवेशलग्नमिह ।
तस्मिन्धनपे वक्रे नो वसतिःकार्य्यसिद्धिर्वा ॥ ७१ ॥
अतिचरिते बहुदिवसं बसतिर्नो कार्यसिद्धिरीषदपि ।
नवमतृतीयगतेस्मिन्कार्यं कृत्वाशु निजपुरं याति । ७२ ॥
लग्ने कर्मगयायेधनपयुते शोभनं ज्ञेयम् ।
[illegible]सप्तमस्थे पथि विघ्नाज्झकटकश्चतुर्थस्थे ॥ ७३ ॥

भावार्थः—नगर में प्रवेश करने से हमको फल होगा या नहीं इस प्रश्न में जो प्रवेश लग्न में धनेश वक्री हो तो स्थिति नहीं होगी और कार्य भी नहीं सिद्ध होगा ॥ ७१ ॥ लग्न जो धनेश अतिचारी हो तो बहुत दिन रहना नहीं होगा और थोड़ी कार्य सिद्धि न होगी और जो धनेश नवम या तृतीय स्थान में हो तो कार्य कर शीघ्र अपने पुर को जावे ॥ ७२ ॥ लग्न दशम, एकादश स्थान में लग्नेश धनेश युक्त हो तो शुभ फल जानना या पाप ग्रह [illegible] सप्तम स्थान में हो तो मार्ग में विघ्न होगा चतुर्थ स्थान में हो तो [illegible] ऐसा जानना ॥ ७३ ॥

दशम स्थान सम्बन्धी प्रश्न ।

[illegible] लग्ने लग्नेशे शशिनि वा नभः पतिना ।
[illegible] भवति ॥ ७४ ॥
[illegible]चिन्तितप्राप्तिः ।
[illegible] न [illegible] ॥ ७५ ॥

[illegible] प्राप्ति होगा या नहीं इस प्रश्न में लग्न को [illegible] हो तो [illegible] ॥ ७४ ॥ [illegible] दशम में, एकादश लग्न में पाप ग्रह [illegible] प्राप्ति होवे और [illegible] ॥ ७५ ॥

पापार्दिते तु मंदे निकटी भूयोत्तरत्यघोराज्यम् ।
भूमिस्थे क्रूरदृशा त्वपवादः शुभदृशा कीर्तिः ॥७६॥
मन्दग्रहे बलवति क्रूरवियुक्ते यदा शशी विबलः ।
मन्देन बलेन भ्रमणाद्राज्यप्राप्तिर्भवेत्सप्टुः ॥ ७७ ॥

भाषार्थ—मन्द गति वाला ग्रह पाप ग्रह से पीड़ित हो तो राज्य का नाश[1] हो, चतुर्थ में हो और पाप ग्रह की दृष्टि हो तो अपवाद हो, शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कीर्ति हो ॥ ७६ ॥ मन्द गति वाला ग्रह बलवान हो और पाप ग्रह का योग न हो और चन्द्रमा बलहीन हो, शनि बलवान हो तो भ्रमण करने से राज्य प्राप्त होवे ॥ ७७ ॥

लग्नाधिपतौ स्वगृहे लाभो राज्यस्य तुङ्गे भौमे ।
लग्नांबराधिपौ यदि कम्बूलौ केंद्रगेंदुमुथशिलतः ॥ ७८ ॥
उत्तमराज्य वाप्तिः स्वर्क्षस्थे चेन्दुतो विपुला ।
यत्रर्क्षे लग्नेशस्तत्पतिरशुभे गृहे तदा कार्यम् ॥ ७९ ॥
न स्यादस्ते कष्टाद्दशमदृशा कटुकता कार्ये ।
राज्यप्राप्तौ सत्यां यदि पृच्छति कोपि परिणतिं च तदा ॥८०॥

भा०—लग्न का स्वामी अपने घर में हो और अपनी उच्च राशि (मकर) में मङ्गल हो तो राज्य लाभ होवे तथा लग्नेश दशमेश इत्थशाल करते हुए केन्द्रस्थ चन्द्रमा से कम्बूली हों तोभी राज्य लाभ होवे ॥ ७८ ॥ तथा लग्नेश दशमेश अपनी राशि में हों और इत्थशाल योग करते हुए चन्द्रमा से कम्बूल योग करें तो अच्छे प्रकार राज्य प्राप्ति हो परन्तु उत्तम कम्बूल हो और जिस राशि में लग्नेश हो उसके स्वामी पाप ग्रह की राशि में हों तो राज्यकार्य्य नहीं होवे ॥ ७९ ॥ और जो वह ग्रह अस्तङ्गत हो तो कष्ट से राज्य कार्य होवे, और शत्रु दृष्टि से दृष्ट हो तो कार्य में किसी प्रकार की कडुवाई होवे, राज्य प्राप्ति विषय में यदि कोई भी प्रश्न करे तो इस प्रकार परिणाम कहना ॥८०॥

१ मन्दगामी यो गृहो अधिकारी तस्मिन्पापयुते राज्यनाश इति तात्पर्य्यम् ।

लग्नं शरीरकार्यं ग्रहकर्मास्तं नभश्च राज्यार्थम् ।
लाभो मित्रस्यार्थे चतुर्थकं कर्मणोवसितये च ॥ ८१ ॥
द्रव्यं धनायसहजं भृत्येभ्यो रिपुश्च वैरिभ्यः ।
एतैः शुभैः शुभं स्यादशुभे वामं च सर्वकार्य्याणाम् ॥ ८२ ॥

भा०—यदि कोई प्रश्नकर्ता राज्य का परिणाम पूछे, तो लग्न से [illegible] का विचार, सप्तम से गृहकार्य, दशमभाव से राज्यकार्य, चतुर्थ भाव में लाभ व मित्रकार्य व निवास के विषय में भी विचार करना ॥ ८१ ॥ [illegible] और ग्यारहवें भाव से धनका विचार करना, तीसरे भाव से सेवक [illegible] भाव से शत्रु का विचार करना, इन स्थानों में शुभ ग्रह हो तो शुभफल [illegible] (पाप) ग्रह हों तो अशुभ फल सब कार्यों में कहना ॥ ८२ ॥

वित्तस्वामिनि भौमे नौचित्त पारदारिके व्ययकृत् ।
[illegible]ने धर्मागारिणो गुरुपूजायै सिते विलासाय ॥ ८३ ॥
[illegible] पुनरिंदौ मुथशिलिनि चान्यथान्यर्थम्
लग्नपतौ पतितमध्ये विबले राज्यात्ययस्तु कम्बूले ।
[illegible]ग्नि[illegible]णः स्यात्पापाक्रांतेरशुभं च्युतो भवति ॥ ८४ ॥

[illegible] भाव का स्वामी मंगल लग्न स्वामी के साथ [illegible] [illegible] ([illegible]) होवे, और [illegible] [illegible] हो तो गुरु और ब्राह्मण के पूजन में, शुक्र [illegible] करना ॥ ८३ ॥ [illegible] चन्द्रमा [illegible] मुथशिली हो तो [illegible] [illegible] में [illegible] हो और [illegible] [illegible] नहीं तो कुछ शुभ फल [illegible] [illegible] हो और [illegible] में [illegible]

[illegible] कम्बूले [illegible] ।
[illegible] ॥ ८५ ॥

राज्यं चरं स्थिरं वा लग्नपदशमेशयोः सहयोः ।
एकोऽपि मन्दः स्यात्केन्द्रे तत्स्थिरमथोऽन्यथा चाल्यम् ॥८६॥
यदि वा स वक्रमार्गी भूत्वा प्राप्नोति भंगपूर्वम् ।
कम्बूले प्राप्ति लभते शीघ्रं मुसरिफे तु नपुनः ॥ ८७ ॥

भा०—राजा और राज मन्त्री के स्नेह प्रश्न में लग्न स्वामी और दशम स्वामी दोनों कम्बूल योग सहित इत्थशाल योग करते हों, शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो राजा और राजमन्त्री में परस्पर स्नेह रहै और राज्य में शुभता (आनन्द) रहै ॥ ८५ ॥ यह राज्य रहैगा वा स्थिर इस प्रश्न में लग्न स्वामी और दशम स्वामी दोनों एक राशि में हों उनमें से एक मन्द गति ग्रह केन्द्र १। ४। ७। १० स्थान में हो तो राज्य स्थिर रहैगा अन्यथा स्थिर नहीं रहैगा ॥ ८६ ॥ यदि वा उक्त ग्रह वक्रगामी हो तो प्रथम राज्य की हानि हानि हो पश्चात् उन्नति होवै, कम्बूल योग हो तो शीघ्र राज्य का लाभ हो, ईसराफ योग हो तो राज्य का लाभ नहीं होवै ॥ ८७ ॥

ग्यारहवें स्थान सम्बन्धी प्रश्न ।

नृपतेर्गौरवलाभाशादि मम स्यान्नवेतिपृच्छायां ।
आयेशलग्नपत्योः स्नेहदृशा मुथशिले द्रुतं भवति ॥८८॥
रिपुदृष्ट्या बहुदिवसैः केन्द्रे चायेशचन्द्र कम्बूले ॥
वाच्या पूर्णाशा चरस्थिरद्विःस्वभावगे स्वनामफलम्॥८९॥
मन्दे क्रूरपहते भूत्वाशाशु प्रणाशमुपयाति ॥
क्रूरायुक्ते च शुभयुज्यधिकारावशेन लब्ध्याशा ॥ ९० ॥

भावार्थ—राजा से गौरव धन तथा आशा आदि लाभ होवैंगो वा नही इस प्रश्न में लाभ भाव का स्वामी और लग्न स्वामी का मित्र दृष्टि से इत्थशाल हो तो शीघ्र लाभ होवैगा ॥८८॥ शत्रु दृष्टि से इत्थशाल हो तो बहुत दिनों में लाभ होवैं तथा लाभेश लग्नेश का केन्द्र में इत्थशाल होवें और चन्द्रमा से कम्बूल योग होवें तो आशा पूर्ण होगी ऐसा कहना, परंतु चर स्थिर द्विःस्वभाव में से जैसी राशि में हो उसके नाम सदृश फल कहना ॥८९॥

लाभ भाव का स्वामी जो अस्त वा पाप पीड़ित हो तो आशा पूर्ण होकर फिर नाश होजावै, पापरहित शुभयुक्त हो तो अपने अधिकार के समान लघु वा बृहत् आशा पूर्ण होवै ॥ ६० ॥

मित्रेण सह प्रीतिर्भविता लग्नेश्वरायपत्योश्च ।
प्रियदृष्ट्या मुथशिलतः प्रीतिर्वान्योन्यगृहयानात् ॥ ६१ ॥
केन्द्रस्थित योरनयोर्मैत्री किल पूर्वजातैव ।
पणफरगतौ पुरस्तादापोक्लिमतो महाप्रीतिः ॥६२॥

भाषा०–मित्र के साथ प्रीति होने के प्रश्न में लग्न स्वामी और लाभ भाव स्वामी मित्र दृष्टि से इत्थशाल करते हों अथवा लग्न स्वामी लाभ भाव में लाभ स्वामी लग्न में हो तो प्रीति बढ़ेगी ऐसा कहना ॥ ९१ ॥ तथा लग्नेश [illegible] दोनों केन्द्र में होंतो मैत्री पहिलेही से है, पणफर स्थान में दोनों हों तो [illegible] आपोक्लिम स्थान में हों तो प्रीति बहुत बढ़ेगी ऐसा जानना ॥६२॥

[illegible] कार्यसिद्धं मे सिध्यति लग्नेश्वरेऽथ चन्द्रमसि ।
[illegible]मुथशिलगे केन्द्रे तन्निकटे वाथ सिद्धिः स्यात् ॥६३॥

[illegible] कार्य सिद्ध होगा ? इस प्रश्न में लग्न का [illegible] इत्थशाल करते हुए केन्द्र में हों वा [illegible] कार्य की सिद्धि जानना ॥ ६३ ॥

[illegible] प्रश्न ।

[illegible] षष्ठं रिपुः सबलः ।
[illegible] शुभं [illegible] ॥ ६४ ॥
[illegible] योगतो [illegible] ।
[illegible] सुधियः ॥ ६५ ॥

[illegible] प्रश्न में [illegible] स्थान [illegible]
[illegible] स्वामी [illegible] हो और [illegible]
[illegible]
[illegible]

युक्त यह हो तो पञ्चम भाव में स्वयं प्राप्त होवे, इसी प्रकार सुन्दर बुद्धि वालों करके सम्पूर्ण भावों में शुभाशुभ फल कहना योग्य है ॥ ९५ ॥

इति श्री प्रश्नतन्त्र भाषाटीकायां लग्नादिद्वादश

भाव प्रश्न निरूपणम् ॥

अथ काश्चिद्विशेषतः प्रश्नाः निरूप्यन्ते ।

पथिक के आगमन का प्रश्न ।

आगमने पृच्छायां लग्नेशे लग्नमध्यसंस्थेन ।
कृतमुथशिले समेति हि सुखमरततुरीयगे कष्टात् ॥९६॥

भा०—अब कुछ थोड़े प्रश्न विशेषतासे निरूपण करते हैं—वहां प्रथम पथिक के आगमन प्रश्न को कहते हैं कि आगमन प्रश्न में लग्न स्वामी और लग्न में स्थित ग्रह से इत्थशाल हो तो पथिक सुखसे घर आवेगा और जो सप्तम चतुर्थ स्थग्रह से इत्थशाल होतो कष्ट से आवेगा ॥ ९६ ॥

स्थानाच्चलितः प्रश्ने लग्नपतौ सहजनवमगृहसंस्थे ।
लग्नस्थेन मुथशिले पंथानं वहति पथिकोयम् ॥९७॥
रंध्रेथ धने तस्मिन्नाकाशसंस्थेन मुथशिलेप्येवम् ।
केंद्रस्थितेत्थशाले लग्नं त्वणवर्ज्यमेति न कदापि॥ ९८ ॥

भा०—स्थान से पथिक चला या नहीं इस प्रश्न में लग्नका स्वामी तीसरे वा नवमें स्थान में स्थित होता हुआ लग्न स्थित ग्रहके साथ इत्थशाल करता हो तो पथिक मार्ग चल रहा है ॥ ९७ ॥ तथा लग्नका स्वामी अष्टम अथवा दूसरे स्थान में स्थित होता हुआ दशम स्थान स्थित किसी ग्रह से इत्थशाल करे तो भी पथिक मार्ग चल रहा है और केन्द्र में स्थित दशमेश से इत्थशाल करता हो तो भी पथिक मार्ग में है तथा जो लग्नेश लग्न को देखे तो पथिक नहीं आवेगा ऐसा कहना ॥ ९८ ॥

लग्नाधिपतौ वक्रे लग्नं पश्यत्यमुत्र चन्द्रे वा ।
वक्रगमूथशिले सति समेति पथिकःसुखं शीघ्रम् ॥ ९

और शुभ ग्रह केन्द्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ में हों तो पथिक निश्चय करके दूर भी स्थित हो तो भी शुद्ध पूर्वक घर आता है ऐसा कहना ॥ ४ ॥

चतुरस्रे त्रिकोणे वा पापगेहस्थितः शनिः ।
पापदृष्टश्च नियतं बन्धनं यातुरादिशेत् ॥ ५ ॥
शुभयुक्ते स्थिरे लग्ने स्थिरो बन्धश्चरेऽन्यथा ।
द्वितनौ सौम्यसंयुक्ते बंधमोक्षौ क्रमेण तु ॥ ६ ॥

भा०-केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वा त्रिकोण ५ । ९ स्थान में तथा पाप राशि में पाप ग्रह वा शनि स्थित हो तो अवश्य पथिक बन्धन में पड़ गया है ॥ ५ ॥ तथा स्थिर लग्न शुभ युक्त उक्त योगों में हो तो बन्धन स्थिर होगा, चर लग्न हो तो नाम मात्र और द्विस्वभाव हो तो बन्धन से से छूट गया है ॥ ६ ॥

पापत्रिकोणयामित्रे विलग्ने पृष्ठकोदये ।
शत्रुभिर्वीक्ष्यमाणश्च यातुः कष्टं वदेत्सुधीः ॥ ७ ॥
मार्गस्थानगतैः सौम्यैर्मार्गं तस्य शुभं वदेत् ।
क्रूरैर्दुःखं विलग्नस्थैः पापैः क्लेशमवाप्नुयात् ॥ ८ ॥

भा०-त्रिकोण ५ । ९ वा सातवें पाप ग्रह और पृष्ठोदय हों और शत्रु दृष्ट हों तो बुद्धिमान् करके पथिक को कष्ट कहना ॥ ७ ॥ मार्ग स्थान में शुभ ग्रह हों तो पथिक का मार्ग शुद्ध होवेगा, पाप ग्रह हों तो दुःख होवेगा तथा लग्न में पाप ग्रह हों तो क्लेश प्राप्त होवे ॥ ८ ॥

चरलग्ने चरांशे वा चतुर्थे यदि चन्द्रमाः ।
प्रवासी सुखमायाति कृतकार्यश्च वेश्मनि ॥ ९ ॥
कंटकैः सौम्यसंयुक्तैः पाप ग्रहविवर्जितैः ।
प्रवासी सुखमायाति निधनस्थे सुधाकरे ॥ १० ॥

भावार्थ-लग्न में चर राशि हो अथवा चर राशि के नवांशों में लग्न हो तथा यदि चौथे चन्द्रमा हो तो प्रवासी (पथिक) कार्य करके सुख

पूर्वक घर आवे ॥ ९ ॥ केन्द्र स्थान शुभ ग्रहों से युक्त हों पाप ग्र[illegible]
तथा अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो पथिक सुख पूर्वक आवे ॥ १० ॥

गमागमौ तु न स्यातां स्थिरराशौ विलग्नगे ।
न रोगोपशमो नाशो द्रव्याणां न पराभवः ॥ ११ ॥
विपरीतं चरे वाच्यं फलं मिश्रं द्विमूर्तिषु ।
स्थिर वत्प्रथमेखण्डे परार्धे चरराशिवत् ॥ १२ ॥

भावार्थः—लग्न में स्थिर राशि हो तो आना जाना नहीं होगा, [illegible] नहीं होवेगा, धन नाश होवेगा और पराजय नहीं होवेगा [illegible] चर लग्न हो तो स्थिर से विपरीत जानना द्विस्वभाव हो तो [illegible] जानना, द्विस्वभाव के पूर्व भाग में स्थिर के समान फल हो और [illegible] चर राशि के समान फल जानना ॥ १२ ॥

गमागमौ तु न स्यातां रोगो दुरुधराकृते ।
[illegible] शुभ कृतो [illegible] पापैस्तस्करतो भयम् ॥ १३ ॥
[illegible] गुरुशुक्रौ त्रिवित्तगौ ।
[illegible] स्थान [illegible] शीघ्र मायाति कार्यकृत ॥ १४ ॥

[illegible] चन्द्र [illegible] दुरुधरा योग हो तो [illegible] पाप शुभ ग्रहों से हो तो शुभ [illegible] हानि होवे ॥ १३ ॥ जो प्रश्न [illegible] पथिक सुख पूर्वक आवे और जो [illegible] कार्य करके घर आवेगा ॥ १४ ॥

[illegible] ॥ १५ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥

[illegible] और प[illegible]
[illegible] पूर्वोक्त फल जानना

भा०—प्रश्न लग्नमें वा लग्न स्वामी से नवम स्थान में जितने शुभग्रह हों उतने स्थान में पथिक को मार्ग में हर्षका उदय होवैगा ऐसा पण्डितों करके कहना चाहिये ॥ २१ ॥ तथा लग्नसे वा लग्न स्वामी से नववें वा बारहवें स्थान में जितने पापग्रह होवें उतने ही उपद्रव मार्ग में होंगे ॥ २२ ॥

क्रूरयुक्तेक्षितो मन्दः शुभ दृग्योगवर्जितः ।
धर्मस्थस्तनुतेऽव्याधि प्रोषितस्याष्टमे मृतिम् ॥२३॥

भा०—पापग्रह युक्त दृष्ट शनैश्चर शुभ ग्रहों की दृष्टि वा शुभग्रहों के योग से रहित होता हुआ नवम स्थान में स्थित हो और अन्य कोई योग न हो तो शरीर में रोग हो आठवें हो तो मृत्यु होवै ऐसा पथिक को कहना ॥ २३ ॥

धामित्रस्थ शुभोत्थे यातनायाति दुरुधरायोगे ।
मित्रस्वामिनगेश्च स्यात्पापोत्थे शत्रुरुक्चौरात् ॥२४॥

भा०—जो प्रश्न लग्न से सातवें स्थान में शुभग्रहों से दुरुधरा योग हो तो [illegible] और [illegible] पापग्रहों से होतो नहीं, तथा अस्तगेश अपने मित्र से युक्त [illegible] शत्रु रोग, चोर, इनसे कष्ट प्राप्त होवै ॥ २४ ॥

चन्द्रार्कयोरिन्द्रगयोर्गमन मंदृष्टयोः स्यात्पथि शस्त्रभीतिः ।
[illegible] मित्रे [illegible] न गुरुसितारे मन्देभयं पापयुगीक्षितेऽस्तनि ।२५

भा०—चन्द्रमा और सूर्य अष्टम स्थान में हों शनि की दृष्टि दोनों पर हो [illegible] मार्ग में [illegible] भय होवै और अष्टम स्थान में शुक्र, बुध, हो [illegible] हो तथा अष्टम स्थान में मंगल और शनि पापग्रह युक्त वा [illegible] मार्ग में भय प्राप्त होगा ऐसा कहना ॥ २५ ॥

[illegible] प्रश्न ।

[illegible] तुर्ये [illegible] वाप्यनिर्णागे वा ।
[illegible] शुभेद्‍ग्मनो मृतः स्यात् ॥२६॥

भूमेरधः स्थेन च मध्यगेन यदीत्थशालं कुरुते शशांकः ।
सौम्यैरदृष्टे मरणं प्रकुर्य्याद्दूरस्थितस्यापि विदेशगस्य ॥२७॥

भा०—प्रश्न लग्न से चौथे स्थान के मध्य किसी स्थान में स्थित ग्रह से चन्द्रमा इत्थशाल करे और शुभग्रह की दृष्टि न हो तो विदेश गये हुए दूर स्थित जनकी मृत्यु को करे है ॥ २७ ॥

सौम्यैः षष्ठांत्यरंध्रस्थैर्विबलैश्च शुभेक्षितैः ।
पापयुक्तौ शशांकार्कौ तदा दूरस्थितो मृतः ॥२८॥

भा०—जो शुभग्रह छठे, बारहवें, आठवें, स्थान में निर्बल शुभग्रहों से दृष्ट तथा पापग्रहों से युक्त स्थित हों और चन्द्रमा सूर्य पापग्रहों से युक्त हों तदा दूरस्थ (परदेशी) जन मरगया है ऐसा कहना ॥ २८ ॥

पृष्ठोदये पापयुते त्रिकोणकेंद्राष्टपष्ठोपगतैश्च पापैः ।
सौम्यैरदृष्टैः परदेशसंस्थो मृतो गदार्तो नवमे च सूर्ये ।२९॥

भा०—पृष्ठोदय (मे०वृ०क०ध०म०मी) राशि में पापग्रह त्रिकोण ९ । ५ केन्द्र १ । ४ । ७ । १० और अष्टम स्थान में हों शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो परदेश में स्थित रोगी पुरुष मर गया है ऐसा कहना, नवम सूर्य हो तो भी ऐसा ही फल कहना ॥ २९ ॥

तुर्याधरिस्थेन खगेन चन्द्रमा यदीत्थशालं कुरुते शुभेक्षितः ।
सौम्यैर्युतोवा परदेशसंस्थितःसुखीच जीवेत्पथि सौख्यमेतिच ३०

भा०—तथा जो चौथे से सातवें स्थान के मध्य में स्थित किसी ग्रह से चन्द्रमा इत्थशाल करे शुभ ग्रहसे दृष्ट वा युक्त भी हो तो परदेशस्थ मनुष्य जीता है, और सुख पूर्वक मार्ग में भी रहकर घर आवेगा ॥ ३० ॥

शत्रु के आने का प्रश्न ।

मार्गान्निवर्त्तते शत्रुः पापैः शत्रुगृहाश्रितैः ।
चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुर्भग्नो निवर्त्तते ॥३१॥

भा०—अब शत्रु के आने के प्रश्न में जो पापग्रह शत्रु ग्रह (छठे स्थान) में स्थित हो तो शत्रु मार्ग ही से लौट जावेगा ऐसा कहना, और जो चतुर्थ

स्थान में पापग्रह हो तो पहुँच गया भी शत्रु भागकर हट जायगा ॥ ३१ ॥

झषालिकुंभकर्कटा रसातले यदा स्थिताः ।
रिपोःपराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायते ॥३२॥

भा०—जो प्रश्न लग्नसे चौथे स्थान में मीन, बृश्चिक, कुंभ, कर्क, स्थित हों, तो शत्रु का पराजय हो. और चतुष्पद राशि चतुर्थ भावमें स्थित हो तो शत्रु भाग जावें ॥ ३२ ॥

स्थिरोदये जीवशनैश्चरे स्थिते गमागमौ नैव वदेत्तु पृच्छतः ।
त्रिपंचषष्ठा रिपुसंगमाय पापाश्चतुर्था विनिवर्तनाय ॥३३॥

भा०—प्रश्न समय स्थिर लग्न हो और गुरु शनि स्थित हों तो पूछनेवाले से कहै कि शत्रु का जाना आना न होगा, और तीसरे छठे पांचवें पापग्रह हों तो शत्रु से संगम हो चौथे पापग्रह हों तो शत्रु हट जायगा ॥ ३३ ॥

दशमोदयगाःसमगास्सौम्या नगराधिपस्य विजयकराः ।
भौमार्कि[illegible]गुरुसिताः प्रभंगदा विजयदा नवमे ॥३४॥

भा०—[illegible] और [illegible] स्थान में सौम्य ग्रह हों तो नगराधिपति [illegible], और मंगल, शनि, [illegible] और गुरु व शुक्र नवमें स्थान में [illegible] ॥ ३४ ॥

[illegible] भवति च यावद्भिनैश्च तावद्भिः ।
[illegible] न हि मध्ये ग्रहः कश्चित् ॥३५॥

भा०—[illegible] चन्द्रमा जितनी राशि पर हो उतने दिवस में [illegible] कोई ग्रह नहीं होवे ॥ ३५ ॥

अथ पराजय प्रश्न ।

सूर्येन्दुभौमार्कजसैंहिकेयैः सर्वैश्चतुर्भिस्त्रिभिरेवलग्नगैः।
हन्यात्तदा स्थायिनमाशु यायीद्युनस्थितैर्यायिनृपं पुरेशः॥ ३७॥
त्वेऽथशीतांशुबुधाः गुरुर्ज्यैः सर्वैस्त्रिभिर्वा नतर्बलाढ्यैः ।
हन्याद्रणे स्थायिनमाशुयायी सुखास्पदस्थैश्च शुभैः सुसन्धिः॥३८

भावार्थ—सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, शनि, राहु, ये सब अथवा इनमें से चार वा तीन ग्रह लग्न में हों तो स्थायी राजा को यायी राजा मारता है, तथा ये जो सातवें स्थान में हों तो स्थायी राजा यायी राजा को मारता है, ॥ ३७ ॥ और शुक्र, चंद्रमा, बुध, गुरु ये सब बलयुक्त होकर अथवा इनमें से तीन ग्रह सप्तम स्थान में हों तो यायी राजा स्थायी राजा का शीघ्र नाश करे, और चौथे स्थान में हों तो शीघ्र सन्धि (मिलाप) होजावे।

कुजेत्थशाले हिमगो विलग्ने वंधोथ मृत्युर्युधि नागरस्य।
भौमेत्थशाले च विधो कलत्रे वन्धं मृतिं वा लभतेऽत्रयायी ॥३९॥
लग्नेशयामित्रपयोश्च मध्ये भवेद्ग्रहो यः स्वगृहोच्चसंस्थः ।
तद्वर्गमत्यान्नृपयोश्च संधिर्ज्ञेयो बुधे लेखकपण्डिताभ्याम् ॥४०॥

भा०—मंगल के साथ इत्थशाल करता हुआ चन्द्रमा लग्न में वा चौथे स्थान में स्थित हो तो युद्ध में स्थायी राजा की मृत्यु होवे, और पूर्वोक्त चन्द्रमा सातवें घर में हो तो यायी राजा की मृत्यु या बन्धन हो स्थायी (अपने क़िला में स्थित राजा, यायी (जो चढ़कर आया है) ॥३९॥ लग्न स्वामी और सप्तम स्वामी इन दोनों के मध्य जो ग्रह अपनी राशि या उच्चस्थित हो तो उसके लेखक व पंडितादि व मन्त्री द्वारा दोनों राजाओं की संधि जानना, यहां सूर्य, चन्द्र, राजा, मंगल सेनापति, बुध, युवराज, बृहस्पति शुक्र मन्त्री, शनि दास जानना ॥ ४० ॥

क्रूरे कलत्रे ह्युदये शुभग्रहो यच्छेद्धनं यायिनृपाय नागरः ।
विपर्ययाद्यायिनृपः पुरेश्वरं दुर्गात्सनिष्कास्य ददातिवासपदम् ४१

भा०—जो पाप ग्रह सातवें, लग्न में शुभ ग्रह हो तो यायी राजा को स्थायी राजा द्रव्य देकर शांति करावे, तथा जो लग्न में पाप ग्रह और

सप्तम में शुभ ग्रह हों तो यायी राजा स्थायी राज को किला से निकाल कर पुनः स्थान देवै ॥ ४१ ॥

रवीत्थशाले शशिजे सुगुप्ताश्चरा भवेयुश्च कुजेसराफात्।
गृहाव्ययशांकेन युताश्च तस्मिन्ये येन्यवेषाश्च भवंति चारा॥४२॥

भावार्थ—जो बुध सूर्य से इत्थशाल करता हो तो अति गुप्त चार [illegible] प्रकार से राजा के दूत रहें, मंगल से ईसराफ योग हो और चन्द्रमा से युक्त हो तो दूत लोग दूसरा वेष धारण करके संयुक्त होवें ॥ ४२ ॥

दुर्ग प्रश्न।

प्रश्ने विलग्ने क्रूरे वा दुर्गभंगो न जायते।
निशापतौ भूमिपुत्रे राहौ वा मूर्तिगे सति ॥ ४३ ॥
सप्तमे मित्रवर्गानुदुर्गं शीघ्रेण लभ्यते।
पापमित्रोदयगे क्रूरे रिःफगे लग्ननायके ॥ ४४ ॥

भावार्थ—दुर्ग प्रश्न में प्रश्न समय क्रूर ग्रह लग्न में होय विशेष करके [illegible] राहु [illegible] हो तो दुर्ग (कोट) का भंग नहीं होता है अर्थात [illegible] ॥ ४३ ॥ तथा सप्तम स्थान में शुभ हो तो किला शीघ्र [illegible], और [illegible] पाप ग्रह लग्न में वा सप्तम में हों लग्न स्वामी [illegible]

[illegible] पष्ठे तदा दुर्गं न लभ्यते।
[illegible] नभो युद्धदः केंद्रगामिनः ॥ ४५ ॥
[illegible] यदि वा युद्धमादिशेत्।
[illegible] क्रूरः केंद्रे दुर्गं तथा नृणाम् ॥ ४६ ॥

[illegible] अधिक हो [illegible] ॥ नहीं [illegible] स्थान में स्थित हो [illegible] [illegible] स्वामी [illegible] [illegible] युद्ध [illegible]

यह हों तो किला में बहुत प्राणियों का वध होवेगा ॥ ४६ ॥

भौमाष्टमेशावकेन्द्र ददतो निधनं नृणाम् ।
स्वायपुत्रस्थिते जीवे कोट मध्ये भयं नहि ।
शनौ भौमे च केन्द्रस्थ वहूनां बधबंधनम् ॥ ४७ ॥

भावार्थः-मङ्गल और अष्टम भाव स्वामी एक राशि में हों तो युन्दक के बहुत पुरुषों के मरण को देते हैं, दूसरे, ग्यारहवें, पांचवें भाव में बृहस्पति हों तो किले में भय नहीं हो. शनि और मङ्गल केन्द्र में हों तो बहुत पुरुष मारे व बांधे जावेंगे ॥ ४७ ॥

लग्नगतो यदि पापः पापेन युतेक्षितो वा स्यात् ।
लग्नात्पूर्वात्परगो पापो युद्धं तदा घोरम् ॥ ४८ ॥

भा०—यदि पाप ग्रह लग्न में हों और पाप ग्रह से युक्त दृष्ट हो और लग्न से बारहवें, दूसरे स्थान में पाप ग्रह हों तो घोर युद्ध होवे ॥ ४८ ॥

रोगी के शुभाशुभ प्रश्न ।

विलग्ने षष्ठपः पापो जन्मराशि निरीक्षिते ।
रोगिणस्तस्य मरणं निश्चयेन वदेद्बुधः ॥ ४९ ॥
चतुर्थाष्टमगे चन्द्रे पापमध्यगतेपि वा ।
मृतिः स्याद्बल संयुक्त सौम्यदृष्ट्या चिरात्सुखम् ॥ ५० ॥

भा०—अब रोगी के शुभाशुभ प्रश्न में छठे स्थान का स्वामी पाप ग्रह लग्न में हो और जन्म राशि को देखता हो तो उस रोगी का मरण निश्चय पण्डित कहे ॥ ४९ ॥ चौथे आठवें स्थान में चन्द्रमा हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो रोगी की मृत्यु निश्चय से जानना, तथा जो शुभ बलयुक्त हो कर देखे तो रोगी शीघ्र सुखी होवे ॥ ५० ॥

विधौ लग्ने स्मरे भानौ रोगी याति यमालयम् ।
प्रश्ने क्रूर ग्रहे लग्ने रोगवृद्धिश्चि किरसकात् ॥ ५१ ॥
तथा लग्नगते सौम्ये वैद्योक्तममृतं वचः ।
लग्नं वैद्यो द्युनं व्याधिः खं रोगी तुर्य मौषधम् ॥ ५२ ॥

भावार्थ--लग्न में चन्द्रमा, सप्तम में सूर्य हो तो रोगी यमलोकको जावे लग्न में पाप ग्रह प्रश्न समय में हो तो वैद्य से रोग की वृद्धि होवे ॥५१॥ [illegible] शुभ ग्रह हो तो वैद्य के वचन अमृत समान कहना, लग्न को वैद्य, सप्तम [illegible] रोग, दशम भाव को रोगी, चतुर्थ को औषधि कल्पना करके तत्तत्स्थान [illegible] शुभाशुभ ग्रहों द्वारा रोग प्रश्न में विचार करना ॥ ५२ ॥

रोगिणो भिषजो मैत्रीमैत्री भेषजरोगयाः ।
तयोर्मैत्र्युपशमो वाच्यःप्रकोपःशात्रवे तयोः ॥ ५३ ॥
लग्ननाथे च सबले केन्द्र संस्थे शुभग्रहे ।
उच्चगे वा त्रिकोणे वा रोगी जीवति निश्चयम् ॥ ५४ ॥

भा०-रोगी और [illegible] की मित्रता अर्थात् दशमेश और लग्नेश की मैत्री और [illegible] रोग की अर्थात् चतुर्थेश और सप्तमेश की मित्रता होवे तो [illegible] की शान्ति करना, और जो शत्रु होवें तो रोग [illegible] को प्राप्त होवे [illegible], [illegible] मित्र [illegible] में [illegible] रोग न [illegible] [illegible] विचार करना ॥ ५३ ॥ लग्न का स्वामी बलवान हो और शुभ [illegible] अपनी उच्च राशि में हों वा त्रिकोण में हों तो [illegible] [illegible] करना ॥ ५४ ॥

[illegible] लग्ने [illegible] ।
[illegible] ॥ ५५ ॥

[illegible] लग्न में स्थित हों तो रोग [illegible], [illegible] स्थान में स्थित हों तो [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] यदि ।
[illegible] ॥ ५६ ॥

[illegible] हो तो [illegible]
[illegible]

कंटकाष्ट त्रिकोणस्थाः शुभा उपचयेशशी ।
लग्ने च शुभसंदृष्टे रोगीरोगाद्विमुच्यते ॥६२॥

भा०—बलवान पापग्रह केन्द्र में हो तो वे देवता असाध्य, और शुभग्रह केन्द्र में हो तो मंत्रस्तोत्रादि से साध्य जानना ॥ ६१ ॥ केन्द्र व अष्टम और त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हो तथा उपचय स्थान में चन्द्रमा हो और लग्नको शुभग्रह देखे तो रोगी रोग से निवृत्त होवे ॥ ६२ ॥

स्वामी सेवक प्रश्न ।

[illegible] सौम्ययुतेक्षितो वा सौम्यैर्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थैः ।
[illegible] पापैः सौख्यार्थलाभो नृपसेवकस्य ॥ ६३ ॥
[illegible] मदनाष्टमस्थैः वित्तव्ययं संभ्रममार्तिमृत्युम् ।
[illegible] पापाः क्रमशो नरेन्द्राद् भृत्यस्तस्मात्परिवर्जयेत्तम् ॥६४॥

भा०—[illegible] के [illegible] हो और उसमें शुभग्रह स्थित हो अथवा [illegible] हो और दूसरे, आठवें सातवें में भी शुभग्रह हों और तीसरे, [illegible] पापग्रह हों तो [illegible] सेवक को सुख और धनका लाभ [illegible] पापग्रह धनका [illegible] यह है कि पापग्रह दूसरे हों तो [illegible] हों तो मृत्यु हो, इस कारण इन स्थानों में [illegible] पापग्रह हों तो [illegible] करै ॥६४॥

[illegible] पापाः [illegible] ।
[illegible] सौम्याः कुर्युर्धनारोग्यसुखानि [illegible]
[illegible] दृष्टो युतो वा भवनं न पापैः ।
[illegible] ॥

[illegible]

पापयुक्त न हों तो प्रश्नकर्ता के हृदय में स्नेह व कृपा रहे, इससे विपरीत हो तो अर्थात् शुभग्रह के स्थान में पापग्रह हों तो उलटा फल मानना ॥ ६६ ॥

दूसरे स्वामी का प्रश्न ।

षष्ठेश्वरेणाव्ययपेन केन्द्रे यदीत्थशालं कुरुते विलग्नपः ।
प्रभुस्तदान्यः प्रभुरर्थदः स्यादतः प्रतीपान्न भवेत्परः प्रभुः ॥६७॥
लग्नेश्वरे स्वर्क्षगते स्वतुंगे केन्द्रस्थिते शीतकरेत्थशाले ।
शुभग्रहैर्दृष्टयुते बलान्विते प्रष्टुर्निजस्वाम्यमितार्थलाभः ॥६८॥

भा०—दूसरे स्वामी के प्रश्न में यदि छठे भाव के स्वामी वा बारहवें भाव के स्वामी से केन्द्र में स्थित लग्नेश इत्थशाल करे तो प्रश्नकर्ता को अन्य स्वामी धनका देने वाला होगा, इससे विपरीत हो तो अन्य प्रभु नहीं होवे ॥६७॥ लग्नका स्वामी अपनी राशि वा अपने उच्च में केन्द्र स्थित होकर चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो तथा शुभग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान हो तो प्रश्नकर्ता को अपने ही स्वामी से अपरिमित धन प्राप्त होवे ॥ ६८ ॥

जायेश्वरे स्वोच्चनिजर्क्षसंस्थे केन्द्रस्थिते शीतःकरेत्थशालेग ।
शुभग्रहैर्दृष्टयुते बलोत्कटैः प्रष्टुस्तदान्य प्रभुरर्थदो भवेत् ॥६९॥
इदं गृहं वा शुभमन्यदालयं स्थानं त्विदं वाऽशुभमन्यदालयम् ।
ममात्र भद्रं गमनात्तु तत्र वा पृष्टोदयेत्थ विधिना विमृश्य ॥७०॥

भा०—सप्तम भावका स्वामी अपनी उच्चराशि वा अपने घरमें हो और केन्द्र स्थान में स्थित चन्द्रमा के साथ इत्थशाल हो और बलवान शुभग्रह देखते हों वा युक्त हों तो प्रश्नकर्ता को अन्य प्रभु धनका देने वाला होवे ॥ ६९ ॥ यह गृह हमारे को शुभदायक है अथवा अन्य स्थान, तथा यह स्थान अशुभ वा अन्य स्थान, और गमन में शुभ होगा या नहीं, इन प्रश्नों में लग्नेश, कार्येश के इत्थशाल ईसराफादि योग से शुभाशुभ्यनुसार विचार कर कहना ॥ ७० ॥

स्वप्न दर्शन प्रश्न ।

लग्नेऽर्कंनृपतिं वन्हि शस्त्रं पश्यन्ति लोहितम् ।
श्वेतं पुष्पं सितं वस्त्रं नारीं च शीतगौ ॥७१॥

कंटकाष्ट त्रिकोणस्थाः शुभा उपचयेशशी ।
लग्ने च शुभसंदृष्टे रोगीरोगाद्विमुच्यते ॥६२॥

भा०—बलवान पापग्रह केन्द्र में हो तो वे देवता असाध्य, और शुभग्रह केन्द्र में हो तो मंत्रस्तोत्रादि से साध्य जानना ॥ ६१ ॥ केन्द्र व अष्टम को त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हो तथा उपचय स्थान में चन्द्रमा हो और लग्नको शुभग्रह देखे तो रोगी रोग से निवृत होवे ॥ ६२ ॥

स्वामी सेवक प्रश्न ।

शीर्षोदये सौम्ययुतेक्षितो वा सौम्यैर्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थैः ।
[illegible]लाभारिगतैश्च पापैः सौख्यार्थलाभो नृपसेवकस्य ॥ ६३ ॥
लग्नाद्द्वितीये मदनाष्टमस्थे वित्तक्षयंसंभ्रममार्तिमृत्युम् ।
[illegible] पापाः क्रमशो नरेन्द्राद्[illegible]त्यरस्ततस्मात्परिवर्जयेत्तम् ॥६४॥

भा०—[illegible] प्रश्न में शीर्षोदय लग्न हो और उसमें शुभग्रह स्थित हो अथवा [illegible] और दूसरे, सातवें आठवें में भी शुभग्रह हों और तीसरे, [illegible] स्थानों में पापग्रह हों तो राजाके सेवक को सुख और धनका लाभ [illegible], सातवें स्थानमें स्थित पापग्रह [illegible] हैं कि पापग्रह दूसरे हों तो [illegible] हों तो मृत्यु हो, इस कारण इन स्थानों में [illegible] इन स्थानों में पापग्रह हों तो राजसेवा न करे ॥६४॥

[illegible]पापाः [illegible] ।
[illegible] सौम्याः [illegible] ॥
[illegible] शुभा [illegible] पापः ।
[illegible] ॥

पापयुक्त न हो तो प्रश्नकर्ता के हृदय में स्नेह व कृपा रहे, इससे विपरीत हो तो अर्थात् शुभग्रह के स्थान में पापग्रह हों तो उलटा फल जानना ॥ ६६ ॥

दूसरे स्वामी का प्रश्न ।

पष्ठेश्वरेणव्ययपेन केन्द्रे यदीत्थशालं कुरुते विलग्नपः ।
प्रभुस्तदान्यः प्रभुरर्थदः स्यादतः प्रतीपान्न भवेत्परः प्रभुः ॥६७॥
लग्नेश्वरे स्वर्क्षगते स्वतुंगे केन्द्रस्थिते शीतकरेत्थशाले ।
शुभग्रहेर्दृष्टयुते बलान्विते प्रष्टुर्निजस्वाम्यमितार्थलाभः ॥६८॥

भा०—दूसरे स्वामी के प्रश्न में यदि छठे भाव के स्वामी वा बारहवें भाव के स्वामी से केन्द्र में स्थित लग्नेश इत्थशाल करे तो प्रश्नकर्ता को अन्य स्वामी धनका देने वाला होवेगा, इससे विपरीत हो तो अन्य प्रभु नहीं होवे ॥६७॥ लग्नका स्वामी अपनी राशि वा अपने उच्च में केन्द्र स्थित होकर चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो तथा शुभग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान हो तो प्रश्नकर्ता को अपने ही स्वामी से अगण्य धन प्राप्त होवे ॥ ६८ ॥

जायेश्वरे स्वोच्चनिजर्क्षसंस्थे केन्द्रस्थिते शीतः करेत्थशालेग ।
शुभग्रहेर्दृष्टयुते बलोत्कटैः प्रष्टुस्तदान्य प्रभुरर्थदो भवेत् ॥६९॥
इदं गृहं वा शुभमन्यदालयं स्थानं त्विदं वाऽशुभमन्यदालयम् ।
ममात्र भद्रं गमनात्त तत्र वा पृष्टोदयेत्थ विधिना विमृश्य ॥७०॥

भा०—सप्तम भावका स्वामी अपनी उच्चराशि वा अपने घरमें हो और केन्द्र स्थान में स्थित चन्द्रमा के साथ इत्थशाल हो और बलवान शुभग्रह देखते हों वा युक्त हों तो प्रश्नकर्ता को अन्य प्रभु धनका देने वाला होवे ॥ ६९ ॥ यह गृह हमारे को शुभदायक है अथवा अन्य स्थान, तथा यह स्थान अशुभ वा अन्य स्थान, और गमन में शुभ होगा या नहीं, इन प्रश्नो में लग्नेश, कार्येश के इत्थशाल ईसराफादि योग से शुभाशुभ्यनुसार विचार कर कहना ॥ ७० ॥

स्वप्न दर्शन प्रश्न ।

लग्नेऽर्केनृपतिं वन्हि शस्त्रं पश्यन्ति लोहितम् ।
श्वेतं पुष्पं सितं वस्त्रं नारीं च शीतगौ ॥७१॥

रक्तं मांसं प्रवालं च सुवर्णं धरणीसुते ।
बुधे खेगमनं जीवे धनं वंधमागमम् ॥ ७२ ॥

भा०—लग्नमें सूर्य हो तो राजा, अग्नि, हथियार रक्तवर्ण के पदार्थ [illegible] में आते हैं, चन्द्रमा हो तो सफेद फूल, वस्त्र, चन्दन, स्त्री, व सफेद रंग के [illegible] दृष्टि पथमें होवे ॥ ७१ ॥ मङ्गल लग्नगत होने से रक्त, मांस, मूंगा सुव[illegible] पदार्थ दीख पड़ें बुध हो तो आकाश में गमन दीख पड़े, बृहस्पति हो [illegible] धन तथा बन्धुजनों से समागम स्वप्नगत होवे ॥ ७२ ॥

जलावगाहनं शुक्रे शनौ तुंगावरोहणम् ।
लग्नलग्नांशपवशात्स्वप्नो वाच्योऽथवा बुधः ॥७३॥
सर्वोत्तमबलाद्वापि खेटा बुध्या विचिन्तयेत् ।
बलसाम्ये फलं मिश्रं दुःस्वप्नो निर्बलैः खगैः ॥७४॥

भा० [illegible] लग्न में शुक्र हो तो जल में स्नानादि, शनि हो तो [illegible] चढ़ना, अथवा लग्न व लग्नांश स्वामी के वश से पंडितों करके स्वप्न का फल कहना चाहिये ॥ ७३ ॥ अथवा अपनी बुद्धि से जो ग्रह सबमें उत्तम बलवान् हो [illegible] से फल कहना, बल समान हो तो मिला भया [illegible] [illegible] प्रकार का स्वप्न कहना, तथा जो स्वप्नकर्ता ग्रह निर्बल हो तो [illegible] ॥ ७४ ॥

[illegible] शशिदृष्टे रविशशिसमेते विलग्नाद्वा ।
[illegible] ॥७५॥

[illegible] ॥ ७५ ॥

[illegible] विचार ।

[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ।
[illegible] ॥७६॥

भावार्थ—लग्न स्वामी सप्तम स्वामी से इत्थशाल करता हुआ मित्रदृष्टि से परस्पर दोनों का संबन्ध हो तो आखेट (शिकार) सफल होवे, शत्रुदृष्टि हो तो निष्फल अथवा अतिपरिश्रम से आखेट की प्राप्ति होवे ॥७६॥ लग्न का स्वामी सप्तम में और सप्तम भाव का स्वामी लग्न में हो तो शिकार बहुत प्राप्त होवे, तथा सप्तम भाव का स्वामी चतुर्थ वा दशम हो तो शिकार कुछ थोड़ा भी प्राप्त नहीं होवे ॥ ७७ ॥

ज्ञभौमौ सबलौ सिद्धिस्तांशे मृगयाच्युतिः ।
लग्नद्यूने पतती च हेतुस्तैर्जलजादिगैः ॥ ७८ ॥
क्रूराक्रान्तानि यावंति मध्ये भानीन्दुलग्नयोः ।
तावंतः प्राणिनो वाच्या द्वित्रिघ्नाः स्वांशकादिषु । ७९॥

भावार्थ—बुध और मंगल बलवान हों तो शिकार सिद्ध होवे जो बुध मंगल सप्तम भाव के नवांश में हों तो शिकार हाथ से छूट जावे लग्न और सप्तम राशि वा उसके पतिस्थल आकाश जैसी राशियों में वा जैसे स्वभाव के हों वैसी ही आखेट कहना ॥ ७८ ॥ चन्द्रमा के मध्य जितनी राशि आक्रान्त हों उतने प्राणी आखेट में प्राप्त होवेंगे, जो वे अपने वा उच्च मित्रांशकों में हों तो द्विगुण त्रिगुण आखेट प्राप्त हों और वर्गोत्तम में होने से अनेक गुणा आखेट प्राप्त होवे ऐसा कहना ॥ ७९ ॥

किंवदन्ती ।

लग्नं तु लग्नेश्वरशीतगूद्यैः शुभान्वितैः केन्द्रगतैस्तु सत्या ।
पापान्वितैः पापनिरीक्षितैश्च त्रिकस्थितैर्वा भवतीहमिथ्या॥८०
शुभदृग्योगतः सौम्यां वार्तां सत्यां विनिर्दिशेत् ।
पापदृग्योगतो दुष्टा वार्ता सत्यमेति कीर्त्यते ।
लग्नेश्वरे भाविवक्रे मिथ्या वार्ता भविष्यति ॥ ८१ ॥

भावार्थ—लग्न, लग्नस्वामी और चन्द्रमा, शुभ ग्रहों से युक्त केन्द्र स्थित हों तो सुनी हुई बात सच्ची, और पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट वा त्रिक २।८।१२ में स्थित हों तो मिथ्या ॥ ८० ॥ लग्न और चन्द्रमा

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले चौरः स्वगादाय पुरात्पलागते ।
चन्द्रेऽस्तपेचाऽर्कंकरप्रविष्टे तल्लभ्यते नष्टधनं सतस्करम् ८७
तस्मेश्वरे केन्द्रगतेऽस्ति चौरस्तत्रैव वान्यत्र पुराद्विनिर्गतः ।
धर्मेशदुश्चिक्यपतीत्थशाले जायेश्वरेऽन्यत्रगतः स चौरः ८८

भा०—दशम भाव का स्वामी लग्नेश से इत्थशाल करता हो तो चोर धन लेकर पुर से भाग जावेगा और चन्द्रमा व सप्तमेश ये दोनों अस्तंगत हों तो चोर सहित धन का लाभ होवे ॥ ८७ ॥ सप्तम भावका स्वामी हो तो चोर वहीं है पुर से बाहर नहीं भागा धर्मेश और तृतीयेश व सप्तमेश से इत्थशाल हो तो चोर भाग गया है ऐसा कहना ॥ ८८ ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले तल्लभ्यते राजकुलाच्च चौर्यम् ।
त्रिधर्मपञ्चनपतीत्थशाले त्वन्यप्रदेशाद्गमने तदाप्तिः ।८९।
शुभेत्थशाले हिमगौ विलग्ने स्वस्थेऽथ वा नष्टधनस्यलाभः ।
सुस्नेहदृष्ट्या रविणा शुभेन दृष्टे विलग्ने हिमगौच लाभः९०

भा०—दशमेश लग्नेश का इत्थशाल हो तो राजकुल से चोर पकड़ा जावे, तथा तीसरे नवें और सातवें इन भावों के स्वामी का इत्थशाल हो तो दूसरे देश जाने से चोरी की प्राप्ति होवे ॥ ८९ ॥ लग्न में अथवा दशम भाव में स्थित चन्द्रमा शुभग्रहों से इत्थशाल करे तो नष्ट हुए धन का लाभ होवे, और जो लग्नस्थ चन्द्रमा को सूर्य व शुभ ग्रह मित्रदृष्टि से देखे तो भी वही फल होवेगा ॥ ९० ॥

स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेपिवा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ॥ ९१ ॥
आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ।
द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्ते च वदेद्धनम् ॥ ९२ ॥

भावार्थ—स्थिरलग्न का उदय हो, वा स्थिरराशि का नवांश हो, अथवा वर्गोत्तम राशि हो, तो उसी जगह पर द्रव्य स्थित है अथवा आपस में किसी ने चोराया है ॥९१॥जो लग्न का प्रथम द्रेष्काण हो तो घर के

शुभ ग्रहों का दृष्ट हो या शुभ ग्रह युक्त हो तो सौम्य वार्ता सत्य क्रूर [illegible] हो तो [illegible] जानना, पापदृष्टि योगसे क्रूर वार्ता गलत, सौम्य [illegible] नहीं होने वाला हो तो सभी वार्ता मिथ्या होगी ८१

नष्ट द्रव्य लाभ का प्रश्न ।

प्रश्ने चतुर्थाधिपतिस्तत्रस्थो वावलोकिते ।
[illegible] वर्तेत तत्र धनं चन्द्रेऽथवा भवेत् ॥ ८२ ॥
[illegible] धनगो [illegible] वास्ति तत्र धनं बहु ।
[illegible] द्रव्यं [illegible] तूर्णं न लभ्यते ॥ ८३ ॥

[illegible] द्रव्य [illegible] के प्रश्न में, प्रश्न लग्न में चतुर्थ भाव का स्वामी [illegible] हो देखे, तो प्राप्य धन प्राप्त होगा अथवा [illegible] में हो तो भी द्रव्य प्राप्त होगा [illegible] [illegible] स्वामी [illegible] चतुर्थ स्थान में हो तो बहुत धन [illegible] द्रव्य न प्राप्त होवे ॥ ८३ ॥

[illegible] नागतो ।
[illegible] द्रव्यं न लभ्यते । ८४ ।

[illegible] प्राप्त नहीं हो ॥ ८४ ॥

[illegible] धनस्य लाभः ।
[illegible] विनष्टं धनमेतिमन्त्रीः ८५
[illegible] पश्चात् तत्कालेऽपि ।
[illegible] न लभ्यते [illegible] विनष्टधनं

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले चौरः स्वमादाय पुरात्पलायते ।
चन्द्रेऽस्तपेचाऽर्ककरप्रविष्टे तल्लभ्यते नष्टधनं सतस्करम् ८७
तस्तेश्वरे केन्द्रगतेऽस्ति चौरस्तत्रैव वान्यत्र पुराद्विनिर्गतः ।
धर्मेशदुश्चिक्यपतीत्थशाले जायेश्वरेऽन्यत्रगतः स चौरः ८८

भा०—दशम भाव का स्वामी लग्नेश से इत्थशाल करता हो तो चोर धन लेकर पुर से भाग जायगा और चन्द्रमा व सप्तमेश ये दोनों अस्तंगत हों तो चोर सहित धन का लाभ होवे ॥ ८७ ॥ सप्तम भावका स्वामी हो तो चोर वहीं है पुर से बाहर नहीं भागा धर्मेश और तृतीयेश व सप्तमेश से इत्थशाल हो तो चोर भाग गया है ऐसा कहना ॥ ८८ ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले तल्लभ्यते राजकुलाच्च चौर्यम् ।
त्रिधर्मपत्नपतीत्थशाले त्वन्यप्रदेशाद्गमने तदाप्तिः ॥८९॥
शुभेत्थशाले हिमगौ विलग्ने स्वस्थेऽथवा नष्टधनस्यलाभः ।
सुस्नेहदृष्ट्या रविणा शुभेन दृष्टे विलग्ने हिमगौच लाभः९०

भा०—दशमेश लग्नेश का इत्थशाल हो तो राजकुल से चोर पकड़ा जावे, तथा तीसरे नवें और सातवें इन भावों के स्वामी का इत्थशाल हो तो दूसरे देश जाने से चोरी की प्राप्ति होवे ॥ ८९ ॥ लग्न में अथवा दशम भाव में स्थित चन्द्रमा शुभग्रहों से इत्थशाल करे तो नष्ट हुए धन का लाभ होवे, और जो लग्न चन्द्रमा को सूर्य व शुभ ग्रह मित्रदृष्टि से देखे तो भी यही फल होवेगा ॥ ९० ॥

स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेपिवा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ॥ ९१ ॥
आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ।
द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्ते च वदेद्धनम् ॥ ९२ ॥

भावार्थ—स्थिरलग्न का उदय हो, या [illegible] का नवांश हो, अथवा वर्गोत्तम राशि हो, तो उसी जगह पर [illegible] अथवा आपस में किसी ने चोराया है ॥९१॥ जो लग्न का [illegible] तो घर के

करता हो तो नष्ट धन का नाश होवे, तथा यदि अष्टम स्थान का स्वामी लग्न में हो तो चोर स्वयं धन देवे ॥ ९७ ॥ धनभाव का स्वामी सूर्य के साथ हो अथवा अस्तंगत हो तो चोर मिल जावे, तथा लग्नेश दशमेश का इत्थशाल हो तो धन सहित चोर प्राप्त होजावे ॥ ९८ ॥

लग्नेशदृष्ट्यभावे चौरः सह मात्रया याति ।
अस्ताधिपतौ दग्धे रविरश्मिगतेऽथलभ्यते चौरः ॥९९॥
लग्नपकृतेत्थशाले राजभयाद्धनमिदं स्वयं दत्ते ।
लग्नास्तपयोर्नस्याद्यदि दृष्टिलग्नपस्तथा विकलः ॥१००॥

भावार्थ-लग्न स्वामी दृष्टि सप्तम भाव पर नहीं हो तो चोर धन सहित आवेगा, सप्तम भाव का स्वामी दग्ध व अस्तंगत हो तो चोर पकड़ा जावे ॥ ९९ ॥ लग्नेश का सप्तमेश से इत्थशाल हो तो राजा के भय से चोर स्वयं धन दे देवे और लग्नेश सप्तमेश की दृष्टि न हो तथा लग्न स्वामी कलाहीन हो ॥ १०० ॥

तत्तस्करो स्वहस्ताद्ददाति चौर्य्यं हि राजकुले ।
लग्नपमध्यपयोगे राजकुलं प्राप्य लभ्यते चौर्य्यम् ॥ १ ॥
रंध्रं चौरस्य धनं धनदे तत्राथ सप्तमे नाप्तिः ।
रंध्र पतौ धनपस्य तु मुथशिलयोगे तु प्राप्यते वित्तम् ।२।

भावार्थ-तो चोर अपने हाथ से राज सभा में चोरी का धन दे देवे, और लग्नस्वामी दशम स्वामी एक साथ हों तो राज द्वार से चोरी मिले॥ १ ॥ अष्टम भाव चोरी का धन, तहाँ धनेश धनेश हो अथवा धनेश सप्तमहो तो धन नहीं मिले और अष्टम भाव का स्वामी धनेश से इत्थशाल करता हो तो धन प्राप्त होवे ॥ २ ॥

रंध्रपतौ दशमपतेर्मुथशिलगे चौरपक्षकृद्भूपः ।
धनपति लग्नपचैको दृष्टि विहीने श्रुतिर्भवति नोप्राप्नि ३

भावार्थ—अष्टम भावस्वामी दशमभावस्वामी का इत्थशाल हो तो

करना उस ग्रह के अनुसार जाति रूप वाला चोर कहना अथवा चोरका सहायक जानना. इस प्रकार जानने में अन्य भी विचार करना. जो इस प्रकार कि पूर्वोक्त योग वहां सूर्य हो तो घर के स्वामी का पिता चोर है ॥ ८ ॥ चन्द्रमा होवें माता शुक्र होवें स्त्री शनि होतो घर का दास बृहस्पति घर का प्रधान मंगल से पुत्र अथवा भाई कहना ॥ ९ ॥

ज्ञे स्वजनो मित्रं वा ज्ञात्वेत्थं पुण्य सहम मावेश्यम् ।
तस्मिन् क्रूरग्रहदृष्टे पुरा न चौरोस्तपे पुरापि स्यात् ॥१०॥
अस्तेशान्मूसरिफे भौम चौरः पुरापि निगृहीतः ।
सप्तेशे रविपुत्रे चन्द्र दृशा तस्करो हि पाखंडी ॥११॥

भा०—बुध होतो स्वजन वा मित्र ऐसा जान कर पुण्य सहम देखना पुण्य सहम पर क्रूर दृष्टि न हो तो प्रथम चोर नहीं था सप्तमेश पाप दृष्ट हो तो पहिले भी चोर था ॥ १० ॥ तथा सप्तम भाव स्वामी से मंगल का ईसराफ योग होतो चोर प्रथम भी चोरी में पकड़ा गया था सप्तमेश शनि हो और चंद्रमा की दृष्टि. होतो चोर पाखंडी है ऐसा कहना ॥ ११ ॥

जीवो विलोक्य लोकं भौमे खातेन तालकं भंक्त्वा ।
प्रति कुंचिकयापहृतं सितेतिथिज्ञे प्रपंचकरः ॥ १२ ॥

भा०—बृहस्पति की दृष्टि पूर्वोक्त शनि परहोतो लोक में विदित है मंगल सप्तम में हो और चंद्रमा की दृष्टि होतो कोमल देकर ताली जंजीर आदि तोड कर चोरने धन हरा है तथा सप्तम शुक्र चन्द्र-दृष्ट हो तो अपूर्व (नवीन) चोर है. बुध चन्द्र दृष्ट हो तो प्रपंची चोर जानना ॥ १२ ॥

चोर की आयु ज्ञान ।

चौरस्य वयोज्ञाने सिते युवाज्ञे शिशुर्गुरौ मध्यः ।
तरुणो भौमे मन्दे वृद्धोऽर्के स्यादतिस्थविरः ॥ १३ ॥
तनुनभयोः स्वगृहे वा स्मरभूम्योर्भूमिलाभयोर्मध्यम् ।
चरति रवौ नव मध्यम वृद्ध वयोतीतकाः क्रमशः ॥१४॥

[illegible]—चोर की आयु ज्ञान में, शुक्र से युवा, बुध से बालक, बृहस्पति से [illegible] मंगल से तरुण, शशि से [illegible], सूर्य से अति बूढ़ा ॥ १३ ॥ जो [illegible] दशम में अपनी राशि में हो तो नवीन युवा अवस्था वाला, [illegible] के बीच में अपनी राशि में सूर्य हो तो मध्यावस्था, [illegible] के बीच हो तो वृद्ध जानना ॥ १४ ॥

नष्ट स्थान प्रश्न ।

नष्टस्थाने प्रश्ने तुर्गे भूम्यग्निवायुजल मध्यात् ।
[illegible] राशि [illegible] स्थानं ज्ञेयं गतधनस्य ॥ १५ ॥
[illegible] तुर्येश्वरोऽपि यः स्याद्बलस्ततो ज्ञेयम् ।
[illegible] स्थाने चंद्रेऽपि [illegible] सुराराये ॥ १६ ॥

[illegible] स्थान प्रश्न में [illegible] स्थान में भूमि, वायु जल [illegible] स्थान, [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] अनुसार [illegible] स्थान में, चन्द्रमा हो तो [illegible] बृहस्पति हो तो देवता के समीप [illegible] ॥ १६ ॥

[illegible] स्थाने ।
[illegible] पार्श्वे च ॥ १७ ॥

[illegible] ॥ १७ ॥

[illegible] प्रश्न ।

[illegible] स्थान ।
[illegible] ॥ १८ ॥
[illegible] ;
[illegible] ॥ १९ ॥

भाषार्थः—यह चोर है या नहीं यह जानने को चन्द्रमा पाप ग्रह से इत्थशाल करता हो तो चोर होगा, जो शुभ ग्रह से इत्थशाल करे तो चोर नहीं है ऐसा कहना ॥ १८ ॥ इसने कभी चोरी करी था नहीं इस प्रश्न में लग्न का स्वामी वा चन्द्रमा से सप्तम स्वामी का ईसराफ योग हो तो पहले भी चोरी करी है ॥ १९ ॥

चोर स्त्री हो अथवा पुरुष ।

चौरः स्त्री पुरुषो वा पृच्छाय मस्तपे स्त्रियो राशौ ।
स्त्रीखेटे स्त्रीदृष्टे चौरः स्त्री व्यत्ययात्पुरुषः ॥ २० ॥
लग्नेशेनवमांशतो वयः प्रमाणजातयो ज्ञेयाः ।
चौरोयमिहानन्तं शास्त्रं कथितोय मुद्देशः ॥ २१ ॥

भाषार्थः चोर स्त्री वा पुरुष, ऐसे प्रश्न में सप्तम भाव का स्वामी स्त्री राशि में हो, स्त्री ग्रह हो वा स्त्री ग्रह की दृष्टि हो तो चोरी स्त्री ने करी है इससे विपरीत हो अर्थात् सप्तमेश पुरुष राशि में पुरुष ग्रह और पुरुष ग्रह की दृष्टि से युक्त हो तो चोर पुरुष जानना ॥ २० ॥ लग्न स्वामी के नवांश वश से चोर की अवस्था का प्रमाण और जाति को जानना, अथवा लग्न में द्रेष्काण वश से रूप रंग आकृति कहना, विशेष विचार करने का शास्त्र अनन्त है यहां बुद्धिमानों के निश्चयार्थ उद्देश मात्र वर्णन किया है ॥ २१ ॥

सन्तान का प्रश्न ।

लग्नेश्वरेणाथ निशाकरेण यदीत्थशालं कुरुते सुतेशः ।
शुभः शुभैस्संयुत ईक्षितः स्यात्ससंतति प्रष्टुरसौ विदध्यात् ॥२२॥
पुंस्त्रीग्रहाः पुत्रगृहं विलग्नात्पश्यन्तियावन्त इहातिवीर्याः ।
तत्संख्यकः स्युस्तनयाश्च कन्याः शुभेशयोगात्सुतभांशतुल्याः ॥

भापार्थ—सन्तान प्रश्न में लग्न के स्वामी अथवा चन्द्रमा से पंचम भाव का स्वामी इथशाल करे तथा पंचमेश शुभ ग्रह हो, शुभ ग्रह से युक्त वा शुभ दृष्ट हो तो प्रश्नकर्ता को सन्तति देवे है ऐसा कहना ॥ २२ ॥ जितने पुरुष संज्ञक ग्रह बलवान होकर पंचम भाव को देखें उतने पुत्र तथा जितने स्त्री ग्रह बली होके देखें उतनी कन्या हों अथवा पंचम में जितने नवांश युक्त हों उतनी

[illegible] जाने किन्तु यह संख्या पूर्वोक्त इत्थशाल हुए में और अपने [illegible] में होने से होते हैं ॥ २३ ॥

[illegible]पुत्राधिपती परस्परं नपश्यतश्चेदुदयं च पंचम ।
[illegible] मुनन्ग्नगौ च प्रस्फुटस्तदा संततिनास्तितां वदेत् ॥
पुत्रा[illegible] [illegible]भनास्तशेन्दोः ।
[illegible] स्यात्पापैः युतदृं स दितेक्षिते वा॥२५॥

[illegible] दोनों परस्पर न [illegible] [illegible] पंचम भाव में [illegible] [illegible] पंचम भाव [illegible] ॥

[illegible] ॥२६॥

[illegible]

[illegible] ॥२७॥

[illegible]

[illegible]

स्वामी अष्टम में हो या बलवान हों तो स्त्री को पुत्र देने वाला परन्तु नहीं मास होवे ॥ २७ ॥ अथवा शुक्र मंगल अष्टम स्थान में स्थित हों और पाप ग्रह दूसरे, बारहवें और आठवें स्थित हों तो प्रश्नकर्ता के सन्तान होकर मरते जावें और आगे भी इसी प्रकार सन्तान सुख न होवे ॥ २८ ॥

रिष्फेश्वरे केन्द्रगते च सौम्येयुतेक्षिते जीवति बालकश्च ।
अपूर्णमासे शुभयुक्त इन्दौ केन्द्रे शिशुर्जीवति दीर्घकालम् ।

भा०—बारहवें भाव का स्वामी जो केन्द्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थान में हो और शुभ ग्रह युक्त दृष्ट हो तो बालक जीवता है तथा पूर्ण चन्द्रमा शुभग्रहोंसे युक्त केन्द्र में स्थित हो तो बालक बहुत काल तक जीवता है ॥ २९ ॥

पंचमेशोथ लग्नेशो विषमस्थानगौ यदा ।
पुत्र जन्मप्रदौ ज्ञेयो कन्यानां समराशिगौ ॥ ३० ॥
युग्मराशिगते लग्ने यदा तत्र शुभग्रहाः ।
गर्भेऽपत्यद्वयं वाच्यं दैवज्ञेन विपश्चिता ॥ ३१ ॥

भावार्थ—पंचम भाव का स्वामी या लग्न का स्वामी जो विषम स्थान में हों तो पुत्र जन्म देने वाले जानने. सम राशि में हों तो कन्या का जन्म देवें ॥ ३० ॥ जो लग्न विषम राशि वाला हो और वहां शुभ ग्रह स्थित हों तो गर्भ में दो बालक कहना. ऐसा दैवज्ञजनों करके कहा गया है ॥ ३१ ॥

विषमोपगतो लग्नाच्छनिः पुत्रसुखप्रदः ।
समभे योषितां जन्म विशेषो जातकोक्तिवत् ॥ ३२ ॥

भा०—लग्न से शनि विषम स्थान में हो तो पुत्र सुख को देता है, सम राशि में कन्या जन्म को देता है, विशेष विचार जातकोक्तिवत यहां जानना ।

भोजन चिन्ता ।

कटुको लवणस्तिक्तो मिश्रितो मधुरो रसः ।
अम्लः कषायः कथिता रव्यादीनां रसा बुधैः ॥
लग्नं पश्यति यः खेटस्तस्य यः कथितो रसः ।
भोजनेऽसौरसो वीर्यक्रमाद्वाच्चः परे रसाः ॥ ३४ ॥

[illegible] ने [illegible] के रस वर्णन किये हैं सो इस प्रकार [illegible] का कटु रस, चन्द्रमा का [illegible], मङ्गल का तिक्त (चरपरा) बुध का [illegible], [illegible] का मधुर रस, शुक्र का [illegible] ([illegible]) शनि का [illegible] ([illegible]) ॥ ३३ ॥ [illegible] को जो [illegible] हो उस ग्रह का जो रस कहा [illegible] में [illegible] रस कहना, पुनः [illegible] रस कहना ॥ ३४ ॥

[illegible] मृगशिलग्नस्य [illegible] वदेद्बुधो ।
[illegible] भोजनाभावः ॥ ३५ ॥

[illegible] ॥ ३५ ॥

[illegible] भोजन [illegible] ।

[illegible] यदि [illegible] ।
[illegible] ॥ ३६ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ३७ ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ ३८ ॥

[illegible]

[illegible]

पाप ग्रहों से ईसराफ और शुभ ग्रहों की शुभ दृष्टि से इत्थशाल [illegible] चन्द्र से भोजन प्राप्त होवे मित्र दृष्टि से इत्थशाल हो तो [illegible] हुआ भोजन प्राप्त होवे ॥ ३८ ॥

शुभेसराफेत्वशुभेत्थशाले चन्द्रे कदन्नं मधुघ्राज्यवर्ज्यम् ।
शुभेत्थशालेयमलेसराफे शक्यं न भोक्तुं परतोऽपि [illegible]

भा०—यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से ईसराफ और पाप ग्रह से [illegible] करता हो तो स्वाद रहित और मधु घृत रहित शुष्क भोजन [illegible] शुभ ग्रह से इत्थशाल हो और पाप ग्रह से ईसराफ योग करता हो तो [illegible] भी प्राप्त हुआ भोजन नहीं मिलेगा ॥ ३९ ॥

चन्द्रे स्वनाथदृष्टे सुखभोजनमन्यथा कष्टात् ।
गुरुमुथशिले सगौरवमर्केण मुथशिलेऽतिशुचि [illegible]
शुक्रे सुस्वादुरसं सहास्यगीतं बुधे जनाकीर्णम् ।
शस्त्रकथाढ्यं शशिना कुस्थानगतं कुजे चोष्णम् ॥ [illegible]

भा०—चन्द्रमा अपने स्वामी से दृष्ट हो तो भोजन सुख [illegible] अन्यथा कष्ट से भोजन मिलेगा और बृहस्पति से [illegible] गौरव से भोजन मिले, सूर्य से इत्थशाल हो तो अत्यन्त [illegible] भोजन प्राप्त होगा ॥ ४० ॥ शुक्र से सुन्दर स्वाद वाला [illegible] गीतादि गाते हुए बहुत जनों के साथ उत्तम भोजन प्राप्त [illegible] शस्त्र कथा युक्त कुत्सित स्थान में मङ्गल से उष्ण [illegible] होवेगा ॥ ४१ ॥

यदि वदति भोजनार्थं निमंत्रितो यामि शशि[illegible]
एकस्थितयोःकेन्द्रे मुथशिलयोर्वापि पूर्णता [illegible] ॥ [illegible] ॥
विधिनानेन शनेः स्यात्कुभोजनं ज्ञसितयो[illegible] ।
जीवस्य तुष्टिजनकं होरेशे तनुखगे स्वयमु[illegible] ॥ [illegible] ॥

भा० —यदि कोई पृच्छक कहे कि निमन्त्रित [illegible] भोजन मिलेगा, तो इस प्रश्न में चन्द्रमा व मङ्गल [illegible]

[illegible] में इत्थशाल करे तो भोजन पूर्णता से होवे ॥ ४२ ॥ इसी प्रकार से [illegible] हैं तो कुत्सित भोजन गुरु, शुक्र होंतो मन वांछित भोजन प्राप्त हो, [illegible] दोनों प्रसन्नता जनक भोजन मिलेगा और लग्नेश हो तो आप ही के [illegible] प्राप्त होवे ॥ ४३ ॥

[illegible] मुथशिली तस्मिन्नीशे तनोः स्वगृहे भोज्यम् ।
[illegible]शे अन्यगृहे भ्रातॄणां सहजपे तथान्यत्र ॥ ४४ ॥
[illegible]मुथशिलीभवस्य भावस्येशस्तत्सम्बन्धेन भोजनमितीङ्गितम्

[illegible] चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो, [illegible] अपने घर में भोजन होगा, [illegible] होतो [illegible] भावों का कहना ॥ ४४ ॥ [illegible] स्वामी हो [illegible] भोजन का [illegible] करना ।

[illegible] चन्द्रे [illegible] केन्द्रगते शुभान्विते ।
[illegible] शुभोजनम् ॥ ४५ ॥

[illegible] चन्द्रमा के घर में हो और चन्द्र [illegible] स्थान में [illegible] ॥ ४५ ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥ ४६ ॥

[illegible] भोजन [illegible]
[illegible] ॥ ४६ ॥

[illegible] ।
[illegible]

[illegible]

इसी प्रकार दशमेश व लग्नेश का इत्थशाल लाभेश से हो तो गुण का लाभ जानना ॥ ४७ ॥

विवाद प्रश्न ।

क्रूरः खचरो लग्ने विवादपृच्छा सुजयति विवादं तम् ।
सर्वेस्त्विस्याशु परं नीचेऽस्ते जयति न द्विपतः ॥४८॥
लग्नद्यूने मुक्त्वा परस्परं क्रूर योर्ज्ञकण्टदृष्टौ ।
विवदद्वदादियुगं तच्छुरिकाभ्यां प्रहरति तदेवम् ॥४९॥

भा०—लग्न में पाप ग्रह हो तो सब अवस्था में वादी को जीतेगा परन्तु नीच में हो शत्रु से विजय नहीं पावेगा ॥ ४८ ॥ लग्न पर सप्तम स्थान दृष्टि को छोड़ कर पाप ग्रह परस्पर शत्रु दृष्टि से देखते हों तो दोनों वादियों में छुरी चलेगी ॥ ४९ ॥

लग्नद्यूने च यदि क्रूरः खचरो विवादिनोर्न तदा ।
कलहनिवृत्तिः काले जयति हि बलवान्नतबलं तु ॥५०॥

भा०—लग्नमें और सातवें जो पापग्रह हों तो वादी की कलह समाप्ति होवेगी, निर्बल को बलवान बहुत कालमें जीतेगा ॥ ५० ॥

लग्नेशसुतपः सौम्याः केन्द्रे संधिर्न वान्यथा ।
लग्नद्यूनेशषष्ठेशारित्वेप्यन्योन्यविग्रहः ॥ ५१ ॥

भा०—लग्न स्वामी और पंचमेश व शुभग्रह केन्द्र स्थान में हों तो सन्धि होगी और लग्नेश, सप्तमेश, षष्ठेश छठे स्थान में हों तो दोनों की परस्पर लड़ाई होवैगी ॥ ५१ ॥

गृहमागतो न यदसौ किं वद्धः किमथ वा हत इति प्रश्ने ।
मूर्तौ क्रूरो यदि तन्नहतो वद्धोथ वा पुरुषः ॥ ५२ ॥

भा०—जो घर पर नहीं आया तो क्या बांधा गया अथवा मारा गया ? इस प्रश्न में लग्न विषे यदि पापग्रह हों तो मारा नहीं गया कदाचित् वह पुरुष बांधा गया हो तो विस्मय नहीं ॥ ५२ ॥

त्रिकोणचतुरस्रास्तस्थितः पापग्रहो यदि ।
क्रूरैर्निरीक्षितः पापैर्नूनं बन्धनमादिशेत् ॥ ५३ ॥

भा० — त्रिकोण ९ । ५ स्थान में चतुरस्र १ । ४ । ७ । १० स्थान में [illegible] चतुरस्र कहिये चौथे आठवें सातवें में पापग्रह हों वा इनको पापग्रह देखें तो [illegible] बांधा गया ऐसा कहना ॥ ५३ ॥

[illegible]मगोऽष्टमगो वा चेत्क्रूरस्तद्गतोऽपि वाबद्धः ।
[illegible] सप्तमे वा यदा लग्नेऽष्टमेऽपि भवेत् ॥ ५४ ॥
[illegible] पुनर्बद्धश्च हृतश्च मुच्यते च परम् । ५५॥

[illegible] सातवें वा आठवें क्रूर ग्रह हों तो [illegible] भागा गया वा [illegible] सातवें पापग्रह हों [illegible] आठवें भी हों ॥५४॥ [illegible] पीछे से [illegible] जायगा ॥

[illegible] क्रूरे [illegible] ।
[illegible] ॥ ५६ ॥

[illegible] सातवें [illegible] आठवें [illegible] में शुभग्रह हों तो [illegible] ॥ ५६ ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

संबन्धेप्सुः सचेत्क्रूरो मृतीशः स्यात्तदा मृतिः ।
लग्नेशेऽस्तगिते युस्थे कुजदृष्टे तदामृतिः ॥ ५९ ॥

भावार्थ—कैद से छूटने के प्रश्न में, जो केंद्रस्थान का स्वामी केंद्र में हो, और पतित लग्नेश केन्द्र में हो तो कैदी नहीं छूटेगा ॥ ५८ ॥ सम्बन्ध की इच्छा वाला पापग्रह हो या अष्टमेश हो तो मरण होवेगा और लग्नस्वामी अस्त शनि का होकर सातवें स्थान में हो तो भी मरण होवेगा ॥ ५९ ॥

चन्द्रश्चाम्बुगपापेन मृत्युनाथेन योगकृत् ।
तदा गुप्ता मृतिश्चन्द्रः केंद्रे मन्दयुगीक्षितः ॥ ६० ॥
दीर्घपीड़ा च भौमेन युग्दृष्टौ बन्धताडने ।
दृश्यार्धे लग्नपश्चेत्स्या द्व्ययपेनेत्थशालवान् ॥ ६१ ॥

भावार्थ—चन्द्रमा जल राशि में हो और पापग्रह से अष्टमेश से योग करे अर्थात युक्त हो तो गुप्त मरण होवेगा और केन्द्र में शनि से युक्त या दृष्ट हो तो भी मरण जानना ॥ ६० ॥ लग्न स्वामी मंगल से युक्त या दृष्ट हो अथवा दृश्यार्ध में हो और धन भाव स्वामी से इत्थशाल करता हो तो बंध ताडन में बहुत पीड़ा होवेगी ॥ ६१ ॥

पलायते तदा बद्धो व्ययगे लग्नगेपिवा ।
तृतीय नवम स्वमी व्ययगो लग्नपेन च । ६२ ।
तदेत्थशाल योगेप्सुस्तदापिच पलायते ।
दृश्यार्धे ह्युपचारेण चन्द्रो मुथशिल स्तदा । ६३ ॥

भा०तृतीय भाव का स्वामी नवम भाव स्वामी बारहवें या लग्न में हो अथवा लग्नेश के साथ बारहवें हो तो बंधुआ भाग जावेगा ॥ ६२ ॥ तथा जो इत्थशाल योग की इच्छा वाला हो तो भी भाग जावै, और जो चन्द्रमा दृश्यार्ध में इत्थशाल योग करे तो भी भागेगा ॥ ६३ ॥

बंधमोक्तस्त्रिधर्मेशः संग्रहः शीघ्रमोक्तकृत ।
पतितेन्दुस्त्रिधर्मस्थग्रहसम्बन्धकृत्तदा । ६४ ॥
केन्द्रस्थत्रिभवेशेन योगेप्सुश्चेत्तदा चिरात् ।
यावच्छुक्रो बली लग्ने तावत्कर्ता बलाधिकः ॥ ६५ ॥

भा०—तृतीय भाव स्वामी, नवम भाव स्वामी का योग हो तो बंध- [illegible] हो और पतित चन्द्रमा तीसरे वा नवें स्थित ग्रह से सम्बन्ध करै तो भी [illegible] मे मोक्ष पावै अर्थात् छूट जावै ॥ ६४ ॥ केन्द्र मे स्थित तृतीयेश [illegible] मे योग की इच्छा वाला शुक्र हो और लग्न में बली हो तो जब तक [illegible] बली लग्न मे रहै तबतक कर्ता का बल अधिक होगा ॥ ६५ ॥

[illegible]स्तंगते तनौ शुक्रे बद्धमोक्षादिसंभवः ।
[illegible]गते येन योगेन येन योगेन मुच्यते ॥ ६६ ॥
[illegible] तुले च शीघ्रं स्यात्कर्के नक्रे सकष्टता ।
[illegible] निराकृतेहस्थे मोक्षो मध्यमकालतः ॥ ६७ ॥

[illegible] में शुक्र अस्तंगत हो तो बद्ध मनुष्य के छूटने का संभव है [illegible] योग से बन्धता है उसी योग से छूटता है ऐसा जानना ॥ ६६ ॥ [illegible] छूटता है, [illegible] मकर में कष्ट से छूटेगा [illegible] और [illegible] में मध्यम प्रकार का मोक्ष [illegible] ॥ ६७ ॥

[illegible] विचार ।

[illegible] जने ।
[illegible] ॥ ६८ ॥

[illegible] (१) [illegible], [illegible] ([illegible]) [illegible] ॥ ६८ ॥

[illegible] केन्द्रे [illegible] पापाः ।
[illegible] निरूप्य ॥ ६९ ॥
[illegible] मार्गः ॥
[illegible]

[illegible]

या स्वामी बलवान् हो और उसको लग्न वा चतुर्थेश शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो मार्ग से नाव कुशल पूर्वक लाभ सहित लौटेगी और जो पाप युक्त दृष्ट हो तो बिना वस्तु के नौका आवेगी ॥ ७० ॥

विलग्नरन्ध्राधिपती स्वगेहे प्रपश्यतश्चेद्व्यवहारलाभः ।
यदाष्टमे सौम्यखगा बलाढ्यास्तदा तरी लाभसुखप्रदा स्यात् ॥७१॥

भावार्थः-जो लग्न स्वामी और अष्टम स्वामी अपने घर में हों अथवा अपने घर को देखते हों तो व्यवहार से लाभ होवे तथा जो आठवें घर में शुभग्रह बलवान विराजमान हों तो नाव लाभ व सुख को देने वाली होवे है ।

कुशला याति पृच्छायां मृत्युयोगे समागते ।
तदा नौरेति शीघ्रेण लाभाद्यं चान्ययोगतः ॥ ७२ ॥
लग्नेशं चन्द्रनाथं वा चंद्रं वा मृत्युपो यदि ।
पश्येत्क्रूरदृशा नावा समं पश्यति नौपतिः ॥ ७३ ॥

भा०—हमारी नाव कुशल पूर्वक आवेगी ? इस प्रश्न में जो प्रश्न समय मृत्यु योग हो तो नौका शीघ्रता पूर्वक आवे, जो अन्य योग हो तो लाभ सहित आवे ॥ ७२ ॥ लग्न स्वामी, चन्द्र राशि स्वामी वा चन्द्रमा इनको अष्टम स्वामी क्रूर दृष्टि से देखे तो नौका सहित स्वामी का नाश होवेगा ॥ ७३ ॥

लग्नेशाष्टपतिः स्वस्य गेहं नालोकते यदि ।
तदायानस्य वक्तव्यं निश्चितं मज्जनं बुधैः ॥ ७४ ॥
तावुभौ सप्तमस्थौ चेज्जले वापनिकां वदेत् ।
लग्नचन्द्रपतिक्रूरदृष्ट्याऽन्योन्यंयदीक्षितौ ।
तदा पोतजनानां च मिथः कलहमादिशेत् ॥ ७५ ॥

भा०—यदि लग्न स्वामी और अष्टम स्वामी ये अपने घर को न देखें तो नौका डूबेगी ऐसा निश्चय पण्डितों करके कहना चाहिये ॥ ७४ ॥ तथा ये दोनों लग्नेश और अष्टम स्वामी सप्तम घर में विराजमान हों तो नौका जल में द्रव्य सहित डूब जायगी ऐसा कहना, तथा लग्न स्वामी और चन्द्रमा

[illegible] का स्वामी ये दोनों जो एक दूसरे को देखें तो नाव वाले जनों का परस्पर कलह होवै ऐसा कहना ॥ ७५ ॥

क्रय विक्रय का प्रश्न।

क्रेता लग्नपतिर्ज्ञेयो विक्रेता लाभपः स्मृतः।
गृह्णाम्यहमिदं वस्तु प्रश्न एवंविधे सति ॥ ७६ ॥
बलशालि विलग्नं चेद्गृह्णाते तत्कयाणकम्।
तस्मात्कयाणकाल्लाभः प्रष्टुर्भवति निश्चितम् ॥ ७७ ॥
विक्रीणाम्यमुकं वस्तु प्रश्न एवंविधे सति।
आयस्थाने बलवति विक्रेतव्यं कयाणकम् ॥ ७८ ॥

[illegible] स्वामी लेने वाला जानना, लाभ स्वामी बेचने वाला कहा है, [illegible] मैं खरीद करूंगा इस प्रकार के प्रश्न करने में ॥ ७६ ॥ जो लग्न [illegible] लेना, इस कारण खरीदने से लाभ होगा ऐसा [illegible] लाभालाभ विचार कर कहना ॥ ७७ ॥ अमुक चीज [illegible] होगा, ऐसे प्रश्न में ग्यारहवां घर बलवान हो [illegible] होगा, ऐसा ऐसा कहना ॥ ७८ ॥

[illegible] का प्रश्न।

[illegible] नहि।
[illegible] नहि ॥ ७९ ॥
[illegible] मध्ये यत्र शुभग्रहः।

दिशि तस्यां च तत्स्वाध्यं दुर्भिक्षं च भविष्यति ॥ ८१ ॥
दिशि यस्यां रविस्तत्र धान्यनाशो नृपाद्भवेत् ।
यत्रापि मङ्गलस्तत्र धान्यनाशोऽग्निभीस्तथा ॥ ८२ ॥

भावार्थ—जिस दिशा में शनि पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो उस दिशा में रोग और दुर्भिक्ष होवेगा ॥ ८१ ॥ तथा जिस दिशा में सूर्य पाप युक्त दृष्ट हो उस दिशा में राजा से अन्न का नाश होवे, तथा मङ्गल जिस दिशा में पाप युत दृष्ट स्थित हो वहां अन्न का नाश और अग्नि भय होवे ॥ ८२ ॥

यस्यां दिशि शुभाः खेटाः समस्तबलशालिनः ।
निष्पन्ना सैव विज्ञेया सस्यस्वाध्यं च तत्र हि ॥ ८३ ॥
केन्द्रेषु सर्वतः पापाः समस्त बलसंयुताः ।
देशस्तदा विनष्टोऽसौ ज्ञातव्यःशास्त्र कोविदैः ॥ ८४ ॥

भा०—जिस दिशा में शुभ ग्रह सम्पूर्ण बल युक्त स्थित होवें उस दिशा में सब अन्न अच्छे प्रकार उत्पन्न होवेंगे और स्वस्थता भी उसी दिशा में जानना ॥ ८३ ॥ तथा सब केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह सम्पूर्ण बल सहित स्थित हों तो देश नाश हो ऐसा शास्त्रज्ञ पण्डितों करके जानना ॥ ८४ ॥

लाभालाभ प्रश्न ।

लग्नपो मृत्युपश्चापि मृत्यौस्यातामुभौ यदि ।
स्थितौ द्रेष्काण एकस्मिन्प्रष्टर्लाभस्तदा ध्रुवम् ॥ ८५ ॥
एवं द्वादशभावेषु द्रेष्काणैरेव केवलम् ।
बुधैर्विनिश्चयं ब्रूयाद्योगेष्वन्येषु निस्पृहः ॥ ८६ ॥

भावार्थ—अब लाभालाभ प्रश्न में लग्न स्वामी अष्टम स्वामी ये दोनों अष्टम स्थान में हों और एक ही द्रेष्काण में विराजमान हों तो निश्चय करके प्रश्नकर्ता को लाभ कहना ॥ ८५ ॥ इस प्रकार बारहों भावों के विषे केवल द्रेष्काण ही से निश्चय करके पण्डितों ने कहना चाहिये और अन्य योगों में यही बलवान हैं ॥ ८६ ॥

प्रश्नकाले सौम्यवर्गे लग्ने यदधिको भवेत् ।
ग्रहभावानपेक्षेण तदाख्येयं शुभं फलम् ॥ ८७ ॥

लग्नाधिपश्च लाभस्याधीशश्च दायको भवेत् ।
लग्नाधिपस्य योगोत्थलाभाधीशेन लाभदः ॥८८॥

भा०—प्रश्न समय लग्न में शुभ ग्रहों के वर्ग जो अधिक हों तो [illegible] शुभ ही फल कहना ॥ ८७ ॥ लग्न स्वामी और लाभ स्वामी लाभ दायक जानने, लग्नेश का लाभेश के साथ उत्पन्न योग लाभ का देने वाला होता है ॥ ८८ ॥

[illegible]नि परलाभ करस्तद्दिवस यदि चन्द्रदृग्लाभे ।
योगाः सर्वे[illegible]श्चन्द्रमृते व्यक्तमेतच्च ॥ ८९ ॥
कर्मा[illegible]शेन नवं कर्मांशेशेन न निवृत्त्यधीशेन ।
मृत्युपतिना न योगे लाभाधीशस्य [illegible] ॥ ९० ॥

[illegible] लाभ स्थान में चन्द्र [illegible] हो तो लाभ [illegible] चन्द्रमा के [illegible] हैं [illegible] ही हैं ॥ ८९ ॥ [illegible] कर्मा [illegible] लाभेश का योग हो तो लाभ [illegible] ॥

[illegible]ः पुनर्निवृद्धिश्च कर्मवृद्धिश्च ।
[illegible] ॥ ९१ ॥
[illegible] लाभपति [illegible] ।
[illegible] व्ययगः [illegible] व्यय कुरुते ॥९२॥

लग्नस्थं चन्द्रं चन्द्रः क्रूरो वा यदि पश्यति ।
धनलाभो भवत्याशु किन्त्वनर्थोऽपि पृच्छतः ॥९३॥

भा०—यदि लग्नमें स्थित क्रूर को चन्द्रमा वा पाप ग्रह देखे तो धन लाभ शीघ्र होता है किन्तु पूछने वालेको कुछ अनर्थ भी होवै ॥ ९३ ॥

सामान्य रीति से भाव विचार ।

इन्दुः सर्वत्र बीजाभो लग्नं च कुसुमप्रभम् ।
फलेन सदृशोंऽशश्च भावः स्वादुसमप्रभः ॥ ९४ ॥

भा०—अब सामान्य रीतिसे भाव विचार कहते हैं—ग्रह विचार में सर्वत्र चन्द्रमा बीजके समान, और लग्न पुष्पके समान, और अंश फलके सदृश, तथा भाव स्वाद के तुल्य जानना ॥ ९४ ॥

लग्नपतिर्यदि लग्नं कार्याधीशश्च वीक्षते कार्यम् ।
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम् ॥९५॥
लग्नेशः कार्येशविलोकयेल्लग्नपं च कार्येशः ।
शीतगुदृष्टौ सत्यां परिपूर्णा कार्यसंसिद्धि ॥ ९६ ॥

भा०—लग्नका स्वामी लग्नको, और कार्य भाव स्वामी कार्य को, और लग्न स्वामी कार्य भावको, कार्य भाव स्वामी लग्नको देखता हो ॥९५॥ तथा लग्नेश कार्येश को और कार्येश लग्नेश को, और इन सबको चन्द्रमा देखता हो तो कार्य की सिद्धि पूर्ण होवैगी ॥ ९६ ॥

कथयंतिपादयोगं पश्यति सौम्यो न लग्नपो लग्नम् ।
लग्नाधिपं च पश्यति शुभग्रहश्चार्धयोगोऽत्र ॥ ९७ ॥
एकः शुभग्रहो यदि पश्यति लग्नाधिपं विलग्नं वा ।
पादोनयोगमाहुस्तदा बुधाः कार्यसंसिद्ध्यै ॥ ९८ ॥

भा०—लग्न स्वामी लग्न को न देखे और शुभ ग्रह देखता हो तो चौथाई योग जानना, ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं, तथा केवल लग्न स्वामी को शुभ ग्रह देखे तो कोई भी योग हो तो आधा होता है ॥ ९७ ॥ एक शुभ

ग्रह जो लग्न वा लग्नेश को देखै तो बुद्धजन उसे कार्य सिद्धि के अर्थ पूर्ण [illegible] करते हैं ॥ ९८ ॥

लाभादिका समय निर्णय ।

उक्त्योगगतं राशिं तत्कालीकृत्य लिप्तिकां गुणयेत् ।
[illegible] कुर्यात् हृत्वा मुनिभिस्ततः शेषः ॥ ९९ ॥
[illegible] भवेदुदयः ।
[illegible] नेतरैर्ग्रहैर्भवति ॥ १०० ॥

[illegible] लाभादि में समय का निर्णय करते हैं—लाभादि सम्पूर्ण [illegible] फिर उस समय में [illegible] गुणन करके [illegible] से भाग देवै जो शेष रहे [illegible] ॥ ९९ ॥ [illegible] राशि जो शुभग्रह की होवो कार्य प्राप्ति [illegible] नहीं होवै ॥ १०० ॥

[illegible] पंच ५ विंशतिः सैकः २१ ।
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ २ ॥

[illegible] २१ मंगल के १४, बुधके [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] वर्णन करते हैं ॥ २ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ३ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ४ ॥

[illegible] नहीं [illegible]

[illegible] और [illegible] में महीना [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] अथवा प्रवृत्ति, या [illegible] निरूपण [illegible] करना ॥ ४ ॥

अकचटतपयशवर्गा रविकुजसितसौम्यजीवसौराणाम् ।
चन्द्रस्य चानि विंशास्तैः स्युः प्रश्नोद्भववर्णैः ॥ ५ ॥
ज्ञात्वा तस्माल्लग्नं विज्ञाय शुभाशुभं च वदेत् ।
वर्गादिमध्यमान्त्यैर्वर्गैः प्रश्नोद्भवैर्विषमराशिः ॥ ६ ॥

भावार्थ—अवर्ग का सूर्य, कवर्ग का मंगल, चवर्ग का शुक्र, टवर्ग का बुध, तवर्ग का गुरु, पवर्ग का शनि, यवर्ग और शवर्ग का चन्द्रमा ये वर्गों के स्वामी कहे हैं, जहां लग्न का ज्ञान न हो सके अथवा दो तीन प्रश्न एक ही समय में हों तो वर्ग से लग्न निश्चय कर लेना, सो इस प्रकार कि प्रश्न के अक्षरों में प्रथम अक्षर के वर्ग का जो स्वामी है ॥५॥ उसके लग्न को जानकर शुभाशुभ फल कहना यहां प्रत्येक ग्रह की दो दो राशि हैं, इनमें विषम राशि जानना, जैसे मंगल वर्गेश हो तो १।८ मेष जानना, सर्वत्र सूर्य चंद्रमा की एक ही एक राशि है सो जानना, जहां बहुत प्रश्न हों वहां प्रथम प्रश्नाक्षर के प्रथम वर्ण से दूसरे प्रश्न में मध्यमवर्ण तीसरे में अन्त्य वाले वर्ण से लग्न निश्चय करना ॥ ५ ॥

लग्नज्ञाने प्रवदेत्पृच्छायुग्मं कुजज्ञजीवनाम् ।
सितरविजयोश्चनैकं रविशशिनोरेकं राशित्वात् ॥ ७ ॥
तस्मात्प्रागवत्प्रवदेत्पृच्छासमये शुभाशुभं सर्वम् ।
कालस्य च विज्ञानादेतच्चिन्त्यं बहुप्रश्नं ॥ ८ ॥

भावार्थ—लग्न ज्ञान में प्रश्नकर्ता को मंगल, बुध, गुरु के राशिका लग्न ज्ञात हो तो दो प्रश्न कहना, शुक्र और शनि से अनेक प्रश्न कहने, सूर्य चन्द्र एक राशि वाले होने से एक ही प्रश्न कहना ॥ ७ ॥ इस कारण पूर्व कथानुसार प्रश्नकर्ता को सब शुभाशुभ प्रश्न करना प्रश्न समय में इस प्रकार विचारना, तथा समय के विज्ञान से बहुत प्रश्नों में यह सब विचार करना.

प्रश्न वस्तु ज्ञान ।

स्वांशे विलग्ने यदि वा त्रिकोणे स्वांशे स्थितःपश्यतिधातुचिन्ताम्
परांशकम्प्रश्न करोति जीवं मूलं परांशोपगतः परांशम् ॥ ९ ॥
भानुर्मूलं जीवमिन्दोजराशौ युग्मेः विंद्यादेतदेव प्रतीपम् ।
[illegible] संक्षेपोयं विस्तरात्तत्प्रभेदाः ॥१०॥

[illegible] प्रश्न में लग्नेश वा चन्द्रमा अपने [illegible] त्रिकोण (नवम पंचम) स्थान में वा अपने नवांश [illegible] देखे तो धातु चिन्ता कहना, तथा जो दूसरे के [illegible] लग्न व चन्द्रमा को देखें तो मूल चिन्ता जानना ॥ ९ ॥
[illegible] नवांश में धातु, दूसरे में जीव, चौथे में धातु, [illegible] में मूल, नवें में जीव, जानना [illegible] १ । ४ । ७ नवांश में जीव, २ । [illegible] नवांश में धातु चिन्ता कहना ॥ १० ॥

[illegible] धातुकरौ प्रश्ने ।
[illegible] शशिगुरुबुधकाः स्मृता जीवाः ॥
[illegible] निर्गतश्च वा ।
[illegible] ॥ ११ ॥

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ १३ ॥

[illegible]

भाव प्रश्न ज्ञान ।

लग्नलाभपयोः प्राणी तयोर्यद्भावगः शशी ।
तस्यभावस्य या चिन्ता प्रष्टुः सा हृदि वर्तते ॥ १४ ॥
एवं बलाधिकाचन्द्राल्लग्ननाथो यतः स्थितः ।
दैवज्ञेन विनिर्णेयः प्रश्नस्तद्भावसम्भवः ॥ १५ ॥

भावार्थः—लग्नेश भावेश इनसे जितने संख्या के भाव में चन्द्रमा हो उस भाव सम्बन्धी जो चिन्ता वही पृच्छक के हृदय में वर्ते है ऐसा जानना ॥१४॥ इसी प्रकार बलवान चन्द्रमा से जितने संख्या वाले भाव में लग्न स्वामी हो उस भाव सम्बन्धी प्रश्न पृच्छक के हृदय में ज्योतिषी पण्डित करके निर्णय करना अर्थात् बताना चाहिये ॥ १५ ॥

आत्मसमं लग्नगतैस्तृतीयगैर्भ्रातरः सुतं सुतगैः ।
माता वा भगिनी वा चतुर्थगैः शत्रुगैं शत्रुः ॥ १६ ॥
जायासप्तमसंस्थैर्नवमे धर्माश्रितो गुरुर्दशमे ।
स्वांशःपतिमित्रशत्रुषु तथैववाच्यं बलयुतेषु ॥ १७ ॥

भावार्थः—सब से उत्तम बल वाला ग्रह वा तत्काल लग्न का नवमांशेश लग्न में हो तो अपने शरीर सम्बन्धी, तीसरे हों तो भ्रातृ सम्बन्धी, पंचम भाव में हों तो पुत्र सम्बन्धी, चतुर्थ भाव में हों तो माता वा बहिन सम्बन्धी, छठे स्थान में हों तो शत्रु सम्बन्धी प्रश्न प्रश्नकर्ता के हृदय में जानना ॥ १६॥ तथा सप्तम भाव में स्थित होने से स्त्री सम्बन्धी, नवम भाव में धर्म सम्बन्धी, दशम भाव में गुरु वा राज सम्बन्धी प्रश्न कहना, तथा लग्न नवांश स्वामी बलवान होकर मित्र की राशि में स्थित हो तो मित्र सम्बन्धी प्रश्न जानना, शत्रु राशि में हो तो शत्रु सम्बन्धी प्रश्न जानना, इनमें जो बली हो उसी से प्रश्न कहना ॥ १७ ॥

चरलग्ने चरभागे मध्यादुभ्रष्टे प्रवासिचिंता स्यात् ।
भ्रष्टःसप्तमभवनात्पुनिर्वृत्तो यदि न वक्री ॥ १८ ॥

अस्ते रविसितवक्रैः परजायां स्वां गुरौ बुधे वेश्याम् ।
चन्द्रे च वयःशशिवत्प्रवदेत्सौरेऽन्त्यजादीनाम् ॥ १९ ॥

भावार्थः—पूर्वोक्त ग्रह जो चर राशि की लग्न में वा चर नवांश [illegible] स्थान से उत्तर (दशम, एकादश, द्वादश) भाव में हों तो परस्त्री ([illegible] से भिन्न मनुष्य) का प्रश्न जानना, [illegible] चर राशि नवांश [illegible] भाव से उत्तर (सप्तम, अष्टम नवम) भाव में हों तो प्रवासी के [illegible] की चिन्ता कहना, यदि ग्रह वक्री नहीं होवे, यदि वक्री हो तो पूर्वोक्त [illegible] विपरीत कहना ॥ १८ ॥ जो सप्तम भाव में सूर्य, शुक्र, मङ्गल [illegible] [illegible] परस्त्री सम्बन्धी, गुरु हो तो अपने स्त्री सम्बन्धी, बुध हो तो [illegible] सम्बन्धी, चन्द्रमा हो तो मुग्धा चन्द्रमा के अवस्थामान स्त्री सम्बन्धी, [illegible] हो तो [illegible] (नीच जाति) स्त्री सम्बन्धी प्रश्न पृच्छक के चित्त में है [illegible] कहना ॥ १९ ॥

[illegible] बालगर्भी बुधश्च [illegible] शनिः [illegible] प्रसूताम् ।
[illegible] [illegible] [illegible] च [illegible] एवं [illegible] ॥२०॥

[illegible] ॥ २० ॥

पतेश होवै, और लग्न में बृहस्पति, सप्तम में शुक्र और चौथे चन्द्रमा हो तो रति क्रीडा हास्य पूर्वक होवै ॥ २२ ॥

शुभग्रहोत्थे च कंबूलयोगे युतौ रजः पुष्पसुगंधयुक्तम् ।
स्वर्क्षोच्चगे हर्म्यरतं निगद्यं स्थिते द्विदेहे वनिता स्वकीया॥२३॥
चरोदये सा रमिते परस्त्री केन्द्रे शनौ सा सुरजो दिवारतिम् ।
निशोदये शत्रिखगे च रात्रौ दिवानिशं तद्बलिनोर्द्विखेटयोः२४॥

भा० लग्नेश व सप्तमेश का शुभ ग्रहों से कम्बूल योग हो तो रज पुष्पकी सुगंधी से संयुक्त हो, पाप कम्बूल में दुर्गंधियुक्त जानना, तथा उक्तग्रह अपनी राशि वा उच्च में हों तो अच्छे घरमें, और अन्यथा हो तो सामान्य स्थान में सुरत हो, तथा नीचादि राशिमें होने से बुरे स्थान में सुरत जानना द्विःस्वभाव राशिमें होतो अपनी स्त्री से, स्थिर राशि में उक्तग्रह हों तो वेश्या आदि से संभोग कथन करना ॥ २३ ॥ चरराशि लग्न हो तो पराई स्त्री से संभोग होवै, शनि केन्द्र में हो तो रजस्वला स्त्री से, दिवाबली लग्न हो तो दिनमें, रात्रिबली हो तो रात्रिमें, संध्याबली हो तो सायंकाल में, द्विःस्वभाव से दिन तथा रात्रि में भी सुरत कहना ॥ २४ ॥

महर्घ विचार ।

मेषे वृषे च मिथुने शुभयुक्तदृष्टेन ग्रैष्मिकंतु सुलभं भवतिपृथिव्याम् ।
सौम्ये धनुर्मृगघटेषु च सारधान्यं कुर्यात्समर्घमशुभैःसहितोऽसमर्घम् ;

भा०—मेष वृष, और मिथुन, ये राशि शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो ग्रीष्म ऋतु पृथिवी पर सुलभ (अच्छा) होवेगी, और धन, मकर, कुम्भ में हों तो शरद ऋतुकी फसल अच्छी होगी तथा लग्न लग्नेश और चन्द्रमा शुभयुक्त दृष्ट हो तो समय अच्छा हो, पापयुक्त दृष्ट से महंगा होवै ॥ २५ ॥

लग्ने बलाढ्ये निजनाथसौम्यैर्युक्तेक्षिते केन्द्रगतैःशुभैश्च ।
सर्वैःसमर्घं विबलैर्विलग्ने केन्द्रेषु पापैः सकलं त्वनर्घ्यम ॥२६॥

भा०—लग्न बलवान और अपने स्वामी शुभ ग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो केन्द्र स्थानमें शुभग्रह होतो सब सस्ता होवै अर्थात् समय सुकाल होवे और जो लग्न

चन्द्रीन हो और केन्द्र में पापग्रह हों तो समय अच्छा नहीं हो अन्नादि महँगा होजावै ॥ २६ ॥

मेष के सूर्य प्रवेश का शुभाशुभ फल ।

राकाकुहूराशिपभास्वदज प्रवेशे लग्नेश्वराःशुभखगैर्युतवीक्षिताश्चे ।
तद्वत्सरे जगति सौख्यमलंप्रकुर्युःपापार्दितेगदनरेन्द्रभयं प्रजानाम् ॥२७॥

भा०—अब मेष के सूर्य प्रवेश में शुभाशुभ फल कहते हैं—मेषार्क प्रवेश में अमावास्या पूर्णिमा हो, और चन्द्रमा [illegible] राशि का स्वामी सूर्य हो, और लग्न स्वामी शुभ युक्त दृष्ट हो तो वह संवत्सर जगत् का सुख [illegible] होवे, पाप ग्रहों से पीड़ित होतो प्रजा को रोग और राज भय [illegible] ॥ २७ ॥

[illegible] केन्द्रेषु पापोऽपतितिथशाले ।
[illegible] तस्मिन्वर्षे महार्तिः [illegible] ॥ २८ ॥

[illegible] केन्द्र में हो, पाप [illegible] में रोग पीड़ा, और [illegible] ॥ २८ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ २९ ॥

[illegible]

जन्मोदये देहसुखं धनेर्थं लाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः ।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिःपुत्रेऽथ षष्ठेऽरिपराजयः स्यात्॥३१॥

भा०—जन्म लग्न से सूर्य और मेषार्क प्रवेश लग्न जिस भाव में स्थित हो और शुभ ग्रह युक्त हो तो उस वर्ष में भाव की वृद्धि होती है, पाप ग्रह से युक्त हो तो अन्यथा अर्थात् भाव की हानि कहना ॥ ३० ॥ जन्म लग्न मे मेषार्क प्रवेश हो तो देह का सुख हो धन लग्न में होने से अर्थ लाभ, तृतीय लग्न में हो तो कुटुम्ब की वृद्धि, चौथी लग्न मे हो तो मित्र सुख, पंचम में पुत्र सुख, छठी लग्न में शत्रु का पराजय होवे ॥ ३१ ॥

स्त्री सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे ।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्त सौख्यास्पदाप्तिः ॥
लाभे लाभः सुख धन चयो दुःख दारिद्र मन्त्ये ।
पुंसो मेषं प्रविशति रवौ जन्म लग्नाद्धि लग्ने ॥ ३२ ॥

भाषार्थ—सप्तम लग्न में स्त्री का सुख, अष्टम लग्न में मृत्यु व रोगभय नवम लग्न में धर्म लाभ, दशम लग्न में धन का सुख और गृह लाभ लाभ में लाभ सुख व धन संचय, द्वादश लग्न में दुःख दरिद्रता एवं मनुष्यों का मेषार्क प्रवेश होनेपर जन्म लग्नसे जिसलग्न में प्रवेश हो उस भाव संबन्धी शुभाशुभ फल जानना ॥ ३२ ॥

श्री नीलकण्ठेन शरत्फलोत्तरं प्रश्नाख्यतंत्रं यदकारि पूर्वम् ।
तत्सांप्रतं पूर्णतरं न लभ्यते ह्यावश्यकं प्रश्नफलं हि मन्ये ॥

भा०—श्रीनीलकण्ठ दैवज्ञ ने वर्ष फल तंत्र कहने के उपरान्त जो तीसरा प्रश्न तंत्र पूर्व कथन किया था सो सम्पूर्ण प्राप्त नहीं हुआ इस कारण प्रश्न फल को आवश्यक मान कर जो कुछ श्री नीलकंठ कृत वा संगृहीत भाग प्राप्त हुआ सो भाषान्तर करके लिख दिया है ॥३३॥

इति श्री दैवज्ञानन्त सुत नीलकण्ठ दैवज्ञ विरचितं ।
संगृहीतं वा तृतीय प्रश्नतंत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥

भाषा कार कृत प्रार्थना ।

बाण बाण निधीन्द्वब्दे मार्गे मास्यसिते दले ।
चतुर्थ्यां भृगु वारे च भाषा सम्पूर्ण तामगात् ॥ ३४ ॥
भाषेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्मणा ।
अत्र कुत्राप्य शुद्धं चेत्क्षंतव्यं विबुधैर्जनैः ॥ ३५ ॥

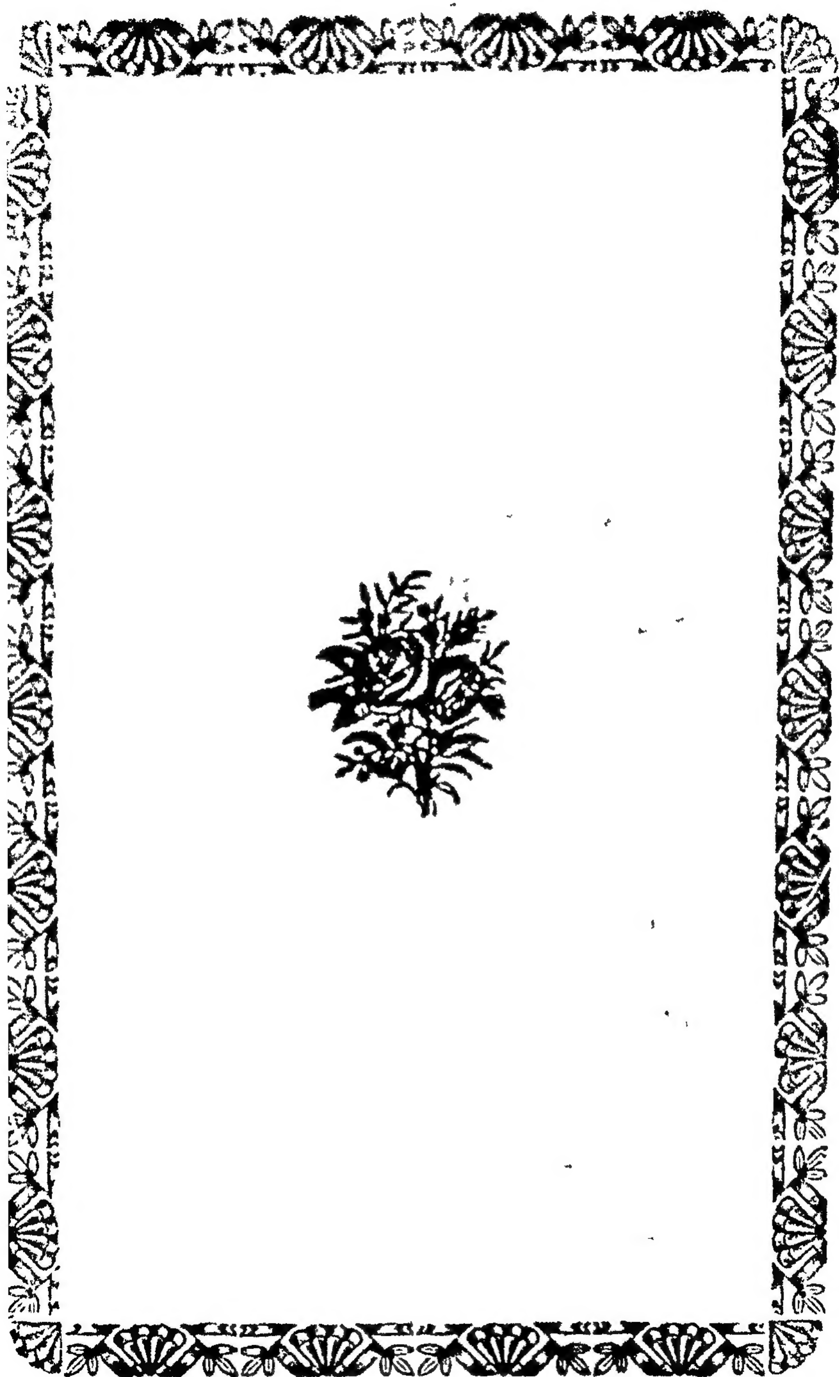
भा०——श्रीमन्महाराजा विक्रमादित्यजी के संवत् १९५५ मार्गमास [illegible] चतुर्थी शुक्रवार के दिन यह भाषा टीका संपूर्णता को प्राप्त हुई ॥३४॥ [illegible] की प्रेम से श्रीनारायणप्रसाद शर्मा ने रचना करी जो इसमें कहीं [illegible] अशुद्धता रहगई हो तो पंडितजनों करके क्षमा करना यही हमारी [illegible] है ॥ ३५ ॥

समाप्तोऽयंग्रन्थः ।



मिलने का पता--

बम्बईभूषण प्रेस, मथुरा ।



सूचीपत्र

केसर गुलाब	॥)	चम्पा चमेली	)।
चालाक मालिन	।)	चमेली गुलाब	।–)
सवा यार	॥)	दिल्लगीका खजाना	–)
तोता मैना ८ भाग	।≈)	सारंगासदाबृक्षबड़ा	॥)
अलीबाबा ४० चोर	≈)	अफीमचीका किस्सा	–)
साढ़े तीन यार	॥।)	मक्खी चूस	)॥
हातिमताई	॥≈)	[illegible]	)।
बैताल पचीसी	।–)	गुलसनोबर	≈)
गुलबकावली	।≈)	मोहनी चरित्र	।≈)
सिंहासन बत्तीसी	।≈)	सिपाहीजादा	≈)
लैला मजनूं	।)	[illegible] का [illegible]	≈)
किस्सा शाहबहराम	)॥	[illegible]	–)
[illegible] ४० [illegible]	–)	[illegible]	–)
[illegible]	–)	छबीली भटियारी	≈)॥

मिलने का पता—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद.

बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा।